परमार्थीयग्रन्थमालायाःपञ्चमंपुष्पम्

लघुपाणिनीयम्

(पाणिनीयाष्टकस्य द्विसहस्रलौकिकसूत्राणां सवार्त्तिकः सलक्ष्यश्च संग्रहः)

प्रस्तोता

सोहं बाबाः

(राष्ट्रपतिसम्मानितः, पदवाक्यप्रमाणज्ञो विद्यानिधिः श्रीभरतमिश्रः)

सोहं प्रकाशनाध्यक्षेण

सोहंनिवास-डी० ३६/२४९ अगस्त्यकुण्ड-वाराणसीस्थेन

प्रकाशितम्

कृतज्ञता-ज्ञापन

हमें यह प्रकाशित करते हुए परम हर्ष है कि हमारे दो प्रकाशन "
बाबा" प्रणीत "पाणिनीय प्रवेशिका" एवं "व्यवहारिक शब्दसं
संस्कृत विद्वत् समाज में समादृत हुए हैं। राष्ट्रपति सम्मानित र
पण्डितराज-दर्शनकेशरी श्री गोपाल शास्त्री, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्व
के पूर्ववर्त्ती कुलपति आचार्य श्री बदरीनाथ शुक्ल, सरस्वती संस्कृत प
खन्ना (पंजाब) के निदेशक राष्ट्रपति सम्मानित, आचार्य श्री विश्वनाथ शा
का० सि० द० संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभङ्गा के पूर्ववर्त्ती कुल
तथा सम्प्रति 'राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान" नयी दिल्ली के निदेशक डा०
रामकरण जी शर्मा, संस्कृत व्याकरण एवं साहित्य के मर्मज्ञ विद्वान् आ
श्री कृष्णमोहन ठाकुर, एवं व्याकरण, साहित्य और विभिन्न दर्शनादि नवशा
चार्य श्री लक्ष्मण त्रिवेदी आदि मूर्धन्य विद्वानों ने उपर्युक्त दोनों पुस्तकों
प्रारम्भिक संस्कृत शिक्षण के लिए परमोपयोगी की संज्ञा दी है। इसके
विद्वत् समाज के हम परम कृतज्ञ हैं। आशा है उसी शृङ्खला का
तीसरा ग्रन्थ "सोहं बाबा" द्वारा ही प्रस्तुत "लघुपाणिनीयम्"
अवश्य समादृत होगा।

विनीत—

प्रकाशक

परमार्थीय ग्रन्थमालाया: पञ्चमं पुष्पम्

लघुपाणिनीयम्

(पाणिनीयाष्टकस्य द्विसहस्रलौकिकसूत्राणां सलक्ष्यः संग्रहः)

प्रस्तोता

सोहं बाबाः

राष्ट्रपतिसम्मानित:, पदवाक्य प्रमाणज्ञो, विद्यानिधि: श्री भरतमिश्र:)

सोहं प्रकाशनाध्यक्षेण

निवास-डो० ३६/२४९-अगस्त्यकुण्ड-वाराणसीस्थेन-प्रकाशितम्

प्रकाशकः
सोहं प्रकाशनाध्यक्षः,
सोहं निवासः, डी० ३६/२४९,
अगस्त्यकुण्डम्, वाराणसी ।
पिन-२२१,००१

मार्गशीर्ष शुक्ल मोक्षदैकादशी,
गीता जयन्ती, २०३८ वै० ।

मूल्यम्–अष्टरूप्यकाणि ।

मुद्रकः
विक्रम पञ्चाङ्ग प्रेस ।
भदैनी, वाराणसी

भारतस्य प्रतिष्ठे द्वे संस्कृतं संस्कृतिस्तथा

"विना वेदं विना गीतां, विना रामायणीं कथाम् ।
विना कविं कालिदासं, भारतं भारतं नहि ॥"

अतएव—"नगरे नगरे ग्रामे ग्रामे, विलसतु संस्कृत वाणी ।
सदने सदने जनजन वदने, जयतु चिरंकल्याणी ॥"

प्रस्तुत पद्य सभी भारतीयों के लिए संस्कृत के ज्ञान की अनिवार्यता के द्योतक हैं।

ऐसी परिस्थिति में हमें यह जानने की आवश्यकता है कि संस्कृत भाषा का सम्यक् ज्ञान सहज में कैसे सम्भव है।

ऐसे तो साधारणत: सभी भाषाओं के सम्यक् ज्ञान के लिए प्रथमत: उसके व्याकरण का ज्ञान अपेक्षित है परन्तु यह बात संस्कृत के लिए परमावश्यक है क्योंकि यह भाषा वर्त्तमान समय में जन-साधारण के सतत व्यवहार से अलग थलग पड़ गयी है।

भारत में जब संस्कृत व्यवहारिक एवं साहित्यिक दोनों प्रकार की भाषाओं के रूप में व्यवहृत होती थी उस समय के संस्कृत के अध्ययनाध्यापनका सप्रमाण विवरण चीनी बौद्ध यात्री "ईत्सिंग" के यात्रा वृत्तान्त से प्राप्य है। ये बौद्धयात्री ईशा को ६८१ ई० में भारत आये थे और ६९१ ई० तक यहां रुके थे।

इन्होंने अपने यात्रा वृत्तान्त में लिखा है कि उस समय यहां के आठ वर्षों की अवस्था के शिशु पाणिनि का अष्टाध्यायीव्याकरण कण्ठस्थ करना प्रारम्भ करते थे और आठ महीनों में वे उसे पूरा कर लेते थे तदनन्तर उन्हें उन सूत्रों के अर्थ एवं लक्ष्य ग्रन्थों के द्वारा उदाहरणों के ज्ञान कराये जाते थे जिसमें उन्हें मात्र दो वर्षों का समय लगता था। यत: उन्हें पूरी अष्टाध्यायी कण्ठस्थ रहती थी अत: उनके लिए सूत्रों के अर्थ इनके पूर्वापर ज्ञान के कारण "सूत्रेष्वदृष्टपदं सूत्रान्तरादनुवर्त्तनीयं सर्वत्र" न्याय से अत्यन्त सुलभ एवं सरल था। फल यह था कि इन अध्येताओं के सामने कोई भी पद आने पर उसकी व्युत्पत्ति एवं सिद्धि स्पष्ट झलकने लगती थी। और आज की तरह सूत्र, वृत्ति तथा प्रत्येक उदाहरण की पदसिद्धि पृथक् पृथक् रटने की आवश्यकता नहीं होती थी।

इस तरह बच्चे जब तक ग्यारह वर्षों की अवस्था के होते थे तब तक उन्हें संस्कृत भाषा के लिखने, समझने और बोलने की शक्ति पूरी पूरी हो जाती थी। और वे संस्कृत वाङ्मय के अन्य विषयों—वेद, दर्शन, साहित्य धर्मशास्त्र, पुराण अथवा ज्योतिष एवं आयुर्वेदादि शास्त्रों—में से कोई भी विषय आसानी से पढ़ने को समर्थ थे और स्वतन्त्र थे।

हाँ यह बात भी ठीक है कि जिस अध्येता को संस्कृत व्याकरण में ही प्रौढ़ता प्राप्त करने की इच्छा होती थी वह तीन वर्षो का समय और लगाकर पातञ्जल महाभाष्य भी पढ़ लेता था और इस तरह संस्कृत व्याकरण शास्त्र की प्रौढता के लिए भी मात्र पाँच वर्षों का ही समय पर्याप्त था।

संस्कृत भाषा के अध्ययनाध्यापन की यह परिपाटी तो तब तक बड़ी अच्छी तरह से चलती रही जब तक इस देश की व्यवहारिक भाषा संस्कृत रही। धीरे धीरे समय के प्रवाह के कारण संस्कृत जनसाधारण की व्यवहारिक भाषा के स्थान से हटकर मात्र पण्डित भाषा ही रह गयी। फल यह हुआ कि शब्दों के प्रयोग करते समय रूपसिद्धि की आवश्यकता प्रतीत होने लगी जिसने प्रक्रिया युग का जन्म दिया। बौद्ध विद्वान् धर्मकीर्त्ति का "रूपावतार" और रामचन्द्र की "प्रक्रिया कौमुदी" इसी युग के प्रारम्भिक ग्रन्थ हुए। इन ग्रन्थों के आविर्भावानन्तर भी अष्टाध्यायीक्रम का अध्ययनाध्यापन चलता रहा और ये ग्रन्थ अष्टाध्यायी के पूरक ग्रन्थों की कोटि में ही रहे। इस तथ्य का साक्षात् प्रमाण यह है कि यद्यपि आचार्य "धर्मकीर्त्ति" ने "रूपावतार" लिखकर अध्येताओं का ध्यान "लक्ष्यसिद्धि" की ओर आकृष्ट किया तदपि ठीक उन्हीं के आसपास अर्थात् ईशा की बारहवीं शताब्दि में ही एक अन्य बौद्ध विद्वान् आचार्य "श्री पुरुषोत्तम देव" जी ने "पाणिनीयाष्टाध्यायी" की "भाषावृत्ति" का प्रणयनकर अष्टाध्यायी क्रम के अध्ययनाध्यायन की ही महत्ता प्रतिपादित की।

ईशा की सोलहवीं शताब्दि के अन्तिम दिनों में या सत्रहवीं शताब्दि के पूर्वार्ध में प्रक्रिया युग के सर्वमान्य प्रवक्ता श्री भट्टोजिदीक्षित का उदय हुआ और उनकी "वैयाकरण सिद्धान्तकौमुदी" तथा उस पर "प्रौढ मनोरमा" अथवा आगे चलकर नागेशभट्ट के "शब्देन्दुशेखरादि" टीका प्रटीका ग्रन्थों के प्रणयन या अध्ययनाध्यायन का क्रम इतना प्रबल हुआ कि प्राचीन अष्टाध्यायी क्रम की परिपाटी पूर्णरूप से समाप्त हो गयी।

भट्टोजि भी अपने तईं तो—अष्टाध्यायी-महाभाष्य क्रम को ही मान्यता देते हैं क्योंकि उन्होंने "सिद्धान्तकौमुदी" से पहले "अष्टाध्यायी" पर ही वृत्तिग्रन्थ

"शब्दकौस्तुभ" का प्रणयन किया था और इसमें "महाभाष्य" के विषयों का भी समीक्षण और परिबृंहण किया था, और अपनी "सिद्धान्तकौमुदी" के अन्त में भी उन्होंने "इत्थं लौकिक शब्दानां दिङ्मात्रमिह दर्शितम्। विस्तरस्तु यथा शास्त्रं दर्शितः शब्दकौस्तुभे ।।" लिखकर अपनी "सिद्धान्तकौमुदी" को "अष्टाध्यायी" का पूरक ग्रन्थ ही माना है और "अष्टाध्यायी" एवं "महाभाष्य" प्रणाली की पाठ्यशैली की विशिष्टता स्वीकृत की है।

यह सब होते हुए भी टीका-प्रटीका ग्रन्थों का अध्ययन इस गहराई तक पहुँचा कि शास्त्रार्थों में अपने जीतने तथा अपने प्रतिद्वन्दी को हराने में ही पाण्डित्य समझा जाने लगा। फलतः नव्य व्याकरण और नव्यन्याय का सम्मिश्रण हुआ और भाषाज्ञान की ओर से ध्यान हटकर सब समय शास्त्रार्थों में ही बीतने लगा। परिणाम यह हुआ कि परम वैज्ञानिक अतएव सरल एवं सुलभ पाणिनीय व्याकरण कठिन, कठिनतर नहि नहि कठिनतम की कोटि में पहुँच गया और अन्त में "द्वादशवर्षै र्व्याकरणं श्रूयते" न तु ज्ञायते की बात सामने आ गयी।

अध्ययन का सारा समय मात्र संस्कृत व्याकरण के टीका ग्रन्थों का कण्ठस्थीकरण एवं उससे शास्त्रार्थों में एक दूसरे को हराने में ही बीतने लगा और संस्कृत वाङ्मय के अन्य विषयों को देखने का भी समय न रहा। फलतः लौकिक विद्याओं के ज्ञान के अभाव में संस्कृत के विद्वान् अलौकिक कहलाने लगे जिसके कारण सर्वसाधारण का ध्यान संस्कृत की ओर से विमुख हो गया और साथ साथ जन-साधारण में एक भ्रमपूर्ण भावना प्रसारित हो गयी कि संस्कृत भाषा बहुत ही कठिन भाषा है, बहुसमय साध्य है तथा इसका अध्येता जीवन में अलौकिक ही रह जाता है। वास्तविकता इसके ठीक विपरीत है और याथार्थ्य यह है कि संस्कृत भाषा संसार की सभी भाषाओं में सरलतम भाषा है और इसकी लिपि तथा इसका व्याकरण पूर्णरूप से वैज्ञानिक होने के कारण सहज ही सुपाठ्य एवं सुपाच्य है।

ऐसी परिस्थिति में संस्कृतानुरागी सज्जनों का यह परम कर्त्तव्य है कि इस भारत भूमि की गरिमामयी संस्कृति एवं सभ्यता को लुप्त होने से बचाने के लिए यहाँ की सर्वसाधारण जनता के मस्तिष्क से यह भ्रमपूर्ण धारणा हटा दी जाय कि संस्कृत एक कठिन भाषा है और इसे पढ़कर मनुष्य अलौकिक हो जाता है।

इसके लिये यह आवश्यक है कि इस वर्त्तमान बहुधन्धी संसार में संस्कृत भाषा के अध्ययनाध्यापन की रीति सरलतम की जाय और बच्चों को क्रम से

कम समय में संस्कृत व्याकरण का सर्वविध कार्यकारी ज्ञान कराकर उन्हें शीघ्रातिशीघ्र इस योग्य बना दिया जाय कि वे अपने जीवन में सफल होने के लिये जो कोई भी भाषा या जो कोई भी विषय पढ़ना चाहे उसके लिये वे पूर्ण स्वतन्त्र रहें और उनका संस्कृत भाषा ज्ञान सर्वदा उनकी सहायता करे।

इस कार्य की सिद्धि के लिए संस्कृत व्याकरण एवं भाषा के अध्ययनाध्यापन की प्राचीन परिपाटी की ही ओर पुनः लौटना पड़ेगा और तब जैसे दो से तीन वर्षों में अष्टाध्यायी क्रम से पढ़कर बच्चे संस्कृत व्याकरण में अच्छी गति प्राप्त कर लेते थे और उसके अनन्तर वे कोई भी विषय पढ़ने को स्वतन्त्र थे और उसके लिये उनके बचपन के दो तीन वर्षों में पढ़े हुए अष्टाध्यायी क्रम का पाठ्यक्रम, भाषा ज्ञान के लिये पर्याप्त था उसी तरह आज भी बच्चों को उसी अष्टाध्यायी क्रम से संस्कृत व्याकरण का अध्ययन कराकर तीन वर्षों में उनका भाषा ज्ञान पूर्ण कराया जा सकता है।

यदि हम अपने बच्चों को, संस्कृत व्याकरण ज्ञान के लिये "लघुकौमुदी" से आरम्भ कर "सिद्धान्तकौमुदी" "प्रौढ मनोरमा" या "शेखरादि" के बीहड़ जंगल में न डालकर, उपर्युक्त "पाणिनीयाष्टाध्यायी" क्रम से ही संस्कृत व्याकरण का ज्ञान करावें और साथ ही साथ "वाल्मीकीय रामायण" "गीता" तथा "हितोपदेशादि" के उपदेशात्मक छोटे छोटे चुने हुये गद्य पद्यात्मक सन्दर्भों का अध्ययन भी "अष्टाध्यायी" के विभिन्न सूत्रों के उदाहरण के माध्यम से कराते जांय तो तीन वर्षों में संस्कृत व्याकरण तथा भाषा का ज्ञान एवं संस्कृत में बोलने लिखने और समझने की शक्ति भी पर्याप्त रूप से अवश्यम्भावी है। अन्ततोगत्वा व्याकरण की परिभाषा भी तो यही सर्वसम्मत है कि—

"लक्ष्य लक्षण विज्ञानं व्याकृति विदुषां मतम्।
लक्ष्य-लक्षण-विज्ञोवै, वैयाकरण उच्यते।।

हां वर्तमान समय में—यतः संस्कृत व्यवहारिक भाषा के रूप में नहीं है अतः उपरिलिखित चीनी यात्री द्वारा वर्णित अध्ययनाध्यापन की प्राचीन परिपाटी में कुछ सामयिक परिवर्तन आवश्यक है।

इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुये हमारे परमादरणीय पितृचरण "सोहं बाबा—विद्यानिधि श्री भरत मिश्र जी" ने पाणिनीयाष्टाध्यायी के अध्ययन से पूर्व बच्चों को पढ़ाने के लिये एक संस्कृत व्याकरण की छोटी पुस्तक "पाणिनीय प्रवेशिका" नाम से प्रस्तुत की है। इसमें माहेश्वर सूत्र, वर्णभेदादि, सन्धि, शब्दरूप, अव्यय, स्त्री प्रत्यय, विभक्त्यर्थ, समास, तद्धित, धातुरूपादि क्रियाप्रक-

रण, वाक्य-रचना नियम, कृदन्त, धातु पाठ (रूपदिग्दर्शन एवं हिन्दी अर्थ सहित) दिये गये हैं और अन्त में एक छोटा-सा "हिन्दी संस्कृत शब्दकोष" भी दे दिया गया है। आवश्यकतानुसार कहीं टिप्पणी में और कहीं मुख्यांश में ही पाणिनीयसूत्र अथवा नियम प्रदर्शक कारिकाएं भी लिखित हैं।

पुस्तक के अन्त में प्रकाशक द्वारा प्रस्तोता का एक संक्षिप्त वंशपरिचय सहित जीवन चरित्र भी संस्कृत के अनुष्टुप् छन्द में सहज भाषा में जोड़ दिया गया है। इससे भी बच्चों को छोटे छोटे श्लोकों के अन्वय या अर्थादि लगाने का अनुभव होगा।

इस पुस्तक के पठनानन्तर "पाणिनीयाष्टाध्यायी" के सूत्रों के सन्धि, विच्छेद, समास, व्यास, विभक्ति निर्णयादि का ज्ञान सुगमता से हो जायेगा और तब सूत्रों को कण्ठस्थ करने में या उनकी वृत्ति बनाने में अथवा अर्थ जानने में सुविधा होगी। इस पुस्तक में आवश्यकतानुसार जहाँ तहाँ दिये गये चार पाँच सौ पाणिनीय सूत्रों का भी अभ्यास हुआ रहेगा।

सोहं बाबा ने अपने संस्कृताध्यापन के प्रारम्भिक त्रिवर्षीय पाठ्यक्रम के प्रथम वर्ष के लिये उपर्युक्त "पाणिनीय प्रवेशिका" के अतिरिक्त एक दूसरी पुस्तक भी "व्यवहारिक शब्द संग्रह" नाम की प्रस्तुत की है। इसमें मात्र पाँच सौ श्लोकों में ही संस्कृत वाङ्मय में बहुचर्चित "अमरकोष" या "नाम लिङ्गानुशासन" के प्रायः सभी व्यवहार में आने वाले शब्दों का संग्रह अधिकतर "अमरकोष" के ही श्लोकों में और जहाँ तहाँ संग्रह कर्त्ता के कुछ अपने श्लोकों या श्लोकांशों में कर दिया गया है।

बचपन में इस पुस्तक के कण्ठस्थ कर लेने से आगे चलकर संस्कृत वाङ्मय के ग्रन्थो में आये शब्दों के अर्थ समझने में अतीव सुगमता रहेगी।

उपर्युक्त त्रिवर्षीय संस्कृत पाठ्यक्रम के द्वितीय वर्ष के छात्रों के लिए भी सोहं बाबा ने एक तीसरी पुस्तक सम्पादित की है जो अगले तृतीय वर्ष में "पाणिनीयाष्टाध्यायी" के गहन अध्ययन में पूर्ण सहायक होगी। वह है आपके हाथों में "लघुपाणिनीयम्" जिसमें "पाणिनीयाष्टाध्यायी" के दोहजार-अट्ठावन सूत्रों का इस ध्यान से संकलन किया गया है जिसमें लौकिक व्यवहार में आने वाले सभी सूत्र आ जायें। इन सूत्रों के साथ साथ इनके पूरक वार्त्तिकों एवं इन सूत्रों एवं वार्त्तिकों के उदाहरणों का भी संग्रह किया गया है।

द्वितीय वर्ष में इसे अभ्यस्त कर लेने पर बच्चों को संस्कृत व्याकरण का ज्ञान सुचारु रूप से हो जायेगा और अगले तृतीय वर्ष में पूरी पाणिनीयाष्टाध्यायी के अभ्यास में यथेष्ट सुगमता होगी।

—इस पुस्तक के अध्ययन से यह भी लाभ है कि यदि किसी अध्येता को पूरी "पाणिनीयाष्टाध्यायी" किसी कारणवश अभ्यास करने का संयोग न भी बैठा तो भी उसे वेद के अतिरिक्त अन्य विषयों के अध्ययन के लिए जितना व्याकरण ज्ञान आवश्यक है उतने के लिए यह—"लघुपाणिनीयम्" का अध्ययन—पर्याप्त होगा।

सोहं प्रकाशन से एक चौथी पुस्तक लक्ष्य-लक्षण संगत्यर्थ सोहं बाबा के पथ-प्रदर्शनानुसार ही "देववाणी परिचय" नाम की संगृहीत करके प्रकाशित की जा रही है जो अभी प्रकाशन क्रम में है। इसमें कुछ वेदमन्त्र, एवं उपनिषद् मन्त्र, वाल्मीकीय रामायण का "मूल रामायणांश", "श्रीमद्भगवद्गीता" के चुने हुए दो सौ से कुछ अधिक श्लोक, श्रीमद्भागवत का "गजेन्द्र मोक्ष", कालिदास, भारवि, माघ, श्री हर्ष, और भवभूति के कुछ आदर्श काव्यामृत तथा महाकवि बाण की "कादम्बरी" का "शुकनाशोपदेश" एवं सोहं बाबा प्रणीत "भरतस्मृति" अथवा "मानवधर्मादर्श" से चुने हुए कुछ आदर्श श्लोक और हितोपदेशादि से उद्धृत नीतिपरक गद्यपद्यांश देकर "देववाणी" संस्कृत से बच्चों का परिचय कराया गया है।

यह पुस्तक उपर्युक्त संस्कृत त्रिवर्षीय पाठ्यक्रम के तृतीय वर्ष के लिए प्रस्तुत की जा रही है।

"पाणिनीयाष्टाध्यायी" क्रम से अध्ययन कराकर मात्र तीन वर्षों में संस्कृत व्याकरण का ज्ञान कराते हुये संस्कृत-भाषा, साहित्य एवं दर्शन—का कार्यकारी ज्ञान कराने में सफल, भारत के राष्ट्रपति द्वारा अपने पाण्डित्य एवं शास्त्रनिष्ठा के लिये सम्मानित हमारे परमादरणीय सोहं बाबा—विद्यानिधि श्री भरत मिश्रजी के पथ प्रदर्शन में यहाँ काशी में ही उनके स्वयं के निवास स्थान "सोहं निवास" डी ३६।२४९ अगस्त्यकुण्ड, वाराणसी में एक "सोहं संस्कृत शिशु विद्यालय" चल रहा है जिसमें आठ से बारह वर्षों तक के बच्चे लिये जाते हैं और उन्हें उपर्युक्त क्रम से तीन वर्षों में संस्कृत भाषा, व्याकरण, साहित्य एवं दर्शन का कार्यकारी ज्ञान करा देने की योजना सफलतापूर्वक चल रही है। इस विद्यालय का पाठ्यक्रम निम्नाङ्कित है—

सोहं संस्कृत शिशुविद्यालय

के

त्रिवर्षीय पाठ्यक्रम की पाठ्यतालिका

इस विद्यालय में विद्यालय परिवार के सदस्यों में परस्पर वार्तालाप एवं अध्ययनाध्यापन का माध्यम संस्कृत है।

प्रथम वर्ष की पाठ्यपुस्तकें

१—पाणिनीय प्रवेशिका—सोहं बाबा द्वारा प्रस्तुत एवं सोहं प्रकाशन, डी. ३६।२४९ अगस्त्यकुण्ड, वाराणसी से प्रकाशित।

२—व्यवहारिक शब्द संग्रहः—सोहं बाबा द्वारा प्रस्तुत एवं उपर्युक्त सोहं प्रकाशन द्वारा प्रकाशित।

३—श्रीमद्भगवद्गीता—पदच्छेद एवं सन्धि के ज्ञान सहित शुद्ध वाचनिका मात्र।

द्वितीय वर्ष की पाठ्यपुस्तकें

१—लघुपाणिनीयम्—सोहं बाबा द्वारा सम्पादित एवं उपर्युक्त सोहं प्रकाशन द्वारा प्रकाशित।

२—श्रीमद्भगवद्गीता—अर्थ एवं व्याख्या सहित।

३—बाल निबन्धमाला तथा संस्कृत निबन्धादर्शः—श्री वासुदेव द्विवेदी शास्त्री द्वारा प्रणीत एवं सार्वभौम संस्कृत प्रचार कार्यालय, बाँसफाटक, वाराणसी द्वारा प्रकाशित।

तृतीय वर्ष की पाठ्यपुस्तकें

१—पाणिनीयाष्टाध्यायी—सोदाहरणा, स्वरवैदिकी छोड़कर सम्पूर्ण।

२—देववाणी परिचय—आचार्य श्री रामेश्वर ब्रह्मचारी द्वारा सम्पादित एवं उपर्युक्त सोहं प्रकाशन द्वारा प्रकाशित।

इस अन्तिम वर्ष में संस्कृत वक्तृत्व और प्रबन्ध—लेखन पर विशेष ध्यान दिया जायेगा।

"लघुपाणिनीयम्" का अध्यापनक्रम

अन्त में अध्यापकों के सुविधार्थ "सोहं बाबा" द्वारा परिचालित "लघुपाणिनीयम्" के अध्यापन के क्रम का दिग्दर्शन आवश्यक है जो नीचे दिया जा रहा है—

इस पुस्तक को दो आवृत्तियों में पढ़ाना सुविधाजनक है। पहली आवृत्ति में निम्न क्रम से और द्वितीयावृत्ति में आरम्भ से अन्त तक यथाक्रम—

प्रथमावृत्ति का अध्यापनक्रम

१—प्रथमाध्याय के प्रथम एवं चतुर्थ पाद।

२—द्वितीयाध्याय का तृतीय पाद, तब प्रथम एवं द्वितीय पाद।

३—षष्ठाध्याय का प्रथम पाद।

४—अष्टमाध्याय के द्वितीय, तृतीय एवं चतुर्थपाद अर्थात् त्रिपादी।

५—सप्तमाध्याय।

६—तृतीयाध्याय।

७—प्रथमाध्याय के द्वितीय एवं तृतीय पाद।

८—षष्ठाध्याय का शेषांश।

९—अष्टमाध्याय का प्रथम पाद।

१०—द्वितीयाध्याय का चतुर्थ पाद।

११—चतुर्थाध्याय।

१२—पञ्चमाध्याय।

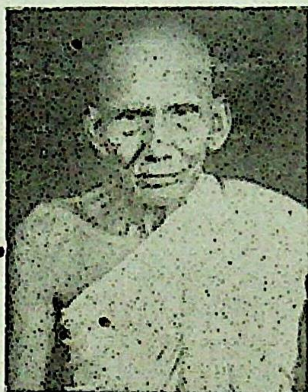
द्वितीयावृत्ति

आरम्भ से अन्त तक यथाक्रम।

पुस्तक के अन्त में इसमें संगृहीत सूत्रों की सूची देकर इसकी उपादेयता और भी बढ़ा दी गई है।

सोहं निवास, डी. ३६।२४
अगस्त्यकुण्ड, वाराणसी
मोक्षदैकादशी (मार्गशीर्ष शुक्ल)
२०२८ वै०

रामेश्वर ब्रह्मचारी
साहित्याचार्य, एम्.ए., बी.एल्.
अवकाशप्राप्त प्रधानाचार्य
भरतमिश्र संस्कृत महाविद्यालय
छपरा (बिहार)



श्री भरतमिश्र

१८ अप्रैल, सन् १८९१ को छपरा (बिहार) में आपका जन्म हुआ। आरम्भिक काल में अपने पूज्य पिताजी से शिक्षा प्राप्त कर आपने पुनः प्रसिद्ध विद्वानों से व्याकरण, वेदान्त, साहित्य तथा पाश्चात्य दर्शन का अध्ययन किया।

आपने संस्कृत अध्यापक के रूप में अपना शैक्षिक जीवन आरम्भ किया। सारन क्षेत्र में आपने नये-नये संस्कृत महाविद्यालयों की स्थापना में बडी रुचि ली। १९२० मे गांधीजी के असहयोग आन्दोलन में सक्रिय भाग लेने के कारण आपका शैक्षिक कार्य शिथिल हो गया और आप समाज सुधार के कार्य में निरत हुए। स्वाधीनता संग्राम में भाग लेने के कारण आपने अनेक बार कारावास की यातनाएं भी भोगीं। जेल में आप अपने कैदी बन्धुओं को संस्कृत पढ़ाते रहे और इन्हीं व्यक्तियों में से एक स्वर्गीय डा० राजेन्द्र प्रसाद जी भी थे। आज भी संस्कृत व्याकरण और संस्कृत भाषा के शिक्षण के सरलीकरण के कार्य में अनवरत संलग्न रहते हैं। आपने एक 'सोहम् विद्या मन्दिर न्यास' की स्थापना की जिसके अन्तर्गत आज चार संस्कृत संस्थाएं चल रही हैं।

आपकी पाँच वैदुष्यपूर्ण संस्कृत कृतियाँ प्रकाशित हैं जिनमें से चार व्याकरण शास्त्र पर हैं।



सत्यमेव जयते

अहं भारतस्य राष्ट्रपतिः

नीलम संजीव रेड्डी

*

श्री भरत मिश्राय

संस्कृत वाङ्मये पाण्डित्याय
शास्त्र निष्ठायाश्च कृते
इदं प्रमाण-पत्रमुपहरामि ॥

ह० / नीलम संजीव रेड्डि
राष्ट्रपतिः

नई दिल्ली

दिनाङ्क : २८ मार्च, १९८१ / ७ चैत्र १९०३

(२८ मार्च १९८१ को राष्ट्रपति भवन के सम्मान समारोह पुस्तिका से उद्धृत)

❀ ॐ तत् सत् ❀

अथ लघु पाणिनीयम्

अथ:=अक्षर समाम्नायः

अइउण् । ऋलृक् । एओङ् । ऐऔच् । हयवरट् । लण् । ञमङणनम् । झभञ् । घढधष् ।.जबगडदश् खफछठथचटतव् । कपय् । शषसर् । हल् ।।

इति प्रत्याहारसूत्राणि माहेश्वराणि १

१ नृत्यावसाने नट-राज-राजो ननाद ढक्कां नव पञ्च वारम् ।
उद्धर्तुकामः सनकादिसिद्धानेतद्विमर्श्यं शिव-सूत्रजालम् ।।

❀ प्रथमोऽध्यायः ❀

अथ प्रथमः पादः

१ वृद्धिरादैच् ।
२ अदेङ्गुणः ।
३ इको गुणवृद्धी ।
४ न धातुलोप आर्धधातुके ।
५ क्ङिति च ।
७ हलोऽनन्तराः संयोगः ।
८ मुखनासिकावचनोऽनुनासिकः ।
९ तुल्यास्यप्रयत्नं सवर्णम् ।
+(वा ऋ लृवर्णयोर्मिथः सावर्ण्यं वाच्यम्) ।
१० नाज्झलौ ।
११ ईदूदेद्द्विवचनं प्रगृह्यम् ।
१२ अदसोमात् ।
१४ निपात एकजनाङ् ।
१५ ओत् ।
२० दाधा घ्वदाप् ।
२१ आद्यन्तवदेकस्मिन् ।
२२ तरप्तमपौ घः ।
२३ बहुगणवतुडति संख्या ।
२४ ष्णान्ता षट् ।
२५ डति च ।
२६ क्तक्तवतू निष्ठा ।
२७ सर्वादीनि सर्वनामानि ।
३७ स्वरादिनिपातमव्ययम् ।
३८ तद्धितश्चासर्वविभक्तिः ।
३९ कृन्मेजन्तः ।

४० क्त्वा-तोसुन्कसुनः ।
४१ अव्ययीभावश्च ।
४२ शि सर्वनामस्थानम् ।
४३ सुडनपुंसकस्य ।
४५ इग्यणः संप्रसारणम्
४६ आद्यन्तौ टकितौ ।
४७ मिदचोऽन्त्यात्परः ।
४८ एच इग्घ्रस्वादेशे ।
४९ षष्ठी स्थानेयोगा ।
५० स्थानेऽन्तरतमः ।
५१ उरण्रपरः ।
५२ अलोऽन्त्यस्य ।
५३ ङिच्च ।
५४ आदेः परस्य ।
५५ अनेकाल्शित्सर्वस्य ।
५६ स्थानिवदादेशोऽनल्विधौ ।
५७ अचः परस्मिन्पूर्वविधौ ।
५८ न पदान्तद्विर्वचनवरेयलोपस्वर-सवर्णानुस्वारदीर्घजश्चर्विधिषु ।
५९ द्विर्वचनेऽचि ।
६० अदर्शनं लोपः ।
६१ प्रत्ययस्य लुक्श्लुलुपः ।
६२ प्रत्ययलोपे प्रत्ययलक्षणम् ।
६३ न लुमताऽङ्गस्य ।
६४ अचोऽन्त्यादि टि ।
६५ अलोऽन्त्यात्पूर्व उपधा ।
६६ तस्मिन्निति निर्दिष्टे पूर्वस्य ।
६७ तस्मादित्युत्तरस्य ।
६९ अणुदित्सवर्णस्य चाप्रत्ययः ।
७० तपरस्तत्कालस्य ।
७१ आदिरन्त्येन सहेता ।
७२ येन विधिस्तदन्तस्य ।
७३ वृद्धिर्यस्याचामादिस्तद्वृद्धम् ।
७४ त्यदादीनि च ।

इति लघुपाणिनीये प्रथमाध्याये प्रथमः पादः ।

अथ द्वितीयः पादः

१ गाङ्कुटादिभ्योऽञ्णिन्ङित् ।
२ विज इट् ।
४ सार्वधातुकमपित् ।
५ असंयोगाल्लिट्कित् ।
७ मृड-मृद-गुध-कुष-क्लिश-वद-वसः क्त्वा ।
८ रुद-विदमुष-ग्रहि-स्वपि-प्रच्छःसंश्च ।
९ इको झल् ।
१० हलन्ताच्च ।
११ लिङ्सिचावात्मनेपदेषु ।
१२ उश्च ।
१३ वा गमः ।
१४ हनः सिच् ।
१५ यमो गन्धने ।
१६ विभाषोपयमने ।
१७ स्थाघ्वोरिच्च ।
१८ न क्त्वा सेट् ।
१९ निष्ठा शीङ्-स्विदि-मिदि-क्ष्विदि-धृषः ।
२० मृषस्तितिक्षायाम्
२१ उदुपधाद्भावादिकर्मणो-रन्यतरस्याम् ।
२२ पूङः क्त्वा च ।
२३ नोपधात्थफान्ताद्वा ।

प्रथमाध्यायस्य द्वितीयः पादः

१—अध्यगीष्ट, अध्यगीषाताम् । कुटिता, कुटितव्यम् । २—उद्विजिता, उद्विजितुम्, उद्विजितव्यम् । ४—कुरुतः, कुर्वन्ति । चिनुतः चिन्वन्ति । ५—बिभिदतुः । ईजतुः नेह-ससंसे, बिभेद । ७-मृडित्वा, मृदित्वा, गुधित्वा इत्यादयः । ८—रुदित्वा, रुरुदिषति विदित्वा, विविदिषति । गृहीत्वा, जिघृक्षति । सुप्त्वा, सुषुप्सति । पृष्ट्वा, पिपृच्छिषति । ९—चिचीषति तुष्टूषति । नेह—शिशयिषते । १०—बिभित्सति, बुभुत्सते । धीप्सति, धिप्सति नेह—यियक्षति, विवर्द्धिषते । ११—भित्सीष्ट, भुत्सीष्ट । अभित्त अबुद्ध नेह—यक्षिष्ट, अयष्ट । १२—कृषीष्ट, अकृत । नेह —वरीषीष्ट अवरिष्ट । १३—संगसीष्ट, संगंसीष्ट । समगत, समगंस्त । १४—आहत, आहसाताम् । १५—उदायत, उदायसताम् उदायसत । नेह—उदायंस्तपादम् । १६—उपायत, उपायंस्त वा कन्याम् । १७—उपास्थित, उपास्थिषाताम्, अधित, अधित । १८—देवित्वा, वर्त्तित्वा, शयित्वा, १९—शयितः, शयितवान् । इत्यादयः । २०—मर्षितः मर्षितवान् । नेह—अपमृषितम् वाक्यम् अविस्पष्टमित्यर्थः । २१—द्युतितम्, द्योतितम् । प्रमुदितः, प्रमोदितः । २२—पवितः, पवितवान् । २३—ग्रथित्वा, ग्रन्थित्वा । गुफित्वा, गुम्फित्वा ।

२४ वञ्चिलुञ्च्यृतश्च ।
२५ तृषि-मृषि-कृशेः क श्यपस्य ।
२६ रलो व्युपधाद्धलादेः सश्च ।
२७ ऊकालोऽज्झ्रस्वदीर्घप्लुत ।
२८ अचश्च ।
४१ अपृक्त एकाल्प्रत्ययः ।
४२ तत्पुरुषः समानाधिकरणः कर्मधारयः ।
४३ प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम् ।
४४ एकविभक्ति चापूर्वनिपाते ।
४५ अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम् ।
४६ कृत्तद्धितसमासाश्च ।
४७ ह्रस्वो नपुंसके प्रातिपदिकस्य ।
४८ गोस्त्रियोरुपसर्जनस्य ।
४९ लुक्तद्धितलुकि
५० इद् गोण्याः ।
५८ जात्याख्यायामेकस्मिन्बहुवचनमन्यतरस्याम् ।
५९ अस्मदो द्वयोश्च ।
६४ सरूपाणामेकशेष एकविभक्तौ ।
६५ वृद्धो यूना तल्लक्षणश्चेदेव विशेषः ।
६६ स्त्री पुंवच्च ।
६७ पुमान्स्त्रिया ।
६८ भ्रातृ- पुत्रौ स्वसृ-दुहितृभ्याम् ।
७० पिता मात्रा ।
७१ श्वशुरः श्वश्र्वा ।
७२ त्यदादीनि सर्वैर्नित्यम् ।

इति प्रथमाध्यायस्य द्वितीयः पादः

२४—वचित्वा वञ्चित्वा । लुचित्वा, लुञ्चित्वा । २५—तृषित्वा, तर्षित्वा । मृषित्वा, मर्षित्वा, कृशित्वा, कर्शित्वा । २६—द्युतित्वा, द्योतित्वा । दिद्युतिषते, दिद्योतिषते । लिखित्वा, लेखित्वा । लिलिखिषति, लिलेखिषति । २७—दधि, मधु । कुमारी गौरी । आगच्छ देवदत्त ३ २८—अतिरि, अतिनु, उपगु । चीयते, श्रूयते । देवदत्त ३ । ४१—घृतस्पृक्, अर्धभाक् । ४२—परमराज्यम्, पाचक-वृन्दारिका । ४३—कष्टश्रितः, राजपुरुषः, वृषभयम् । ४४—निष्कौशाम्बिः । ४५—रामः, कृष्णः, गङ्गा, फलम् । ४६—कारकः, औपगवः राजपुरुषः । ४७—अतिरि, अतिनु प्रद्यु । ४८—चित्रगुः, निष्कौशाम्बिः । ४९—पञ्चेन्द्राणी देवता अस्य पञ्चेन्द्रः, आमलक्याः फलम् आमलकम् । बदरम् । ५०—पञ्चगोणिः पटः । ५८—ब्राह्मणाः पूज्याः, ब्राह्मण्यः पूज्याः । ५९—वयं ब्रूमः, अहं ब्रवीमि । वयं ब्रूवः, आवां ब्रूवः । वार्तिकः—सविशेषणस्य प्रतिषेधः :- देवदत्तोऽहं ब्रवीमि । ६४—रामश्च रामश्च इति रामौ, रामश्च—३—रामाः । ६५—गार्ग्यश्च गार्ग्यायणश्च इति गार्ग्यौ । ६७—हंसौ, कुक्कुटौ । ६८—भ्राता च स्वसा च इति भ्रातरौ, पुत्रश्च, दुहिता च इति पुत्रौ । ७०—माता च पिता च इति पितरौ, मातापितरौ वा । ७१—श्वशुरश्च श्वश्रूश्च इति श्वशुरौ श्वश्रूश्वशुरौ वा । ७२—स च देवदत्तश्च इति तौ ।

इति द्वितीय पादः ।

अथ तृतीयः पादः

१ भूवादयो धातवः ।
२ उपदेशेऽजनुनासिक इत् ।
३ हलन्त्यम् ।
४ न विभक्तौ तुस्माः ।
५ आदिर्ञिटुडवः ।
६ षः प्रत्ययस्य ।
७ चुटू ।
८ लशक्वतद्धिते ।
९ तस्य लोपः ।
१० यथासंख्यमनुदेशः समानाम् ।
११ स्वरितेनाधिकारः ।
१२ अनुदात्तङित आत्मनेपदम्
१३ भावकर्मणोः ।
१७ नेर्विशः ।
१८ परिव्यवेभ्यः क्रियः ।
१९ विपराभ्यां जेः ।
२० आङो दोऽनास्यविहरणे ।
२२ समवप्रविभ्यः स्थः ।
२४ उदोऽनूर्ध्वकर्मणि ।
२५ उपान्मन्त्रकरणे ।
२६ अकर्मकाच्च ।
२७ उद्विभ्यां तपः ।
२८ आङो यमहनः ।
२९ समो गम्यृच्छिभ्याम् ।
३१ स्पर्धायामाङः ।

अथ तृतीयः पादः—

९—भिन्नः, वेपथुः । १२—आस्ते, शेते । १३–भूयते, क्रियते । १७—निविशते, न्यविशते । नेह अर्थग्रहणे नानर्थकस्य ग्रहणम्—मधुनि विशन्ति भ्रमराः । १८ परिक्रीणीते, विक्रीणीते, अवक्रीणीते । १९— विजयते, पराजयते । २०—विद्यामादत्ते, आर्पग्रहणमविवक्षितम्—नेह मुखं विपादिकां कूलं वा व्याददाति । वार्त्तिकः पराङ्गकर्मकान्न निषेधः—व्याददते पिपीलिकाः पतङ्गस्य मुखम् । २२—सन्तिष्ठते, अवतिष्ठते. प्रतिष्ठते, वितिष्ठते । वार्त्तिकः–आङः प्रतिज्ञायाम्—शब्दं नित्यम् आतिष्ठते–प्रतिजानीते इत्यर्थः । २४–मुक्तावुत्तिष्ठते–उद्युक्ते इत्यर्थः । वार्त्तिकः ईहायाम् एव नेह–ग्रामाच्छतमुत्तिष्ठति । २५–उपाद्देवपूजा संगतिकरण मित्रकरण पथिपु––आदित्यमुपतिष्ठते, गङ्गायमुनामुपतिष्ठते, रथिकानुपतिष्ठते रथी । पन्थाः स्रुघ्नमुपतिष्ठते । २६––भोजनकाले उपतिष्ठते । २७—उत्तपते, वितपते । वार्त्तिकः––स्वाङ्गकर्मकाच्च––उत्तपते पाणी । २८––आयच्छते आहते । अकर्मकात् स्वाङ्गकर्मकादित्येव––नेह–परस्य शिरः आहन्ति । २९—संगच्छते, समृच्छते । वार्त्तिकः––विदि प्रच्छि स्वरतीनां च–संवित्ते, संपृच्छते, संस्वरते । अर्त्तिश्रुदृशिभ्यश्च–संकरला अस्य समरन्त । संशृणुते, संपश्यते । ३१––कृष्णः चाणूरमाह्वयते ।

३३ अधेः प्रसहने ।
३४ वेः शब्दकर्मणः ।
३५ अकर्मकाच्च ।
३६ सम्माननोत्सञ्जनाचार्यकरण-ज्ञान-भृति-विगणन-व्ययेषु नियः ।
३ कर्तृस्थे चाशरीरे कर्मण ।
३८ वृत्तिसर्गतायनेषु क्रमः ।
३९ उपपराभ्याम् ।
४० आङ उद्गमने ।
४१ वेः पादविहरणे ।
४२ प्रोपाभ्यां समर्थाभ्याम् ।
४३ अनुपसर्गाद्वा ।
४४ अपह्नवे ज्ञः ।
४५ अकर्मकाच्च ।
४६ संप्रतिभ्यामनाध्याने ।
४७ भासनोपसंभाषा-ज्ञान-यत्न-विमत्युपमन्त्रणेषु वदः ।
४८ व्यक्तवाचां समुच्चारणे ।
५० विभाषा विप्रलापे ।
५२ समः प्रतिज्ञाने ।
५३ उदश्चरः सकर्मकात् ।
५४ समस्तृतीयायुक्तात् ।
५५ दाणश्च सा चेच्चतुर्थ्यर्थे ।
५७ ज्ञाश्रुस्मृदृशां सनः ।
५८ नानोर्ज्ञः ।
५९ प्रत्याङ्भ्यां श्रुवः ।
६१ म्रियतेर्लुङ्लिङोश्च ।
६२ पूर्ववत्सनः

३३ शत्रुमधि-कुरुते । ३४ स्वरान् विकुरुते । ३५-विकुर्वते छात्राः । ३६-शास्त्रे नयते (शास्त्रस्यसिद्धान्तं शिष्येभ्यः प्रापयति । दण्डमुन्नयते, माणवकमुपनयते, तत्त्वं नयते (निश्चिनोतीत्यर्थः), कर्मकरानुपनयते (स्वसमीपं प्रापयति), करम् विनयते (राज्ञे देयं परिशोधयति), शतं विनयते- (धर्मार्थे विनियुङ्क्ते) ३७--क्रोधं विनयते·नेह-गडु विनयति । ३८- वृत्तिः=अप्रतिबन्धः, सर्गः=उत्साहः, तायनम्=वृद्धिः--ऋचि क्रमते अस्य बुद्धि.—(न प्रतिहन्यतेः), अध्ययनाय क्रमते (उत्सहते), अस्मिन् शास्त्राणि क्रमन्ते (स्फीतानि भवन्ति)। ३९---उपक्रमते, पराक्रमते । ४०—सूर्यः आक्रमते उदयते इत्यर्थः, (ज्योतिरुद्गमने) अतः नेह--आक्रमति धूमाहर्म्यतलात् । ४१--विहरणम् पादविक्षेपः-साधु विक्रमतेवाजी-नेह-विक्रामतिसन्धिः । ४२--प्रक्रमते, उपक्रमते, (प्रारभते इत्यर्थः) नेह--प्रक्रामति=गच्छति, उपक्रामति=आगच्छति । ४३--क्रामति-क्रमते । ४४--शतमपजानीते=अपलपति । ४५ --सर्पिषो-जानीते=सर्पिषोपायेन प्रवर्तते । ४६--शत संजानीते प्रतिजानीते वा । ४७--शास्त्रे वदते, भृत्यानुपवदते, शास्त्रे वदते, क्षेत्रे वदते, क्षेत्रे विवदन्ते, कुलभार्यामुपवदते । ४८-- सम्प्रवदन्ते--ब्राह्मणाः । ५०--विप्रवदन्ते विप्रवदन्ति वा वैद्याः (विरुद्धं वदन्तीत्यर्थः) ५२--शब्दं नित्यं सगिरन्ते । ५३—धर्ममुच्चरते । ५४—रथेन संचरते । ५५—दास्या संयच्छते । ५७—धर्मं जिज्ञासते, गुरुं शुश्रूषते, नष्टसुस्मूर्षते, नृपं दिदृक्षते । ५८—पुत्रमनुजिज्ञासति । ५९—प्रतिशुश्रूषति, आशुश्रूषति, । ६१— म्रियते, मृषीष्ट । ६२– आसिसिषते,

६२ आम्प्रत्ययवत् कृञोऽनुप्रयोगस्य ।
६६ भुजोऽनवने ।
६८ भीस्म्योर्हेतुभये ।
७२ स्वरितञितः कर्त्रभिप्राये क्रियाफले ।
७४ णिचश्च ।
७६ अनुपसर्गाज्ज्ञः ।
७८ शेषात्कर्तरि परस्मैपदम् ।
७९ अनुपराभ्यां कृञः ।
८० अभिप्रत्यतिभ्यः क्षिपः ।
८१ प्राद्वहः ।
८३ व्याङ्परिभ्यो रमः ।
८४ उपाच्च ।
८६ बुध-युध-नश-जनेङ्प्रुद्रुस्रुभ्यो णेः ।
८७ निगरण-चलनार्थेभ्यश्च ।
९० वा क्यषः ।
९१ द्युद्भ्यो लुङि ।
९२ वृद्भ्यः स्यसनोः ।
९३ लुटि च क्लृपः

इतिलघुपाणिनीये
प्रथमाध्यायस्य
तृतीयः पादः ।

*

शिशयिषते । ६३—ईक्षाञ्चक्रे, एधाञ्चक्रे । ६६—भुङ्क्ते । ६८—जटिलोभीषयते—विस्मापयते वा । ७२—यजति, यजते, करोति, कुरुते । ७४—कटं कारयति-कटं कारयते । ७६—गां जानीते अकर्त्रभिप्राये जानाति । ७८—भवति, पठति । ७९—अनुकरोति, पराकरोति । ८० अभिक्षिपति, प्रतिक्षिपति, अतिक्षिपति । ८१-प्रवहति, ८२-परिमृष्यति । ८३-विरमति, आरमति, परिरमति । ८४—उपरमति (यज्ञदत्तमुपरमति) । ८६—बोधयति पद्मम्, योधयति-काष्ठानि, नाशयति दुःखम्, जनयतिसुखम् । अध्यापयति वेदम् । प्रावयति, द्रावयति, स्रावयति । ८७—निगारयति, भोजयति, चलयति, कम्पयति । ९०—लोहितायति, लोहितायते । ९१—अद्युतत्, अद्योतिष्ट । ९२—वर्त्स्यति, वर्तिष्यते, विवृत्सति विवर्तिषते । ९३—कल्प्ता, कल्प्स्यति, चीक्लृप्सति कल्पिता, कल्पिष्यते, कल्पिषते ।

इति तृतीयः पादः

अथ चतुर्थः पादः

१ आकडारादेका संज्ञा ।
२ विप्रतिषेधे परं कार्यम् ।
३ यूस्त्र्याख्यौ नदी ।
४ नेयङुवङ्स्थानावस्त्री ।
५ वाऽऽमि ।
६ ङिति ह्रस्वश्च ।
७ शेषोध्यसखि ।
८ पतिः समास एव ।
१० ह्रस्वं लघु ।
११ संयोगे गुरु ।
१२ दीर्घं च ।
१३ यस्मात्प्रत्ययविधिस्तदादि प्रत्ययेऽङ्गम् ।
१४ सुप्तिङन्तं पदम् ।
१७ स्वादिष्वसर्वनामस्थाने
१८ यचि भम् ।
२१ बहुषु बहुवचनम् ।
२२ द्व्येकयोर्द्विवचनैकवचने ।
२३ कारके ।
२४ ध्रुवमपायेऽपादानम् ।
२५ भीत्रार्थानां भयहेतुः ।
२६ पराजेरसोढः ।
२७ वारणार्थानामीप्सितः ।
२८ अन्तर्धौ येनादर्शनमिच्छति ।
२९ आख्यातोपयोगे ।
३० जनिकर्तुः प्रकृतिः ।
३१ भुवः प्रभवः ।
३२ कर्मणा यमभिप्रैति स संप्रदानम् ।
३३ रुच्यर्थानां प्रीयमाणः ।
३४ श्लाघह्नुङ्स्थाशपां ज्ञीप्स्यमानः ।
३५ धारेरुत्तमर्णः ।
३६ स्पृहेरीप्सितः ।
३७ क्रुधद्रुहेर्ष्यासूयार्थानां यं प्रति कोपः ।
३८ क्रुधद्रुहोरुपसृष्टयोः कर्म ।
३९ राधीक्ष्योर्यस्य विप्रश्नः ।
४० प्रत्याङ्भ्यां श्रुवः पूर्वस्य कर्ता ।
४१ अनुप्रतिगृणश्च ।
४२ साधकतमं करणम् ।
४३ दिवः कर्म च ।
४४ परिक्रयणे संप्रदानमन्यतरस्याम् ।
४५ आधारोऽधिकरणम् ।
४६ अधिशीङ्स्थासां कर्म ।
४७ अभिनिविशश्च ।
४८ उपान्वध्याङ्वसः ।
४९ कर्तुरीप्सिततमं कर्म ।
५० तथायुक्तं चानीप्सितम् ।
५१ अकथितं च ।
५२ गतिबुद्धिप्रत्यवसानार्थशब्दकर्माकर्मकाणामणिकर्ता स णौ ।
(वा० अकर्मकधातुभिर्योगे देशः कालो भावो गन्तव्योऽध्वा च कर्म इति वाच्यम्)
५३ हृक्रोरन्यतरस्याम् ।
(वा० अभिवादिदृशोरात्मनेपदे वेति वाच्यम्)
५४ स्वतन्त्रः कर्त्ता ।
५५ तत्प्रयोजको हेतुश्च ।
५६ प्राग्रीश्वरान्निपाताः ।
५७ चादयोऽसत्वे ।
५८ प्रादयः ।
५९ उपसर्गाः क्रियायोगे ।
६१ गतिश्च ।

६१ ऊर्यादिच्विडाचश्च ।
६२ अनुकरणं चानितिपरम् ।
६३ आदरानादरयोः सदसती ।
६४ भूषणेऽलम् ।
६५ अन्तरपरिग्रहे ।
६६ कणे-मनसी श्रद्धाप्रतीघाते ।
६७ पुरोऽव्ययम् ।
६८ अस्तं च ।
६९ अच्छ गत्यर्थवदेषु ।
७० अदोऽनुपदेशे ।
७१ तिरोऽन्तर्धौ ।
७२ विभाषा कृञि ।
७३ उपाजेऽन्वाजे ।
७४ साक्षात्प्रभृतीनि च ।
७५ अनत्याधान उरसिमनसी ।
७६ मध्ये पदे निवचने च ।
७७ नित्यं हस्ते पाणावुपयमने ।
७८ प्राध्वं बन्धने ।
७९ जीविकोपनिषदावौपम्ये ।
८० ते प्राग्धातोः ।
८३ कर्मप्रवचनीयाः ।
८४ अनुर्लक्षणे ।
८५ तृतीयार्थे ।
८६ हीने ।
८७ उपोऽधिके च ।
८८ अपपरी वर्जने ।
८९ आङ्मर्यादावचने ।
९० लक्षणेत्थंभूताख्यानभागवीप्सासु प्रतिपर्यनवः ।
९१ अभिरभागे ।
९२ प्रतिः प्रतिनिधिप्रतिदानयोः ।
९३ अधिपरी अनर्थकौ ।
९४ सुः पूजायाम् ।
९५ अतिरतिक्रमणे च ।
९६ अपिः पदार्थसंभावनान्ववसर्गगर्हा-समुच्चयेषु ।
९७ अधिरीश्वरे ।
९८ विभाषा कृञि ।
९९ लः परस्मैपदम् ।
१०० तङानावात्मनेपदम् ।
१०१ तिङस्त्रीणि त्रीणि प्रथम-मध्य-मोत्तमाः ।
१०२ तान्येकवचन-द्विवचन-बहुवचनान्येकशः ।
१०३ सुपः ।
१०४ विभक्तिश्च ।
१०५ युष्मद्युपपदे समानाधिकरणे स्थानिन्यपि मध्यमः ।
१०७ अस्मद्युत्तमः ।
१०८ शेषे प्रथमः ।
१०९ परः संनिकर्षः संहिता ।
११० विरामोऽवसानम् ।

इति लघु पाणिनीये प्रथमाध्यायस्य चतुर्थः पादः

❀

अथः द्वितीयोऽध्यायः

प्रथम पादः

१ समर्थः पदविधिः ।
३ प्राक्कडारात्समासः ।
४ सह सुपा ।
५ अव्ययीभावः ।
६ अव्यय विभक्ति-समीप-समृद्धि-व्यृद्ध्यर्थाभावात्ययासंप्रति-शब्दप्रादुर्भावपश्चाद्यथानुपूर्व्ययौगपद्यसादृश्यसम्पत्तिसाकल्यान्तवचनेषु ।
७ यथाऽसादृश्ये ।
८ यावदवधारणे ।
९ सुप्प्रतिना मात्रार्थे ।
१० अक्षशलाकासंख्याः परिणा ।
११ विभाषा ।
१२ अप-परि-बहिरञ्चवः पञ्चम्या ।
१३ आङ् मर्यादाभिविध्योः ।
१४ लक्षणेनाभिप्रति आभिमुख्ये ।
१५ अनुर्यत्समया ।
१६ यस्य चायामः ।
१७ तिष्ठद्गुप्रभृतीनि च ।
१८ पारे मध्ये षष्ठ्या वा ।
१९ संख्या वंश्येन ।

अथ द्वितीयाध्यायस्य प्रथमः पादः

६— अधिहरि (विभक्तौ), अपदिशम्, कृष्णस्यसमीपम् उपकृष्णम्, उपकृष्णेन मद्राणाम् समृद्धिः, सुमद्रम्, यवनानां व्यृद्धिः, दुर्यवनम्, मक्षिकाणाम् अभावः निर्मक्षिकम्, हिमस्य अत्ययः अतिहिमम्, निद्रा सम्प्रति न युज्यते इति अतिनिद्रम्, हरि शब्दस्य प्रकाशः इति इतिहरि । विष्णोः पश्चात् = अनुविष्णु, अनुरूपम्, अर्थम् अर्थम् प्रति = प्रत्यर्थम्, शक्तिम् अनतिक्रम्य = यथाशक्ति, हरेः सादृश्यम् = सहरि, ज्येष्ठस्य आनुपूर्व्येण = अनुज्येष्ठम् चक्रेण युगपत् = सचक्रम्, सदृशः सख्या ससखि, क्षत्राणां सम्पत्तिः सक्षत्रम्, तृणमपि अपरित्यज्य = सतृणम्, अग्निग्रन्थपर्यन्तमधीते = साग्नि । ७ यथा वृद्धम्, सादृश्येतु यथाहरि स्तथाहरिः । ८ यावन्तः श्लोकाः तावन्तः अच्युतप्रणामाः = यावच्छलोकम्, यावदमत्रं ब्राह्मणानामन्त्रयस्व । ९—शाकस्य प्रति = शाकप्रति । १० अक्षेन विपरीतं वृत्तम् = अक्षपरि, शलाकापरि, एकपरि । १२ अप विष्णु संसारः, अपविष्णोः बहिर्वनम्, बहिर्वनात् । प्राग्वनम्, प्राग्वनात् १३—आमुक्ति संसारः, आमुक्तेः, आबालम् हरिभक्तिः, आबालेभ्यः । १४—अभ्यग्नि शलभाः पतन्ति, अग्निमभि । प्रत्यग्नि अग्निं प्रति । १५—अनुवनमशनिर्गतः । १६—अनुगङ्गं वाराणसी, गङ्गायाः अनु । १७—तिष्ठन्त्यो गावो यस्मिन् स तिष्ठद्गु गोदोहन कालः । १८ - पारेगङ्गम्—गङ्गापारम्, गङ्गायाः पारम् । मध्येगङ्गम्—गङ्गामध्यम्—गङ्गायाः मध्यम् । १९—द्वौ मुनी व्याकरणस्य वंश्यौ =

२० नदीभिश्च ।
२१ अन्यपदार्थे च संज्ञायाम् ।
२२ तत्पुरुषः ।
२३ द्विगुश्च । ।
२४ द्वितीया श्रितातीत-पतित-गतात्यस्त प्राप्ता-पन्नैः ।
२६ खट्वा क्षेपे ।
२९ अत्यन्तसंयोगे च ।
३० तृतीया तत्कृतार्थेन गुणवचनेन ।
३१ पूर्व-सदृश-समोनार्थ कलह-निपुण-मिश्र श्लक्ष्णैः ।
३२ कर्तृकरणे कृता बहुलम् ।
३३ कृत्यैरधिकार्थवचने ।
३४ अन्नेन व्यञ्जनम् ।
३५ भक्ष्येण मिश्रीकरणम् ।
३६ चतुर्थी तदर्थार्थ-बलि-हित-सुख-रक्षितैः ।
३७ पञ्चमी भयेन ।
४० सप्तमी शौण्डैः ।
४१ सिद्ध-शुष्क-पक्व-बन्धैश्च ।
४३ कृत्यैर्ऋणे ।
४८ पात्रे-समितादयश्च ।

द्विमुनि व्याकरणस्य । त्रिमुनि ।
विद्यातद्वताम् अभेद विवक्षायान्तु त्रिमुनि व्याकरणम् । २० सप्त गङ्गम्, द्वियमुनम्, पञ्चनदम्, सप्तगोदावरम् । २१—उन्मत्तगङ्गम् नाम देशः लोहितगङ्गम् । २३—पञ्चराजी, द्वयहः, पञ्चगवम् । २४—कष्टं श्रितः= कष्टश्रितः, कान्तारम् अतीतः=कान्तारातीतः नरकम् पतितः नरकपतितः, ग्रामंगतः ग्रामगतः इत्थमेव सुखप्राप्तः, सुखापन्नः । वार्त्तिकः—गम्यादीनामुपसख्यानम्-ग्रामं गमी=ग्राम गमी, अन्नम् बुभुक्षुः=अन्नबुभुक्षुः । २६-खट्वारूढो जाल्मः । २९—मुहूर्त्तम् सुखम्=मुहूर्त्त सुखम् । ३०—शकुलया खण्डः= शकुलाखण्डः, धान्येन अर्थः=धान्यार्थः । ३१—मासपूर्वः, मातृसदृशः, पितृसमः, माषोनम् । ३२—हरिणा त्रातः=हरित्रातः, नखैः भिन्नः=नखभिन्नः । क्वचिन्न-दात्रेण लूनवान् । ३३—वातच्छेद्यं तृणम्, काकपेयानदी । ३४—दध्ना ओदनः दध्योदनः । ३५—गुडेन धान्याः=गुडधान्याः । ३६-यूपाय दारु=यूपदारु । नेह-रन्धनाय स्थाली । वर्तिकः—(अर्थेन नित्यसमासः विशेष्य लिङ्गताच) द्विजाय अयम्=द्विजार्थः सूपः, द्विजार्था जवागूः, द्विजार्थम् पयः । अविग्रहो अस्वपदविग्रहोवा नित्य समासः । भूत बलिः, गोहितम्, गोरक्षितम् । ३७—चोराद् भयम्=चोरभयम्—वार्तिकः भयभीतभीतिभीभिरिति वाच्यम्-वृकेन भीतिः, वृकभीः । ४०— अक्षेषु शौण्डः=अक्षशौण्डः, ईश्वराधीनः (अखडक्षेतिखः । ४१—सांकाश्यसिद्धः, आतपशुष्कः स्थालीपक्वः, चक्रबन्धः । ४३—मासे देयम्=मासदेयम्, वत्सरे देयम् । पूर्वाह्ने ज्ञेयम् । (ऋण-

४९ पूर्वकालैक सर्व-जरत्-पुराण-नव केवलाः समानाधिकरणेन ।

५० दिक्सख्ये संज्ञ याम् ।

५१ तद्धितार्थोत्तरपद-समाहारे च ।

५२ संख्यापूर्वो द्विगुः ।

५३ कुत्सितानि कुत्सैनः ।

५४ पापाणके कुत्सितैः

५५ उपमानानि सामान्यवचनैः ।

५६ उपमित व्याघ्रादिभिःसामान्या-प्रयोगे ।

५७ विशेषणं विशेष्येण बहुलम् ।

५८ पूर्वापर-प्रथम-चरम-जघन्य समानमध्य-मध्यम-वीराश्च ।

६० क्तेन नञ्विशिष्टेनानञ् ।

६१ सन्महत्परमोत्तमोत्कृष्टाः पूज्यमानैः

६२ वृन्दारक नाग कुञ्जरैः पूज्यमानम् ।

६४ किं क्षेपे ।

६५ पोटा-युवति-स्तोक-कतिपय-गृष्टि-धेनुवशा-वेहद्-बष्कयणीप्रवक्तृ-श्रोत्रियाध्यापक-धूर्तैर्जातिः ।

६७ वर्णो वर्णेन ।

७२ मयूरव्यंसकादयश्च ।

इति लघु पाणिनीये द्वितीयस्याध्यायस्य प्रथमः पादः ।

ग्रहणमावश्यकोपलक्षणार्थम्) । ४८--पात्रेसमिताः गेहे, शूरः, गेहे नर्दी । ४९--पूर्वं स्नातः पश्चादनुलिप्तः=स्नातानुलिप्तः, एकनाथः, सर्वयाज्ञिकः, जरन्नैयायिकाः, पुराणमीमांसकाः, नवपाठकाः, केवलवैयाकरणाः । ५०--पूर्वेषुकामशमी, सप्तर्षयः । नेह उत्तराः-वृक्षाः, पञ्च ब्राह्मणाः । ५१-पूर्वस्याः-शालायां भवः=पौर्वशालः, पूर्वशालाप्रियः, षाण्मातुरः । वार्त्तिकः--द्वन्द्व तत्पुरुषयोरुत्तरपदे नित्य समास वचनम्-पञ्चगवम्, पञ्चकपालः । ५३--वैयाकरणखसूचिः, मीमांसक दुर्दुरूढः । ५४-पापनापितः, अणक कुलालः । ५५-घनइव श्यामः । घनश्यामः, शस्त्रीश्यामा । ५६-पुरुषो व्याघ्र इव=पुरुष व्याघ्रः, नृसोमः । ५७-नीलमुत्पलम्=नीलोत्पलम् । कृष्णसर्पः । क्वचिन्न-रामो जामदग्न्यः । ६०--कृतं च तदकृतं च=कृताकृतम । वार्त्तिकः--शाकपार्थिवादीनां सिद्धय उत्तरपदलोपस्योपसंख्यानम् शाकप्रियः पार्थिवः=शाकपार्थिवः । ६१--सद्वैद्यः, महावैयाकरणः, परमपुरुषः, उत्तमपुरुषः, उत्कृष्टपुरुषः । ६४--किराजा योनरक्षति । ६९--कृष्णसारङ्गः । ७२--मयूरो व्यंसकः=मयूरव्यंसकः, उदक्च अवाक्च=उच्चावचम्, निश्चितं च प्रचितं च=निश्चप्रचम् । नास्ति किंचन यस्य=अकिंचनः । वार्त्तिकः--आख्यातमाख्यातेन क्रियासातत्ये-अश्नीत पिबत इत्येवं सततं यत्र अभिधीयते सा=

अथ द्वितीय पादः

१ पूर्वापराधरोत्तरमेकदेशिनैकाधिकरणे ।

२ अर्द्धं नपुंसकम् ।

३ द्वितीयतृतीयचतुर्थतुर्याण्यन्यतरस्याम् ।

४ प्राप्तापन्ने च द्वितीयया ।

५ कालाः परिमाणिना ।

६ नञ् ।

७ ईषदकृता ।

८ षष्ठी ।

९ याजकादिभिश्च ।

१० न निर्द्धारणे ।

११ पूरणगुण-सुहितार्थ-सदव्यय-तव्य-समानाधिकरणेन ।

१२ क्तेन च पूजायाम् ।

अश्नीतपिवता । पचनभृज्जना, खादतमोदता । वार्त्तिकः—एहिडादयोऽन्यपदार्थे-एहिडेति-यस्मिन् कर्मणि तत्=एहीडम्, एहिपचम्, उद्धरोत्सृजा, उद्धमविधमा । वार्त्तिकः—जहिकर्मणा बहुलमाभीक्ष्ण्ये कर्त्तारम्चाभिदधाति जहि जोडः, जहिस्तम्बः, नास्ति कुतो भय यस्य सः=अकुतोभयः, अन्यो राजा=राजान्तरम्. चिदेव चिन्मात्रम् ।

इति द्वितीयाध्याये प्रथमः पादः ।

अथ द्वितीयाध्यायस्य द्वितीयः पादः

षष्ठी समासापवादः

१—पूर्वं कायस्य=पूर्वकायः, अपरकायः, अधरकायः उत्तरकायः मध्याह्नः सायाह्नः, मध्यरात्रः । —अर्धं पिप्पल्याः=अर्ध पिप्पली । ३—द्वितीयं भिक्षायाः=भिक्षाद्वितीयम्, द्वितीयभिक्षा । ४—प्राप्तो जीविकाम्=प्राप्तजीवकः, जीविकाप्राप्तः, प्राप्तजीविका । ५—मासो जातस्य यस्य स मासजातः, द्व्हजातः । ६ न ब्राह्मणः=अब्राह्मणः । ७—ईषत् पिङ्गलः, ईषद् रक्तम् । ८—राज्ञः पुरुषः=राजपुरुषः । वार्त्तिकः—"कृद्योगा च षष्ठी समस्यते"—इध्मस्य व्रश्चनः=इध्मव्रश्चनः । ९—ब्राह्मण-याजकः देव-पूजकः । १०—नृणां द्विजः श्रेष्ठः । वार्त्तिकः—"प्रतिपदविधाना षष्ठी न समस्यते"—सर्पिषो ज्ञानम् । ११—सतां षष्ठः, काकस्य कार्ष्ण्यम्, ब्राह्मणस्य शुक्लाः दन्ताः । नेह-बुद्धिमान्द्यम्, अर्थगौरवम्, द्विजस्य कुर्वन् कुर्वाणोवा, ब्राह्मणस्य कृत्वा, ब्राह्मणस्य कर्तव्यम्-ब्राह्मणकर्त्तव्यम्, तक्षकस्य-सर्पस्य । १२—राज्ञां मतः, बुद्धः, पूजितो वा । १३—इदम् एषाम् आसितम्, गतं

१३ अधिकरणवाचिना च ।	२५ संख्ययाव्ययासन्नादूराधिकसंख्या संख्येये ।
१४ कर्मणि च ।	२६ दिङ् नामान्यन्तराले ।
१५ तृजकाभ्यां कर्तरि ।	२७ तत्र तेनेदमिति सरूपे ।
१६ कर्तरि च ।	२८ तेन सहेति तुल्ययोगे ।
१८ कु-गति-प्रादयः ।	२९ चार्थे द्वन्द्वः ।
१९ उपपद-मतिङ् ।	३० उपसर्जनं पूर्वम् ।
२२ क्त्वा च ।	३१ राजदन्तादिषु परम् ।
२३ शेषो बहुव्रीहिः ।	३२ द्वन्द्वेघि ।
२४ अनेक मन्यपदार्थे ।	

भुक्त्वा । १४- आश्चर्यो गवां दोहः अगोपेन । १५--अपां स्रष्टा, ओदनस्य पाचकः, शेष पष्ठ्यातु भवत्येव-त्रिभुवनविधाता । १६--भवतः शायिका । १८--कुत्सितः पुरुषः=कुपुरुषः, सुपुरुषः । वार्त्तिकः--'प्रादयो गताद्यर्थे प्रथमया'-प्रगतः आचार्यः=प्राचार्यः । 'अत्यादयः क्रान्ताद्यर्थे द्वितीयया'-अतिक्रान्तो मासः=अतिमासः । 'अवादयः क्रुष्टाद्यर्थे तृतीयया'-अवक्रुष्टः कोकिलया=अवकोकिलः । 'पर्यादयो ग्लानाद्यर्थे चतुर्थ्या' परिग्लानः--अध्ययनाय=पर्यध्ययनः अल कुमार्यै=अलंकुमारिः । 'निरादयः क्रान्ताद्यर्थे पञ्चम्याः' निष्क्रान्तः कोशाम्ब्याः=निष्कौशाम्बिः । 'इवेन समासो विभक्त्यलोपश्च'-वागर्थाविव । 'कर्मप्रवचनीयानां प्रतिषेधः'--वृक्षंप्रति । १९--कुम्भकारः । वार्त्तिकः-'गतिकारकोपपदानां कृद्भिः सह समासवचनं प्राक्सुबुत्पत्तेः । व्याघ्री, अश्वक्रीती, कच्छपी । २२-- उच्चैःकृत्य, २४ - प्राप्तम् उदकम् यं स प्राप्तोदको ग्रामः, ऊढरथोऽनड्वान्, उपहृतपशूरुद्रः, उद्धृतौदना स्थाली, वीरपुरुषको ग्रामः । वार्त्तिकः-प्रादिभ्यो धातुजस्य वाच्यो वा चोत्तरपदलोपः'-प्रपतितपर्णः, प्रपर्णः । 'नञोऽस्त्यर्थानां वाच्योवाचोत्तरपदलोपः'-अविद्यमानपुत्रः, अपुत्रः, अस्तिक्षीरा । २५--दशानां समीपे ये सन्ति ते उपदशाः द्वौ वा त्रयो वा=द्वित्राः । द्विरावृत्ता दश=द्विदशाः विंशतिरित्यर्थः । २६--दक्षिणस्याः पूर्वस्याश्च अन्तरालम्=दक्षिणपूर्वा, उत्तरपूर्वा । २७--केशेषु केशेषु गृहीत्वा इद युद्धं प्रवृत्तम्=केशा केशी, कचाकचि । दण्डैश्च दण्डैश्च प्रहृत्य इदं युद्धं प्रवृत्तम्=दण्डादण्डि मुष्टीमुष्टि बाहूबाहवि । २८--पुत्रेण सह=सपुत्रः, सहपुत्रोवा सकर्मकः । २९--धव खदिरौ, संज्ञापरिभाषी, होतृपोतृ नेष्टोद्गातारः । ३०--कण्ठश्रितः, शंकुला-खण्डः । ३१--दन्तानां राजा=राजदन्तः । दम्पती, जम्पती, जायापती । ३२--हरिश्च

३३ अजीघदन्तम् ।
३४ अल्पाच्तरम् ।
३५ सप्तमी-विशेषणे बहुव्रीहौ ।
३६ निष्ठा ।
३७ वाऽऽहिताग्न्यादिषु ।
३८ कडाराः कर्मधारये ।

इति लघु पाणिनीये द्वितीयस्याध्यायस्य द्वितीयः पादः ।

❀

अथ तृतीयः पादः

१ अनभिहिते ।
२ कर्मणि द्वितीया ।
४ अन्तरान्तरेण युक्ते ।
५ कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे ।
६ अपवर्गे तृतीया ।
८ कर्मप्रवचनीययुक्ते द्वितीया ।
१० पञ्चम्यापाङ्परिभिः ।
११ प्रतिनिधिप्रतिदाने च यस्मात् ।
१२ गत्यर्थकर्मणि द्वितीयाचतुर्थ्यौ चेष्टायामनध्वनि ।

हरश्च = हरिहरौ । ३३—ईशकृष्णौ । ३४—शिवकेशवौ । वार्तिकौ-'अभ्यर्हितञ्च'—तापसपर्वतौ 'संख्याया अल्पीयस्याः'—द्वित्राः । ३५—कण्ठेकालः, चित्रगुः । ३६—कृतकृत्यः, कृतकटः, पीतोदकः ।

इति द्वितीयाध्याये द्वितीयः पादः

२—कटं करोति । हरिंभजति । अभिहितेतु प्रथमैव-कटः क्रियते । हरिर्भज्यते । कृता-हरिं सेवितवान् । हरिः सेवितः क्वचिद् अव्यययोगेन विपर्ययोऽपि संवर्ध्य, स्वयं छेत्तुमसांप्रतम् । क्रमादमुं नारद इत्यबोधि सः । वार्तिउभसर्वतसोः कार्या, धिगुपर्यादिषुत्रिषु । द्वितीयाम्रेडितान्तेषु, ततोऽन्यत्रापि दृश्यते ॥ उभयतः कृष्णं गोपाः । सर्वतः कृष्णम् । धिक् कृष्णाभक्तम् । उपर्युपरि लोकं हरिः । अध्यधिलोकम् । अधोधोलोकम् । अभितः परितः समया निकषा हा प्रति योगेऽपि—अभितः कृष्णम् । परितः कृष्णम् । ग्रामं समया निकषा लङ्काम् । हा कृष्णाभक्तम् । बुभुक्षितं न प्रति भाति किञ्चित् । ४—अन्तरा त्वां मांच हरिः । अन्तरेण हरिं न सुखम् । ५—मासम् अधीते । मासं गुडधानाः । क्रोशं कुटिला नदी । क्रोशं गिरिः । क्रोशमधीते । ६—अह्ना क्रोशेन वा अनुवाकोऽधीतः । १२—ग्रामं ग्रामाय वा गच्छति । नेह-पन्थानं गच्छति गन्त्राधिष्ठिते ऽध्वन्येवायं निषेधः, नेह उत्पथेन पथे गच्छति ।

१३ चतुर्थी सम्प्रदाने ।
१५ तुमर्थाच्च भाववचनात् ।
१६ नमः स्वस्ति-स्वाहा-स्वधाऽलं-वषड् योगाच्च ।
१७ मन्य-कर्मण्यनादरे विभाषाऽप्राणिषु ।
१८ कर्तृ-करणयोस्तृतीया ।
१९ सह युक्तेऽप्रधाने ।
२० येनाङ्गविकारः
२३ हेतौ ।
२६ षष्ठी हेतुप्रयोगे ।
२७ सर्वनाम्नस्तृतीया च ।
२८ अपादाने पञ्चमी ।
२९ अन्याराादितरर्तेदिक्शब्दाञ्चूत्तरपदाजाहियुक्ते ।
३२ पृथग्-विना-नानाभिस्तृतीयाऽन्यतरस्याम् ।
३६ सप्तम्यधिकरणे च ।
३७ यस्य च भावेन भावलक्षणम् ।

१३-विप्राय गां ददाति, पत्येशेते तादर्थ्ये चतुर्थी वाच्या मुक्तये हरिं भजति (क्लृपि सम्पद्यमाने च) भक्ति र्ज्ञानाय कल्पते- सपद्यते-जायते (उत्पातेन ज्ञापिते च) वाताय कपिला विद्युत्. आतपायाति लोहिनी । पीता वर्षाय विज्ञेया, दुर्भिक्षाय सिता भवेत् । (हितयोगे च) ब्राह्मणाय हितम् । १६- हरये नमः । (उपपद विभक्तेः कारकविभक्तिर्बलीयसी, नमस्करोतिदेवान् । प्रजाभ्यः स्वस्ति । अग्नये स्वाहा पितृभ्यः स्वधा । अलमिति पर्याप्त्यर्थ । ग्रहणम् । दैत्येभ्यो हरिरलम् प्रभुः-समर्थः-शक्तः । प्रभ्वादि योगेषष्ठ्यपि । प्रभुर्बुभूषुर्भुवनत्रयस्य । वषड् इन्द्राय । १८—रामेण बाणेन हता वाली । (प्रकृत्यादिभ्य उपसंख्यानम्) प्रकृत्या चारुः । प्रायेण याज्ञिकः । गोत्रेण गार्ग्यः । द्विद्रोणेन धान्यं क्रीणाति । सुखेन दुःखेन वा याति । १९--पुत्रेण सह साकं सार्द्धं समं वा गतः पिता । २०--अक्ष्णा काणः । पादेन खञ्जः । शिरसा खल्वाटः । २३--दण्डेन घटः । धनेन कुलम् । पुण्येन दृष्टो हरिः । फलमपीह हेतुः । अध्ययनेन वसति गम्यमानापि क्रियाकारक विभक्तीनां प्रयोजिका । अलं श्रमेण । श्रमेण साध्यं नास्ति । शतं शतेन वा परिच्छिद्य वत्सान् पाययति पयः । (अशिष्ट व्यवहारे दाणः प्रयोगे चतुर्थ्यर्थे तृतीया) दास्या संयच्छते, नेह भार्यायै संयच्छति । २८--ग्रामादायाति । २९—अन्य इतरो भिन्नो वा कृष्णात् । आराद् वनात् ऋते कृष्णम् पूर्वो ग्रामात् । चैत्रात्पूर्वः फाल्गुनः, अवयवियोगे तु पूर्वं कायस्य । प्राक् प्रत्यग् वा ग्रामात् दक्षिणा दक्षिणाहि वा ग्रामात् । प्रभृत्यर्थयोगे पञ्चमी । भवात् प्रभृति आरभ्य वा सेव्योहरिः, ३६-कटे आस्ते । स्थाल्यांपचति । मोक्षे इच्छास्ति. सर्वं स्मन्नात्मास्ति । वनस्य दूरे अन्तिके वा । निमित्तात् कर्मयोगे । दन्तयोर्हन्ति कुञ्जरम् । चर्मणि द्वीपिनं हन्ति, केशेषु चमरीं हन्ति । सीम्नि पुष्कलकोहतः । ३७--गोषु दुह्यमानासु गतः । दुग्धास्वागतः ।

३८ षष्ठी चानादरे ।
४१ यतश्च निर्धारणम् ।
४२ पञ्चमी विभक्ते ।
४५ नक्षत्रे च लुपि ।
४६ प्रातिपदिकार्थलिङ्ग परिमाणवचनमात्रे प्रथमा ।
४७ सम्बोधने च ।
४९ एक वचनं सम्बुद्धिः ।
५० षष्ठी शेषे ।
६४ कृत्वोऽर्थ प्रयोगे कालेऽधिकरणे ।
६५ कर्तृकर्मणोः कृति ।
६६ उभय प्राप्तौ कर्मणि ।
६७ क्तस्य च वर्तमाने ।
६८ अधिकरणे वाचिनश्च ।
६९ न लोकाव्यय निष्ठाखलर्थतृनाम् ।
७१ कृत्यानां कर्तरिवा ।
७२ तुल्यार्थै रतुलोपमाभ्यां तृतीयान्यतरस्याम् ।
७३ चतुर्थी चाशिष्यायुष्य मद्रभद्र कुशलसुखार्थहितैः ।

इति तृतीयः पादः

३८—रुदति रुदतो वा प्राव्राजीत् । रुदन्तं पुत्रादिकमनादृत्य सन्यस्तवानित्यर्थः । ४१—नृणां नृषु वा ब्राह्मणः श्रेष्ठः । गवां गोषु वा कृष्णा बहुक्षीरा । छात्राणां छात्रेषु वा वाचस्पतिः पटुः । ४२—माथुराः पाटलिपुत्रकेभ्य आढ्यतराः । ४५—मूलेनावाहनम् देव्याः श्रवणेन विसर्जनम् । मूले श्रवणे वा । ४६—उच्चैः, नीचैः, कृष्णः, श्रीः, ज्ञानम्, तटः, तटी, तटम् । द्रोणोव्रीहिः, एकः द्वौ, बहवः । ४७—हे राम, हे रामौ, हे रामाः । ४९—हे राम, हे हरे, हे साधो, हे लते, हे नदि । ५०—राज्ञः पुरुषः, पशोः पादः, पितुः पुत्रः । कर्मादीनामपि सम्बन्धमात्र विवक्षायां षष्ठ्येव । सतां गतम् । सर्पिषो जानीते । मातुः स्मरति । इत्यादयः । ६४—पञ्चकृत्वोऽह्नो भुंक्ते । मासस्य द्विरधीते । ६५—कृष्णस्य कृतिः । जगतः कर्ता कृष्णः । ६६—आश्चर्यो गवां दोहोऽगोपेन । ६७—राज्ञां मतो बुद्धः पूजितो वा । ६८—इदमेषामासितम् शयितं गतं भुक्तं वा । ६९—कुर्वन् कुर्वाणो वा हरिः । हरिं दिदृक्षुः । दैत्यान् घातुकः । जगत् सृष्ट्वा । सुखं कर्तुम् । विष्णुना दैत्या हताः । विष्णुः दैत्यान् हतवान् । ईषत्करः प्रपञ्चो हरिणा । ७१—मया मम वा सेव्यो हरिः । ७२—तुल्यः समः सदृशो वा कृष्णस्य कृष्णेन वा । ७३—आयुष्यं, चिरजीवितं, मद्रं, भद्रं, कुशलं, निरामयं, सुखं, शम्, अर्थः, प्रयोजनं, हितं, पथ्यं वा कृष्णाय कृष्णस्य वा भूयात् ।

इति द्वितीयाध्यायस्य तृतीयः पादः ।

अथ तृतीयाध्यायस्य प्रथमः पादः

१—प्रत्ययः । २—परश्च । पञ्चमाध्मायान्तं यावत् अधिक्रियते ।

५—गुप्तिज्किद्भ्यः सन् । जुगुप्सते । तितिक्षते । चिकित्सति ।

६—मान्बधदान्शान्भ्यो दीर्घश्चाभ्यासस्य । मीमांसते । बीभत्सते । दीदांसते । शीशांसते ।

७—धातोः कर्मणः समानकर्तृकादिच्छायां वा । पठितुमिच्छति पिपठिषति । कर्त्तुमिच्छति चिकीर्षति । भवितुमिच्छति बुभूषति ।

शैशिकान्मतुवर्थीयाच्छैशिको मतुवर्थिकः ।

सरूपः प्रत्ययोनेष्टः सन्नन्तान्न सनिष्यते ।।

नेह—चिकीर्षितुमिच्छति । स्वार्थे सन्नन्तात्तुस्यादेव मीमांसिषते । जुगुप्सिषते ।

८—सुप आत्मनः क्यच् । आत्मनः पुत्रमिच्छति पुत्रीयति वा । (मान्त प्रकृतिकादव्ययाच्च न) इदमिच्छति । किमिच्छति । स्वरिच्छति ।

९—काम्याच्च । आत्मनः पुत्रमिच्छति, पुत्रकाम्यति । वस्त्रकाम्यति । यशस्काम्यति । सर्पिष्काम्यति किं काम्यति । स्वः काम्यति ।

१०—उपमानादाचारे । पुत्रमिवाचरति पुत्रीयतिच्छात्रान् । विष्णूयति द्विजम् । (अधिकरणाच्चेतिवाच्यम्) प्रासादीयति कुट्यां भिक्षुः । कुटीयति प्रासादे ।

११—कर्तुः क्यङ् सलोपश्च । सलोपोव्यवस्थितः । (ओजसोऽप्सरसो नित्यमितरेषां विभाषया) कृष्ण इवाचरति कृष्णायते । ओजायते । अप्सरायते । यशायते । यशस्यते । विद्वस्यते । (प्रत्ययोत्तरपदयोश्च) त्वद्यते । मद्यते । युष्मद्यते । अस्मद्यते । (सर्वप्रातिपदिकेभ्यः क्विब्वा वक्तव्यः) कृष्णाति-कृष्णायते । मालाति-मालायते । कविरिवाचरति कवयति । पितेवाचरति पितरति ।

१३—लोहितादिडाज्भ्यः क्यष् । लोहितायति, लोहितायते । पटपटायति, पटपटायते ।

१८—**कष्टाय क्रमणे**। कष्टाय क्रमते कष्टायते।

१९—**शब्दवैरकलहाभ्रकण्वमेघेभ्यः करणे** शब्दं करोति शब्दायते इत्थमेव वैरायते, कलहायते, अभ्रायते, कण्वायते, मेघायते।

२०—**नमोवरिवश्चित्रङः क्यच्**। नमस्यति देवान्। वरिवस्यति गुरून्। चित्रीयते।

२१—**मुण्डमिश्रश्लक्ष्णलवणव्रतवस्त्रहलकलकृततूस्तेभ्योणिच्**। मुण्डं करोति मुण्डयति। मिश्रयति। श्लक्ष्णयति। लवणयति। (व्रताद्भोजनतन्निवृत्त्योः) व्रतयति। (हलादिभ्यो ग्रहणे) हलिं कलिं वा गृह्णाति हलयति, कलयति (वस्त्रात्समाच्छादने) संवस्त्रयति।

२२—**धातोरेकाचो हलादेः क्रियासमभिहारे यङ्**। पुनः पुनः अतिशयेन वा भवति बोभूयते। पुनः पुनः पचति पापच्यते। यायज्यते। जाज्वल्यते। देदीप्यते।

२३—**नित्यं कौटिल्ये गतौ**। कुटिलं व्रजति वाव्रज्यते। चङ्क्रम्यते। जङ्गम्यते।

२४—**लुपसदचरजपजभदहदशगृभ्यो भावगर्हायाम्**। गर्हितं लुम्पति, लोलुप्यते। सासद्यते। चञ्चूर्यते। जञ्जप्यते। जञ्जभ्यते। दंदह्यते। दंदश्यते। जेगिल्यते।

२५—**सत्यापपाशरूपवीणातूलश्लोकसेनालोमत्वचवर्मवर्णचूर्णचुरादिभ्यो णिच्**। सत्यं करोति आचष्टे वा सत्यापयति। पाशयति। रूपं पश्यति, रूपयति। वर्णयति। चोरयति। कथयति। गणयति। अवलोकयति। भक्षयति। बन्धयति।

२६—**हेतुमति च**। भवन्तं प्रेरयति इति भावयति। ओदनं पचन्तं प्रेरयति इति ओदनं पाचयति। कटं कारयति। (तत्करोति तदाचष्टे) (प्रातिपदिकाद्धात्वर्थे बहुलमिष्ठवच्च)। पटुमाचष्टे पाटयति। हस्तयति।

२७—**कण्ड्वादिभ्यो यक्**। कण्डूयति। कण्डूयते। वल्गूयति।

२८—**गुपूधूपविच्छपणिपनिभ्य आयः**। गोपायति। धूपायति। विच्छायति। पणायति। पनायति। स्तुतौ व्यवहारे तु पणते। पेणे। पणिता। पाणिष्यते।

३०—**कमेर्णिङ्**। कामयते।

३१—आयादय आर्धधातुकेवा । गोपायिता-गोपिता गोप्ता । कामयिता-कमिता ।

३२—सनाद्यन्ता धातवः । पिपठिषति । पुत्रीयति । पुत्रकाम्यति ।

३३—स्यतासी लृलुटो । भविष्यति । अभविष्यत् । श्वो भविता ।

३५—कास्प्रत्ययादाममंन्त्रे लिटि । (कास्यनेकाच इति वाच्यम्) काशाञ्चक्रे । दरिद्रांचकार ।

३६—इजादेश्च गुरुमतोऽनृच्छः । ईहाञ्चक्रे । ऊहाञ्चक्रे । एधाञ्चक्रे । ऋच्छेस्तु आनर्च्छ । (ऊर्णोतेराम्नेति वाच्यम्) ऊर्णुनाव ।

३७—दयायासश्च । दयाञ्चक्रे । पलायाञ्चक्रे । आसाञ्चक्रे ।

३८—उषविदजागृभ्योऽन्यतरस्याम् । ओषाञ्चकार-उवोष । विदाञ्चकार-विवेद । जागराञ्चकार-जजागार ।

३९—भीह्रीभृहुवां श्लुवच्च । बिभयाञ्चकार बिभाय । जिह्रयाञ्चकार, जिह्राय । बिभराञ्चकार बभार । जुहवाञ्चकार-जुहाव ।

४०—कृञ्चानु प्रयुज्यते लिटि । एधाञ्चक्रे । एधाम्बभूव । एधामास ।

४१—विदाङ्कुर्वन्त्वित्यन्यतरस्याम् । विदाङ्कुर्वन्तु, विदन्तु ।

४३—च्लिलुङि । ४४—च्लेः सिच् । अकार्षित् । अभूत् । अदात् । अपात् । अद्राक्षीत् । आतीत् ।

४४—च्लेः सिच् । अकार्षीत्, अहार्षीत् ।

(स्पृशमृशकृषतृपदृपां सिज् वा वाच्यः) अस्प्राक्षीत्-अस्पार्क्षीत् । अस्पृक्षत् । अतर्पीत् । अत्राप्सीत् अतार्प्सीत् । अतृपत् । अदर्पीत् । अद्राप्सीत्-अदार्प्सीत् । अदृपत् ।

४५—शल इगुपधादनिटः क्सः । अलिक्षत् । अधुक्षत् ।

४६—श्लिष आलिङ्गने । आश्लिक्षत् कन्यां माता । अन्यत्र आश्लिषज्जतु काष्ठम् ।

४७—न दृशः : (इरितोवा) इत्यङ् सिचौ भवतः—अदर्शत्-अद्राक्षीत् ।

४८—णिश्रिद्रुस्रुभ्यः कर्त्तरिचङ् । अशीभवत् । अचीकरत् । अशिश्रियत् । अदुद्रुवत् । असुस्रुवत् । (कमेरुपसंख्यानम्) अचकमत् णिङ्पक्षेतु सन्वद्भावः-अचीकमत् ।

४९—विभाषाधेट्श्व्योः । अदधत्-अधात्-अधासीत् । अशिश्वियत्-अश्वत्-अश्वयीत् ।

५२—अस्यतिवक्तिख्यातिभ्योऽङ् । पर्यास्थत । अवोचत् । आख्यत् ।

५३—लिपिसिचिह्वश्च । अलिपत् । असिचत् । अह्वत् ।

५४—आत्मनेपदेष्वन्यतरस्याम् । अलिपत-अलिप्त । असिचत-असिक्त । अह्वत-अह्वास्त ।

५५—पुषादिद्युताद्य्लृदितः परस्मैपदेषु । पुषादिर्दिवाद्यन्तर्गणो गृह्यते न भ्वादिक्र्याद्यन्तर्गणः । अपुषत् । अद्युतत् । अद्युतत् । अश्वितत् । अगमत् । अशकत् । आत्मनेपदे तु अद्योतिष्ट । अश्वेतिष्ट ।

५६—सर्तिशास्त्यर्तिभ्यश्च । असरत् । अशिषत् । आरत् ।

५७—इरितोवा । अभिदत् । अभैत्सीत् । अच्छिदत् । अच्छैत्सीत् । अच्छिदत् । अच्छैत्सीत् । आत्मनेपदे तु अभित्त । अच्छित्त ।

५८—जॄस्तम्भुम्रुचुम्लुचुग्रुचुग्लुचुग्लुञ्चुश्विभ्यश्च । अजरत्-अजारीत् । अस्तभत्-अस्तम्भीत् । अम्रुचत्-अम्रोचीत् । अग्रुचत्-अग्रोचीत् । अम्लुचत्-अम्लोचीत् । अग्लुचत्-अग्लुञ्चीत् । अश्वत् अशिश्वयत्-अश्वयीत् ।

६०—चिण् ते पदः । अपादि ।

६१—दीपजनबुधपूरितायिप्यायिभ्योऽन्यतरस्याम् । अदीपि-अदीपिष्ट । अजनि-अजनिष्ट । अबोधि-अबुद्ध । अपूरि-अपूरिष्ट । अतायि-अतायिष्ट । अप्यायि-अप्यायिष्ट ।

६२—अचः कर्मकर्त्तरि । अकारि-अकृत कटः स्वयमेव । अलावि-अलाविष्ट ।

६३—दुहश्च । अदोहि-अदुग्ध गौः स्वयमेव ।

६४—न रुधः । अवारुद्ध गौः स्वयमेव ।

६५—तपोऽनुतापे च । अन्वतप्त पापेन ।

६६—चिण्भावकर्मणोः । अभावि । अकारि घटः कुलालेन ।

६७—सार्वधातुके यक् । भूयते । अनुभूयते ।

६८—कर्त्तरिशप् । भवति । पचति ।

६९—दिवादिभ्यःश्यन् । दीव्यति । सीव्यति ।

७०—वा भ्राशभ्लाशभ्रमुक्रमुक्लमुत्रसित्रुटिलषः । भ्राश्यते भ्रासते । भ्लाश्यते-भ्लासते । भ्राम्यति-भ्रमति । क्राम्यति-क्रामति । क्लाम्यति क्लामति । त्रस्यति-त्रसति । त्रुट्यति-त्रुटति । लष्यति-लषति ।

७३—स्वादिभ्यःश्नुः । सुनोति । सिनोति ।

७४—श्रुवः शृच । शृणोति, शृणुतः, शृण्वन्ति ।

७६—तनूकरणे तक्षः । तक्ष्णोति तक्षति वा काष्ठम् ।

७७—तुदादिभ्यः शः । तुदति । नुदति इत्यादि ।

७८—रुधादिभ्यःश्नम् । रुणद्धि । भिनत्ति इत्यादि ।

७९—तनादिकृञ्भ्यः उः । तनोति, सनोति इत्यादि करोति कुरुतः, कुर्वन्ति ।

८१—क्र्यादिभ्यश्ना । क्रीणाति । प्रीणाति । गृह्णाति । जानाति ।

८३—हलः श्नः शानज्झौ । स्तभान । मुषाण । गृहाण । पुषाण । अन्यत्र क्रीणीहि ।

सुप्तिङुपग्रहलिङ्गनराणां कालहलच्स्वरकर्तृयङाञ्च ।
व्यत्ययमिच्छति शास्त्रकृदेषां सोऽपि च सिध्यति बाहुलकेन ।।

८७—कर्मवत्कर्मणा तुल्यक्रियः । पच्यते ओदनः-स्वयमेव । भिद्यते-काष्ठम् ।

८८—तपस्तपः कर्मकस्यैव । तप्यते तपस्तापसः । अतप्त ।

८९—न दुहस्नुनमां यक्चिणौ । गौः पयो दुग्धे । अदुग्ध । प्रस्नुते गौः । प्रास्नोष्ट । नमते दण्डः । अनंस्त ।

९१—धातोः । अधिकारोऽयम् आतृतीयाध्यायसमाप्तेः ।

९२—तत्रोपपदं सप्तमीस्थम् । कुम्भं करोति इति कुम्भकारः स्तम्बेरमः । कर्णे जपः । सरोजम् ।

९३—कृदतिङ् । कर्त्तव्यम् । करणीयम् । कर्त्ता । कारकः । कार्यम् । कृत्यम् । कृतः । कृतवान् । कृत्वा । उपकृत्य । कर्तुम् ।

९४—वाऽसरूपोऽस्त्रियाम् । विक्षिपः विक्षेप्ता । विक्षेपकः ।

९५—कृत्याः । अधिकारोयम् प्राङ् ण्मुलः ।

९६—तव्यत्तव्यानीयरः । कर्त्तव्यम् । करणीयम् । गन्तव्यम् गमनीयम् । (वसेस्तव्यत्कर्त्तरि णिच्चं) वसतीति वास्तव्यः । (केलिमर उपसंख्यानम्) पचेलिमा माषाः ।

९७—अचोयत् । चेयम् । जेयम् । (हनो वा यद्वधश्चवक्तव्यः) वध्यः । घात्यः ।

९८—पोरदुपधात् । ण्यतोऽपवादः । शप्यम् । लभ्यम् । नानुबन्धकृत-मसारूप्यम् ।

१०९—एतिस्तुशास्वृदृजुषःक्यप् । इत्यः । स्तुत्यः । शिष्यः । वृत्यः । आदृत्यः । जुष्यः । आज्यम् घृतम् (बाहुलकात्) ।

११०—ऋदुपधाच्चाक्लृपिचृतेः । वृत्यम् । वृध्यम् । नेह-कल्प्यम्, चर्त्यम् ।

१११—ई च खनः । खेयम् ।

१२०—विभाषा कृवृषोः । कृत्यम् । कार्यम् । वृष्यम् । वर्ष्यम् ।

१२४—ऋहलोर्ण्यत् । कार्यम् । हार्यम् । धार्यम् । वाक्यम् । पाक्यम् ।

१३३—ण्वुल् तृचौ । कर्त्ता । कारकः । कारिका । कर्त्री । कारकम् । कर्तृ । वोढा । वाहकः ।

१३४—नन्दिग्रहिपचादिभ्यो ल्युणिन्यचः । नन्दयतीति नन्दनः । रमते इति रमणः । गृह्णाति इति ग्राही ।

१३५—इगुपधज्ञाप्रीकिरः कः । क्षिपः । बुधः । कृशः । ज्ञः । प्रियः । किरः ।

१३६—आतश्चोपसर्गे । प्रज्ञः प्राज्ञः । प्रस्थः । सुग्लः ।

१३७—पाघ्राध्माधेट्दृशः शः । पिबः । जिघ्रः । धमः । धयः । पश्यः ।

१४१—श्याद्व्यधास्रुसंस्रवतीणवसावहृलिहश्लिषश्वसश्च । अव-श्यायः । दायः । व्याधः । आस्रावः । अत्यायः । अवसायः । अवहारः । अव-लेहः । श्लेषः । श्वासः ।

१४३—विभाषा ग्रहः । ग्रहः, ग्राहः (वार्त्तिक-भवतेश्च) भवः, भावः ।

१४४—गेहे कः । गृह्णाति धान्यादिकम् इति गृहम् । अन्यत्र ग्राहः । ग्रहः ।

१४५—शिल्पिनि ष्वुन् । नर्तकः । नर्तकी । खनकः । खनकी । रजकः रजकी ।

१४६—गस्थकन् । गाथकः । गाथिका ।

इति तृतीयाध्यायस्य प्रथमः पादः

अथ लघुपाणिनीये तृतीयाध्यायस्य

द्वितीयः पादः

१—कर्मण्यण् । कुम्भं करोति इति कुम्भकारः । काण्डलावः । वेदाध्यायः । चर्चापाठः ।

३—आतोऽनुपसर्गे कः । अणोऽपवाद. । गोदः । धनदः ।

४—सुपि स्थः । समस्थः । विषमस्थः । द्विपः । आखुरथः । शलभोरथः ।

८—गोपाष्ठक् । कापवादः । सामगः-सामगी । सुरापः-सुरापी ।

९—हरतेरनुद्यमनेऽच् । अणोऽपवादः । अंशहरः । उद्यमने तु भारहारः ।

१६—चरेष्टः । अधिकरणे । कुरुषु चरतीति कुरुचरः-कुरुचरी ।

२०—कृञो हेतुताच्छील्यानुलोम्येषु । यशस्करः । यशस्करी । श्राद्धकरः-श्राद्धकरी । वचनकरः-वचनकरी ।

२८—एजेःखश् । जनमेजयति इति जनमेजयः ।

३८—प्रियवशे वदः खच् । प्रियंवदः । वशंवदः ।

३९—द्विषत्परयोस्तापे । द्विषन्तं परं वा तापयतीति द्विषन्तपः । परन्तपः ।

४०—वाचियमोव्रते । वाचंयमः मौनव्रतीत्यर्थः ।

४८—अन्तात्यन्ताध्वदूरपारसर्वानन्तेषु डः । अन्तगः अत्यन्तगः । अध्वगः । दूरगः । सर्वगः । अनन्तगः । सर्वत्रगः । पारगः । पन्नगः । उरगः । अन्यत्रापि विहगः ।

५२—लक्षणे जायापत्योष्टक् । जायाघ्नो ना । पतिघ्नी वृषली ।

५६—आढ्यसुभगस्थूलपलितनग्नान्धप्रियेषु च्व्यर्थेष्वच्वौ कृञः करणेख्युन् । अनाढ्यमाढ्यं कुर्वन्ति अनेन इति आढ्यङ्करणम् । सुभगङ्करणम् । स्थूलङ्करणम् । पलितङ्करणमित्यादयः ।

५८—स्पृशोऽनुदके क्विन् । घृतस्पृक् ।

५९—ऋत्विग्दधृक्स्रग्दिगुष्णिगञ्च्युयुजिक्रुञ्चां च । ऋतौ यजति, ऋतुं वा यजति, ऋतुप्रयुक्तो वा यजति इति ऋत्विक् । धृष्णोतीति दधृक् । सृजन्ति तामिति स्रक् । दिशन्ति तामिति दिक् । उष्णिक् । प्राङ् । प्रत्यङ् । उदङ् । युङ् । क्रुङ् ।

६०—त्यदादिषु दृशोऽनालोचने कञ्च । तादृक् । तादृशः । यादृक् । यादृशः । एतादृक् । एतादृशः । कीदृक् । कीदृशः । ईदृक् । ईदृशः । अन्यास्तापि—सदृक् । सदृशः । अन्यादृक् । अन्यादृशः । क्षोऽपि । तादृक्षः । सदृक्षः । अन्यादृक्षः । कीदृक्षः ।

६१—सत्सूद्विषद्रुहदुहयुजविदभिदच्छिदजिनीराजामुपसर्गेऽपि क्विप् । सत् । द्युसत् । उपनिषत् । प्रसूः । मित्रद्विट् । मित्रध्रुक् । गोधुक् । वेदवित् । काष्टभित् । रज्जुच्छित् । शत्रुजित् । सेनानीः । ग्रामणीः । नीः । विराट् । सम्राट् । सम्राड् ।

७४—आतो मनिन्क्वनिब्वनिपश्च । चाद् विच् । सुदामा । विश्वपाः ।

७५—अन्येभ्योऽपिदृश्यन्ते । सुशर्मा । प्रातरित्वा । विजावा । अवावा । रोट् । रेट् । सुगण् ।

७६—क्विप् च । उखायाः स्रंसते उखास्रत् । पर्णध्वत् । वाहभ्रट् । चित् ।

७८—सुप्यजातौ णिनिस्ताच्छिल्ये । उष्णभोजी । ब्रह्मवादी ।

८०—व्रते । स्थण्डिलशायी ।

८४—भूते । अधिकारोऽयम्–वर्तमाने लडितियावत् ।

८७—ब्रह्मभ्रूणवृत्रेषु क्विप् । ब्रह्महा । भ्रूणहा । वृत्रहा ।

८९—सुकर्मपापमन्त्रपुण्येषु कृञः । सुकृत् । कर्मकृत् । पापकृत् । पुण्यकृत् । शास्त्रकृत् । भाष्यकृत् ।

९४—दृशेः क्वनिप् । पारं दृष्टवान्–पारदृश्वा । मेरुदृश्वा ।

९७—सप्तम्यां जनेर्डः । सरसिजम् । मन्दुरजः ।

९८—पञ्चम्यामजातौ । संस्कारजः । अदृष्टजः ।

९९—उपसर्गे च संज्ञायाम् । प्रजास्यात् सन्ततौ जने ।

१०१—अन्येष्वपि दृश्यते । अजः । अनुजः । ब्राह्मणजः । परितः खाता परिखा ।

१०२—निष्ठा। स्नातं मया। स्तुतस्त्वयाविष्णुः। विष्णुर्विश्वं कृतवान्।

१०६—लिटः कानज्वा। अग्निं चिक्यानः। चक्राणा पृष्णिम्।

१०७—क्वसुश्च। यो नो अग्ने अरिरिवां अघायुः। ददिवान्। पपिवान्।

११०—लुङ्। अभूत्। अकार्षीत्।

१११—अनद्यतने लङ्। अभवत्। अकरोत्।

११५—परोक्षेलिट्। बभूव। चकार।

११८—लट्स्मे। यजतिस्म युधिष्ठिरः।

१२३—वर्तमाने लट्। भवति, भवतः, भवन्ति। पठति, पठतः, पठन्ति।

१२४—लटः शतृशानचावप्रथमासमानाधिकरणे। पचन्तं चैत्रं पश्य। पचमानं तं पश्य। प्रथमासमानाधिकरण्येऽपि क्वचित्। सन् ब्राह्मणः। (माङ्याक्रोश इतिवाच्यम्) मा जीवन् यः परावज्ञादुःखदग्धोऽपि जीवति।

१२७—तौ सत्। ब्राह्मणस्य कुर्वन् कुर्वाणो वा। करिष्यन् करिष्यमाणोवा।

१३५—तृन्। कर्त्ता कटान्।

१३६—अलंकृञ्निराकृञ्प्रजनोत्पचोत्पतोन्मदरुच्यपत्रपवृतुवृधुसहचर इष्णुच्। अलंकरिष्णुः निराकरिष्णुः। प्रजनिष्णुः। उत्पचिष्णुः। उत्पतिष्णुः। उन्मदिष्णु। रोचिष्णुः। अपत्रपिष्णुः। वर्त्तिष्णुः। वर्धिष्णुः। सहिष्णुः। चरिष्णुः।

१३८—भुवश्च। भविष्णुः। चकारोऽनुक्तसमुच्चयार्थः। भ्राजिष्णुः। क्षयिष्णुरित्यादि।

१३९—ग्लाजिस्थश्च ग्स्नुः। ग्लास्नुः। जिष्णुः। स्थास्नुः चाद्भुवः—भूष्णुः। (दंशेश्छन्दस्युपसंख्यानम्)—दंक्ष्णवः पशवः।

१४०—त्रसिगृधिधृषिक्षिपेःक्नुः। त्रस्नुः। गृध्नुः। धृष्णुः। क्षिप्नुः।

१४१—शमित्यष्टाभ्यो घिनुण्। शमी। तमी। दमी। श्रमी। भ्रमी। क्लमी। प्रमादी। उन्मादी। वा सरूपविधिना उन्मदिष्णुः।

१४८—चलनशब्दार्थादकर्मकाद्युच्। चलनः। चोपनः। कम्पनः। शब्दनः। रवणः। सकर्मकात्तुपठिता विद्याम्।

१५४—लषपतपदस्थाभूवृषहनकमगमशॄभ्यः उकञ् । लाषुकः । पातुकः । पादुकः । स्थायुकः । भावुकः । वर्षुकः । आघातुकः । कामुकः । आगामुकः । शारुकः ।

१५५—जल्पभिक्षकुट्टलुण्टवृङः षाकन् । जल्पाकः । भिक्षाकः । कुट्टाकः । लुण्टाकः । वराकी ।

१५८—स्पृहिगृहिपतिदयिनिद्रातन्द्राश्रद्धाभ्यः आलुच् । स्पृहयालुः । पतयालुः । निद्रालुः । तन्द्रालुः । श्रद्धालुः । (शीङो वाच्यः)—शयालुः ।

१५९—दाधेट्सिशदसदो रुः । दारुः । धारुर्वत्सो मातरम् । सेरुः । शद्रुः । सद्रुः ।

१६०—सृघस्यदः क्मरच् । सृमरः । घस्मरः । अद्मरः ।

१६१—भञ्जभासमिदो घुरच् । भङ्गुरः भासुरः । मेदुरः ।

१६२—विदिभिदिच्छिदेः कुरच् । विदुरः पण्डितः । भिदुरं काष्ठम् । छिदुरम् ।

१६३—इण्नशजिसर्त्तिभ्यः क्वरप् । इत्वरः । इत्वरी । नश्वरः । जित्वरः । सृत्वरः ।

१६७—नमिकम्पिस्म्यजसकमहिंसदीपो रः । नम्रः कम्प्रः । स्मेरः । अजस्रम् । कम्रः । हिंस्रः । दीप्रः ।

१६८—सनाशंसभिक्ष उः । चिकीर्षुः । आशंसुः । भिक्षुः ।

१७४—भियः क्रुक्लुकनौ । भीरुः । भीलुकः । (क्रुकन्नपि वाच्यः)—भीरुकः ।

१७५—स्थेशभासपिसकसो वरच् । स्थावरः ईश्वरः । भास्वरः । पेस्वरः । कस्वरः ।

१८१—धः कर्मणि ष्ट्रन् । धात्री जनन्यामलकीवसुमत्युपमातृषु ।

१८२—दाम्नीशसयुयुजस्तुतुदसिसिचमिहपतदशनहः करणे । दान्त्यनेन दात्रम् । नेत्रम् । शस्त्रम् । योत्रम् । योक्त्रम् । स्तोत्रम् । तोत्त्रम् । सेत्रम् । सेक्त्रम् । मेढ्रम् । पत्त्रम् । दंष्ट्रा । नद्ध्री ।

१८४—अर्त्तिलूधूसूखनसहचर इत्रः । अरित्रम् । लवित्रम् । धवित्रम् । सवित्रम् । खनित्रम् । सहित्रम् । चरित्रम् ।

१८७—ञीतः क्तः । ञिक्ष्विदा क्ष्विण्णः । ञिइन्धी इद्धः ।

१८८—मतिबुद्धिपूजार्थेभ्यश्च । राज्ञां मतः, इष्टः । बुद्धः, विदितः । पूजितः, अर्चितः । चकारोऽनुक्तसमुच्चयार्थः । शीलितो रक्षितः क्षान्त आक्रुष्टो जुष्ट इत्यपि ।

इति तृतीयाध्यायस्य द्वितीयः पादः समाप्तः

अथ तृतीयाध्यायस्य तृतीयः पादः

१—उणादयो बहुलम् (वर्त्तमाने संज्ञायाम्) संज्ञासु धातुरूपाणि प्रत्ययाश्च ततः परे। कार्याद्विद्यादनूबन्धमेतच्छास्त्रमुणादिषु ॥ कारुः। वायुः। पायुः। स्वादुः। साधुः। आशुः इत्यादयः।

२—भूतेऽपि दृश्यन्ते : वृत्तं तदिति वर्त्म। चरितं तदिति चर्म। भसितं तदिति भस्म।

३—भविष्यति गम्यादयः। गमी ग्रामम्। आगामी। भावी।

१०—तुमुन् ण्वुलौ क्रियायां क्रियार्थायाम्। कृष्णं द्रष्टुं दर्शको वा याति।

११—भाववचनाश्च। यागाय याति। भूतये व्रजति।

१३—लृट् शेषे च। करिष्यामीति व्रजति। भविष्यति। करिष्यति।

१४—लृटः सद्वा। करिष्यन्तं करिष्यमाणं वा पश्य।

१५—अनद्यतने लुट्। लृटोऽपवादः। श्वो भोक्ता। भविता।

१६—पदरुजविशस्पृशो घञ्। पद्यते असौ पादः। रुजति असौ रोगः। विशति असौ वेशः। स्पृशति इति स्पर्शः।

१७—सृ स्थिरे। सरति कालान्तरमिति सारः। (व्याधिमत्स्यबले चेति वाच्यम्) सारो बलम्। अतिसारो व्याधिः। विसारो मत्स्यः।

१८—भावे। पाकः। त्यागः। रागः।

१९—अकर्त्तरि च कारके संज्ञायाम्। रज्यत्यस्मिन्निति रङ्गः। प्रास्यते इति प्रासः।

२१—इङश्च। अचोऽपवादः। अध्यायः। उपेत्यास्मादधीयते इति उपाध्यायः। उपाध्यायी। (शॄ वायुवर्णनिवृतेषु) शारोवायुः। शारो वर्णः। निशारो निवृतम् आवरणम्।

२२—उपसर्गे रुवः। अपोऽपवादः। संरावः। आरावः।

२४—श्रिणीभुवोऽनुपसर्गे। श्रायः। नायः। भावः उपसर्गे तु प्रणयः, प्रभवः, प्रश्रयः।

२७—प्रे द्रुस्तुस्रुवः। प्रद्रावः। प्रस्तावः। प्रस्रावः।

२९—उन्न्योर्ग्रः। उद्गारः। निगारः। अन्यत्र गरः।

३०—कृ धान्ये। उत्कारो निकारो धान्यस्य।

४१—निवासचितिशरीरोपसमाधानेष्वादेश्च कः। काशीनिकायः। अकायमग्निम् चिन्वीत। चीयते अस्मिन् अस्थ्यादिकमिति कायः। गोमयनिकायः। अन्यत्र चयः।

५६—एरच्। चयः। जयः। क्षयः। (भयादीनामुपसंख्यानम्) भयम्। वर्षम्।

५७—ऋदोरप्। घञोऽपवादः। करः। गरः। शरः। यवः। स्तवः। लवः। पवः।

५८—ग्रहवृदृनिश्चिगमश्च। घञोरपवादः। ग्रहः, वरः, दरः, निश्चयः, गमः।

६१—व्यधजपोरनुपसर्गे। व्यधः। जपः। उपसर्गेतु अव्याधः, उपजापः।

६२—स्वनहसोर्वा। स्वनः, स्वानः, हसः, हासः उपसर्गेतु प्रस्वानः। प्रहासः।

७४—निपानमाहावः। आहावस्तु निपानं स्यात् उपकूपजलाशये (अमरः)।

८८—ड्वितः क्त्रिः। पाकेन निर्वृत्तम् पक्त्रिमम्। उप्त्रिमम्। कृत्रिमम्।

८९—ट्वितोऽथुच्। वेपथुः। श्वयथुः क्षवथुः।

९०—यजयाचयतविच्छप्रच्छरक्षोनङ्। यज्ञः। याच्ञा। यत्नः। विश्नः। प्रश्नः। रक्ष्णः।

९१—स्वपो नन्। स्वप्नः।

९२—उपसर्गे घोः किः। प्रदिः। प्रधिः। अन्तर्द्धिः। उपाधिः।

९३—कर्मण्यधिकरणे च। जलानि धीयन्ते अस्मिन्निति जलधिः। शरधिः।

९४—स्त्रियांक्तिन्। घञजपामपवादः। कृतिः। चितिः। स्मृतिः। मतिः। स्तुतिः। स्फातिः (मुद्रास्फीतिस्तु प्रामादिकम् एव)। (श्रुयजिषिस्तुभ्यः करणे) श्रूयते अनया इति श्रुतिः। इष्टिः। स्तुतिः। (संपदादिभ्यः क्विप्) संपत्। (क्तिन्नपीष्यते) सम्पत्तिः। विपत्तिः।

९७—ऊतियूतिजूतिसातिहेतिकीर्त्तयश्च। ऊतिः। यूतिः। जूतिः। सातिः। हेतिः। कीर्तिः।

९८—व्रजयजोर्भावे क्यप्। व्रज्या। इज्या। (क्तिनोपवादः)।

९९—संज्ञायां समजनिषदनिपतमनविदषुञ्शीङ्भृञिणः। समजन्त्यस्यामिति समज्या सभा। निषद्या। निपत्या। मन्या। विद्या। सुत्या। शय्या। भृत्या। इत्या।

१००—कृञः श च। क्रिया। कृत्या। कृतिः।

१०१—इच्छा। इच्छा। (परिचर्यापरिसर्यामृगयाऽटाट्यानामुपसंख्यानम्) परिचर्या। परिसर्या। मृगया। अटाट्या।

१०२—अ प्रत्ययात्। चिकीर्षा। पुत्रकाम्या। लोलूया। कण्डूया।

१०३—गुरोश्च हलः। (क्तिनोऽपवादः) कुण्डा। हुण्डा। ईहा। ऊहा। अगुरौतु शक्तिः। हलादन्यत्र च नीतिः।

१०४—षिद्भिदादिभ्योऽङ्। जरा। त्रपा। भिदा। छिदा। कृपा।

१०५—चिन्तिपूजिकथिकुम्बिचर्चश्च। चिन्ता। पूजा। कथा। चर्चा। कुम्बा।

१०६—आतश्चोपसर्गे। (क्तिनोऽपवादः) प्रदा। उपदा। प्रधा। उपधा। श्रद्धा।

१०७—ण्यासश्रन्थो युच्। कारणा। हारणा। आसना। श्रन्थना।

११३—कृत्यल्युटो बहुलम्। स्नानीयं चूर्णम्। दानीयो विप्रः।

११४—नपुंसके भावे क्तः। हसितम्। सहितम्। जल्पितम्।

११५—ल्युट् च। हसनम्। जल्पनम्।

११७—करणाधिकरणयोश्च। इध्मप्रव्रश्चनः कुठारः। गोदोहनी स्थाली।

११८—पुंसि संज्ञायां घः प्रायेण। दन्ताश्छाद्यन्ते अनेन इति दन्तच्छदः। प्रच्छदः। आकरः। आलयः।

११९—गोचरसंचरवहव्रजव्यजापणनिगमाश्च। गावश्चरन्ति अस्मिन्निति गोचरो देशः। संचरते अनेनेति संचरः। वहन्ति अनेन वहः। व्रजन्ति तेन व्रजः। व्यजन्ति तेन व्यजः। पण्यतेऽस्मिन्नापणन्त इत्यापणः। निगच्छन्ति तस्मिन्निति निगमः।

१२०—अवे तॄस्त्रोर्घञ्। अवतारः कूपादेः। अवस्तारो यवनिका।

१२१—हलश्च। रमन्ते योगिनोऽस्मिन्निति रामः। अपामार्गः। वेदः। मार्गः। लेखः।

१२२—**अध्यायन्यायोद्यावसंहाराधारावायाश्च ।** अध्यायः । न्यायः । उद्यावः । संहारः । आधारः । आवायः ।

१२४—**जालमानायः ।** आनीयन्ते मत्स्यादयोऽस्मिन्निति आनायः जालमित्यर्थः ।

१२६—**इषद्दुःसुषु कृच्छ्राकृच्छ्रार्थेषु खल् ।** इषत्करः दुष्करः सुकरो-वाकटो भवता ।

१३१—**वर्तमानसामीप्ये वर्त्तमानवद्वा ।** कदागतोसि ? अयमागच्छामि ।

१३९—**लिङ्निमित्ते लङ् क्रियातिपत्तौ ।** सुवृष्टिश्चेदभविष्यत्तदा सुभिक्षमभविष्यत ।

१४०—**भूतेच ।**

१५६—**हेतुहेतुमतोर्लिङ् ।** कृष्णं नमेच्चेत् सुखं यायात् ।

१५८—**समानकर्तृकेषुतुमुन् ।** इच्छति भोक्तुम् । वष्टि भोक्तुम् । वाञ्छति भोक्तुम् वा ।

१६१—**विधिनिमन्त्रणामन्त्रणाधीष्ठसम्प्रश्नप्रार्थनेषु लिङ् ।** भवेत् ।

१६२—**लोट् च ।** भवतु ।

१६३—**प्रैषातिसर्गप्राप्तकालेषु कृत्याश्च ।** त्वया कटः कर्त्तव्यः करणीयः कार्यो वा अथवा त्वं कटं कुरु ।

१६७—**कालसमयवेलासु तुमुन् ।** कालो भोक्तुम् । समयो भोक्तुम् ।

१६९—**अर्हे कृत्यतृचश्च ।** चाल्लिङ् । भवता कन्यावोढव्या, वाह्या, वहनीया वा । भवान् कन्या वहेत् इति वा ।

१७०—**आवश्यकाधमर्ण्ययोर्णिनिः ।** अवश्यङ्कारी । शतं दायी ।

१७१—**कृत्याश्च ।** अवश्यं हरिः सेव्य. । शतं देयम् ।

१७२—**शकि लिङ्च ।** त्वं भारं वहेः । त्वयाभारोवोढव्यः ।

१७३—**आशिषि लिङ्लोटौ ।** भूयात् । भवतात् । चिरंजीव्यात् जीवताद्वा ।

१७५—**माङिलुङ् ।** मा भवान् भूत् । माकार्षीत् ।

१७६—**स्मोत्तरे लङ् च ।** मास्म भवद् भूद्वा । मास्मकरोत् कार्षीद्वा ।

इति तृतीयाध्यायस्य तृतीयः पादः ।

अथ तृतीयाध्यायस्य चतुर्थः पादः

१—**धातुसम्बधे प्रत्ययाः** । वसन् ददर्श । सोमयाज्यस्य पुत्रो भविता । कृतः कटः श्वो भविता । भावि कृत्यमासीत् । गोमानासीत् भविता वा ।

२१—**समानकर्तृकयोः पूर्वकाले** । (क्त्वा) । क्त्वातु अव्ययकृतो भावे । भुक्त्वा व्रजति ! समानकर्तृकाः वा—स्नात्वा, भुक्त्वा पीत्वा दत्त्वा व्रजति । विष्णुं नत्वा स्तौति ! मुखं व्यादाय स्वपिति । नेत्रे निमील्य हसति ।

२२—**आभीक्ष्ण्ये णमुल् च** । स्मारं स्मारं स्मृत्वा स्मृत्वा वा नमति शिवम् । पायं पायं, भोजं भोजं, गामं गामं, गमं गमं, लम्भं लम्भं, लाभं लाभम् ।

२३—**न यद्यनाकाङ्क्षे** । यद्यय भुङ्क्ते ततः पचति । साकाङ्क्षेतु यदय भुक्त्वा व्रजति अधीत एव ततः परम् ।

३०—**यावति विन्दजीवोः** । यावद्वेदं भुङ्क्ते । यावज्जीवमधीते विप्रः ।

४७—**उपदंशस्तृतीयायाम्** । मूलकोपदंशं भुङ्क्ते मूलकेनोपदंशम् ।

६७—**कर्त्तरि कृत्** । कारकः, कर्त्ता । नन्दनः । ग्राही । पचः ।

६८—**भव्यगेयप्रवचनीयोपस्थानीयजन्याप्लाव्यापात्या वा** । भवतीति भव्यः । भव्य मनेन वा । गायतीति गेयः माणवकः साम्नाम्, गेयानि सामानि वा । प्रवचनीयो गुरुः स्वाध्यायस्य, गुरुणा स्वाध्याय इति वा । इत्यादयः ।

६९—**लः कर्मणि च भावे चाकर्मकेभ्यः** । आनन्दोऽनुभूयते चैत्रेण तथा मया च । आनन्द मनुभवति चैत्रः, आनन्द मनुभवसि त्वम्, आनन्द मनुभवाम्यहम् । त्वया, मया, अन्यैश्च भूयते । त्वं भवसि । अहं भवामि । अन्यो भवति ।

७०—**तयोरेव कृत्यक्तखलर्थाः** । एधितव्यम् एधनीयं त्वया मया अन्यैश्च ! चेतव्यः चयनीयोवा धर्मस्त्वया मया देवदत्तेन वा । स्नातं त्वया मया रामेण च । स्तुतस्त्वया, मया, अन्यैश्च विष्णुः । ईषत्करः सुकरः दुष्करः कटः त्वया, मया, अन्यैश्च ।

७१—**आदि कर्मणि क्तः कर्त्तरि च** । प्रकृतः कटं देवदत्तः । प्रकृतः कटो देवदत्तेन । प्रस्वेदितः चैत्रः । प्रस्वेदितं चैत्रेण । आषितो देवदत्तः । आसितं तेन । इदमेषामासितम् । यातो देवदत्तो ग्रामम्-यातो देवदत्तेन ग्रामः । यातम् देवदत्तेन । भुक्तः ओदनः तेन । तेन भुक्तम् ।

७२—**गत्यर्थाकर्मकाश्लिषशीङ्स्थासवसजनरुहजीर्य्यतिभ्यश्च** । गतो देवदत्तो ग्रामम् । गतो देवदत्तेन ग्रामः । गतं देवदत्तेन । अकर्मकेभ्य, ग्लानो

भवान्। ग्लानं भवता। आसितोभवान् आसितं भवता। उप गुरुं भवान् उप गुरुः भवता उपशयितो गुरुं भवान्-उपशयितः गुरुः भवता। उपशयितं भवता! उपस्थितो गुरुं भवान्-उपस्थितो गुरु भंवता। उपस्थितम् भवता। उपासितो गुरुं भवान् उपासितो गुरुः भवता। उपासितम् भवता। अनुषितः गुरुं भवान्-अनुषितः गुरु भंवता। अनुषितम् भवता। अनुजातः माणवकः माणविकाम्-अनुजाता माणवकेन माणविका। अनुजातं माणवकेन्। आरूढः वृक्षं भवान्। आरूढः वृक्षः भवता। आरूढम् भवता। अनुजीर्णो वृषलीं देवदत्त :—अनुजीर्णा वृषली देवदत्तेन। अनुजीर्णम् देवदत्तेन।

७६ क्तोऽधिकरणे च ध्रौव्यगतिप्रत्यवसानार्थेभ्यः।

७७ —लस्य। अधिकारोयम्।

७८—तिप्तस्झिसिप्थस्थमिब्वस्मस्तातांझथासाथांध्वमिड्वहिमहिङ्भवति, भवतः, भवन्ति। भवसि, भवथः भवथ। भवामि, भवावः, भवामः। एधते, एधेते, ऐधन्ते। एधसे, एधेथे, एधध्वे। ऐधे, एधावहे, एधामहे। एवमन्येषुलकारेषु यथा साध्यम्।

७९—टित आत्मनेपदानां टेरे। एधते इत्यादिपूर्वमुदाहृतम्।

८०—थासः से। एधसे। पचसे। पेचिषे। पक्तासे। पक्ष्यसे। एधांचक्रिषे इत्यादयः।

८१—लिटस्तझयोरेशिरेच्। पेचे, पेचिरे। लेभे, लेभिरे। एधांचक्रे, एधांचक्रिरे।

८२—परस्मैपदानां णलतुसुस्थलथुसणल्वमाः। बभूव, बभूवतुः, बभूवुः। बभूविथ, बभुवथुः, बभूव। बभूव, बभूविव, बभूविम।

८३—विदो लटोवा। वेद, विदतुः, विदुः। वेत्थ, विदथुः, विद। वेद, विद्व, विद्म। पक्षेवेत्ति, वित्तः, विदन्ति। वेत्सि, वित्थः, वित्थ। वेद्मि, विद्वः, विद्मः।

८४—ब्रुवः पञ्चानामादित आहो ब्रुवः। आह, आहतुः, आहुः। आत्थ, आहथुः पक्षे ब्रवीति, ब्रूतः, ब्रुवन्ति। ब्रवीषि, ब्रूथ।

८५—लोटो लङ्वत्। भवताम्। भवतम्, भवत। भवाव, भवाम।

८६—एरुः। भवतु भवन्तु।

८७—सेर्ह्यपिच्च। लुनीही। पुनीहि।

८९—मेर्निः। उत्वलोपयोरपवादः। भवानि। पचानि।

९०—आमेतः। एधताम् एधेताम्, एधन्ताम्। पचताम्, पचेताम्, पचन्ताम्।

९१—सवाभ्यां वामौ। आमोपवादः। एधस्व, एधध्वम्। पचस्व, पचध्वम्।

९२—आडुत्तमस्य पिच्च। भवानि, भवाव, भवाम। एधै, एधावहै, एधामहै। करवाणि, करवाव, करवाम। करवै, करवावहै, करवामहै।

९३—एत ऐ। एधै, एधावहै, एधामहै।

९९—नित्यं ङितः। अभवाव। अभवाम। भवेव, भवेम। अभूव, अभूम।

१००—इतश्च। अभवत्। भवेत्। भूयात्। अभूत्। अभविष्यत्।

१०१—तस्थस्थमिपां तान्तन्तामः। अभवताम्, अभवतम्। अभवत। अभवम्। अपाक्ताम्, अपाक्तम्, अपाक्त, अपाक्षम्।

१०२—लिङः सीयुट्। एधेत, एधेयाताम्, एधेरन्, एधिषीष्ट, एधिषीयास्ताम्, एधिषीरन्।

१०३—यासुट् परस्मैपदेषूदात्तो ङिच्च। भवेत्, भूयात्। कुर्यात्। क्रियात्।

१०४-किदाशिषि। भूयात्। स्तुयात्। इज्यात्। जागर्यात्।

१०५—झस्य रन्। झोन्तापवादः। एधेरन्। एधिषीरन्। कृषीरन्।

१०६—इटोऽत्। एधेय। पचेय। कृषीय।

१०७—सुट्तिथोः। एधिषीष्ट। एधिषीयास्ताम्। एधिषीरन्।

१०८—झेर्जुस्। झोन्तापवादः। भवेयुः, कुर्य्युः।

१०९—सिजभ्यस्तविदिभ्यश्च। अकार्षुः, अहार्षुः, अबिभयुः, अजागरुः, अविदुः।

११०—आतः। अपुः, अदुः, अधुः।

१११—लङः शाकटायनस्यैव। अयुः, अयान्, अवुः, अवान्।

११२—द्विषश्च। अद्विषुः-अद्विषन्।

११३—तिङ् शित् सार्वधातुकम्। भवति। नयति। स्वपिति। पचन्। पचमानः।

११४-आर्धधातुकं शेषः। भविता, भवितुम्। लविता-लवितुम्।

११५—लिट् च। बभूविथ। पेचिथ। जग्ले। मम्ले।

११६—लिङाशिषि। एधिषीष्ट। लवीषीष्ट।

इति लघुपाणिनीये
तृतीयाध्यायस्य चतुर्थः पादः समाप्तः।
समाप्तश्च तृतीयाध्यायः।

अथ चतुर्थाध्यायस्य प्रथमपादः

१. ङ्याप्प्रातिपदिकात् । अधिकारोऽयमापञ्चमाध्यायसमाप्तेः ।

२. स्वौजसमौट्छष्टाभ्यांभिस्ङेभ्यांभ्यस्ङसिभ्यांभ्यस्ङसोसाम्ङ्योस्सुप् । कुमारी, कुमार्यौ, कुमार्यः । कुमारीम्, कुमार्यौ, कुमारीः । कुमार्या, कुमारीभ्याम्, कुमारीभिः । कुमार्यै, कुमारीभ्याम्, कुमारीभ्यः । कुमार्याः, कुमारीभ्याम्, कुमारीभ्यः । कुमार्याः, कुमार्योः, कुमारीणाम् । कुमार्याम्, कुमार्योः, कुमारीषु । एवं गौरी, शार्ङ्गरवी । रमा, रमे, रमाः । रमाम्, रमे, रमाः । रमया, रमाभ्याम्, रमाभिः । रमायै, रमाभ्याम्, रमाभ्यः । रमायाः, रमाभ्याम्, रमाभ्यः । रमायाः, रमयोः, रमाणाम् । रमायाम्, रमयोः, रमासु । एवं वहुराजा, कारीषगन्ध्या । दृषद्, दृषदौ, दृषदः । दृषदम्, दृषदौ, दृषदः । दृषदा, दृषद्भ्याम्, दृषद्भिः । दृषदे, दृषद्भ्याम्, दृषद्भ्यः । दृषदः, दृषद्भ्याम्, दृषद्भ्यः । दृषदः, दृषदोः, दृषदाम् । दृषदि दृषदोः, दृषत्सु । रामः, रामौ, रामाः-इत्यादि ।

३. स्त्रियाम् । अधिकारोऽयं समर्थानामिति यावत् ।

४. अजाद्यतष्टाप् । अजा । एडका । अश्वा । चटका । मूषिका । बाला । वत्सा । होडा । मन्दा । विलाता । * संभस्त्राजिनशणपिण्डेभ्यः फलात् * संफला । भस्त्रफला । अजिनफला । शणफला । पिण्डफला । * त्रिफला द्विगौ * त्रिफला । * सदच्काण्डप्रान्तशतकेभ्यः पुष्पात् * पाककर्णेति ङीषोऽपवादः । सत्पुष्पा । प्राक्पुष्पा । प्रत्यक्पुष्पा । काण्डपुष्पा । प्रान्तपुष्पा । शतपुष्पा । एकपुष्पा । * शूद्रा चामहत्पूर्वा जातिः * शूद्रा । पुंयोगे शूद्री । महत्पूर्वा तु महाशूद्री । क्रुञ्चा । उष्णिहा । देवविशा । ज्येष्ठा । कनिष्ठा । मध्यमेति पुंयोगेऽपि । कोकिला जातावपि । * मूलान्नञः * अमूला ।

५. ऋन्नेभ्यो ङीप् । कर्त्री । दण्डिनी । हस्तिनी ।

६. उगितश्च । पचन्ती, भवन्ती । भवती । प्राची, प्रतीची, उदीची, अवाची ।

१०. न षट्स्वस्रादिभ्यः । पञ्च । चतस्रः ।

१४. अनुपसर्जनात् । अधिकारोऽयं यूनस्तिरिति यावत् ।

१९. टिड्ढाणञ्द्वयसज्दघ्नञ्मात्रच्तयप्ठक्ठञ्कञ्क्वरपः । टापोऽपवादः । कुरुचरी । अनुपसर्जनादित्येव । नेह :—बहुकुरुचरा । नदट्-नदी । सौपर्णेयी । ऐन्द्री । औत्सी । ऊरुद्वयसी । ऊरुदघ्नी । ऊरुमात्री । पञ्चतयी । आक्षिकी । लावणिकी । यादृशी । ईत्वरी । * ताच्छीलिके णेऽपि * चौरी । * नञ्स्नञीकक्ख्युंस्तरुणतलुनानामुपसंख्यानम् * स्त्रैणी । पौंस्नी । शाक्तीकी । आढ्यङ्करणी । तरुणी । तलुनी ।

२०. वयसि प्रथमे । कुमारी । * वयस्यचरम इति वाच्यम् * वधूटी । चिरण्टी । कन्याया न । कन्यायाः कनीन चेति निर्देशात् । कन्या ।

२१. द्विगोः । त्रिलोकी । पञ्चपूली ।

३२. अन्तर्वत्पतिवतोर्नुक् । अन्तर्वत्नी । पतिवत्नी ।

३३. पत्युर्नो यज्ञसंयोगे । वसिष्ठस्य पत्नी ।

३४. विभाषा सपूर्वस्य । गृहस्य पतिः, गृहपत्नी, गृहपतिः ।

३५. नित्यं सपत्न्यादिषु । समानः पतिरस्याः सा, सपत्नी । एकपत्नी । वीरपत्नी । भ्रातृपत्नी । पुत्रपत्नी ।

४१. षिद्गौरादिभ्यश्च । नर्तकी, खनकी । गौरी । * अनडुहः स्त्रियामाम् वा वाच्यः * अनडुही, अनड्वाही । * पिप्पल्यादयश्च * पिप्पली । हरीतकीत्यादि ।

४२. जानपदकुण्डगोणस्थलभाजनागकालनीलकुशकामुककबराद्वृत्त्यमत्रावपनाकृत्रिमाश्राणास्थौल्यवर्णानाच्छादनायोविकारमैथुनेच्छाकेशवेशेषु । जानपदी, वृत्तिश्चेत् । अन्यत्र ङीप् जानपदी । कुण्डी, अमत्रं चेत् । कुण्डान्या । गोणी, आवपनं चेत् । गोणान्या । स्थली, अकृत्रिमा भूमिः । स्थलान्या : भाजी, श्राणा । भाजान्या । नागी, स्थूला । नागान्या । काली, वर्णः । कालान्या । नीली, अनाच्छादनं चेत् । नीलाऽन्या । * नीलादोषधौ * नीली ओषधिः । * प्राणिनि च * नीली गौः । * संज्ञायां वा * नीली । नीला कुशी, अयोविकारः । कुशान्या । कामुकी, मैथुनेच्छा चेत् । कामुकान्या । कबरी, केशवेशविशेषः । कबरान्या ।

४३. शोणात्प्राचाम् । शोणी, शोणा ।

४४. वोतो गुणवचनात् । मृद्वी, मृदुः । पट्वी, पटुः । * खरुसंयोगोपधाश्च * खरुः पतिंवरा कन्या । पाण्डुः ।

४५. बह्वादिभ्यश्च। बह्वी। बहुः। * कृदिकारादक्तिनः * रात्री, रात्रिः। * सर्वतोऽक्तिन्नर्थादित्येके * शकटी। शकटिः, क्तिन्नर्थासु, अजननिः। पद्धती, पद्धतिः।

४८. पुंयोगादाख्यायाम्। गोपस्य स्त्री, गोपी। * पालकान्तान्न * गोपालिका। अश्वपालिका। * सूर्याद्देवतायां चाब्वाच्यः * सूर्यस्य स्त्री देवता, सूर्या। सूरी कुन्ती।

४९. इन्द्रवरुणभवशर्वरुद्रमृडहिमारण्ययवयवनमातुलाचार्याणामानुक्। इन्द्राणी। वरुणानी। भवानी। शर्वाणी। मृडानि। * हिमारण्ययोर्महत्त्वे * महद्धिमं हिमानी। महदरण्यमरण्यानी। * यवाद्दोषे * दुष्टो यवो यवानी। * यवनाल्लिप्याम् * यवनानां लिपिर्यवनानी। * मातुलोपाध्याययोरानुग्वा * मातुलानी, मातुली। उपाध्यायानी, उपाध्यायी। * आचार्यादणत्वं च * आचार्यानी। * अर्यक्षत्रियाभ्यां वा स्वार्थे * अर्याणी, अर्या। क्षत्रियाणी, क्षत्रिया, पुंयोगे तु, अर्यी। क्षत्रियी।

५४. स्वाङ्गाच्चोपसर्जनादसंयोगोपधात्। अतिकेशी, अतिकेशा। चन्द्रमुखी, चन्द्रमुखा। संयोगोपधात्तु, सगुल्फा। स्वाङ्गं त्रिधा :—* अद्रवं मूर्त्तिमत्स्वाङ्गं प्राणिस्थमविकारजम् * नेह :—सुस्वेदा। सुज्ञाना। सुमुखा शाला। सुशोफा। * अतत्स्थं तत्र दृष्टं च * सुकेशी, सुकेशा वा रथ्या। * तेन चेत्तत्तथायुतम् * सुस्तनी, सुस्तना वा प्रतिमा।

५५. नासिकोदरौष्ठजङ्घादन्तकर्णशृङ्गाच्च। तुङ्गनासिकी, तुङ्गनासिका। तिलोदरी, तिलदरा। बिम्बोष्ठी, बिम्बोष्ठा। दीर्घजङ्घी, दीर्घजङ्घा। समदन्ती, समदन्ता। चारुकर्णी, चारुकर्णा। तीक्ष्णशृङ्गी, तीक्ष्णशृङ्गा। * पुच्छाच्च * सुपुच्छा। * कबरमणिविषशरेभ्यो नित्यम् * कबरपुच्छी मयूरी : मणिपुच्छी। विषपुच्छी। शरपुच्छी। * उपमानात्पक्षाच्च पुच्छाच्च * उलूकपक्षी शाला। उलूकपुच्छी सेना।

५६. न क्रोडादिबह्वचः। कल्याणक्रोडा, कल्याणखुरा। सुभगा। सुजघना।

५७. सहनञ्विद्यमानपूर्वाच्च। सकेशा। विद्यमाननासिका।

५८. नखमुखात्संज्ञायाम्। शूर्पणखा। गौरमुखा। संज्ञाभावे ताम्रमुखी, चन्द्रमुखी कन्या।

६२. सख्यशिश्वीति भाषायाम्। सखी। अशिश्वी। आधेनवो धुनयन्तामशिश्वीः।

६३. **जातेरस्त्रीविषयादयोपधात्** । * आकृतिग्रहणा जातिः * तटी । कुक्कुटी । सूकरी । * लिङ्गानां च न सर्वभाक् । सकृदाख्यातनिर्ग्राह्या * वृषली । * गोत्रं च चरणैः सह * औपगवी । कठी । बह्वृची । ब्राह्मणीत्यत्र तु शार्ङ्गरवादित्वान् ङीन् । * योपधप्रतिषेधे हयगवयमुकयमनुष्यमत्स्यानामप्रतिषेधः * हयी । गवयी । मुकयी । मनुषी । मत्सी ।

६५. **इतो मनुष्यजातेः** । दाक्षी । औदमेयी ।

६६. **ऊङुतः** । कुरूः । ब्रह्मबन्धूः । नेह :--अध्वर्युः । * अप्राणिजातेश्चारज्ज्वादीनामुपसंख्यानम् * अलाबूः । कर्कन्धूः । अलाब्वा । कर्कन्ध्वा । प्राणिजातेस्तु, कृकवाकुः । नेह :--रज्जुः । हनुः ।

६७. **बाह्वन्तात्संज्ञायाम्** । भद्रबाहूः । असंज्ञायान्तु, वृत्तबाहुः ।

६८. **पङ्गोश्च** । पङ्गूः । * श्वशुरस्योकाराकारलोपश्च * श्वश्रूः ।

६९. **ऊरूत्तरपदादौपम्ये** । करभोरूः । नागनासोरूः ।

७०. **संहितशफलक्षणवामादेश्च** । संहितोरूः । शफोरूः । लक्षणोरूः । वामोरूः । * सहितसहाभ्यां चेति वक्तव्यम् * सहितोरूः । सहोरूः ।

७२. **संज्ञायाम्** । कद्रूः । कमण्डलूः ।

७३. **शार्ङ्गरवाद्यञो ङीन्** । शार्ङ्गरवी । वैदी । जातेरित्यनुवृत्तेः पुंयोगे ङीषेव । * नृनरयोर्वृद्धिश्च * नारी ।

७४. **यङश्चाप्** । आम्बष्ठ्या । कारीषगन्ध्या । * षाद्यञश्चाप् वाच्यः * पौतिमाष्या ।

७६. **तद्धिताः** । अधिकारोऽयमापञ्चमाध्यायपरिसमाप्तेः ।

७७. **यूनस्तिः** । युवतिः । युवतीति तु, यौतेः शत्रन्तान्ङीपि ।

८२. **समर्थानां प्रथमाद्वा** । इदं पदत्रयमधिक्रियते प्राग्दिश इति यावत् ।

८३. **प्राग्दीव्यतोऽण्** । तेन दीव्यतीत्यतः प्रागणधिक्रियते ।

८४. **अश्वपत्यादिभ्यश्च** । वक्ष्माणस्य ण्यस्यापवादः । अश्वपतेरपत्यादि, आश्वपतम् । गाणपतम् ।

८५. **दित्यदित्यादित्यपत्युत्तरपदाण्ण्यः** । दैत्यः । अदितेरादित्यस्य वादित्यः । प्राजापत्यः । * यमाच्चेति काशिकायाम् * याम्यः । * पृथिव्या ञाञौ * पार्थिवा, पार्थिवी । * देवाद्यञञौ * दैव्यम्, दैवम् । * बहिषष्टिलोपो यञ्च * बाह्यः । * ईकक् च * बाहीकः । * स्थाम्नोऽकारः * । अश्वत्थामा । * लोम्नोऽपत्येषु बहुष्वकारः * बाह्वादीञोऽपवादः । उडुलोमाः, उडुलोमान् । द्वित्वैकत्व-

योस्तु, औडुलोमिः, औडुलोमी। * गोरजादिप्रसङ्गे यत् * गव्यम्। अनजादिप्रत्ययप्रसङ्गे तु, गोरूप्यम्। गोमयम्।

८६. उत्सादिभ्योऽञ्। औत्सः। * अग्निकलिभ्यां ढग् वक्तव्यः * अग्नेरपत्यादि, आग्नेयम्। कालेयम्।

८७. स्त्रीपुंसाभ्यां नञ्स्नञौ भवनात्। स्त्रैणः। पौंस्नः। वत्यर्थे तु न स्त्री पुंवच्चेति ज्ञापकात्। स्त्रीवत्। पुंवत्।

८८. द्विगोर्लुगनपत्ये। पञ्चसु कपालेषु संस्कृतः पुरोडाशः, पञ्चकपालः। द्वौ वेदावधीते, द्विवेदः। त्रिवेदः। अपत्ये तु, द्वयोर्मित्रयोरपत्यं द्वैमित्रिः। अजादेरेव। नेह :--पञ्चगर्गरूप्यम्, पञ्चगर्गमयम्।

९५. अत इञ्। दाक्षिः।

९६. बाह्वादिभ्यश्च। बाहविः। औडुलोमिः।

९७. सुधातुरकङ् च। सुधातुरपत्यं सौधातकिः। * व्यासवरुडनिषादचण्डालबिम्बानाञ्चेति वक्तव्यम् * वैयासकिः। वारुडकिः नैषादकिः। चाण्डालकिः। बैम्बकिः।

९८. गोत्रे कुञ्जादिभ्यश्च्फञ्। कौञ्जायन्यः। ब्राध्नायन्यः।

९९. नडादिभ्यः फक्। नाडायनः। गोत्र इत्येव। नाडिः।

१००. हरितादिभ्योऽञः। हारितायनः कैन्दासायनः।

१०१. यञिञोश्च। गार्ग्यायणः, वात्स्यायनः। दाक्षायणः।

१०५. गर्गादिभ्यो यञ्। गार्ग्यः। वात्स्यः।

११२. शिवादिभ्योऽण्। शिवस्यापत्यं शैवः। गाङ्गः! तिकादौ शुभ्रादौ च पाठात् फिञ्ढकावपि। गाङ्गायनिः। गाङ्गेयः।

११४. ऋष्यन्धकवृष्णिकुरुभ्यश्च। वासिष्ठः, वैश्वामित्रः। श्वाफल्कः। वासुदेवः, आनिरुद्धः। नाकुलः, साहदेवः।

११५. मातुरुत्संख्यासंभद्रपूर्वायाः। द्वैमातुरः, षाण्मातुरः। सांमातुरः। भाद्रमातुरः वैमात्रेयस्तु शुभ्रादित्वाड् ढकि।

११६. कन्यायाः कनीन च। कानीनो व्यासः, कर्णश्च।

१२०. स्त्रीभ्यो ढक्। वैनतेयः। बाह्वादित्वात्सौमित्रिः शिवादित्वात्सापत्नः।

१२७. कुलटाया वा। कौलटिनेयः। कौलटेयः।

१२८. चटकाया ऐरक्। चाटकैरः। * चटकस्येति वाच्यम् * चटकस्य चाटकैरः। स्त्रियामपत्ये लुग्वक्तव्य * चटका।

१२९. गोधाया ढ्रक्। गौधेरः। शुभ्रादित्वात्पक्षे ढक्। गौधेयः।

१३०. आरगुदीचाम्। गोधारः। रका सिद्धे आकारविधानमन्यतोऽपि विधानार्थम्। जडस्य जाडारः। पाण्डारः।

१३२. पितृष्वसुश्छण्। अणोऽपवादः। पैतृष्वस्रीयः।

१३३. ढकि च लोपः। पैतृष्वसेयः।

१३४. मातृष्वसुश्च। मातृष्वस्रीयः, मातृष्वसेयः।

१३७. राजश्वशुराद्यत्। * राज्ञो जातावेवेति वाच्यम् * राजन्यः क्षत्रियः। राजनोऽन्यः श्वशुर्यः।

१३८. क्षत्राद्घः। क्षत्रियः। जातावित्येव। क्षात्रिरन्यः।

१३९. कुलात्खः। कुलीनः! उत्तरसूत्रेऽपूर्वपदादिति लिङ्गात्तदन्तादपि। आढ्यकुलीनः।

१४१. महाकुलादञ्खञौ। माहाकुलः, माहाकुलीनः, महाकुलीनः।

१४२. दुष्कुलाड्ढक्। दौष्कुलेयः, दुष्कुलीनः।

१४३. स्वसुश्छः। स्वसुरपत्यं स्वस्रीयः।

१४४. भ्रातुर्व्यच्च। अणोऽपवादः। भ्रातृव्यः, भ्रात्रीयः।

१४५. व्यन्सपत्ने। भ्रातृव्यः शत्रुः।

१४६. रेवत्यादिभ्यष्ठक्। रैवतिकः।

१५०. फाण्टाहृतिमिमताभ्यां णफिञौ। फाण्टाहृतः, फाण्टाहृतायनिः। मैमतः, मैमतायनिः।

१५१. कुर्वादिभ्योण्यः। कौरव्याः ब्राह्मणाः। वावदूक्याः। * सम्राजः क्षत्रिये * साम्राज्यः। साम्राजोऽन्यः।

१६२. अपत्यं पौत्रप्रभृति गोत्रम्। गर्गस्यापत्यं पौत्रप्रभृति, गार्ग्यः। वात्स्यः।

१६३. जीवति तु वंश्ये युवा। गर्गस्य यदपत्यं चतुर्थादि, गार्ग्यायणः।

१६८. जनपदशब्दात्क्षत्रियादञ्। पाञ्चालः। ऐक्ष्वाकः। वैदेहः। * क्षत्रियसमानशब्दाज्जनपदात्तस्य राजन्यपत्यवत्* पञ्चालानां राजा, पाञ्चालः। वैदेहः। मागधः। * पुरोरण् वक्तव्यः * पौरवः। * पाण्डोर्ड्यण् * पाण्ड्यः।

१७४. ते तद्राजाः। संज्ञासूत्रमिदम्।

१७५. कम्बोजाल्लुक्! कम्बोजः। कम्बोजौ! * कम्बोजादिभ्य इति वक्तव्यम् * चोलः। शकः। केरलः। यवनः।

१७६. स्त्रियामवन्तिकुन्तिकुरुभ्यश्च। अवन्ती। कुन्ती। कुरूः।

इति लघुपाणिनीये चतुर्थाध्यायस्य प्रथमःपादः समाप्तः।

अथ चतुर्थाध्यायस्य द्वितीयपादः

१. तेनरक्तं रागात् । कषायेण रक्तं वस्त्रं काषायम् ।

२. लाक्षारोचनाट्ठक् । लाक्षिकः । रौचनिकः । * शकलकर्दमाभ्यामुपसंख्यानम् * शाकलिकः । कार्दमिकः । आभ्यामणपीति वृत्तिः । शाकलः । कार्दमः । * नील्या अन् * नील्यारक्तं नीलम् । * पीतात्कन् * पीतकम् । * हरिद्रामहारजनाभ्यामञ् * हारिद्रम् । माहारजनम् ।

३. नक्षत्रेण युक्तः कालः । पुष्येण युक्तं पौषमहः । पौषी रात्रिः ।

७. दृष्टं साम । वसिष्ठेन दृष्टं वासिष्ठं साम । वैश्वामित्रम् । * अस्मिन्नर्थेऽण् डिद्वा वक्तव्यः * औशनम् । औशनसम् ।

८. कलेर्ढक् । कालेयम् ।

९. वामदेवाड् ड्यड्ड्यौ । वामदेव्यम् ।

१०. परिवृतो रथः । वस्त्रैः परिवृतो वास्त्रो रथः । काम्बलः ।

११. पाण्डुकम्बलादिनिः । पाण्डुकम्बली ।

१२. द्वैपवैयाघ्रादञ् । अणोऽपवादः द्वैपेन परिवृतो रथो द्वैपः । वैयाघ्रः ।

१४. तत्रोद्धृतममत्रेभ्यः । शराव उद्धृतः, शाराव ओदनः ।

१५. स्थण्डिलाच्छयितरि व्रते । स्थण्डिले शेते, स्थाण्डिलो भिक्षुः ।

१६. संस्कृतं भक्षाः । भ्राष्ट्रे संस्कृताः, भ्राष्ट्रा यवाः । अष्टासु कपालेषु संस्कृतः पुरोडाशोऽष्टाकपालः ।

१७. शूलोखाद्यत् । अणोऽपवादः । शूले संस्कृतम्, शूल्यं मांसम् । उख्यम् ।

१८. दध्नष्ठक् । दाधिकम् ।

१९. उदश्वितोऽन्यतरस्याम् । औदश्वित्कः, औदश्वितः ।

२०. क्षीराड् ढञ् । क्षैरेयी यवागूः ।

२१. सास्मिन् पौर्णमासीति । पौषी पौर्णमासी अस्मिन्, पौषो मासः । माघः ।

२२. आग्रहायण्यश्वत्थाट् ठक् । अणोऽपवादः । अग्रं हायनमस्या आग्रहायणी, सास्मिन् पौर्णमासीति, आग्रहायणिको मासः । अश्वत्थेन युक्ता पौर्णमासी, अश्वत्थोऽस्मिन्, आश्वत्थिको मासः ।

२३. **विभाषा फाल्गुनीश्रवणाकार्त्तिकीचैत्रीभ्यः** । पक्षेऽण् । फाल्गुनिकः, फाल्गुनः । श्रावणिकः, श्रावणः । कार्त्तिकिकः, कार्त्तिकः । चैत्रिकः, चैत्रः ।

२४. **सास्य देवता** : इन्द्रो देवतास्य, ऐन्द्रं हविः । पाशुपतम् । बार्हस्पत्यम् । ऐन्द्रो मन्त्रः ।

२६. **शुक्राद्घन्** । अणोऽपवादः । शुक्रियम ।

२७. **अपोनप्त्रपान्नप्तृभ्यां घः** । अपोनप्त्रियम् । अपान्नप्त्रियम् ।

२८. **छ च** । अपोनप्त्रीयम् । अपान्नप्त्रीयम् । * शतरुद्राद्घश्च * शतं रुद्रा देवतास्य; शतरुद्रियम्, शतरुद्रीयम् ।

२९. **महेन्द्राद्घाणौ च** । चाच्छः । महेन्द्रियम्, माहेन्द्रम्, महेन्द्रीयम् ।

३०. **सोमाट् ट्यण्** । सौम्यम । सौमी ऋक् ।

३१. **वायृतुपित्रुषसो यत्** । वायव्यम् । ऋतव्यम् । पित्र्यम् । उषस्यम् ।

३२. **द्यावापृथिवीशुनासीरमरुत्वदग्नीषोमवास्तोष्पतिगृहमेधाच्छ च** । चाद्यत् । द्यावापृथिवीयम्, द्यावापृथिव्यम् । शुनासीरीयम्, शुनासीर्यम् । मरुत्वतीयम्, मरुत्वत्यम् । अग्नीषोमीयम्, अग्नीषोम्यम् । वास्तोष्पतीयम् । वास्तोष्पत्यम् । गृहमेधीयम्, गृहमेध्यम् ।

३३. **अग्नेर्ढक्** । अणोऽपवादः । आग्नेयोऽष्टाकपालः ।

३६. **पितृव्यमातुलमातामहपितामहाः** । * पितुर्भ्रातरि व्यत् * पितुर्भ्राता, पितृव्यः । * मातुर्डुलच् * मातुर्भ्राता, मातुलः । * मातृपितृभ्यां पितरि डामहच् * मातुः पिता, मातामहः । पितुः पिता, पितामहः । * मातरि षिच्च * मातामही । पितामही । * अवेर्दुग्धे सोढदूसमरीसचो वक्तव्या च * अवेर्दुग्धम्, अविसोढम् । अविदूसम् । अविमरीसम् । * तिलान्निष्फलात्पिञ्जपेजौ * तिलपिञ्जः । तिलपेजः । * पिञ्जश्छन्दसि डिच्च * तिल्पिञ्जः ।

३७. **तस्य समूहः** । काकानां समूहः, काकम् । वाकम् ।

३८. **भिक्षादिभ्योऽण्** । भैक्षम् । गर्भिणीनां गार्भिणम् । युवतीनां यौवनम् । शत्रन्तात्तु, यौवतम् ।

४३. **ग्रामजनबन्धुभ्यस्तल्** । ग्रामता । जनता । बन्धुता । * गजसहायाभ्यां चेति वक्तव्यम् * गजता । सहायता । * अह्नः खः क्रतौ * अहीनः । आह्नोऽन्यः । * पर्श्वा णस् वक्तव्यः * पर्शूनां समूहः, पार्श्वम् ।

४६. **चरणेभ्यो धर्मवत्** । काठकम् । छान्दोग्यम् ।

१४७. **अचित्तहस्तिधेनोष्ठक्** : साक्तुकम् । धैनुकम् ।

४८. **केशाश्वाभ्यां यञ्छावन्यतरस्याम्** । पक्षे ठगणौ । कैश्यम्, कैशिकम् । अश्वीयम्, आश्वम् ।

४९. **पाशादिभ्यो यः** । पाश्या । तृण्या । धूम्या । वन्या । वात्या ।

५०. **खलगोरथात्** । खल्या । गव्या । रथ्या ।

५९. **तदधीते तद्वेद** । व्याकरणमधीते, वेद वा, वैयाकरणः ।

६१. **क्रमादिभ्यो वुन्** । क्रमकः । पदकः । शिक्षकः । मीमांसकः ।

६३. **वसन्तादिभ्यष्ठक्** । वासन्तिकः । अथर्वाणमधीते, आथर्वणिकः ।

६४. **प्रोक्ताल्लुक्** । पाणिनीयः । पाणिनीया ।

६५. **सूत्राच्च कोपधात्** । अष्टावध्यायाः परिमाणमस्य, अष्टकं पाणिनेः सूत्रम्, तदधीते, वेद वा, अष्टकः । अष्टकौ । अष्टकाः ।

६७. **तदस्त्यस्मिन्देशे तन्नाम्नि** । उदम्बराः सन्ति अस्मिन्देशे औदम्बरः ।

६८. **तेन निर्वृत्तम्** । कुशाम्बेन निर्वृत्ता, कौशाम्बी नगरी ।

६९. **तस्य निवासः** । शिबीनां निवासो देशः, शैबः ।

७०. **अदूरभवश्च** । विदिशाया अदूरभवं नगरं वैदिशम् ।

८१. **जनपदे लुप्** । पञ्चालानां निवासो जनपदः, पञ्चालाः । कुरवः । अङ्गाः । वङ्गाः । कलिङ्गाः ।

८२. **वरणादिभ्यश्च** । वरणानामदूरभवं नगरं वरणाः ।

८३. **शर्कराया वा** । शर्करा, शार्करम् ।

८४. **ठक्छौ च** । कुमुदादौ वराहादौ च पाठाट्ठच्ककौ । शार्करिकम्, शर्करीयम्, शर्करिकम्, शार्करकम् ।

८५. **नद्यां मतुप्** । इक्षुमती ।

८६. **मध्वादिभ्यश्च** । मधुमान् ।

८७. **कुमुदनडवेतसेभ्यो ड्मतुप्** । कुमुद्वान् । नड्वान् । वेतस्वान् । * महिषाच्चेति वक्तव्यम् । * महिष्मान् देशः ।

८८. **नडशादाड्ड्वलच्** । नड्वलः । शाद्वलः ।

९२. **शेषे** । अयमधिकारो विधिश्च । चक्षुषा गृह्यते, चाक्षुषं रूपम् । श्रावणः शब्दः औपनिषदः पुरुषः । दृषदि पिष्टाः, दार्षदाः सक्तवः । उलूखले क्षुण्णः, औलू

खलो यावकः । अश्वैरुह्यते, आश्वो रथः । चातुरं शकटम् । चतुर्दश्यां दृश्यते, चातुर्दशं रक्षः ।

९३. **राष्ट्रावारपाराद्घखौ** । राष्ट्रियः । अवारपारीणः । * अवारपाराद्विगृहीतादपि विपरीताच्चेति वक्तव्यम् * अवारीणः । पारीणः । पारावारीणः ।

९४. **ग्रामाद्यखञौ** । ग्राम्यः । ग्रामीणः ।

९६. **कुलकुक्षिग्रीवाभ्यः श्वास्यलङ्कारेषु** । कौलेयकः श्वा । कौलोऽन्यः । कौक्षेयकोऽसिः । कौक्षोऽन्य । ग्रैवेयकोऽलङ्कारः । ग्रैवोऽन्यः ।

९७. **नद्यादिभ्यो ढक्** । नादेयम् । माहेयम् । वाराणसेयम् ।

९८. **दक्षिणापश्चात्पुरसस्त्यक्** । दाक्षिणात्यः पाश्चात्यः । पौरस्त्यः ।

१०१. **द्युप्रागपागुदक्प्रतीचो यत्** । दिव्यम् । प्राच्यम । उदीच्यम् । प्रतीच्यम् ।

१०४. **अव्ययात्त्यप्** । * अमेहक्वतसित्रेभ्य एव * अमात्यः । इहत्यः । क्वत्यः । ततस्त्यः । तत्रत्यः । * त्यब्नेर्ध्रुव इति वक्तव्यम् * नित्यः । * निसो गते * निर्गतो वर्णाश्रमेभ्यो निष्ट्यश्चाण्डालादिः । * अरण्याण्णः * आरण्याः सुमनसः । * दूरादेत्यः * दूरेत्यः । * उत्तरादाहञ् * औत्तराहः ।

१०७. **दिक्पूर्वपदादसंज्ञायां ञः** । अणोऽपवादः । पौर्वशालः । पूर्वेषुकामशमः ।

११४. **वृद्धाच्छः** । शालीयः । मालीयः । तदीयः ।

११५. **भवतष्ठक्छसौ** । भावत्कः, भवदीयः । शत्रन्तात्तु, भावतः ।

११६. **काश्यादिभ्यष्ठञ्ञिठौ** । काशिकी, काशिका । वैदिकी, वैदिका । * आपदादिपूर्वपदात्कालान्तात् * आपत्कालिकी, आपत्कालिका ।

१२९. **अरण्यान्मनुष्ये** । णस्यापवादः । * पथ्यध्यायन्यायविहारमनुष्यहस्तिष्विति वाच्यम् * आरण्यकः पन्थाः, अध्यायः, न्यायः, विहारः, मनुष्यः, हस्ती वा । * वा गोमयेषु * आरण्यकाः, आरण्या वा गोमयाः ।

१४३. **पर्वताच्च** । पर्वतीयः ।

इति लघुपाणिनीये चतुर्थाध्यायस्य द्वितीयपादः समाप्तः ।

अथ लघुपाणिनीये चतुर्थाध्यायस्य तृतीयपादः

१. **युष्मदस्मदोरन्यतरस्यां खञ्च** । चाच्छः : पक्षेऽण् । युष्मदीयः । अस्मदीयः ।

२. **तस्मिन्नणि च युष्माकास्माकौ** । यौष्माकीणः । आस्माकीनः । यौष्माकः । आस्माकः ।

३. **तवकममकावेकवचने** । तावकीनः, तावकः । मामकीनः, मामकः । त्वदीयः । मदीयः ।

८. **मध्यान्मः** । मध्यमः । * आदेश्च * आदिमः । * अवोधसोर्लोपश्च * अवमः । अधमः ।

९. **अ साम्प्रतिके** । मध्यो वैयाकरणः । मध्यं दारु ।

१०. **द्वीपादनुसमुद्रं यञ्** । द्वैप्यम्, द्वैप्या ।

११. **कालाट्ठञ्** । मासिकम् । सांवत्सरिकम् । सायंप्रातिकः । पौनःपुनिकः ।

१२. **श्राद्धे शरदः** । ऋत्वणोऽपवादः । शारदिकं श्राद्धम् ।

१५. **श्वसस्तुट् च** । शौवस्तिकम्, श्वस्त्यम्, श्वस्तनम् ।

१६ **संधिवेलाद्यृतुनक्षत्रेभ्योऽण्** । सन्धिवेलायां भवं सान्धिवेलम् । सान्ध्यम् । ग्रैष्मम् । तैषम् । पौषम् । * संवत्सरात्फलपर्वणोः * सांवत्सरं फलं पर्व वा । अन्यत्सांवत्सरिकम् ।

१७. **प्रावृष एण्यः** । प्रावृषेण्यः ।

१८. **वर्षाभ्यष्ठक्** । वर्षासु साधु, वार्षिकं वासः ।

२०. **वसन्ताच्च** । वासन्तिकम् ।

२१. **हेमन्ताच्च** । हैमन्तिकम् ।

२३. **सायंचिरंप्राह्णेप्रगेऽव्ययेभ्यष्ट्युट्युलौ तुट् च** । सायन्तनम् । चिरन्तनम् । प्राह्णेतनम । प्रगेतनम् । दोषातनम् । दिवातनम् । *चिरपरुत्परारिभ्यस्त्नो वक्तव्यः । चिरत्नम् । परुत्नम् । परारित्नम् * अग्रादिपश्चाड्डिमच् * अग्रिमम् । आदिमम् । पश्चिमम् । * अन्ताच्च * अन्तिमम् ।

२५. **तत्र जातः** । स्रुघ्ने जातः, स्रौघ्नः । औत्सः । राष्ट्रियः--- इत्यादि ।

३४. **श्रविष्ठाफल्गुन्यनुराधास्वातितिष्यपुनर्वसुहस्तविशाखाषाढाबहुलाल्लुक्** । श्रविष्ठासु जातः, श्रविष्ठः । फल्गुनः । अनुराधः । स्वातिः तिष्यः । पुनर्वसुः । हस्तः । विशाखः । अषाढः । बहुलः । * चित्रारेवतीरोहिणीभ्यः स्त्रियामुपसंख्यानम् * चित्रायां जाता, चित्रा । रेवती । रोहिणी * फल्गुन्यषा-

ढाभ्यां टानौ वक्तव्यौ * फल्गुनी । अषाढा । * श्रविष्ठाषाढाभ्यां छण् वक्तव्यः* अस्त्रियामपि । श्राविष्ठीयः । आषाढीयः ।

३९. प्रायभवः । स्रुघ्ने प्रायेण भवति, स्रौघ्नः ।

४०. उपजानूपकर्णोपनीवेष्ठक् । औपजानुकः । औपकर्णिकः । औपनीविकः ।

४१. संभूते । स्रुघ्ने संभवति, स्रौघ्नः ।

४२ .कोशाड्ढञ् । कौशेयम् वस्त्रम् ।

४३. कालात्साधुपुष्प्यत्पच्यमानेषु । हेमन्ते साधुर्हैमन्तः प्राकारः । वसन्ते पुष्यन्ति, वासन्त्यः कुन्दलताः । शरदि पच्यन्ते, शारदाः शालयः ।

४४. उप्ते च । हेमन्ते उप्यन्ते, हैमन्ता यवाः ।

४७. देयमृणे । मासे देयमृणं मासिकम् ।

५३. तत्र भवः । स्रुघ्ने भवः, स्रौघ्नः । राष्ट्रियः

५४. दिगादिभ्यो यत् । दिश्यम् । वर्ग्यम् ।

५५. शरीरावयवाच्च । दन्त्यम् । कण्ठ्यम् ।

५६. दृतिकुक्षिकलशिवस्त्यहेर्ढञ् । दार्त्तेयम् । कौक्षेयम् । कालशेयम् । वास्तेयम् । आस्तेयम् । आहेयम् ।

५७. ग्रीवाभ्योऽण् च । ग्रैवेयम्, ग्रैवम् ।

५८. गम्भीराञ्ञ्यः । गाम्भीर्यम् ।

७३. अणृगयनादिभ्यः । ठञादेरपवादः । आर्गयनः । औपनिषदः । वैयाकरणः ।

७४. तत आगतः । स्रुघ्नादागतः स्रौघ्नः ।

७७. विद्यायोनिसम्बन्धेभ्यो वुञ् । औपाध्यायकः । पैतामहकः ।

७९. पितुर्यच्च । चाट्ठञ् । पित्र्यम् । पैत्रिकम् ।

८३. प्रभवति । हिमवतः प्रभवति, हैमवती गङ्गा । दारदी सिन्धुः ।

८४. विदूराञ्ञ्यः । अणोऽपवादः । विदूरात्प्रभवति, वैदूर्यो मणिः ।

८५. तद्गच्छति पथिदूतयोः । स्रुघ्नं गच्छति, स्रौघ्नः पन्था दूतो वा ।

८७. अधिकृत्यकृते ग्रन्थे । शारीरकमधिकृत्य कृतो ग्रन्थः, शारीरकीयः ।

८८. शिशुक्रन्दयमसभद्वन्द्वेन्द्रजननादिभ्यश्छः । अणोऽपवादः । शिशुक्रन्दमधिकृत्य कृतो ग्रन्थः, शिशुक्रन्दीयः । यमसभीयः । किरातार्जुनीयम् । इन्द्रजननीयम् । विरुद्धभोजनीयम् ।

८९. सोऽस्य निवासः । स्रौघ्नः । माथुरः ।

९०. अभिजनश्च । स्रौघ्नः ।

१०१. तेन प्रोक्तम् । पाणिनिना प्रोक्तं पाणिनीयम् । आपिशलम्, काशकृत्स्नम् ।

११५. उपज्ञाते । पाणिनिनोपज्ञातम्, पाणिनीयम ।

११६. कृते ग्रन्थे । वररुचिना कृतो वाररुचो ग्रन्थः ।

११७. संज्ञायाम् । मक्षिकाभिः कृतं माक्षिकं मधु ।

१२०. तस्येदम् । उपगोरिदमौपगवम् । * वहेस्तुरणिट् च * संवोढुः स्वम्, सांवहित्रम् । * अग्नीधः शरणे रण् भं च * अग्नीधः स्थानमाग्नीध्रम् । तात्स्थ्यात्सोऽप्याग्नीध्रः । * समिधामाधाने षेण्यण् * सामिधेन्यो मन्त्रः । सामिधेनी ऋक् ।

१२१. रथाद्यत् । रथ्यं चक्रम् ।

१३४. तस्य विकारः । अश्मनो विकार आश्मः । भास्मनः । मार्त्तिकः ।

१४५. गोश्च पुरीषे । गोः पुरीषं गोमयम् ।

१४६. पिष्टाच्च । पिष्टमयं भस्म ।

१४७. संज्ञायां कन् । पूपोऽपूपः पिष्टकः स्यात् ।

१४८. व्रीहेः पुरोडाशे । व्रीहिमयः पुरोडाशः । व्रैहमन्यत् ।

१५७. उष्ट्राद् वुञ् । प्राण्यञोऽपवादः । औष्ट्रकः ।

१५८. उमोर्णयोर्वा । औमकम्, औमम् । और्णकम्, और्णम् ।

१५९. एण्या ढञ् । ऐणेयम् । एणस्य तु, ऐणम् ।

१६०. गोपयसोर्यत् । गव्यम् । पयस्यम् ।

१६१. द्रोश्च । द्रुर्वृक्षस्तस्य विकारोऽवयवो वा, द्रव्यम् ।

१६३. फले लुक् । आमलक्याः फलमामलकम् ।

१६४ प्लक्षादिभ्योऽण् । विधानसामर्थ्यान्न लुक् । प्लाक्षम् । नैयग्रोधम् ।

१६५. जम्ब्वा वा । जाम्बवम् । जम्बु ।

१६६. लुप् च । जम्बूः । * फलपाकशुषामुपसंख्यानम् * व्रीहयः । मुद्गाः । * पुष्पमूलेषु बहुलम् * मल्लिकायाः पुष्पं मल्लिका । जात्याः पुष्पं जाती । विदार्या मूलं विदारी । बहुलग्रहणान्नेह :—पाटलानि पुष्पाणि । साल्वानि मूलानि । क्वचिल्लुक् । अशोकम् करवीरम् ।

१६७. हरीतक्यादिभ्यश्च । हरीतक्याः फलानि, हरीतक्यः ।

इति लघुपाणिनीये चतुर्थाध्यायस्य तृतीयःपादः समाप्तः ।

अथ चतुर्थाध्यायस्य चतुर्थपादः ।

१. प्राग्वहतेष्ठक् । तद्वहतीत्यतः प्रागधिकारोऽयम् ।

२. तेन दीव्यति खनति जयति जितम् । अक्षैर्दीव्यति, आक्षिकः । अभ्र्यां खनति, आभ्रिकः । अक्षैर्जयति, आक्षिकः । जितमाक्षिकम् ।

३. संस्कृतम् । दध्ना संस्कृतं दाधिकम् । मारोचिकम् ।

५. तरति । उडुपेन तरति, औडुपिकः ।

६. गोपुच्छाठ्ठञ् । गौपुच्छिकः ।

८. चरति । हास्तिकः । शाकटिकः । दाधिकः ।

१२. वेतनादिभ्यो जीवति । वेतनेन जीवति, वैतनिकः । धानुष्कः ।

२२. संसृष्टे । दध्ना संसृष्टं दाधिकम् ।

२३. चूर्णादिनिः । चूर्णैः संसृष्टाश्चूर्णिनोऽपूपाः ।

२४. लवणाल्लुक् । लवणः सूपः । लवणं शाकम् ।

३०. प्रयच्छति गर्ह्यम् । द्विगुणार्थं द्विगुणं प्रयच्छति, द्वैगुणिकः । त्रैगुणिकः । * वृद्धेर्वृधुषिभावो वक्तव्यः * वार्धुषिकः ।

३४. शब्ददर्दुरं करोति । शब्दं करोति, शाब्दिकः । दार्दुरिकः ।

४१. धर्मं चरति । धार्मिकः । * अधर्माच्चेति वक्तव्यम् * आधर्मिकः ।

४५. सेनाया वा । सैन्याः, सैनिकाः ।

५७. प्रहरणम् । असिः प्रहरणमस्य, आसिकः । धानुष्कः ।

५८. परश्वधाच्च । पारश्वधिकः ।

५९. शक्तियष्ट्योरीकक् । शाक्तीकः । याष्टीकः ।

६०. अस्ति नास्ति दिष्टं मतिः । अस्ति परलोक इति मतिर्यस्य, आस्तिकः । नास्तिकः । दैष्टिकः ।

६१. शीलम् । अपूपभक्षणं शीलमस्य, आपूपिकः ।

६२. छत्रादिभ्यो णः । छात्रः । गुरोर्दोषापवरण छत्रं शीलंयस्य ।

७३. निकटे वसति । नैकटिको भिक्षुः ।

७४. आवसथात् ष्ठल् । आवसथिकः । आवसथिकी ।

७५. प्राग्घिताद्यत् । तस्मै हितमित्यतः प्राग्यदधिक्रियते ।

७६. तद्वहति रथयुगप्रासङ्गम् । रथं वहति, रथ्यः । युग्यः । प्रासङ्ग्यः ।

७७. धुरो यड्ढकौ । धुर्यः । धौरेयः ।

७८. खः सर्वधुरात् । सर्वधुरीणः ।

८६. वशं गतः । वश्यः परेच्छानुचारी ।

९०. गृहपतिना संयुक्ते ञ्यः । गार्हपत्योऽग्निः ।

९१. नौवयोधर्मविषमूलसीतातुलाभ्यस्तार्यतुल्यप्राप्यवध्यानाम्यसमसमितसंमितेषु । नावा तार्यं नाव्यम् । वयसा तुल्यो वयस्यः । धर्मेण प्राप्यं धर्म्यम् । विषेण वध्यो विष्यः । मूलेनानाम्यं मूल्यम् । मूलेन समो मूल्यः । सीतया समितं सीत्यं क्षेत्रम् । तुलया संमितं तुल्यम् ।

९२. धर्मपथ्यर्थन्यायादनपेते । धर्मादनपेतं धर्म्यम् । पथ्यम् । अर्थ्यम् । न्याय्यम् ।

९४. उरसोऽण् च । औरसः, उरस्यः पुत्रः ।

९५. हृदयस्य प्रियः । हृद्यो देशः ।

९८. तत्र साधुः । अग्रे साधुः, अग्र्यः । सामन्यः । कर्मण्यः । शरण्यः ।

१०४. पथ्यतिथिवसतिस्वपतेर्ढञ् । पाथेयम् । आतिथेयम् । वासतेयी रात्रिः । स्वापतेयं धनम् ।

१०५. सभाया यः : सभ्यः ।

१०७. समानतीर्थे वासी । समाने, तीर्थे गुरौ वसतीति, सतीर्थ्यः ।

१०८. समानोदरे शयित ओ चोदात्तः । समानोदर्यो भ्राता ।

१०९. सोदराद्यः । सोदर्यः ।

१११. पाथोनदीभ्यां ड्यण् । तमु त्वा पाथ्यो वृषा । चनो दधीत नाद्यो गिरो मे ।

११२. वेशन्तहिमवद्भ्यामण् । वैशन्तीभ्यः स्वाहा । हैमवतीभ्यः स्वाहा ।

११३. स्रोतसो विभाषा ड्यड्ड्यौ । पक्षे यत् । स्रोतसि भवः, स्रोत्यः । स्रोतस्यः ।

११४. सगर्भसयूथसनुताद्यन् । यतोऽपवादः । अनुभ्राता सगर्भ्यः । अनुसखा सयूथ्यः । यो नः सनुत्य उत वा जिघत्नु ।

११६. अग्राद्यत् । अग्र्यम् ।

११७. घच्छौ च । चाद्यत् । अग्रियम् । अग्रीयम् ।

इति लघुपाणिनीये चतुर्थाध्यायस्य चतुर्थःपादः समाप्तः ।

॥ चतुर्थाध्यायश्च समाप्तः ॥

अथ चतुर्थाध्यायस्य चतुर्थपादः ।

१. प्राग्वहतेष्ठक् । तद्वहतीत्यतः प्रागधिकारोऽयम् ।

२. तेन दीव्यति खनति जयति जितम् । अक्षैर्दीव्यति, आक्षिकः । अभ्र्या खनति, आभ्रिकः । अक्षैर्जयति, आक्षिकः । जितमाक्षिकम् ।

३. संस्कृतम् । दध्ना संस्कृतं दाधिकम् । मारोचिकम् ।

५. तरति । उडुपेन तरति, औडुपिकः ।

६. गोपुच्छाट्ठञ् । गौपुच्छिकः ।

८. चरति । हास्तिकः । शाकटिकः । दाधिकः ।

१२. वेतनादिभ्यो जीवति । वेतनेन जीवति, वैतनिकः । धानुष्कः ।

२२. संसृष्टे । दध्ना संसृष्टं दाधिकम् ।

२३. चूर्णादिनिः । चूर्णैः संसृष्टाश्चूर्णिनोऽपूपाः ।

२४. लवणाल्लुक् । लवणः सूपः । लवणं शाकम् ।

३०. प्रयच्छति गर्ह्यम् । द्विगुणार्थं द्विगुणं प्रयच्छति, द्वैगुणिकः । त्रैगुणिकः । * वृद्धेर्वृधुषिभावो वक्तव्यः * वार्धुषिकः ।

३४. शब्ददर्दुरं करोति । शब्दं करोति, शाब्दिकः । दार्दुरिकः ।

४१. धर्मं चरति । धार्मिकः । * अधर्माच्चेति वक्तव्यम् * आधर्मिकः ।

४५. सेनाया वा । सैन्याः, सैनिकाः ।

५७. प्रहरणम् । असिः प्रहरणमस्य, आसिकः । धानुष्कः ।

५८. परश्वधाच्च । पारश्वधिकः ।

५९. शक्तियष्ट्योरीकक् । शाक्तीकः । याष्टीकः ।

६०. अस्ति नास्ति दिष्टं मतिः । अस्ति परलोक इति मतिर्यस्य, आस्तिकः । नास्तिकः । दैष्टिकः ।

६१. शीलम् । अपूपभक्षणं शीलमस्य, आपूपिकः ।

६२. छत्रादिभ्यो णः । छात्रः । गुरोर्दोषापवरण छत्रं शीलंयस्य ।

७३. निकटे वसति । नैकटिको भिक्षुः ।

७४. आवसथात् ष्ठल् । आवसथिकः । आवसथिकी ।

७५. प्राग्घिताद्यत् । तस्मै हितमित्यतः प्राग्यदधिक्रियते ।

७६. तद्वहति रथयुगप्रासङ्गम् । रथं वहति, रथ्यः । युग्यः । प्रासङ्ग्यः ।

७७. धुरो यड्ढकौ । धुर्यः । धौरेयः ।

७८. खः सर्वधुरात् । सर्वधुरीणः ।

८६. वशं गतः । वश्यः परेच्छानुचारी ।

९०. गृहपतिना संयुक्ते ञ्यः । गार्हपत्योऽग्निः ।

९१. नौवयोधर्मविषमूलसीतातुलाभ्यस्तार्यतुल्यप्राप्यवध्यानाम्य-समसमितसंमितेषु । नावा तार्यं नाव्यम् । वयसा तुल्यो वयस्यः । धर्मेण प्राप्यं धर्म्यम् । विषेण वध्यो विष्यः । मूलेनानाम्यं मूल्यम् । मूलेन समो मूल्यः । सीतया समितं सीत्यं क्षेत्रम् । तुलया संमितं तुल्यम् ।

९२. धर्मपथ्यर्थन्यायादनपेते । धर्मादनपेतं धर्म्यम् । पथ्यम् । अर्थ्यम् । न्याय्यम् ।

९४. उरसोऽण् च । औरसः, उरस्यः पुत्रः ।

९५. हृदयस्य प्रियः । हृद्यो देशः ।

९८. तत्र साधुः । अग्रे साधुः, अग्र्यः । सामन्यः । कर्मण्यः । शरण्यः ।

१०४. पथ्यतिथिवसतिस्वपतेर्ढञ् । पाथेयम् । आतिथेयम् । वासतेयी रात्रिः । स्वापतेयं धनम् ।

१०५. सभाया यः : सभ्यः ।

१०७. समानतीर्थे वासी । समाने, तीर्थे गुरौ वसतीति, सतीर्थ्यः ।

१०८. समानोदरे शयित ओ चोदात्तः । समानोदर्यो भ्राता ।

१०९. सोदराद्यः । सोदर्यः ।

१११. पाथोनदीभ्यां ड्यण् । तमु त्वा पाथ्यो वृषा । चनो दधीत नाद्यो गिरो मे ।

११२. वेशन्तहिमवद्भ्यामण् । वैशन्तीभ्यः स्वाहा । हैमवतीभ्यः स्वाहा ।

११३. स्रोतसो विभाषा ड्यड्ड्यौ । पक्षे यत् । स्रोतसि भवः, स्रोत्यः । स्रोतस्यः ।

११४. सगर्भसयूथसनुताद्यन् । यतोऽपवादः । अनुभ्राता सगर्भ्यः । अनुसखा सयूथ्यः । यो नः सनुत्य उत वा जिघत्नु ।

११६. अग्राद्यत् । अग्र्यम् ।

११७. घच्छौ च । चाद्यत् । अग्रियम् । अग्रीयम् ।

इति लघुपाणिनीये चतुर्थाध्यायस्य चतुर्थःपादः समाप्तः ।

॥ चतुर्थाध्यायश्च समाप्तः ॥

अथ लघुपाणिनीये पञ्चमाध्यायस्य प्रथमपादः

छयतोरधिकारः

१. प्राक् क्रीताच्छः । तेन क्रीतमित्यतः प्राक् छोऽधिक्रियते ।

२. उगवादिभ्यो यत् । छस्यापवादः । शङ्कव्यं दारु । गव्यम् । हविष्यम् * नाभि नभं च * नभ्योऽक्षः । नभ्यमञ्जनम् । * शुनः सम्प्रसारणं वा च दीर्घत्वम् * शून्यम् । शुन्यम् । * ऊधसोऽनङ् च * ऊधन्यः ।

५. तस्मै हितम् । वत्सेभ्यो हितो वत्सीयो गोधुक् । शङ्कव्यम् । गव्यम् ।

६. शरीरावयवाद्यत् । दन्त्यम् । कण्ठ्यम् । नस्यम् । नाभ्यम् । शीर्षण्यः ।

७. खलयवमाषतिलवृषब्रह्मणश्च । खलाय हितं खल्यम् । यव्यम् । माष्यम् । तिल्यम् । वृष्यम् । ब्रह्मण्यम् । चाद्रथ्या ।

९. आत्मन्विश्वजनभोगोत्तरपदात्खः । आत्मने हितमात्मनीनम् । विश्वजनीनम् । * कर्मधारयादेवेष्यते * नेह :—विश्वजनीयम् । * पञ्चजनादुपसंख्यानम् * पञ्चजनीनम् । * सर्वजनाट्ठञ् खश्च * सार्वजनिकः । सर्वजनीनः । * महाजनाट्ठञ् * माहाजनिकः । मातृभोगीणः । पितृभोगीणः । राजभोगीनः । * आचार्यादणत्वं च * आचार्यभोगीनः ।

१२. तदर्थं विकृतेः प्रकृतौ । अङ्गारेभ्य एतानि, अङ्गारीयाणि काष्ठानि । प्राकारीया इष्टकाः । शङ्कव्यम् ।

१४. ऋषभोपानहोर्ञ्यः । छस्यापवादः । आर्षभ्यो वत्सः । औपानह्यो मुञ्जः । औपानह्यं चर्म ।

१५. चर्मणोऽञ् । वघ्र्यै इदं वाघ्रं चर्म । वारत्रं चर्म ।

१६. तदस्य तदस्मिन् स्यादिति । प्राकार आसां स्यादिति, प्राकारीया इष्टकाः । प्रासादीयं दारु । प्राकारीयो देशः ।

१७. परिखाया ढञ् । पारिखेयी भूमिः ।

१८. प्राग्वतेष्ठञ् । अधिक्रियते ।

१९. आर्हादगोपुच्छसंख्यापरिमाणाट्ठक् । ठञोऽपवादः । नैष्किकम् । पाणिकम् । गोपुच्छसंख्यापरिमाणात्तु ठञेव । गौपुच्छिकम् । षाष्ठिकम् । प्रास्थिकम् ।

२२. संख्याया अतिशदन्ताया: कन् । पञ्चभिः क्रीतः, पञ्चकः । बहुकः । तिशदन्तायास्तु, साप्ततिकः । चात्वारिंशत्कः ।

२३. वतोरिड्वा । तावतिकः, तावत्कः ।

३६. द्वित्रिपूर्वादण् च । चाद्यत् । द्वैशाणम्, द्विशाण्यम्, द्विशाणम् ।

३७. तेन क्रीतम् । गौपुच्छिकम् । साप्ततिकम् । प्रास्थिकम् । नैष्किकम् ।

४०. पुत्राच्छ च । चाद्यत् । पुत्रीयः, पुत्र्यः ।

४१. सर्वभूमिपृथिवीभ्यामणञौ । सर्वभूमेर्निमित्तं संयोग उत्पातो वा, सार्वभौमः । पार्थिवः ।

४२. तस्येश्वरः । सर्वभूमेरीश्वरः, सार्वभौमः । पार्थिवः ।

४३. तत्र विदित इति च । सार्वभौमः । पार्थिवः ।

४४. लोकसर्वलोकाट्ठञ् । लौकिकः । सार्वलौकिकः ।

५७. तदस्य परिमाणम् । प्रस्थं परिमाणमस्य, प्रास्थिको राशिः ।

५८. संख्यायाः संज्ञासङ्घसूत्राध्ययनेषु । पञ्चैव, पञ्चकाः शुकाः । पञ्च परिमाणमस्य, पञ्चकः संङ्घः । अष्टकं पाणिनीयं सूत्रम् । पञ्चकमध्ययनम् । * स्तोमे डविधिः * पञ्चदश मन्त्राः परिमाणमस्य, पञ्चदशः स्तोमः ।

५९. पङ्क्तिविंशतित्रिंशच्चत्वारिंशत्पञ्चाशत्षष्टिसप्तत्यशीतिनवतिशतम् । पङ्क्तिः । विंशतिः । त्रिंशत् । चत्वारिंशत् । षष्टिः । सप्ततिः । अशीतिः । नवतिः । शतम् ।

६०. पञ्चद्दशतौ वर्गे वा । पञ्च परिणाममस्य, पञ्चद्वर्गः, पञ्चकः । दशत्, दशकः ।

६३. तदर्हति । श्वेतच्छत्रमर्हति, श्वैतच्छत्रिकः ।

६६. दण्डादिभ्यो यत् । दण्ड्यः । अर्घ्यः । वध्यः ।

६९. कडङ्करदक्षिणाच्छ च । कडङ्करं माषमुद्गादितृणमर्हतीति, कडङ्करीयो गौः । कडङ्कर्यः । दक्षिणामर्हति, दक्षिणीयः । दक्षिण्यः ।

७३. संशयमापन्नः । सांशयिकः ।

७५. पथः ष्कन् । पथिकः । पथिकी ।

७६. पन्थो ण नित्यम् । पान्थः । पान्था ।

७८. कालात् । अधिकारोऽयं व्युष्टादिभ्योऽणिति यावत् ।

७९. तेन निर्वृत्तम्। आह्निकम्। मासिकम्।

११५. तेन तुल्यं क्रिया चेद्वतिः। ब्राह्मणेन तुल्यं ब्राह्मणवदधीते।

११६. तत्र तस्येव। मथुरायामिव, मथुरावत्स्रुघ्ने प्राकारः। चैत्रस्येव, चैत्रवन्मैत्रस्य गावः।

११७. तदर्हम्। विधिमर्हति, विधिवत्पूज्यते।

११९. तस्य भावस्त्वतलौ। गोर्भावो गोत्वम्। गोता।

१२०. आ च त्वात्। ब्रह्मणस्त्व इत्यतः प्राक् त्वतलावधिक्रियेते। स्त्रिया भावः, स्त्रैणम्, स्त्रीत्वम्, स्त्रीता।

१२१. न नञ्पूर्वात्तत्पुरुषादचतुरसंगतलवणवटयुधकतरसलसेभ्यः। अपतित्वम्। अपटुत्वम्। अन्यत्र तु बार्हस्पत्यम्। आचतुर्यम्। आसङ्गत्यम्। आलवण्यम्। आवट्यम्। आयुध्यम्। आकत्यम्। आरस्यम्। आलस्यम्।

१२२. पृथ्वादिभ्य इमनिज्वा। पृथोर्भावः, प्रथिमा, पार्थवम्। मृदोर्भावो म्रदिमा, मार्दवम्।

१२३. वर्णदृढादिभ्यः ष्यञ्च। शौक्ल्यम्, शुक्लिमा। दार्ढ्यम्, द्रढिमा। औचिती। याथाकामी।

१२४. गुणवचनब्राह्मणादिभ्यः कर्मणि च। चाद्भावे। जडस्य कर्म,भावो वा जाड्यम्। मौढ्यम्। ब्राह्मण्यम्। * अर्हतो नुम् च * आर्हन्त्यम्। आर्हन्ती। * चतुर्वर्णादीनां स्वार्थे उपसंख्यानम् * चत्वारो वर्णाश्चातुर्वर्ण्यम्। चातुराश्रम्यम्। त्रैस्वर्यम्। षाड्गुण्यम्, सैन्यम्। सान्निध्यम्। सामीप्यम्। औपम्यम्। त्रैलोक्यम्। सार्ववेद्यः। * चतुर्वेदस्योभयपदवृद्धिश्च * चातुर्वैद्यः। चतुर्विद्यस्येति पाठे चतुर्विद्य एव, चातुर्वैद्यः।

१२६. सख्युर्यः। सख्युर्भावः, कर्म वा, सख्यम्। * दूतवणिग्भ्यां च * दूत्यम्। वणिज्यम्। ब्राह्मणादित्वाद्वाणिज्यमपि।

१२७. कपिज्ञात्योर्ढक्। कापेयम्। ज्ञातेयम्।

१२८. पत्यन्तपुरोहितादिभ्यो यक्। सैनापत्यम्। पौरोहित्यम्। * राजाऽसे * राज्ञो भावः, कर्म वा, राज्यम्। समासे तु, आधिराज्यम्।

१३१. इगन्ताच्च लघुपूर्वात्। शौचम्। मौनम्।

१३६. ब्रह्मणस्त्व। छस्यापवादः। ब्रह्मत्वम्।

इति लघुपाणिनीये पञ्चमाध्यायस्य प्रथमः पादः समाप्तः।

अथ लघुपाणिनीये पञ्चमाध्यायस्य द्वितीयपादः

१. धान्यानां भवने क्षेत्रे खञ्। मुद्गानां भवनं क्षेत्रं, मौद्गीनम्।

२. व्रीहिशाल्योर्ढक्। व्रैहेयम्। शालेयम्।

३. यवयवकषष्टिकाद्यत्। यव्यम्। यवक्यम्। षष्टिक्यम्।

२२. साप्तपदीनं सख्यम्। सप्तभिः पदैरवाप्यते, साप्तपदीनं सख्यम्।

२३. हैयङ्गवीनं संज्ञायाम्। ह्योगोदोहस्य विकारो हैयङ्गवीनं नवनीतम्।

२५. पक्षात्तिः। पक्षस्य मूलं पक्षतिः।

२६. तेन वित्तश्चुञ्चुप्चणपौ। विद्यया वित्तो विद्याचुञ्चुः। विद्याचणः।

२७. विनञ्भ्यां नानाञौ न सह। विना। नाना।

२८. वेः शालच्छङ्कटचौ। विस्तृतं विशालम्। विशङ्कटम्।

२९. सम्प्रोदश्च कटच्। सङ्कटम्। प्रकटम्। उत्कटम्। चाद्विकटम्।

३१. नते नासिकायाः संज्ञायां टीटञ्नाटज्भ्रटचः। नासिकाया नतमवटीटम्। अवनाटम्। अवभ्रटम्। तद्योगान्नासिकाप्यटीटा। पुरुषोऽवटीटः।

३२. नेर्बिडज्बिरीसचौ। निबिडम्। निबिरीसम्।

३३. इनच् पिटच्चिक चि च। * कप्रत्ययचिकादेशौ च वक्तव्यौ * चिकिनम्। चिपिटम्। चिक्कम्। * क्लिन्नस्य चिल् पिल् लश्चास्य चक्षुषि * क्लिन्ने चक्षुषी अस्य, चिल्लः। पिल्लः। * चुल् च * चुल्लः।

३४. उपाधिभ्यां त्यकन्नासन्नारूढयोः। पर्वतस्यासन्नस्थलमुपत्यका। आरूढं स्थलमधित्यका।

३५. कर्मणि घटोऽठच्। कर्मणि घटते, कर्मठः।

३६. तदस्य संजातं तारकादिभ्य इतच्। तारकाः संजाता अस्य, तारकितं नभः।

३७. प्रमाणे द्वयसज्दघ्नञ्मात्रचः। ऊरू प्रमाणमस्य, ऊरुद्वयसम्। ऊरुदघ्नम्। उरुमात्रम्। * प्रमाणे लः * शमः। दिष्टिः। वितस्तिः * द्विगोर्नि-

त्यम् * द्वौ शमौ प्रमाणमस्य, द्विशमम् । * प्रमाणपरिमाणाभ्यां संख्यायाश्चापि संशये मात्रज्वक्तव्यः * शममात्रम् । गस्तमात्रम् । पञ्चमात्रम् । * वत्वन्तात्स्वार्थे द्वयसज्मात्रचौ बहुलम् * तावद्द्वयसम् । तावन्मात्रम् ।

३८. पुरुषहस्तिभ्यामण् च । पुरुषः प्रमाणमस्य, पौरुषम् । पुरुषद्वयसम् । हास्तिनम् । हस्तिद्वयसम् ।

३९. यत्तदेतेभ्यः परिमाणे वतुप् । यत्परिमाणमस्य, यावान् । तावान् । एतावान् ।

४०. किमिदम्भ्यां वो घः । कियान् । इयान् ।

४१. किमः संख्यापरिमाणे डति च । का संख्या येषां कति, कियन्तः ।

४२. संख्याया अवयवे तयप् । पञ्चावयवा अस्य, पञ्चतयं दारु ।

४३. द्वित्रिभ्यां तयस्यायज्वा । द्वयम्, द्वितयम् । त्रयम्, त्रितयम् ।

४४. उभादुदात्तो नित्यम् । उभयम् ।

४८. तस्य पूरणे डट् । एकादशानां पूरणः, एकादशः ।

४९. नान्तादसंख्यादेर्मट् । पञ्चानां पूरणः, पञ्चमः ।

५१. षट्कतिकतिपयचतुरां थुक् । षण्णां पूरणः, षष्ठः । कतिथः । कतिपयथः । चतुर्थः । * चतुरश्छयतावाद्यक्षरलोपश्च * तुर्यः, तुरीयः ।

५४. द्वेस्तीयः । द्वयोः पूरणो द्वितीयः ।

५५. त्रेः सम्प्रसारणं च । तृतीयः ।

५६. विंशत्यादिभ्यस्तमडन्यतरस्याम् । विंशतितमः, विंशः । एकविंशतितमः, एकविंशः ।

५७. नित्यं शतादिमासार्धमाससंवत्सराच्च । शततमः । एकशततमः । मासतमः । अर्धमासतमः । संवत्सरतमः ।

५८. षष्ट्यादेश्चाऽसंख्यादेः । षष्टितमः, सप्ततितमः । संख्यादेस्तु, एकषष्टः, एकषष्टितमः ।

६९. अंशं हारी । अंशको दायादः ।

७०. तन्त्रादचिरापहृते । तन्त्रकः पटः ।

८०. उत्क उन्मनाः । उत्क उत्कण्ठितः ।

८४. श्रोत्रियंश्छन्दोऽधीते : श्रोत्रियः, छान्दसः ।

८५. श्राद्धमनेन भुक्तमिनिठनौ । श्राद्धी, श्राद्धिकः ।

८६. पूर्वादिनिः । पूर्वी ।

८७. सपूर्वाच्च । कृतपूर्वी कटम् । भुक्तपूर्वी भक्तम् ।

८८. इष्टादिभ्यश्च । इष्टमनेन, इष्टी, । अधीती ।

मत्वर्थीयाः—

९४. तदस्यास्त्यस्मिन्निति मतुप् । गावोऽस्यास्मिन्वा सन्ति, गोमान् । * गुणवचनेभ्यो मतुपो लुगिष्टः * शुक्लो गुणोऽस्यास्तीति, शुक्लः पटः । कृष्णः ।

९६. प्राणिस्थादातो लजन्यतरस्याम् । चूडालः, चूडावान् । प्राण्यङ्गादेव । नेह :—मेधावान् ।

९९. फेनादिलच् च । चाल्लच् । फेनिलः, फेनलः, फेनवान् ।

१००. लोमादिपामादिपिच्छादिभ्यः शनलचः । लोमशः, लोमवान् । रोमशः, रोमवान् । पामनः । * अङ्गात्कल्याणे * अङ्गना । * लक्ष्म्या अच्च * लक्ष्मणः । * विष्वगित्युत्तरपदलोपश्चाकृतसन्धेः * विषुणः । पिच्छिलः, पिच्छवान् । उरसिलः, उरस्वान् ।

१०२. तपःसहस्राभ्यां विनीनी । तपस्वी । सहस्री ।

१०३. अण् च । तापसः । साहस्रः । * ज्योत्स्नादिभ्य उपसंख्यानम् * ज्यौत्स्नः । तामिस्रः ।

१०६. दन्त उन्नत उरच् । उन्नता दन्ता सन्त्यस्य, दन्तुरः ।

१०७. ऊषसुषिमुष्कमधो रः । ऊषरः । सुषिरः । मुष्करः । मधुरः । * रप्रकरणे खमुखकुञ्जेभ्य उपसंख्यानम् * खरः । मुखरः । कुञ्जरः । * नगपांसुपाण्डुभ्यश्च * नगरम् । पांसुरः । पाण्डुरः । * कच्छ्वा ह्रस्वत्वञ्च * कच्छुरः ।

१०८. द्युद्रुभ्यां मः । द्युमः । द्रुमः ।

१०९. केशाद्वोऽन्यतरस्याम् । केशवः, केशिकः, केशी, केशवान् । * अन्येभ्योऽपि दृश्यते * मणिवो नागविशेषः । हिरण्यवः । * अर्णसो लोपश्च * अर्णवः ।

११२. रजःकृष्यासुतिपरिषदो वलच् । रजस्वला स्त्री । कृषीवलः । आसुतीवलः शौण्डिकः । परिषद्वलः । * अन्येभ्योऽपि दृश्यते * भ्रातृवलः । शत्रुवलः ।

११३. दन्तशिखात्संज्ञायाम् । दन्तावलो हस्ती । शिखावलः केकी ।

११४. ज्योत्स्नातमिस्राशृङ्गिणोर्जस्विन्नूर्जस्वलगोमिन्मलिनमलीमसाः । ज्योत्स्ना । तमिस्रा । शृङ्गिणः । ऊर्जस्वी । ऊर्जस्वलः । गोमी । मलिनः । मलीमसः ।

११५. अत इनिठनौ । दण्डी, दण्डिकः ।

११६. व्रीह्यादिभ्यश्च । व्रीही, व्रीहिकः ।

११७. तुन्दादिभ्य इलच्च । तुन्दिलः, तुन्दी, तुन्दिकः, तुन्दवान् । * स्वाङ्गाद् विवृद्धौ * विवृद्धौ कर्णौ यस्य स कर्णिलः, कर्णी, कर्णिकः, कर्णवान् ।

१२१. अस्मायामेधास्रजो विनिः । यशस्वी, यशस्वान् । मायी, मायावान् । स्रग्वी । * आमयस्योपसंख्यानं दीर्घश्च * आमयावी । * शृङ्गवृन्दाभ्यामारकन् * शृङ्गारकः । वृन्दारकः । * फलबर्हाभ्यामिनच् * । फलिनः । बर्हिणः । * हृदयाच्चालुरन्यतरस्याम् * हृदयालुः, हृदयी, हृदयिकः, हृदयवान् । * शीतोष्णतृप्रेभ्यस्तदसहने * शीतं न सहते, शीतालुः । उष्णालुः । तृप्रालुः । * हिमाच्चेलुः * हिमेलुः * । * बलादूलः * बलूलः । * वातात्समूहे च * वातं न सहते, वातस्य समूहो वा, वातूलः । * तप् पर्वमरुद्भ्याम् * पर्वतः । मरुत्तः ।

१२३. ऊर्णाया युस् । ऊर्णायुः ।

१२४. वाचो ग्मिनिः । वाग्मी ।

१२५. आलजाचटौ बहुभाषिणि । * कुत्सित इति वक्तव्यम् * कुत्सितं बहु भाषते, वाचालः । वाचाटः । यस्तु सम्यग्बहु भाषते स वाग्मीत्येव ।

१२६. स्वामिन्नैश्वर्ये । स्वामी ।

१२७. अर्श आदिभ्योऽच् । अर्शांस्यस्य विद्यन्ते, अर्शसः ।

१२९. वातातीसाराभ्यां कुक् च । वातकी । अतीसारकी । * रोगे चायमिष्यते * नेह :—वातवती गुहा । * पिशाचाच्च * पिशाचकी ।

१३१. सुखादिभ्यश्च । सुखी । दुःखी । * माला क्षेपे * मालो ।

१३२. धर्मशीलवर्णान्ताच्च । ब्राह्मणधर्मी । ब्राह्मणशीली । ब्राह्मणवर्णी ।

१३३. हस्ताज्जातौ । हस्ती । अन्यत्र हस्तवान् ।

१३४. वर्णाद् ब्रह्मचारिणि । वर्णी ब्रह्मचारी ।

१३५. पुष्करादिभ्यो देशे । पुष्करिणी । पद्मिनी । अन्यत्र पुष्करवान् करी । * बाहूरुपूर्वपदाद्बलात् * बाहुबली । * ऊरुबली । * सर्वादेश्च * सर्वधनी । सर्वबीजी * अर्थाच्चासन्निहिते * अर्थी । सन्निहिते तु, अर्थवान् ! * तदन्ताच्च * धान्यार्थी । हिरण्यार्थी ।

१३६. बलादिभ्यो मतुबन्यतरस्याम् । बलवान्, बली । उत्साहवान्, उत्साही ।

१३९ तुन्दिवलिवटेर्भः । तुन्दिभः । वलिभः । वटिभः ।

१४०. अहंशुभमोर्युस् । अहंयुः अहङ्कारवान् । शुभंयुः शुभान्वितः ।

इति लघुपाणिनीये पञ्चमाध्यायस्य द्वितीयपादः समाप्तः ।

अथ पञ्चमाध्यायस्य तृतीयपादः

१. **प्राग्दिशो विभक्तिः** । ततः । यतः । कुतः ।

२. **किंसर्वनामबहुभ्योऽद्व्यादिभ्यः** । अधिक्रियतेऽयं प्राग्दिशः । कुतः कुत्र । यतः । यत्र । बहुतः । बहुत्र ।

३. **इदम इश्** । इह ।

४. **एतेतौ रथोः** । इशोपवादः । एतर्हि । इत्थम् ।

५. **एतदोऽन्** । एतदः ! एतर्हि । इत्थम् । अन् । अतः । अत्र ।

६. **सर्वस्य सोऽन्यतरस्यां दि** । सदा, सर्वदा ।

७. **पञ्चम्यास्तसिल्** । कुतः । यतः । ततः । बहुतः । अतः । इतः । अमुतः ।

८. तसेश्च । कुतः ?

९. **पर्यभिभ्यां च** । * सर्वोभयार्थाभ्यामेव * परितः । अभितः ।

१०. **सप्तम्यास्त्रल्** । कुत्र । यत्र । तत्र । बहुत्र ।

११. **इदमो हः** । त्रलोऽपवादः । इह ।

१२. **किमोऽत्** । क्व, कुत्र ।

१५. **सर्वैकान्यकिंयत्तदःकाले दा** । सर्वस्मिन्काले, सदा, सर्वदा । एकदा । अन्यदा । कदा । यदा । तदा । कालादन्यत्र सर्वत्रेत्यादि ।

१६. **इदमो र्हिल्** । अस्मिन्काले, एतर्हि ।

१७. **अधुना** । अधुना ।

१८. **दानीं च** ।इदानीम् ।

१९. **तदो दा च** । तदा, तदानीम् ।

२१. **अनद्यतने र्हिलन्यतरस्याम्** । कर्हि, कदा । यर्हि, यदा । तर्हि, तदा । एतर्हि ।

२२. **सद्यः परुत्परार्यैषमः परेद्यव्यद्य पूर्वेद्युरन्येद्युरन्यतरेद्युरितरेद्युरपरेद्युरधरेद्युरुभयेद्युरुत्तरेद्युः** । समानेऽहनि, सद्यः । पूर्वस्मिन् वत्सरे, परुत् । पूर्वतरे वत्सरे, परारि । अस्मिन्वत्सरे, ऐषमः । परस्मिन्नहनि, परेद्यवि । अस्मिन्नहनि, अद्य । पूर्वस्मिन्नहनि, पूर्वेद्युः । अन्यस्मिन्नहनि, अन्येद्युः । अन्यतरस्मि-

न्नहनि, अन्यतरेद्युः। इतरस्मिन्नहनि, इतरेद्युः। अपरस्मिन्नहनि, अपरेद्युः। अधरस्मिन्नहनि, अधरेद्युः। उभयोरह्नोरुभयेद्युः। उत्तरस्मिन्नहनि, उत्तरेद्युः। * द्युश्चोभयाद्वक्तव्यः * उभयद्युः।

२३—प्रकारवचने थाल्। तेन प्रकारेण, तथा। यथा।

२४—इदमस्थमुः। थालोऽपवादः। अनेन प्रकारेण, इत्थम्। * एतदोऽपि वाच्यः * एतेन प्रकारेण, इत्थम्।

२५—किमश्च। केन प्रकारेण, कथम्।

३०—अञ्चेर्लुक्। प्राच्यां प्राच्याः प्राची वा दिक्, देशः, कालो वा प्राक्। उदक्।

३१—उपर्युपरिष्टात्। उपरि,उपरिष्टाद्वा वसति, आगतः,रमणीयं वा।

३२—पश्चात्। पश्चादागतः। पश्चाद्रमणीयम्।

३४—उत्तराधरदक्षिणादातिः। उत्तरात्। अधरात्। दक्षिणात्।

३५—एनबन्यतरस्यामदूरेऽपञ्चम्याः। उत्तरेण। अधरेण। दक्षिणेन। पक्षे यथास्वं प्रत्ययाः। केचिद्दिक्शब्दमात्रात्प्रत्ययमिमं मन्यन्ते। पूर्वेण ग्रामम्। अपरेण।

३६—दक्षिणादाच्। दक्षिणा वसति। नेहः—दक्षिणादागतः।

३७—आहि च दूरे। दक्षिणाहि, दक्षिणा वसति।

३८—उत्तराच्च। उत्तराहि, उत्तरा।

३९—पूर्वाधरावराणामसि पुरधवश्चैषाम्। पुरः, अधः, अवः।

४०—अस्ताति च। पुरस्तात्। अधस्तात्। अवस्तात्।

४१—विभाषावरस्य। अवस्तात्। अवरस्तात्।

४२—संख्याया विधार्थे धा। चतुर्धा: पञ्चधा।

४३—अधिकरणविचाले च। एकं राशिं पञ्चधा कुरु।

४४—एकाद्धो ध्यमुञन्यतरस्याम्। ऐकध्यम्, एकधा।

४५—द्वित्र्योश्च धमुञ्। द्वैधम्, द्विधा। त्रैधम्, त्रिधा। * धमुञन्तात्स्वार्थेडदर्शनम्। पथि द्वैधानि।

४६—एधाच्च। द्वेधा। त्रेधा।

४७—याप्ये पाशप्। कुत्सितो भिषक्, भिषक्पाशः।

४८—पूरणाद्भागे तीयादन्। द्वितीयः, तृतीयो भागः।

५०—षष्ठाष्टमाभ्यां ञ च। षष्ठो भागः, षाष्ठः, षष्ठः। आष्टमः, अष्टमः।

५२—एकादाकिनिच्चासहाये। चात्कन्लुकौ, एकाकी, एककः, एकः।

५३—भूपूर्वे चरट्। आढ्यो भूतपूर्वः, आढ्यचरः।

५५—अतिशायने तमबिष्ठनौ। अयमेषामतिशयेनाढ्यः, आढ्यतमः। लघुतमो लघिष्ठः।

५६—तिङश्च। सर्वे इमे पचन्ति। अयमेषामतिशयेन पचति, पचतितमाम्।

५७—द्विवचनविभज्योपपदे तरबीयसुनौ। पूर्वयोरपवादः। अयमनयोरतिशयेन लघुर्लघुतरः, लघीयान्। उदीच्याः प्राच्येभ्यः पटुतराः, पटीयांसः।

६०—प्रशस्यस्य श्रः। अयमेषामतिशयेन प्रशस्यः, श्रेष्ठः। अयमनयोरतिशयेन प्रशस्यः, श्रेयान्।

६१—ज्य च। ज्येष्ठः, ज्यायान्।

६२—वृद्धस्य च। ज्येष्ठः, ज्यायान्। पक्षे वर्षिष्ठः, वर्षीयान्।

६३—अन्तिकबाढयोर्नेदसाधौ। नेदिष्ठः, नेदीयान्। साधिष्ठः, साधीयान्।

६४—युवाल्पयोः कनन्यतरस्याम्। कनिष्ठः, कनीयान्। पक्षे यविष्ठः, अल्पिष्ठः।

६५—विन्मतोर्लुक्। अतिशयेन स्रग्वी, स्रजिष्ठः, स्रजीयान्। अतिशयेन त्वग्वान्, त्वचिष्ठः, त्वचीयान्।

६७—ईषदसमाप्तौ कल्पब्देश्यदेशीयरः। ईषदूनो विद्वान, विद्वत्कल्पः। यशस्कल्पम्। यजुष्कल्पम्। विद्वद्देश्यः। पचतिकल्पम।

६८—विभाषा सुपो बहुच् पुरस्तात्तु। ईषदूनः पटुः, बहुपटुः। पटुकल्पः।

६९—प्रकारवचने जातीयर्। पटुप्रकारः, पटुजातीयः।

७०—प्रागिवात्कः। इवे प्रतिकृतावित्यतः प्राक् काधिकारः।

७१—अव्ययसर्वनाम्नामकच्प्राक्टेः। उच्चकैः। नीचकैः। शनकैः। सर्वके। विश्वके। उभयके।

७२—कस्य च दः। धकित्, धिक्। हिरकुत्, हिरुक्।

७३—अज्ञाते। कस्यायमश्वोऽश्वकः? गर्दभकः? उष्ट्रकः? * ओकारसकारभकरादौ सुपि सर्वनाम्नष्टेः प्रागकच् * युवकयोः। आवकयोः। युष्मकासु। अस्मकासु। युष्मकाभिः। अस्मकाभिः। * अकच्प्रकरणे तूष्णीमः काम् वक्तव्यः * तूष्णीकामास्ते। * शीले को मलोपश्च * तूष्णींशीलः, तूष्णीकः। पचतकि। जल्पतकि।

७४—कुत्सिते । कुत्सितोऽश्वोऽश्वकः ।

८८—कुटीशमीशुण्डाभ्यो रः । ह्रस्वा कुटी, कुटीरः । शमीरः । शुण्डारः ।

८९—कुत्वा डुपच् । ह्रस्वा कुतूः, कुतुपः ।

९१—वत्सोक्षाश्वर्षभेभ्यश्चतनुत्वे । वत्सतरः । अक्षतरः । अश्वतरः । ऋषभतरः ।

९२—किंयत्तदो निर्धारणे द्वयोरेकस्य डतरच् । अनयोः कतरो वैष्णवः । यतरः । ततरः । महाविभाषया यः । कः ।

९३—वा बहूनां जातिपरिप्रश्ने डतमच् । कतमो भवतां कठः? यतमः । ततमः । वाग्रहणादकजपि । यकः । सकः । महाविभाषया यः । सः । * किमोऽस्मिन्विषये डतरजपि * कतरः ।

९६—इवे प्रतिकृतौ । अश्व इव प्रतिकृतिः, अश्वकः ।

१०३—शाखादिभ्यो यः । शाखेव, शाख्यः । मुख्यः । जघन्यः । अग्र्यः, शरण्यः ।

१०५—कुशाग्राच्छः । कुशाग्रमिव, कुशाग्रीया बुद्धिः ।

इति लघुपाणिनीये पंचमाध्यायस्य तृतीयःपादः समाप्तः ।

अथ लघुपाणिनीये पंचमाध्यायस्य चतुर्थपादः

१७—संख्यायाः क्रियाभ्यावृत्तिगणने कृत्वसुच्। पञ्चकृत्वो भुङ्क्ते।

१८—द्वित्रिचतुर्भ्यः सुच्। कृत्वसुचोऽपवादः। द्विर्भुङ्क्ते। त्रिः। चतुः।

१९—एकस्य सकृच्च। सकृद् भुङ्क्ते।

२०—विभाषा बहोर्धाऽविप्रकृष्टकाले। बहुधा दिवसस्य भुङ्क्ते। विप्रकृष्टकाले तु, बहुकृत्वो मासस्य भुङ्क्ते।

२१—तत्प्रकृतवचने मयट्। प्रकृतमन्नमन्नमयम्। अपूपमयम्। यवागूमयी। यद्वा अन्नमयो यज्ञः। अपूपमयं पर्व।

२५—पादार्घाभ्यां च। पादार्थमुदकं पाद्यम्। अर्घ्यम्। * नवस्य नू आदेशस्त्नप्तनप्खाश्च प्रत्यया वक्तव्याः * नूत्नम्, नूतनम्, नवीनम्। * नश्च पुराणे प्रात् * प्रणम्, प्रत्नम्, प्रतनम्, प्रीणम्। * भागरूपनामभ्यो धेयः * भागधेयम्। रूपधेयम्। नामधेयम्। * आग्नीध्रसाधारणादञ् * आग्नीध्रम्। साधारणम्। आग्नीध्री। साधारणी।

२६—अतिथेर्ञ्यः। अतिथये इदमातिथ्यम्।

२७—देवात्तल्। देव एव, देवता।

२८—अवेः कः। अविरेव, अविकः।

२९—यावादिभ्यः कन्। याव एव, यावकः। मणिकः।

३४—विनयादिभ्यष्ठक्। विनय एव, वैनयिकः। सामयिकः। * उपायो ह्रस्वत्वं च * औपयिकः।

३५—वाचो व्याहृतार्थायाम्। संदेशवाग्, वाचिकं स्यात्।

३८—प्रज्ञादिभ्यश्च। प्रज्ञ एव, प्राज्ञः। प्राज्ञी स्त्री। दैवतः। बान्धवः।

३९—मृदस्तिकन्। मृत्तिका।

४०—सस्नौ प्रशंसायाम्। रूपपोऽपवादः। प्रशस्ता मृत्, मृत्सा, मृत्स्ना।

४२—बह्वल्पार्थाच्छस्कारकादन्यतरस्याम्। बहुशो ददाति। अल्पशः।

५०—कृभ्वस्तियोगे संपद्यकर्तरि च्विः। * अभूततद्भाव इति वक्तव्यम् * अकृष्णः कृष्णः संपद्यते तं करोति, कृष्णीकरोति। ब्रह्मीभवति। गङ्गीस्यात्। गार्गीभवति। दोषाभूतमहः। दिवाभूता रात्रिः।

६७—**अव्यक्तानुकरणाद् द्व्यजवरार्धादनितौ डाच्** । पटपटाकरोति पटपटाभवति ।

६८—**समासान्ताः** । अधिकारोऽयमापादसमाप्तेः ।

६९—**न पूजनात्** । सुराजा । अतिराजा । सुगौः । अतिगौः । * स्वतिभ्यामेव * नेह :—परमराजः । * प्राग्बहुव्रीहिग्रहणञ्च * सुसक्थः । स्वक्षः ।

७०—**किमः क्षेपे** । कुत्सितो राजा, किंराजा । किंसखा । किंगौः । क्षेपादन्यत्र तु, कश्चायं राजा, किंराजः । किंसखः । किंगवः ।

७१—**नञस्तत्पुरुषात्** । अराजा । असखा ।

७२—**पथो विभाषा** । अपथम्, अपन्थाः । तत्पुरुषादित्येव । अपथो देशः ।

७३—**बहुव्रीहौ संख्येये डजबहुगणात्** । उपदशाः । उपविंशाः । द्वित्राः । पञ्चषाः । * संख्यायास्तत्पुरुषस्य वाच्यः * निर्गतानि त्रिंशतो निस्त्रिंशानि वर्षाणि चैत्रस्य । निर्गतस्त्रिंशतोऽङ्गुलिभ्यो निस्त्रिंशः खड्गः ।

७४—**ऋक्पूरब्धूःपथामानक्षे** । अर्धर्चः । अनृचबह्वृचावध्येतर्येव । विष्णोः पूः, विष्णुपुरम् । विमलापं सरः । द्वीपम् । राजधुरा । जलपथः । रम्यपथः । अक्षे तु, अक्षधूः । दृढधूरक्षः ।

७६—**अक्ष्णोऽदर्शनात्** । गवामक्षीव, गवाक्षः ।

७७—**अचतुरविचतुरसुचतुरस्त्रीपुंसधेन्वनडुहर्क्सामवाङ्मनसाक्षिभ्रुवदारगवोर्वष्ठीवपदष्ठीवनक्तन्दिवरात्रिन्दिवाहर्दिवसरजसनिःश्रेयसपुरुषायुषद्व्यायुषत्र्यायुषर्ग्यजुषजातोक्षमहोक्षवृद्धोक्षोपशुनगोष्ठश्वाः** । अविद्यमानानि चत्वार्यस्य, अचतुरः । विचतुरः । सुचतुरः । * त्र्युपाभ्यां चतुरोऽजिष्यते * त्रिचतुराः । उपचतुराः, स्त्रीपुंसौ । धेन्वनडुहौ । ऋक्सामे । वाङ्मनसे । अक्षिणी च भ्रुवौ च, अक्षिभ्रुवम् । दाराश्च गावश्च, दारगवम् । ऊरू च अष्ठीवन्तौ च, ऊर्वष्ठीवम् । पदष्ठीवम् । नक्तं च दिवा च, नक्तन्दिवम् । रात्रौ च दिवा च, रात्रिन्दिवम् । अहनि च दिवा च, अहर्दिवम् । सरजसम् । निश्चितं श्रेयो निःश्रेयसम् । पुरुषस्यायुः, पुरुषायुषम् । द्व्यायुषम् । त्र्यायुषम् । ऋग्यजुषम् । जातोक्षः । महोक्षः । वृद्धोक्षः । उपशुनम् । गोष्ठे श्वा, गोष्ठश्वः ।

७८—**ब्रह्महस्तिभ्यां वर्चसः** । ब्रह्मवर्चसम् । हस्तिवर्चसम् । * पल्यराजभ्यां चेति वक्तव्यम् * पल्यवर्चसम् । राजवर्चसम् ।

७९—**अवसमन्धेभ्यस्तमसः** । अवतमसम् । सन्तमसम् । अन्धतमसम् ।

८०—श्वसो वसीयःश्रेयसः । श्वोवसीयसम् । श्वःश्रेयसम् ।

८१—उपसर्गादध्वनः । प्रगतोऽध्वानं प्राध्वो रथः ।

८६—तत्पुरुषस्याङ्गुलेः संख्याव्ययादेः । द्वे अङ्गुली प्रमाणमस्य, द्व्यङ्गुलं दारु । निर्गतमङ्गुलिभ्यो निरङ्गुलम् ।

८७—अहःसर्वैकदेशसंख्यातपुण्याच्च रात्रेः । अहश्च रात्रिश्चाहोरात्रः । सर्वा रात्रिः, सर्वरात्रः । पूर्वं रात्रेः, पूर्वरात्रः । संख्यातरात्रः । पुण्यरात्रः । द्विरात्रम् । अतिरात्रः ।

८८—अह्नोऽह्न एतेभ्यः । सर्वाह्णः । पूर्वाह्णः । संख्याताह्नः । द्वयोरह्नोर्भवः, द्व्यह्नः । द्व्यह्ना । द्व्यह्नप्रियः । अत्यह्नः । दीर्घाह्नी प्रावृट् ।

८९—न संख्यादेः समाहारे । द्वयोरह्नोः समाहारः, द्व्यहः । त्र्यहः ।

९०—उत्तमैकाभ्यां च । पुण्याहम् । सुदिनाहम् । एकाहः । उत्तमग्रहणमुपान्त्यस्यापि संग्रहार्थमित्येके । संख्याताहः ।

९१—राजाहःसखिभ्यष्टच् । परमराजः । अतिराजी । उत्तमाहः । कृष्णसखः । लिङ्गविशिष्टपरिभाषाया अनित्यत्वान्नेह :—मद्राणां राज्ञी, मद्रराज्ञी ।

९२—गोरतद्धितलुकि । परमगवः । पञ्चगवम् । पञ्चगवधनः । तद्धितलुकि तु, पञ्चभिर्गोभिः क्रीतः, पञ्चगुः ।

१०६—द्वन्द्वाच्चुदषहान्तात्समाहारे । वाक्त्वचम् । त्वक्स्रजम् । शमीदृषदम् । वाक्त्विषम् । छत्रोपानहम् । समाहारादन्यत्र तु, प्रावृट्शरदौ ।

१०७—अव्ययीभावे शरत्प्रभृतिभ्यः । उपशरदम् । प्रतिविपाशम् । * जराया जरश्च * उपजरसम् , * प्रतिपरसमनुभ्योऽक्ष्णः * प्रत्यक्षम् । परोक्षम् । समक्षम् । अन्वक्षम् ।

१०८—अनश्च । उपराजम् । अध्यात्मम् ।

१०९—नपुंसकादन्यतरस्याम् । उपचर्मम् , उपचर्म ।

११०—नदीपौर्णमास्याग्रहायणीभ्यः । उपनदम्, उपनदि । उपपौर्णमासम् , उपपौर्णमासि । उपाग्रहायणम् , उपाग्रहायणि ।

१११—झयः । उपसमिधम् , उपसमित् ।

११२—गिरेश्च सेनकस्य । उपगिरम्, उपगिरि ।

११३—बहुव्रीहौ सक्थ्यक्ष्णोः स्वाङ्गात्षच् । दीर्घे सक्थिनी यस्य सः, दीर्घसक्थः । जलजाक्षी । स्वाङ्गादन्यत्र दीर्घसक्थि सकटम् । स्थूलाक्षा वेणुयष्टिः ।

११४—अङ्गुलेर्दारुणि । पञ्चाङ्गुलयो यस्य तत्पञ्चाङ्गुलं दारु । बहुव्रीहेरन्यत्र तु, द्वे अङ्गुली प्रमाणमस्याः, द्व्यङ्गुला यष्टिः । दारुणोऽन्यत्र पञ्चाङ्गुलिर्हस्तः ।

११५—द्वित्रिभ्यां ष मूर्ध्नः । द्विमूर्धः । त्रिमूर्धः

११६—अप्पूरणीप्रमाण्योः । कल्याणी पञ्चमी यासां रात्रीणां ताः, कल्याणीपञ्चमाः रात्रयः । स्त्री प्रमाणी यस्य स स्त्रीप्रमाणः । * प्रधानपूरण्यामेव * नेह :—कल्याणपञ्चमीकः पक्षः । * नेतुर्नक्षत्रे अब्वक्तव्यः * मृगो नेता यासां ताः, मृगनेत्रा रात्रयः । पुष्यनेत्राः ।

११७—अन्तर्बहिर्भ्यां च लोम्नः । अन्तर्लोमः । बहिर्लोमः ।

११८—अञ्नासिकायाः संज्ञायां नसं चास्थूलात् । द्रुरिव नासिकास्य, द्रुणसः । खरणसः । स्थूलात्तु,स्थूलनासिकः । * खुरखराभ्यां वा नस् * खुरणाः । खरणाः । पक्षेऽजपीष्यते । खुरणसः । खरणसः ।

११९—उपसर्गाच्च । उन्नता नासिकास्य, उन्नसः । प्रणसः । * वेर्ग्रो वक्तव्यः * विगता नासिकास्य, विग्रः । * ख्यश्च * विख्यः ।

१२०—सुप्रातसुश्वसुदिवशारिकुक्षचतुरश्रैणीपदाजपदप्रोष्ठपदाः । शोभनं श्वोऽस्य, सुश्वः । सुदिवः । शारेरिव कुक्षिरस्य, शारिकुक्षः । चतस्रोऽश्रयोऽस्य, चतुरश्रः । एण्या इव पादावस्य, एणीपदः । अजपदः ! प्रोष्ठपदः ।

१२१—नञ्दुःसुभ्यो हलिसक्थ्योरन्यतरस्याम् । अहलः, अहलिः । असक्थः, असक्थिः । दुर्हलः, दुर्हलिः । दुःसक्थः, दुःसक्थिः । सुहलः, सुहलिः । सुसक्थः । सुसक्थिः ।

१२२—नित्यमसिच् प्रजामेधयोः । अप्रजाः । दुष्प्रजाः । सुप्रजाः । अमेधाः । दुर्मेधाः । सुमेधाः ।

१२७—इच्कर्मव्यतिहारे । केशाकेशि । मुसलामुसलि ।

१३१—ऊधसोऽनङ् । कुण्डोध्नी । घटोध्नी । * ऊधसोऽनङि स्त्रीग्रहणम् * नेह :—महोधाः पर्जन्यः । घटोधो धेनुकम् ।

१३२—धनुषश्च । शार्ङ्गधन्वा ।

१३३—वा संज्ञायाम् । शतधन्वा, शतधनुः ।

१३४—जायाया निङ् । युवतिर्जाया यस्य सः, युवजानिः ।

१३५—गन्धस्येदुत्पूतिसुसुरभिभ्यः । उद्गन्धिः । पूतिगन्धिः । सुगन्धिः । सुरभिगन्धिः । * गन्धस्येत्त्वे तदेकान्तग्रहणम् * सुगन्धि पुष्पं सलिलञ्च । नेह :—सुगन्ध आपणिकः ।

१३६—अल्पाख्यायाम् । सूपस्य गन्धो लेशोऽस्मिन्, सूपगन्धि भोजनम् । घृतगन्धि ।

१३७—उपमानाच्च । पद्मस्येव गन्धोऽस्य, पद्मगन्धि ।

१३८—पादस्य लोपोऽहस्त्यादिभ्यः । व्याघ्रस्येव पादौ यस्य, व्याघ्रपात् । हस्त्यादिभ्यस्तु, हस्तिपादः । कुसूलपादः ।

१४७—त्रिककुत्पर्वते । त्रिककुत् । अन्यत्र त्रिककुदः ।

१४९—पूर्णाद्विभाषा । पूर्णकाकुत् पूर्णकाकुदः ।

१५०—सुहृद्दुर्हृदौ मित्रामित्रयोः । सुहृन्मित्रम् । दुर्हृदमित्रः । अन्यत्र सुहृदयः । दुर्हृदयः ।

१५१—उरःप्रभृतिभ्यः कप् । व्यूढोरस्कः । प्रियसर्पिष्कः । * अर्थान्नञः * अनर्थकम् ।

१५२—इनः स्त्रियाम् । बहुदण्डिका नगरी । अनिनस्मन्ग्रहणान्यर्थवता चानर्थकेन च तदन्तविधिं प्रयोजयन्ति । बहुवाग्मिका । पुंसि तु, बहुदण्डी, बहुदण्डिको ग्रामः ।

१५३—नद्यृतश्च । बहुकुमारीको देशः । कल्याणपञ्चमीकः पक्षः । बहुकर्तृकः ।

१५४—शेषाद्विभाषा । महायशस्कः, महायशाः । शेषादित्युक्तेर्नेह :—व्याघ्रपाद्, सुगन्धिः, प्रियपथः—इत्यादि । उपबहवः । उत्तरपूर्वा । सपुत्रः —इत्यादि च ।

१५६—ईयसश्च । बहवः श्रेयांसोऽस्य, बहुश्रेयान् । बहुश्रेयसी ।

इति लघु पाणिनीये पञ्चमाध्यायस्य चतुर्थपादः समाप्तः

समाप्तश्च पञ्चमाध्यायः

अथ लघुपाणिनीये षष्ठाध्यायस्य प्रथमपादः

१—एकाचो द्वे प्रथमस्य । अधिकारोऽयं प्राक्संप्रसारणविधानात् । जजागार । पपाच । इयाय । आर । बभूव ।

२—अजादेर्द्वितीयस्य । पूर्वापवादः । इदमपि पूर्वत्रदधिक्रियते । अटिटिषति । अशिशिषति । उणुनाव ।

३—नन्द्राः संयोगादयः । उन्दिदिषति । अड्डिडिषति । अर्चिचिषति । अर्जादेरेव । नेह :—दिद्रासति । इन्दिद्रियिषति । ञ्जिजिषति । कारयते । * ईर्ष्यतेस्तृतीयस्येति वाच्यम् * ईर्ष्यियिषति । केचिदाहुर्व्यञ्जनस्य । ईर्ष्यियिषति । ऐर्ष्यियत्, ऐर्षिष्यत् । * कण्ड्वादेस्तृतीयस्य * कण्डूयियिषति । * यथेष्टं नामधातुषु * पुपुत्रीयिषति । पुतित्रीयिषति । पुत्रीयियिषति । अजादेस्तु आद्येतरस्य अशिश्वीयिषति । अश्वीयियिषति

४—पूर्वोऽभ्यासः । पपाच । बभूव । पिपक्षति । पापच्यते । जुहोति । प्रदीपवत् ।

५—उभे अभ्यस्तम् । ददति । ददत् । जुह्वति । जुह्वत् ।

६—जक्षित्यादयः षट् । जक्षति । जाग्रति । दरिद्रति । शासति । चकासति । दीध्यते । वेव्यते । दीध्यत् । वेव्यत् ।

८—लिटि धातोरनभ्यासस्य । पपाच । पपाठ । बभूव । आत । * छन्दसि वा * यो जागार तमृचः कामयन्ते । दाति प्रियाणि चिद्वसु ।

९—सन्यङोः । पिपक्षति । बुभूषति । पिपतिषति । पापच्यते । अटाट्यते ।

१०—श्लौ । जुहोति । बिभेति । ददाति ।

११—चङि । अचीकमत । अपीपचत् । आटिटत् ।

१३—ष्यङः सम्प्रसारणं पुत्रपत्योस्तत्पुरुषे । कारीषगन्धीपुत्रः । कारीषगन्धीपतिः । कौमुदगन्धीपुत्रः । कौमुदगन्धीपतिः । नेह :—कारीषगन्ध्याकुलम् । कौमुदगन्ध्याकुलम् । अनुपसर्जनस्त्रीप्रत्यये तदादिनियमो न । परमकारीषगन्धीपुत्रः । उपसर्जने तु तदादिनियमः । अतिकारीषगन्ध्यापुत्रः ।

१५—वचिस्वपियजादीनां किति । उक्तम्, ऊचतुः । सुप्तम्, सुषुपतुः । इष्टः, ईजतुः । उप्तम्, ऊपतुः । ऊढः, ऊहतुः । उषितः, ऊषतुः । उतः । संवीतः । हूतः । उदितः । शूनः ।

१६—ग्रहिज्यावयिव्यधिवष्टिविचतिवृश्चतिपृच्छतिभृज्जतीनां ङिति च। गृहीत, गृह्णाति। जीनः, जिनाति। ऊयतुः, ऊवतुः। विद्धः, विध्यति। उष्टः, उशन्ति। विचितः, विचन्ति। वृक्णः, वृश्चति। पृष्टः, पृच्छति। भृष्टः, भृज्जति।

१७—लिट्यभ्यासस्योभयेषाम्। उवाच, उवचिथ। सुष्वाप, सुष्वपिथ। इयाज, इयजिथ। उवाप, उवपिथ। जग्राह, जग्रहिथ। जिज्यौ, जिज्यिथ। उवाय। विव्याध। उवाश। वव्रश्च। पप्रच्छ। बभर्ज।

१८—स्वापेश्चङि। असूषुपत, असूषुपताम्, असूषुपन्।

१९—स्वपिस्यमिव्येञां यङि। सोषुप्यते। सेसिम्यते। वेवीयते।

२२—स्फायः स्फी निष्ठायाम्। स्फीतः, स्फीतवान्।

२७—श्रृतं पाके : श्रृतं क्षीरं हविर्वा। व्यवस्थितविभाषाश्रयणात् क्षीर-हविर्भ्यामन्यत्र श्राणं श्रपितं वा।

३०—विभाषा श्वेः। शुशाव, शिश्वाय। शुशुवतुः, शिश्वियतुः। शोशूयते शेश्वीयते।

३१—णौ च संश्चङोः। शुशावयिषति, शिश्वाययिषति। अशूशवत्, अशिश्वयत्।

२३—ह्वः सम्प्रसारणम्। जुहावयिषति, अजूहवत्। अजूहावत्।

३३—अभ्यस्तस्य च। जुहाव, जोहूयते। जुहूषति।

३७—न सम्प्रसारणे सम्प्रसारणम्। विद्धः। विचितः। यूनः। * ऋचि त्रेरुत्तरपदादिलोपश्च छन्दसि * तृचं सूक्तम्। लोके तु, त्र्यृचानि। * रयेर्मतौ बहुलम् * रेवान्, रयिमान् पुष्टिवर्धनः।

४५—आदेच उपदेशेऽशिति। ग्लै-ग्लाता, ग्लातुम्, ग्लातव्यम्। शो—निशाता। निशातुम्। निशातव्यम्। शिति तु, ग्लायति। म्लायति।

४८—क्रीङ्जीनां णौ। क्रापयति। अध्यापयति। जापयति।

४९—सिध्यतेरपारलौकिके। अन्नं साधयति। पारलौकिके तु तपस्तापसं सेधयति।

५०—मीनातिमिनोतिदीङां ल्यपि च। प्रमाता, प्रमातव्यम्, प्रमातुम्, प्रमाय। निमाता, निमाय। दाता, दातव्यम्, दातुम्, प्रदाय।

५६—बिभेतेर्हेतुभये। मुण्डो भापयते, भीषयते वा। अन्यत्र तु, कुञ्चिकया भाययति।

५७—नित्यं स्मयतेः । जटिलो विस्मापयते । नेह :—कुञ्चिकया विस्मायति ।

५८—सृजिदृशोर्झल्यमकिति । गुणापवादः । स्रष्टा, स्रष्टुम्, स्रष्टव्यम्, अस्राक्षीत् । द्रष्टा, द्रष्टुम्, द्रष्टव्यम्, अद्राक्षीत् । नेह :—सर्जनम् । दर्शनम् । किति तु, सृष्टः । दृष्टः ।

५९—अनुदात्तस्य चर्दुपधस्यान्यतरस्याम् । त्रप्ता, तर्प्ता, तर्पिता । द्रप्ता, दर्प्ता, दर्पिता । किति तु, तृप्तः, दृप्तः ।

६३-पद्दन्नोमास्हृन्निशसन्यूषन्दोषन्यकञ्छकन्नुदन्नासञ्छस्प्रभृतिषु । पदः, पादान् । पदा, पादेन । पद्भ्याम्, पादाभ्यामित्यादि । दतः, दन्तान् । दता, दन्तेन । दद्भ्याम्, दन्ताभ्यामित्यादि । नसः, नासिकाः । नसा, नासिकया । नोभ्याम्, नासिकाभ्यामित्यादि । मासः, मासान् । मासा, मासेन । माभ्याम्, मासाभ्यामित्यादि । हृन्दि, हृदयानि । हृदा, हृदयेन हृद्भ्याम्, हृदयाभ्यामित्यादि । निशः, निशाः । निशा, निशया ! निड्भ्याम्, निशाभ्यामित्यादि । असानि, असृञ्जि । अस्ना, असृजा । असभ्याम्, असृग्भ्यामित्यादि । यूष्णः, यूषान् । यूष्णा, यूषेण । यूषभ्याम्, यूषाभ्यामित्यादि । दोष्णः, दोषान् । दोष्णा, दोषेण । दोषभ्याम्, दोषाभ्यामित्यादि । यकानि, यकृन्ति । यक्ना, यकृता । यकभ्याम्, यकृद्भ्यामित्यादि । शकानि शकृन्ति । शक्ना, शकृता । शकभ्याम्, शकृद्भ्यामित्यादि । उदानि, उदकानि । उद्ना, उदकेन । उदभ्याम्, उदकाभ्यामित्यादि । आसानि, आस्यानि । आस्ना, आस्येन । आसभ्याम्, आस्याभ्यामित्यादि । * मांसपृतनासानूनां मांस्पृत्स्नवो वाच्याः शसादौ वा * मांसि, मांसानि । मांसा, मांसेन । मान्भ्याम्, मांसाभ्यामित्यादि । पृतः, पृतनाः । पृता, पृतनया । पृद्भ्याम्, पृतनाभ्यामित्यादि । स्नूनि, सानूनि । स्नुना, सानुना । स्नुभ्याम्, सानुभ्यामित्यादि ।

६४—धात्वादेः षः सः । षह-सहते । षिच-सिञ्चति । * सुब्धातुष्ठिवुष्वष्कतीनां प्रतिषेधो वक्तव्यः * षोढीयति । षण्ढीयति । ष्ठीव्यति, ष्ठीवति, ष्वष्कते ।

६५—णो नः । णीञ्-नयति । णम-नमति । णह-नह्यति ।

६६—लोपो व्योर्वलि । दिवु-दिदिवान् । भवेत्, पचेत् । ऊयी-ऊतम् । क्नूयी-क्नूतम् । गौधेरः । जीव-जीरदानुः । स्त्रिवु-आस्रेमाणम् ।

६७—वेरपृक्तस्य । ब्रह्महा । घृतस्पृक् । अंशभाक् ।

६८—**हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्** । सखा, उखास्रत् । कुमारी, गौरी, शार्ङ्गरवी । रमा, बहुराजा, कारीषगन्ध्या । अविभः । अहन् । नेह :—निष्कौशाम्बिः । अतिखट्वः ।

६९—**एङ्ह्रस्वात्सम्बुद्धेः** । हे हरे, हे भानो । हे राम, हे नदि, हे वधु ।

७१—**ह्रस्वस्य पिति कृति तुक्** । इत्यः, स्तुत्यः । अग्निचित्, सोमसुत् । प्रकृत्य ।

७२—**संहितायाम्** । अधिकारोऽयमनुदात्तं पदमेकवर्जमिति यावत् । दध्यत्र । मध्वत्र । असंहितायान्तु, दधि अत्र, मधु अत्र ।

७३—**छे च** । इच्छति । गच्छति । शिवच्छाया ।

७७—**इको यणचि** । दध्यत्र, सुध्युपास्यः । मध्वत्र, मध्वरिः । धात्रंशः । लाकृतिः ।

७८—**एचोऽयवायावः** । हरये । विष्णवे । नायकः । पावकः ।

७९—**वान्तो यि प्रत्यये** । गव्यम् । नाव्यम् । * गोयूतौ छन्दसि * घृतैर्गव्यूतिमुक्षतम् । * अध्वपरिमाणे च * गव्यूतिः ।

८४—**एकः पूर्वपरयोः** । अधिकारोऽयं ख्यत्यादित्यतः प्राक् ।

८५—**अन्तादिवच्च** । ब्रह्मबन्धूः । वृक्षौ । * वर्णाश्रयेऽन्तादिवद्भावप्रतिषेधः * खट्वाभिः, रमाभिः । जुहाव ।

८७—**आद् गुणः** । उपेन्द्रः, रमेशः । गङ्गोदकम् । कृष्णर्द्धिः । तवल्कारः ।

८८—**वृद्धिरेचि** । गुणस्यापवादः । कृष्णैकत्वम् । देवैश्वर्यम् । गङ्गौघः । कृष्णौत्कण्ठ्यम् ।

८९—**एत्येधत्यूठ्सु** । पररूपगुणापवादः । उपैति । उपैधते । प्रष्ठौहः । नेह :—उपेतः । मा भवान् प्रेदिधत् । * अक्षादूहिन्यामुपसंख्यानम् * अक्षौहिणी सेना । * स्वादोरेरिणो * स्वैरः । स्वैरी । स्वैरिणी । * प्रादूहोढोढ्येषैष्येषु * प्रौहः । प्रौढः । अर्थवद्ग्रहणे नानर्थकस्य ग्रहणम् । प्रोढवान् । प्रौढिः । प्रैषः । प्रैष्यः । * ऋते च तृतीयासमासे * सुखेन ऋतः, सुखार्तः । दुःखार्तः । * प्रवत्सतरकम्बलवसनार्णदशानामृणे * प्रार्णम् । वत्सतरार्णम् । कम्बलार्णम् । वसनार्णम् । ऋणार्णम् । दशार्णो देशः । नदी च दशार्णा ।

९०—**आटश्च** । ऐक्षत । ऐधत । ऐधिष्ट । ऐक्षिष्ट । तद्बुश्रेयस्यै, बहुश्रेयस्याः । चकारोऽधिकविधानार्थः । उस्योमाङ्क्षु पररूपबाधनार्थः । औस्रीयत् । औङ्कारीयत् । आ+ऊढ ओढस्तमैच्छत्, औढीयत् ।

९१—उपसर्गादृति धातौ। गुणापवादः। प्राच्र्छति। उपार्च्छति।

९३—औतोऽम्शसोः। गां पश्य। द्यां पश्य। गाः। द्याः :

९४—एङि पररूपम्। वृद्धिरेचीत्यस्यापवादः। प्रेजते। उपोषति। एङादौ सुब्धातौ वा। उपेडकीयति, उपैडकीयति। प्रोघीयति, प्रौघीयति। * शकन्ध्वादिषु पररूपं वाच्यम् * तच्च टेः। शकन्धुः। कर्कन्धुः। कुलटा। सीमन्तः केशवेशे। सीमान्तोऽन्यः। मनीषा। हलीषा। लाङ्गलीषा। पतञ्जलिः। सारङ्गः पशुपक्षिणोः। साराङ्गोऽन्यः। आकृतिगणोऽयम्। मार्तण्डः। * एवे चानियोगे * क्वेव भोक्ष्यसे ? * ओत्वोष्ठयोः समासे वा * स्थूलोतुः, स्थूलौतुः। बिम्बोष्ठः, बिम्बौष्ठः। नेह :—तवौष्ठः। * एमन्नादिषु छन्दसि * अपां त्वेमन्। अपां त्वोद्मन्।

९५—ओमाङोश्च। शिवायोंनमः। शिव + एहि = शिवेहि। कदा + ओढः = कदोढः।

९६—उस्यपदान्तात्। अपुः। भिन्द्युः। अद्युः।

९७—अतो गुणे। पचन्ति। एधे।

१०१—अकः सवर्णे दीर्घः। दैत्यारिः। श्रीशः। विष्णूदयः। अनचि तु, कुमारी शेते। * ऋति सवर्णे ऋ वा * होतॄकारः। होतृकारः। * लृति सवर्णे लृ वा * होत्लृकारः। होतॄकारः।

१०२—प्रथमयोः पूर्वसवर्णः। हरी। भानू। रामाः। हरीन्। भानून्। रामान्।

१०३—तस्माच्छसो नः पुंसि। हरीन्। रामान्। भानून्। कर्त्तॄन्।

१०४—नादिचि। रामौ। शिवोऽर्च्यः।

१०५—दीर्घाज्जसि च। विश्वपौ, विश्वपाः। पप्यौ, पप्यः। गौर्यौ, गौर्यः। वध्वौ, वध्वः।

१०७—अमि पूर्वः। रामम्। हरिम्। गौरीम्। भानुम्। वधूम्। वा छन्दसीत्येव। शमीं च शम्यं च। सूर्म्यं सुषिरामिव।

१०८—सम्प्रसारणाच्च। इष्टम्। उप्तम्। गृहीतम्। वा छन्दसीत्येव। इज्यमानः, यज्यमानः।

१०९—एङः पदान्तादति। हरेऽव। विष्णोऽव।

११०—ङसिङसोश्च। हरेः। विष्णोः।

१११—ऋत उत्। क्रोष्टुः। पितुः।

११२—ख्यत्यात्परस्य । सख्युः । पत्युः । लून्युः ।

११३—अतो रोरप्लुतादप्लुते । शिवोऽर्च्यः । रामोऽत्र । नेहः—देवा अत्र । श्व आगन्ता । एहि सुस्रोत३ अत्र स्नाहि ।

११४—हशि च । शिवो वन्द्यः ।

१२५—प्लुतप्रगृह्या अचिनित्यम् । एहि कृष्ण३अत्र गौश्चरति ।

१३१—दिव उत् । द्युभ्यां द्युभिरित्यादि । द्युकामः । द्युमान् । विमलद्यु दिनम् ।

१३२—एतत्तदोः सुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि । एष विष्णुः । स शम्भुः । अकोरित्युक्तेः एषको रुद्रः । नञ्समासे तु, असः शिवः ।

१३५—सुट् कात्पूर्वः । अधिकारोऽयं पारस्करप्रभृतीनि चेति यावत् ।

१३६—अडभ्यासव्यवायेऽपि । समस्करोत् । समस्कार्षीत् । संचस्कार । परिचस्कार ।

१३७—संपरिभ्यां करोतौ भूषणे । संस्कर्त्ता । संस्कर्तुम् । संस्कर्त्तव्यम् परिष्कर्त्तुम् । परिष्कर्त्तव्यम् ।

१३८—समवाये च । तत्र नः संस्कृतम् । परिष्कृतम् ।

१३९—उपात् प्रतियत्नवैकृतवाक्याध्याहारेषु च । एधोदकस्योपस्कुरुते । उपस्कृतं भुङ्क्ते । उपस्कृतं ब्रूते । उपस्कृता कन्या । उपस्कृता ब्राह्मणाः ।

१४०—किरतौ लवने । उपस्किरति । उपचस्कार । उपास्किरत् ।

इति लघुपाणिनीये षष्ठाध्यायस्य प्रथमः पादः समाप्तः ।

अथ लघुपाणिनीये षष्ठाध्यायस्य तृतीयपादः

१. अलुगुत्तरपदे । अलुगधिकारः प्रागानङः । उत्तरपदाधिकारस्त्वापादसमाप्तेः ।

२. पञ्चम्याः स्तोकादिभ्यः । स्तोकान्मुक्तः, अल्पान्मुक्तः । अन्तिकादागतः, अभ्याशादागतः । दूरादागतः, विप्रकृष्टादागतः । कृच्छ्रान्मुक्तः । * ब्राह्मणाच्छंसिन उपसंख्यानम् । ब्राह्मणाच्छसी ऋत्विग्विशेषः ।

३. ओजःसहोऽम्भस्तमसस्तृतीयायाः । ओजसाकृतम् । सहसाकृतम् । अम्भसाकृतम् । तमसाकृतम् । * अञ्जस उपसंख्यानम् * अञ्जसाकृतम् । * पुंसानुजो जनुषान्ध इति च * यस्याग्रजः पुमान् स पुंसानुजः । जनुषान्धो जन्मान्धः ।

६. आत्मनश्च । * पूरण इति वक्तव्यम् * आत्मनापञ्चमः ।

७. वैयाकरणाख्यायां चतुर्थ्याः । आत्मनेपदम् । आत्मनेभाषाः ।

८. परस्य च । परस्मैपदम् । परस्मैभाषाः ।

९. हलदन्तात्सप्तम्याः संज्ञायाम् । त्वचिसारः । युधिष्ठिरः । अरण्येतिलकाः । * हृद्द्युभ्यां च * हृदिस्पृक् । दिविस्पृक् ।

१४. तत्पुरुषे कृति बहुलम् । स्तम्बेरमः । कर्णेजपः क्वचिन्न । कुरुचरः ।

१५. प्रावृट्शरत्कालदिवां जे । प्रावृषिजः । शरदिजः । कालेजः दिविजः ।

२५. आनङ् ऋतो द्वन्द्वे । होतापोतारौ । होतृपोतृनेष्टोद्गातारः । मातापितरौ । पुत्र इत्यनुवृत्तेः पितापुत्रौ ।

२६. देवताद्वन्द्वे च । मित्रावरुणौ । * वायुशब्दप्रयोगे प्रतिषेधः * अग्निवायू । वाय्वग्नी । पुनर्द्वन्द्वग्रहणं प्रसिद्धसाहचर्य्यस्य परिग्रहार्थम् । नेह :— ब्रह्मप्रजापती ।

१—टिप्पणी—षष्ठाध्याय द्वितीयपादे केवलं स्वरनियन्त्रकाणि सूत्राणि वर्त्तन्ते तानि च नो विषया "लघुपाणिनीय"स्य । अतो नात्र द्वितीयपादः । इति ।

२७. ईदग्नेः सोमवरुणयोः । अग्नीषोमौ । अग्नीवरुणौ ।

२९. दिवो द्यावा । द्यावाभूमी । द्यावाक्षमे ।

३४. स्त्रियाः पुंवद्भाषितपुंस्कादनूङ् समानाधिकरणे स्त्रियामपूरणीप्रियादिषु । चित्रा गावो यस्य स चित्रगुः । रूपवती भार्या यस्य स रूपवद्भार्यः । चित्रा जरत्यो गावो यस्य स चित्राजरद्गुः । जरतीचित्रगुः । कर्मधारयपूर्वपदे जरच्चित्रगुः । कर्मधारयोत्तरपदे तु चित्रजरद्गवीकः ! नेह :—गङ्गाभार्यः । वामोरूभार्यः । कल्याणीपञ्चमा रात्रयः । कल्याणीप्रियः । दृढभक्तिरित्यत्र तु दृढं भक्तिरस्येति सामान्ये नपुंसकम् । स्त्रीत्वविवक्षायान्तु दृढाभक्तिरित्येव । * पुंवद्भावप्रतिषेधः प्रधानपूरण्यामेव * नेह :—कल्याणपञ्चमीकः पक्षः ।

३५. तसिलादिष्वाकृत्वसुचः । परिगणनं कर्त्तव्यम:—त्रतसौ । तरप्तमपौ । चरड्जातीयरौ । कल्पब्देशीयरौ । रूपप्पाशपौ । थाल् । तिल्थ्यनौ । बहुत्र । बहुतः । दर्शनीयतरा । दर्शनीयतमा । पटुचरी । पटुजातीया । दर्शनीयकल्पा । दर्शनीयदेशीया । दर्शनीयरूपा । बहुथा । प्रशस्ता वृकी, वृकतिः । अजाभ्यो हिता, अजथ्या । * शसि बह्वल्पार्थस्य पुंवद्भावो वक्तव्यः * बह्वीभ्यो देहि, बहुशः । अल्पाभ्योऽल्पसः । * त्वतलोर्गुणवचनस्य * शुक्लाया भावः, शुक्लत्वम्, शुक्लता । * भस्याढे तद्धिते * हस्तिनीनां समूहो हास्तिकम् । नेह :—रौहिणेयः । समानः पतिः स्वामी यस्याः सा सपत्नी तस्या अपत्यं सापत्यः । सपत्नस्य स्त्री सपत्नी, समानः पतिर्भर्त्ता यस्याः साऽपि सपत्नी, तयोरपत्यन्तु सापत्नः । * ठक्छसोश्च * भवत्याश्छात्रा भावत्काः, भवदीयाः ।

४२. पुंवत्कर्मधारयजातीयदेशीयेषु । महानवमी । कृष्णचतुर्दशी । महाप्रिया । पाचकस्त्री । दत्तभार्या । पञ्चमभार्या । स्त्रौघ्नभार्या । सुकेशभार्या । ब्राह्मणभार्या । पाचकजातीया । पाचकदेशीया । * कुक्कुट्यादीनामण्डादिषु * कुक्कुट्या अण्डम्, कुक्कुटाण्डम् । मृग्याः क्षीरं मृगक्षीरम् । काक्याः शावः : काकशावः ।

४३. घरूपकल्पचेलड्ब्रुवगोत्रमतहतेषु ङ्योऽनेकाचो ह्रस्वः । ब्राह्मणितरा । ब्राह्मणितमा । ब्राह्मणिरूपा । ब्राह्मणिकल्पा । ब्राह्मणिचेली । ब्राह्मणिब्रुवा । ब्राह्मणिगोत्रा । ब्राह्मणिमता । ब्राह्मणिहता ।

४६. आन्महतः समानाधिकरणजातीययोः । महाब्रह्मः, महाब्रह्मा । महादेवः । महाजातीयः । महाजातीया । नेह :—महतः सेवा, महत्सेवा । आदिति योगविभागादात्वम् । एकादश । * महदात्वे घासकरविशिष्टेषूपसंख्यानं

पुंवद्भावश्च * महतो महत्या वा घासो महाघासः । महाकरः । महाविशिष्टः । * अष्टनः कपाले हविषि * अष्टाकपालः । * गवि च युक्ते * अष्टागवं शकटम् ।

४७. द्व्यष्टनः संख्यायामबहुव्रीह्यशीत्योः । द्वौ च दश च, द्वादश । द्व्यधिका दशेति वा । द्वाविंशतिः । अष्टादश । अष्टाविंशतिः । नेह :—द्वित्राः । द्व्यशीतिः । * प्राक्शतादिति वक्तव्यम् * नेह :—द्विशतम् । द्विसहस्रम् ।

४८. त्रेस्त्रयः । त्रयोदश । त्रयोविंशतिः । बहुव्रीह्यशीत्योस्तु, त्रिदश, त्रिदशाः । त्र्यशीतिः । प्राक्शतादित्येव । नेह : —त्रिशतम् । त्रिसहस्रम् ।

४९. विभाषा चत्वारिंशत्प्रभृतौ सर्वेषाम् । द्वाचत्वारिंशत्, द्विचत्वारिंशत् । अष्टाचत्वारिंशत्, अष्टचत्वारिंशत् । त्रयश्चत्वारिंशत्, त्रिचत्वारिंशत् । एवं पञ्चाशत्षष्टिसप्ततिनवतिषु ।

६१—इको ह्रस्वोऽङ्यो गालवस्य । ग्रामणिपुत्रः, ग्रामणीपुत्रः । नेह :- गौरीपतिः * इयङुवङ्भाविनामव्ययानां च नेति वाच्यम् * श्रीमदः । भ्रूभङ्गः । शुक्लीभावः । * अभ्रुकुंसादीनामिति वक्तव्यम् * भ्रुकुंसः, भ्रूकुंसः । भ्रुकुटिः, भ्रूकुटिः । अकारोऽनेन विधीयत इति व्याख्यान्तरम् । भ्रकुंसः । भ्रकुटिः ।

६६. खित्यनव्ययस्य । कालिमन्या । शुनिंधयः । नेह :—दोषामन्यमहः । दिवामन्या रात्रिः ।

६७. अरुर्द्विषदजन्तस्य मुम् । अरुन्तुदः । द्विषन्तपः । जनमेजयः । अनव्ययस्येत्येव । नेह :—दोषामन्यमहः । दिवामन्या रात्रिः ।

६९. वाचंयमपुरन्दरौ । वाचंयमो मौनव्रती । पुरन्दरः ।

७३. नलोपो नञः । न ब्राह्मणः, अब्राह्मणः । * नञो नलोपस्तिङि क्षेपे * । अपचसि त्वं जाल्म ।

७४. तस्मान्नुडचि । अनश्वः ।

७५. नभ्राण्नपान्नवेदानासत्यानमुचिनकुलनखनपुंसकनक्षत्रनक्रनाकेषु प्रकृत्या । न भ्राजत इति, नभ्राट् । न पातीति, नपात् । न वेत्तीति, नवेदाः । न असत्या नासत्याः । न मुञ्चतीति, नमुचिः । न कुलमस्य, नकुलः । न खमस्य, नखम् । न स्त्री पुमान्, नपुंसकम् । न क्षरति, नक्षत्रम् । न क्राम्यति, नक्रः । न अकमस्मिन्निति, नाकः ।

७८. सहस्य सः संज्ञायाम् । सपलाशम् । नेह :—सहयुध्वा ।

८१. अव्ययीभावे चाकाले । चक्रेण युगपत्सचक्रम् । नेह :--सहपूर्वाह्णम् ।

८९. दृग्दृशवतुषु । सदृक् । सदृशः । * दृक्षे चेति वक्तव्यम् * सदृक्ष ।

९० इदंकिमोरीश्की । ईदृक्, ईदृशः । इयान् । कीदृक्, कीदृशः, कियान् । * दृक्षे च * ईदृक्षः । कीदृक्षः ।

९१. आ सर्वनाम्नः । तादृक्, तादृशः । तावान् । तादृक्षः । यादृक्, यादृशः । यावान् । यादृक्षः । अमूदृक् अमूदृशः, अमूदृक्षः ।

९३. समः समि । सम्यङ् । सम्यञ्चौ । सम्यञ्चः । समीचः । समीचा ।

९४. तिरसस्तिर्यलोपे । तिर्यङ् । तिर्यञ्चौ । तिर्यञ्चः । लोपे तु, तिरश्चः । तिरश्चेत्यादि ।

९५ सहस्य सध्रिः । सध्र्यङ् । सध्र्यञ्चौ । सध्र्यञ्चः । सध्रीचः । सध्री-चेत्यादि. ।

९७. द्व्यन्तरुपसर्गेभ्योऽप इत् । द्विर्गता आपो यस्मिन्निति, द्वीपम् । अन्तरीपम् । प्रतीपम् । समीपम् । कृतसमासान्तग्रहणान्नेह :--स्वप्, स्वपी । * अवर्णान्ताद्वा * प्रेपम्, प्रापम्, परेपम्, परापम् ।

९८ ऊदनोर्देशे । अनूपो देशः ।

१०१. कोः कत्तत्पुरुषेऽचि । कुत्सितोऽश्वः, कदश्वः । कदन्नम् । अन्यत्र तु, कूष्ट्रो राजा । * त्रौ च * कुत्सितास्त्रयः, कत्त्रयः ।

१०२. रथवदयोश्च । कद्रथः । कद्वदः ।

१०३. तृणे च जातौ । कत्तृणम् ।

१०४. का पथ्यक्षयोः । कापथम् । काक्षः ।

१०५. ईषदर्थे । ईषज्जलं काजलम् । काम्लः ।

१०६. विभाषा पुरुषे । कापुरुषः, कुपुरुषः ।

१०७. कवं चोष्णे । कवोष्णम्, कोष्णम्, कदुष्णम् ।

१०८. पथि चच्छन्दसि । कवपथः, कापथः । कुपथः ।

१०९. पृषोदरादीनि यथोपदिष्टम् । पृषत उदरं पृषोदरम् । वारिवाहको बलाहकः । * दिक्शब्देभ्यस्तीरस्य तारभावो वा * दक्षिणतारम्, दक्षिणतीरम् । उत्तरतारम्, उत्तरतीरम् । * दुरो दाशनाशदभध्येषूत्वमुत्तरपदादेः ष्टुत्वञ्च * दूडाशः । दूणाशः । दूडभः । दूढ्यः । वृसी । * षष उत्वं दतृदशधासूत्तरपदादेः ष्टुत्वं च * षोडन् । षोडश । * धासु वा षष उत्वमुत्तरपदादेः ष्टुत्वञ्च * षोढा, षढ्धा ।

१११. ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः । पुना रमते । हरी रम्यः । शम्भू राजते । लीढः । अजर्घाः ।

११२. सहिवहोरोदवर्णस्य । सोढा । वोढ़ा । सोढुम् । वोढुम् । सोढव्यम् । वोढव्यम् ।

११६. नहिवृतिवृषिव्यधिरुचिसहितनिषु क्वौ । उपानत् । नीवृत् । प्रावृट् । मर्मावित् । नीरुक् । ऋतीषट् । तरीतत् ।

१२२. उपसर्गस्य घञ्यमनुष्ये बहुलम् । परीपाकः, परिपाकः । मनुष्ये तु, निषादः ।

१२३. इकः काशे । वीकाशः । नीकाशः । नेह :—प्रकाशः ।

१२४. दस्ति । नीत्तम् । सूत्तम् । नेह :—प्रत्तम् ।

१२५. अष्टनः संज्ञायाम् । अष्टावक्रः । अष्टापदम् ।

१२८. विश्वस्य वसुराटोः । विश्वावसुः । विश्वाराट् ।

१२९. नरे संज्ञायाम् । विश्वानरः ।

१३०. मित्रे चर्षौ । विश्वामित्रः । नेह :—विश्वमित्रो माणवकः ।

१३७. अन्येषामपि दृश्यते । केशाकेशि । कचाकचि । * शुनो दन्तदंष्ट्राकर्णकुन्दवराहपुच्छेषु दीर्घो वाच्यः * श्वादन्तः । श्वादंष्ट्रः । श्वाकर्णः । श्वाकुन्दः । श्वावराहः । श्वापुच्छः ।

१३८. चौ । दधीचः पश्य । मधूचः पश्य । प्राचः । प्रतीचः ।

१३९. सम्प्रसारणस्य । कारीषगन्धीपुत्रः । कौमुदगन्धीपुत्रः ।

इति लघुपाणिनीये षष्ठाध्यायस्य तृतीयपादः समाप्तः ।

अथ षष्ठाध्यायस्य चतुर्थः पादः

१. अङ्गस्य । अधिकारोऽयमा सप्तमाध्यायसमाप्तेः ।

२. हलः । हूतः जीनः । संवीतः । नेह : —निरुतम् ।

३. नामि । रामाणाम् । हरीणाम् । भानूनाम् । कर्तृणाम् ।

४. न तिसृचतसृ । तिसृणाम् । चतसृणाम् ।

६. नृ च । नृणाम्, नृणाम् ।

७. नोपधायाः । पञ्चानाम् । सप्तानाम् । नवानाम् ।

८. सर्वनामस्थाने चासम्बुद्धौ । राजा, राजानौ, राजानः, राजानम् राजानौ । सम्बुद्धौ तु, हे राजन् ।

१०. सान्तमहतः संयोगस्य । श्रेयान्, श्रेयांसो, श्रेयांसः । अजरांसि । यशांसि । महान्, महान्तौ, महान्तः । असम्बुद्धावित्येव । नेह :—हे श्रेयः । हेमहन् ।

११. अप्तृन्तृच्स्वसृनप्तृनेष्टृत्वष्टृक्षत्तृहोतृपोतृप्रशास्तॄणाम् । आपः । कर्त्तारौ, कर्त्तारः कटान् । कर्त्तारौ, कर्त्तारः कटस्य । स्वसारौ, स्वसारः । नप्तारौ, नप्तारः । नेष्टारौ । नेष्टारः । त्वष्टारौ, त्वष्टारः । क्षत्तारौ, क्षत्तारः । होतारौ, होतारः । पोतारौ, पोतारः । प्रशास्तारौ, प्रशास्तारः । नेह :–पितरौ, पितरः । भ्रातरौ, भ्रातर इत्यादि । असम्बुद्धावित्येव । नेह—हे कर्त्तः । हे स्वसः ।

१२. इन्हन्पूषार्यम्णां शौ । बहुदण्डीनि । बहुवृत्रहाणि । बहुपूषाणि । बह्वर्यमाणि ।

१३. सौ च । दण्डी । वृत्रहा । पूषा । अर्यमा । सम्बुद्धौ तु, हे दण्डिन् । वृत्रहन् । पूषन् । अर्यमन् ।

१४. अत्वसन्तस्य चाधातोः । भवान् । कृतवान् । गोमान् । सुपयाः । चन्द्रमाः । वेधाः । असम्बुद्धावित्येव । नेह :—हे गोमन् । हे सुपयः ।

१९. च्छ्वोः शूडनुनासिके च । प्रश्नः । प्राट् । विश्नः । स्योनाति ।

२०. ज्वरत्वरस्रिव्यविमवामुपधायाश्च । जूः, जुरौ, जुरः । जूर्त्तिः । तूः, तुरौ, तुरः । तूर्त्तिः । स्रूः, स्रुवौ, स्रुवः । स्रूतः । स्रूतिः । ऊः, उवौ, उवः । ऊतिः । मूः, मुवौ, मुवः । मूतिः ।

२१. **राल्लोपः** । मूर्छा—मूः, मुरौ, मुरः । मूर्त्तः । मूर्त्तिः । हुर्छा—हूः, हुरौ, हुरः । हूर्णः । हूर्त्तिः । तुर्वी—तूः, तुरौ, तुरः । तूर्णः । तूर्त्तिः । धुर्वी—धूः, धुरौ, धुरः । धूर्णः । धूर्त्तिः ।

२२. **असिद्धवदत्रा भात्** । असिद्धवदित्यधिक्रियते आध्यायसमाप्तेः । एधि । शाधि । जहि । समानाश्रय एव । नेह :—पपुषः । चिच्युषः ।

२३. **श्नान्नलोपः** । इन्धे । अनक्ति । भनक्ति । हिनस्ति ।

२४. **अनिदितां हल उपधायाः क्ङिति** । स्रस्तः । ध्वस्तः । अग्निमत् । प्राङ्, प्राञ्चौ प्राञ्चः । * रञ्जेर्णौ मृगरमणे नलोपो वक्तव्यः * रजयति मृगान् नेह :—रञ्जयति पक्षिणः मृगान्वा तृणदानेन । * असि अकेऽने च रञ्जेर्नलोपो वाच्यः * रजः । रजकः । रजनम् ।

२५. **दंशसञ्जस्वञ्जां शपि** । दशति, दशतः, दशन्तीत्यादि । सजति । स्वजते । परिष्वजते ।

२६. **रञ्जेश्च** । रजति, रजतः, रजन्तीत्यादि । रजते, रजेते, रजन्त इत्यादि ।

२७. **घञि च भावकरणयोः** । रागः । नेह :—रज्यत्यस्मिन्, रङ्गः ।

३३. **भञ्जेश्च चिणि** । अभाजि, अभञ्जि ।

३४. **शास इदङ्हलोः** । अशिषत्, अशिषताम्, अशिषन् । शिष्टः । तौ शिष्टः ।

३५. **शा हौ** । शाधि ।

३६. **हन्तेर्जः** । जहि ।

३७. **अनुदात्तोपदेशवनतितनोत्यादीनामनुनासिकलोपो झलि क्ङिति** । यतः, यतवान्, यतिः । रतः, रतवान्, रतिः । नतः, नतिः । गतः, गतिः । हतः । मतः । वतिः ततः । क्षतः । क्षितः । ऋतः । तृतः । घृतः । वतः । मतः ।

४३. **ये विभाषा** । जायते, जन्यते, जाजायते, जञ्जन्यते । सायते, सन्यते । सासायते, संसन्यते । खायते, खन्यते । चाखायते, चंखन्यते ।

४४. **तनोतेर्यकि** । तायते, तन्यते ।

४६. **आर्धधातुके** । अधिक्रियत इदं न ल्यपीत्यतः प्राक् ।

४७. **भ्रस्जो रोपधयोरमन्यतरस्याम्** । भ्रष्टा, भर्ष्टा । भ्रक्ष्यति, भर्क्ष्यति । भ्रज्जनम्, भर्जनम् ।

४८. अतो लोपः । गोपायाञ्चकार । गोपायिता । चिकीर्षिता । चिकीर्षकः ।

४९. यस्य हलः । वेभिदांचक्रे । वेभिदिता । सोसूचांचक्रे । सोसूचिता ।

५०. क्यस्य विभाषा । समिधांचकार, समिध्यांचकार । समिधिता, समिध्यिता । समिधांचक्रे, समिध्यांचक्रे ।

५१. णेरनिटि । इयङ्यण्गुणवृद्धिदीर्घाणामपवादः । अततक्षत् । आटिटत् । कारणा । कारकः । कार्यते ।

५२. निष्ठायां सेटि । भावितः । कारितम् । गणितम् ।

६३. स्यसिच्सीयुट्तासिषु भावकर्मणोरुपदेशेऽज्झनग्रहदृशां वा चिण्वदिट् च । भाविष्यते, भविष्यते । अभाविष्यत, अभविष्यत । अन्वभाविषाताम्, अन्वभविषाताम् । भाविषीष्ट भविषीष्ट । भाविता, भविता । दायिष्यते, दास्यते । अदायिषाताम्, अदासाताम् । दायिषीष्ट, दासीष्ट । दायिता, दाता । शामिष्यते, शमिष्यते, शमयिष्यते । शामिता, शमिता, शमयिता । घानिष्यते, हनिष्यते । अघानिषाताम्, अहसाताम् । पक्षे अवधिषाताम् । घानिषीष्ट । पक्षे वधिषीष्ट । घानिता, हन्ता । ग्राहिष्यते, ग्रहीष्यते । ग्राहिता, ग्रहीता । दर्शिष्यते, द्रक्ष्यते । अदर्शिषाताम्, अदृक्षाताम् । दर्शिषीष्ट, दृक्षीष्ट । दर्शिता, द्रष्टा ।

६४. आतो लोप इटि च । पपिथ । तस्थिथ । दधतुः, दधुः । पपतुः, पपुः । गोदः ।

६५. ईद्यति । देयम् । ग्लेयम् । हेयम् । स्थेयम् ।

६६. घुमास्थागापाजहातिसां हलि । दीयते । देदीयते । धीयते । मीयते । मेमीयते । स्थीयते । तेष्ठीयते । जेगीयते । अध्यगीष्ट । पीयते । पेपीयते । पातेस्तु, पायते । हीयते । जेहीयते । जिहीतेस्तु, हायते । अवसीयते । सेसीयते । क्ङितीत्येव नेह :—दाता । धाता ।

६७. एर्लिङि । देयात् । धेयात् । मेयात् । स्थेयात् । गेयात् । पेयात् । हेयात् । अवसेयात् ।

६८. वाऽन्यस्य संयोगादेः । ग्लेयात्, ग्लायात् । म्लेयात्, म्लायात् । अन्यस्येति नेह :—स्थेयात् ।

६९. न ल्यपि । प्रदाय । प्रमाय । प्रस्थाय । प्रगाय । प्रपाय । प्रहाय । अवसाय ।

७१. लुङ्लङ्लृङ्क्ष्वडुदात्तः । अभूत् । अभवत् । अभविष्यत् । अकार्षीत् । अकरोत् । अकरिष्यत् ।

७२. आडजादीनाम् । ऐधिष्ट । ऐधत । ऐधिष्यत । आतीत् । आतत् । आतिष्यत ।

७४. न माङ्योगे । मा भवान् भूत् । मा स्म भवत्, भूद्वा । मा भवानीक्षिष्ट । मा स्म भवानीक्षत ।

७७. अचि श्नुधातुभ्रुवां य्वोरियङुवङौ । आप्नुवन्ति । शक्नुवन्ति । चिक्षियतुः, चिक्षियुः । लुलुवतुः, लुलुवुः । नियौ, नियः । लुवौ, लुवः । भ्रुवौ, भ्रुवः । * तन्वादीनां छन्दसि बहुलम् * तन्वं पुषेम, तनुवं पुषेम । त्र्यम्बकम्, त्रियम्बकम् । स्वर्गो लोकः । सुवर्गः ।

७८. अभ्यासस्यासवर्णे । इयेष । उवोख । इयर्त्ति । नेह :—ईषतुः । ऊखतुः ।

७९. स्त्रियाः । स्त्रियौ, स्त्रियः । स्त्रीणामित्यत्र तु, परत्वान्नुट् ।

८०. वाम्शसोः । स्त्रियम्, स्त्रीं वा पश्य । स्त्रियः, स्त्रीः ।

८१. इणो यण् । यन्ति । यन्तु । आयन् ।

८२. एरनेकाचोऽसंयोगपूर्वस्य । प्रध्यौ, प्रध्यः । ग्रामण्यौ, ग्रामण्यः । नेह :—नियौ, नियः यवक्रियौ, यवक्रियः ।

८३. ओः सुपि । खलप्वौ, खलप्वः । सुल्वौ सुल्वः । अनेकाच इत्येव । नेह :—लुवौ, लुवः ।

८४. वर्षाभ्वश्च । वर्षाभ्वौ, वर्षाभ्वः । * दृन्करपुनःपूर्वस्य भुवो यण्वक्तव्यः * दृन्भ्वौ, दृन्भ्वः । करभ्वौ, करभ्वः । पुनर्भ्वौ, पुनर्भ्वः ।

८५. न भूसुधियोः । प्रतिभुवौ, प्रतिभुवः । सुधियौ, सुधियः ।

९२. मितां ह्रस्वः । घटयति । व्यथयति । जनयति । शमयति । ज्ञपयति । केचिदिह वेत्यनुवर्त्य व्यवस्थितविभाषां कल्पयन्ति । तेनेह न :- उत्क्रामयति । संक्रामयतीत्यादि ।

९८. गमहनजनखनघसां लोपः क्ङित्यनङि । जग्मतुः, जग्मुः । जघ्नतुः, जघ्नुः । जज्ञे, जज्ञाते । चख्नतुः, चख्नुः । जक्षतुः, जक्षुः । नेह :—गमनम् । अगमत् ।

१०१. हुझल्भ्यो हेर्धिः । जुहुधि । भिन्धि । छिन्धि । नेह :—क्रीणीहि ।

१०४. चिणो लुक् । अभावि । अकारि । अप्यायि । अपाचि ।

१०५. **अतो हेः** । भव । पच । पठ । गच्छ । नेह ऽ—युहि । रुहि ।

१०६. **उतश्च प्रत्ययादसंयोगपूर्वात्** । चिनु । सुनु । कुरु । धिनु । * छन्दसि वावचनम् * धिनुहि यज्ञपतिम् । कृणुहि ।

१०७. **लोपश्चास्यान्यतरस्यां म्वोः** । सुन्वः, सुनुवः । सुन्मः, सुनुमः ।

१०८. **नित्यं करोतेः** । कुर्वः । कुर्मः ।

१०९. **ये च** । कुर्य्यात्, कुर्य्याताम्, कुर्युः ।

११०. **अत उत्सार्वधातुके** । कुरुतः, कुर्वन्ति, कुरु । क्ङितीत्येव । नेह :— करोति, करोषि, करोमि ।

१११. **श्नसोरल्लोपः** । रुन्धः, रुन्धन्ति । भिन्तः, भिन्दन्ति । स्तः, सन्ति । क्ङितीत्येव । नेह :—भिनत्ति । अस्ति ।

११२. **श्नाभ्यस्तयोरातः** । क्रीणते । लुनते । मिमते । जिहते ।

११३. **ई हल्यघोः** । क्रीणीतः । लुनीतः । पुनीतः । नेह :—लुनाति । दत्तः ।

११४. **इद्दरिद्रस्य** । दरिद्रितः । दरिद्रिथः । दरिद्रिवः । दरिद्रिमः । * दरिद्रातेरार्धधातुके विवक्षित आलोपो वाच्यः । लुङि वा, सनि ण्वुलि ल्युटि च न * दरिद्रिता । अदरिद्रित्, अदरिद्रासीत् । दिदरिद्रासति । दरिद्रायकः । दरिद्राणम् ।

११५. **भियोऽन्यतरस्याम्** । बिभितः, बिभीतः । बिभिथः, बिभीथः ।

११६. **जहातेश्च** । जहितः, जहीतः । जहिथः, जहीथः ।

११७. **आ च हौ** । जहाहि, जहिहि, जहीहि ।

११८. **लोपो यि** । जह्यात्, जह्याताम्, जह्युः ।

११९ **घ्वसोरेद्धावभ्यासलोपश्च** । देहि । धेहि । एधि ।

१२०. **अत एकहल्मध्येऽनादेशादेर्लिटि** । रेणतुः, रेणुः । पेचतुः, पेचुः । देधे, देधाते, देधिरे । नेह :—चकणतुः, चकणुः । बभणतुः, बभणुः । ररक्षतुः, ररक्षुः । क्ङितीत्येव । नेह :—रराण । पपाच ।

१२१. **थलि च सेटि** । पेचिथ । रेणिथ । शेकिथ । नेह :—पपक्थ ।

१२२. **तॄफलभजत्रपश्च** । तेरतुः, तेरुः, तेरिथ । फेलतुः, फेलुः, फेलिथ । भेजतुः, भेजुः, भेजिथ । त्रेपे, त्रेपाते, त्रेपिरे ।

१२६. न शसददवादिगुणानाम्। शशसतुः, शशसुः, शशसिथ। ददद, दददाते, दददिरे। ववमतुः, ववमुः, ववमिथ। शशरतुः, शशरुः, शशरिथ।

१२७. अर्वणस्त्रसावनञः। अर्वन्तौ, अर्वन्तः, अर्वता, अर्वद्भ्याम्। अर्वती। आर्वतम्। नेह :—अनर्वाणौ। अनर्वाणः।

१२८. मघवा बहुलम्। मघवान्, मघवन्तौ, मघवन्तः, मघवता। मघवती। माघवतम्। मघवा, मघवानौ, मघवानः, मघोनः, मघोना, मघवभ्याम्। मघोनी। माघवनम्।

१२९. भस्य। अधिक्रियत इदमाध्यायसमाप्तेः।

१३०. पादः पत्। सुपदः, सुपदा, सुपदे। द्विपदः, द्विपदा, द्विपदे। द्विपदिकां ददाति। वैयाघ्रपद्यः।

१३१. वसोः सम्प्रसारणम्। विदुषः, विदुषा, विदुषे। पेचुषः, पेचुषा। पेचुषे। सेदुषः, सेदुषा, सेदुषे।

१३२. वाह ऊठ्। विश्वौहः, विश्वौहा, विश्वौहे।

१३३. श्वयुवमघोनामतद्धिते। शुनः, शुना, शुने। यूनः, यूना, यूने। मघोनः, मघोना, मघोने। नेह :—शौवनं मांसम्। यौवनम्। माघवनम्।

१५४. तुरिष्ठेमेयःसु। अतिशयेन कर्त्ता, करिष्ठः। दोहीयसी धेनुः।

१५५. टेः। पटिष्ठः, पटिमा, पटीयान्। लघिष्ठः, लघिमा, लघीयान्। प्रथिष्ठः, प्रथिमा, प्रथीयान्।

१५६. स्थूलदूरयुवह्रस्वक्षिप्रक्षुद्राणां यणादिपरं पूर्वस्य च गुणः। स्थविष्ठः, स्थवीयान्। दविष्ठः, दवीयान्। यविष्ठः, यवीयान्। ह्रसिष्ठः, ह्रसीयान्, ह्रसिमा। क्षेपिष्ठः, क्षेपीयान् क्षेपिमा। क्षोदिष्ठः, क्षोदीयान्, क्षोदिमा।

१५७. प्रियस्थिरस्फिरोरुबहुलगुरुवृद्धतृप्रदीर्घवृन्दारकाणां प्रस्थस्फवर्बंहिगर्वर्षित्रब्द्राघिवृन्दाः। प्रेष्ठः, प्रेमा, प्रेयान्। स्थेष्ठः, स्थेयान्। स्फेष्ठः, स्फेयान्। वरिष्ठः, वरिमा, वरीयान्। बंहिष्ठः, बंहिमा, बंहीयान्। गरिष्ठः, गरिमा, गरीयान्। वर्षिष्ठः, वर्षीयान्। त्रपिष्ठः, त्रपीयान्। द्राघिष्ठः, द्राघिमा, द्राघीयान्। वृन्दिष्ठः, वृन्दीयान्।

१५८. बहोर्लोपो भू च बहोः। भूयान्, भूमा।

१५९. इष्ठस्य यिट् च। भूयिष्ठः।

१६०. ज्यादादीयसः। ज्यायान्।

१६१. र ऋतो हलादेर्लघोः। प्रथिष्ठः, प्रथीयान्, प्रथिमा। म्रदिष्ठः, म्रदीयान्, म्रदिमा। नेह :-ऋजिष्ठः, ऋजीयान्, ऋजिमा। कृष्णिष्ठः, कृष्णीयान्, कृष्णिमा। परिगणनं कर्त्तव्यम्। पृथुं मृदुं भृशं चैव कृशं च दृढमेव च। परिपूर्वं वृढं चैव षडेतान् रविधौ स्मरेत्। नेह :-कृतमाचष्टे, कृतयति। मातयति। भ्रातयति।

१६७. अन्। राजनः। सामनः। सौत्वनः।

१६८. ये चाभावकर्मणोः। राजन्यः। सामन्यः ब्रह्मण्यः। नेहः -राज्ञो भावः कर्म वा, राज्यम्।

१६९. आत्माध्वानौ खे। आत्मने हितं आत्मनीनः। अध्वानमलङ्गामी, अध्वनीनः। नेह :—अध्यात्मम्। प्राध्वम्।

इति षष्ठाध्यायस्य चतुर्थपादः समाप्तः।

अथ सप्तमाध्यायस्य प्रथमपादः

१. युवोरनाकौ । नन्दनः । रमणः । कारकः । हारकः । वासुदेवकः ।

२. आयनेयीनीयियः फढखछघां प्रत्ययादीनाम् । नाडायनः, चारायणः । सौपर्णेयः, वैनतेयः । कुलीनः । गार्गीयः । क्षत्रियः । नेह :—फक्कति । ढौकते । खनति । छिनत्ति । घूर्णते ।

३. झोऽन्तः । भवन्ति । कुर्वन्ति । प्रत्ययस्येत्येव । नेह :—उज्झिता, उज्झितुम् ।

४. अदभ्यस्तात् । जुह्वति । ददति । जक्षति । जाग्रतु ।

५. आत्मनेपदेष्वनतः । चिन्वते । लुनते, । ऐधिषत ।

६. शीङो रुट् । शेरते, शेरताम्, अशेरत ।

७. वेत्तेर्विभाषा । संविद्रते, संविदते । संविद्रताम्, संविदताम् । समविद्रत, समविदत ।

९. अतो भिस ऐस् । रामैः । वृक्षैः । नेह :—अग्निभिः । वायुभिः । रमाभिः ।

११. नेदमदसोरकोः । एभिः । अमीभिः । नेह :—इमकैः । अमुकैः ।

१२. टाङसिङसामिनात्स्याः । रामेण । वृक्षेण । रामात् । वृक्षात् । रामस्य । वृक्षस्य । नेह :—सख्या । पत्या ।

१३. ङेर्यः । रामाय । वृक्षाय । नेह :—सख्ये । पत्ये ।

१४. सर्वनाम्नः स्मै । सर्वस्मै । विश्वस्मै । यस्मै । कस्मै । तस्मै ।

१५. ङसिङ्योः स्मात्स्मिनौ । सर्वस्मात् । विश्वस्मात् । यस्मात् । तस्मात् । सर्वस्मिन् । विश्वस्मिन् । यस्मिन् । कस्मिन् । तस्मिन् ।

१६. पूर्वादिभ्यो नवभ्यो वा । पूर्वस्मात्, पूर्वात् । पूर्वस्मिन्, पूर्वे । परस्मात्, परात् । परस्मिन्, परे । एवमवरादयः सप्त ।

१७. जसः शी । सर्वे । विश्वे । ये । के । ते ।

१८. औङ आपः । रमे । खट्वे । बहुराजे । कारीषगन्ध्ये ।

१९. नपुंसकाच्च । ज्ञाने । कुण्डे । दधिनी । मधुनी ।

२०. जश्शसोः शिः । ज्ञानानि २ । कुण्डानि २ । दधीनि २ । मधूनि २ ।

२१. अष्टाभ्य औश् । अष्टौ २ । नेह :—अष्ट २ । तदन्तेऽपि परमाष्टौ ।

२२. षड्भ्यो लुक् । कति । षट्, षड् । षट्, षड् । पञ्च २ । सप्त २ । नव २ । दश २ । षट्प्रधानात्तदन्तादपि । परमषट् । उत्तमषट् । उपसर्जनात्तु नेह :–प्रियषषः । प्रियपञ्चानः ।

२३. स्वमोर्नपुंसकात् । दधि २ । मधु २ । वारि २ । तत्, तद् ।

२४. अतोऽम् । ज्ञानम् २ । कुण्डम् २ । वनम् २ ।

२५. अद्ड् डतरादिभ्यः पञ्चभ्यः । कतरत् २ । कतमत् २ । अन्यत् २ । अन्यतरत् २ । इतरत् २ * एकतरात्प्रतिषेधो वक्तव्यः * एकतरम् ।

२७. युष्मदस्मद्भ्यां ङसोऽश् । तव । मम ।

२८. ङे प्रथमयोरम् । तुभ्यम् । मह्यम् । त्वम् । अहम् । युवाम् । आवाम् । यूयम् । वयम् । त्वाम् । माम् । युवाम् । आवाम् ।

२९. शसो न । युष्मान् । अस्मान् ।

३०. भ्यसो भ्यम् । युष्मभ्यं दीयते । अस्मभ्यम् ।

३१. पञ्चभ्या अत् । युष्मत् । अस्मत् ।

३२. एकवचनस्य च । त्वत् । मत् ।

३३. साम आकम् । युष्माकम् । अस्माकम् ।

३४. आत औ णलः । पपौ । तस्थौ । जग्लौ । मम्लौ ।

३५. तुह्योस्तातङ्ङाशिष्यन्यतरस्याम् । भवतात्, भवतु । जीवतात्, जीवतु । भवतात्, भव । जीवतात्, जीव ।

३६. विदेः शतुर्वसुः । विद्वान्, विद्वांसौ, विद्वांसः । विदुषी । विदन्, विदन्तौ, विदन्तः ।

३७. समासेऽनञ्पूर्वे क्त्वो ल्यप् । प्रकृत्य । प्रहृत्य । नेह :—अकृत्वा । पर्युदासाश्रयणान्नेह :—परमकृत्वा ।

५१. अश्वक्षीरवृषलवणानामात्मप्रीतौ क्यचि । * अश्ववृषयोर्मैथुनेच्छायाम् * अश्वस्यति वडवा । वृषस्यति गौः । * क्षीरलवणयोर्लालसायाम् * क्षीरस्यति बालः । लवणस्यति उष्ट्रः । * सर्वप्रातिपदिकानां लालसायां क्यचि सुगसुकौ * दधिस्यति, दध्यस्यति । मधुस्यति, मध्वस्यति ।

५२. आमि सर्वनाम्नः सुट् । सर्वेषाम् । विश्वेषाम् । येषाम् । तेषाम् । यासाम् । तासाम् । आदित्येव । नेह :–भवताम् ।

५३. त्रेस्त्रयः । त्रयाणाम् ।

५४. ह्रस्वनद्यापो नुट् । रामाणाम् । हरीणाम् । वायूनाम् । कर्तॄणाम् । गौरीणाम् । नदीनाम् । लक्ष्मीणाम् । ब्रह्मबन्धूनाम् । रमाणाम् ।

५५. षट्चतुर्भ्यश्च । षण्णाम् । पञ्चानाम् । सप्तानाम् । चतुर्णाम् । बहुवचननिर्देशात्संख्याप्रधानस्य ग्रहणम् । परमषण्णाम् । नेह :—प्रियषषाम् । प्रियचतुराम् ।

५८. इदितो नुम् धातोः । स्कुदि-स्कुन्दते । कुडि-कुण्डते । नदि-नन्दति ।

५९. शे मुचादीनाम् । मुञ्चति, मुञ्चते । लुम्पति, लुम्पते । विन्दति, विन्दते । लिम्पति, लिम्पते । सिञ्चति, सिञ्चते । कृन्तति । खिन्दति । पिंशति । * शे तृम्फादीनां नुम् वाच्यः * तृम्फति । दृम्फति । गुम्फति । उम्भति । शुम्भति ।

६०. मस्जिनशोर्झलि । मङ्क्ता । मङ्क्तुम् । मङ्क्तव्यम् । नंष्टा । नंष्टुम् । नंष्टव्यम् ।

६१. रधिजभोरचि । रन्धयति । रन्धकः । रन्धः । जम्भयति । जम्भकः । जम्भः । नेह :—रद्धा । जभ्यम् ।

६२. नेट्यलिटि रधेः । रधिता । रधितुम् । रधितव्यम् । लिटि तु, ररन्धिव । ररन्धिम ।

६३. रभेरशब्लिटोः । आरम्भयति । आरम्भकः । आरम्भः । नेह :—आरभते । आरेभे ।

६४. लभेश्च । लम्भयति । लम्भकः । लम्भः । नेह :- लभते । लेभे ।

६५. आङो यि । आलम्भ्यो गौः । आलम्भ्या वडवा । नेह :—लभ्यः ।

६६. उपात्प्रशंसायाम् । उपलम्भ्यः साधुः । उपलम्भ्या विद्या । नेह :—उपलब्धुं शक्य उपलभ्यः ।

६७. उपसर्गात्खल्घञोः । ईषत्प्रलम्भः । सुप्रलम्भः । दुष्प्रलम्भः । प्रलम्भः ।

६८. न सुदुर्भ्यां केवलाभ्याम् । सुलभम् । दुर्लभम् । सुलाभः । दुर्लाभः ।

६९. विभाषा चिण्णमुलोः । अलम्भि, अलाभि । लम्भम् २, लाभम् २ । व्यवस्थितविभाषेयम् । अनुपसृष्टस्य विकल्पः । उपसृष्टस्य नित्यम् । प्रालम्भि । प्रलम्भम् २ ।

७०. **उगिदचां सर्वनामस्थानेऽधातोः** । भवतु-भवान्, भवन्तौ, भवन्तः । श्रेयान्, श्रेयांसौ, श्रेयांसः । पचन्, पचन्तौ, पचन्तः । प्राङ्, प्राञ्चौ, प्राञ्चः । नेह :—दृषत्, दृषदौ । भवतः । श्रेयसः ।

७१. **युजेरसमासे** । युङ्, युञ्जौ, युञ्जः । नेह :—सुयुक् । अश्वयुक् । युजेरितीकारनिर्देशाद्युज समाधावित्यस्य न । युज्यते समाधत्त इति युक् ।

७२. **नपुंसकस्य झलचः** । शकृन्ति । यशांसि । ज्ञानानि । कुण्डानि । वारीणि । मधूनि । श्रेयांसि । भूयांसि । * बहूर्जि नुम्प्रतिषेधः * * अन्त्यात् पूर्वो वा नुम् * बहूर्जि । बहूर्न्जि ।

७३. **इकोऽचि विभक्तौ** । वारिणी । वारिणे । मधुनी । मधुने । नेह :—वारिभ्याम् । वारिभिः ।

७४. **तृतीयादिषु भाषितपुंस्कं पुंवद् गालवस्य** । अनादये, अनादिने । अनादेः, अनादिनः । ग्रामण्या, ग्रामणिना । ग्रामण्ये, ग्रामणिने । ग्रामण्यः, ग्रामणिनः । नेह :- पीलुर्वृक्षस्तत्फलं पीलु तस्मै पीलुने ।

७५. **अस्थिदधिसक्थ्यक्ष्णामनङुदात्तः** । अस्थ्ना, अस्थ्ने । दध्ना, दध्ने । सक्थ्ना, सक्थ्ने । अक्ष्णा, अक्ष्णे । तृतीयादिष्वेव । नेह :— अस्थिनी । दधिनी । अच्येव । नेह :— अस्थिभ्याम् । दधिभ्याम् ।

७८. **नाभ्यस्ताच्छतुः** । ददत्, ददतौ, ददतः । दधत् । जक्षत् । जाग्रत् । दरिद्रत् । शासत् । चकासत् ।

७९. **वा नपुंसकस्य** । ददति, ददन्ति । दधति, दधन्ति । जक्षति, जक्षन्ति । जाग्रति, जाग्रन्ति कुलानि ।

८०. **आच्छीनद्योर्नुम्** । तुदती तुदन्ती, वा कुले । तुदती, तुदन्ती वा ब्राह्मणी । याती, यान्ती वा कुले । याती, यान्ती वा ब्राह्मणी । नेह :- अदती । घ्नती । लुनती । पुनती । कुर्वती । सुन्वती ।

८१. **शप्श्यनोर्नित्यम्** । पचन्ती कुले । पचन्ती ब्राह्मणी । दीव्यन्ती कुले । दीव्यन्ती ब्राह्मणी । सीव्यन्ती ।

८२. **सावनडुहः** । अनड्वान् । हे अनड्वन् ।

८४. **दिव औत्** । द्यौः सुद्यौः । नेह :- अक्षद्यूः ।

८५. **पथिमथ्यृभुक्षामात्** । पन्थाः । मन्थाः । ऋभुक्षाः ।

८६. **इतोऽत् सर्वनामस्थाने** । पन्थाः, पन्थानौ, पन्थानः । पन्थानम्, पन्थानौ । मन्थाः, मन्थानौ, मन्थानः । मन्थानम्, मन्थानौ । ऋभुक्षाः, ऋभुक्षाणौ, ऋभुक्षाणः । ऋभुक्षाणम् । ऋभुक्षाणौ ।

८७. **थो न्थः** । पन्थाः, पन्थानौ, पन्थानः । मन्थाः, मन्थानौ, मन्थानः ।

८८. **भस्य टेर्लोपः** । पथः, पथा, पथे । मथः, मथा, मथे । ऋभुक्षः, ऋभुक्षा, ऋभुक्षे ।

८९. **पुंसोऽसुङ्** । पुमान्, पुमांसौ, पुमांसः । पुमांसम्, पुमांसौ । नेह :- पुंसः, पुंसा ।

९०. **गोतो णित्** । गौः, गावौ, गावः । * ओतो णिदिति वाच्यम् * * विहितविशेषणञ्च * द्यौः, द्यावौ, द्यावः । सुद्यौः, सुद्यावौ, सुद्यावः । नेह :- हे भानो । भानवः ।

९१. **णलुत्तमो वा** । अहं चकर, चकार वा । पपच, पपाच ।

९२. **सख्युरसम्बुद्धौ** । सखायौ, सखायः । नेह :- हे सखे ।

९३. **अनङ् सौ** । सखा । नेह :- हे सखे ।

९४. **ऋदुशनस्पुरुदंशोऽनेहसाञ्च** । कर्त्ता । माता । पिता । उशना । पुरुदंशा । अनेहा । नेह :- हे कर्त्तः । हे मातः । हे पितः । हे पुरुदंशः । हे अनेहः । * उशनसः सम्बुद्धौ वाऽनङ् नलोपश्च वा वाच्यः * हे उशन, हे उशनन्, हे उशनः ।

९५. **तृज्वत्क्रोष्टुः** । क्रोष्टाः, क्रोष्टारौ, क्रोष्टारः । क्रोष्टारम्, क्रोष्टारौ । नेह :- क्रोष्टून् । हे क्रोष्टो ।

९६. **स्त्रियाञ्च** । क्रोष्ट्री । क्रोष्ट्रीभ्याम् । क्रोष्ट्रीभिः ।

९७. **विभाषा तृतीयादिष्वचि** । क्रोष्ट्रा, क्रोष्टुना । क्रोष्ट्रे, क्रोष्टवे । नेह :-क्रोष्टून । * नुमचिरतृज्वद्भावेभ्यो नुट् पूर्वविप्रतिषेधेन * क्रोष्टूनाम् ।

९८. **चतुरनडुहोरामुदात्तः** । चत्वारः । अनड्वान्, अनड्वाहौ, अनड्वाहः । अनड्वाहम्, अनड्वाहौ । प्रियचत्वाः, प्रियचत्वारौ, प्रियचत्वारः । प्रियचत्वारम्, प्रियचत्वारौ । नेह :- अनडुहः । चतुरः ।

९९. **अम् सम्बुद्धौ** । हे अनड्वन् । हे प्रियचत्वः ।

१००. **ऋत इद्धातोः** । किरति । गिरति । विस्तीर्णम् । नेह :-पितॄणाम् ।

१०१. **उपधायाश्च** । कीर्त्तयति, कीर्त्तयतः, कीर्त्तयन्ति ।

१०२. **उदोष्ठ्यपूर्वस्य** । पिपूर्त्तः । पूर्त्तः । पुपूर्षति । मुमूर्षति । * इत्वोत्वाभ्यां गुणवृद्धी विप्रतिषेधेन * तरति । आस्तरणम् । निगरणम् । आस्तारकः । निगारकः ।

इति लघुपाणिनीये सप्तमाध्यायस्य प्रथमः पादः ।

अथ लघुपाणिनीये सप्तमाध्यायस्य द्वितीयपादः

१. सिचि वृद्धिः परस्मैपदेषु । अचैषीत् । अनैषीत् । अवैषीत् । अकार्षीत् । अलावीत् । नेह :- अचेष्ट । अनेष्ट ।

२. अतो ल्रान्तस्य । मा भवानालीत् । अज्वालीत् । अत्सारीत् ।

३. वदव्रजहलन्तस्याचः । अवादीत् । अव्राजीत् । अपाक्षीत् । अभैत्सीत् । अरौत्सीत् । अभाङ्क्षीत् ।

४. नेटि । मा भवानतीत् । अदेवीत् । असेवीत् । अमोषीत् ।

५. ह्म्यन्तक्षणश्वसजागृणिश्व्येदिताम् । अग्रहीत् । अक्रमीत्, अवमीत् । अव्ययीत् । अक्षणीत् । अश्वसीत् । अजागरीत् । ऊनयीत् । अश्वयीत् । अलगीत् ।

६. ऊर्णोतेर्विभाषा । और्णावीत्, और्णवीत्, और्णुवीत् ।

७. अतो हलादेर्लघोः । अखादीत्, अखदीत् । अकाणीत्, अकणीत् । नेह :- अदेवीत् । मा भवानटीत् । मा भवानशीत । अतक्षीत् । अरक्षीत् ।

८. नेड् वशि कृति । ईश्वरः । दीप्तः । भस्म । याच्ञा । सुशर्मा । प्रातरित्वा ।

९. तितुत्रतथसिसुसरकसेषु च । तन्तिः, दीप्तिः । सक्तुः । पत्त्रम्, तन्त्रम् । हस्तः, पोतः । कुष्ठम् । कुक्षिः । इक्षुः । अक्षरम् । शल्कः । वत्सः । * तितुत्रेष्वग्रहादीनामिति वक्तव्यम् * निगृहीतिः । निपठितिः ।

१०. एकाच उपदेशेऽनुदात्तात् ।

"उद्-ॠदन्तैर्यौति-रु-क्ष्णु-शीङ्-स्नु-नु-क्षु-श्वि-डीङ्-श्रिभिः ।
वृङ्-वृञ्भ्यां च विनैकाचोऽजन्तेषु निहताः स्मृताः ॥ १ ॥

कान्तेषु शक्लेकः । चान्तेषु-पच्-मुच्-रिच्-वच्-विच्-सिचः षट् । छान्तेषु-प्रच्छेकः । जान्तेषु-त्यज्-निजिर्-भज्-भञ्ज्-भुज्-भ्रस्ज्-मस्ज्-यज्-युज्-रुज्-रञ्ज्-विजिर्-स्वञ्ज्-सञ्ज्-सृजः पञ्चदश । दान्तेषु-अद् क्षुद्-खिद्-छिद्-तुद् नुद् पद्य भिद्-विद्यति-विनद् विन्द्-शद्-सद्-स्विद्य स्कन्द्-हदः षोडश । धान्तेषु-क्रुध्-क्षुध् बुध् बन्ध्-युध्-रुध् राध्-व्यध्-शुध्-साध्-सिध्या एकादश । नान्तेषु-मन्यहनौ द्वौ। पान्तेषु-आप्-

क्षुप्-क्षिप्-तप्-तिप् तृप्य-दृप्य-लिप् लुप्-वप्-शप्-स्वप्-सृपस्त्रयीदश। भान्तेषु-यभ्-रभ्-लभस्त्रयः। मान्तेषु-गम्-नम्-यम्-रमश्चत्वारः। शान्तेषु-क्रुश्-दंश्-दिश्-दृश्-मृश्-रिश्-रुश्-लिश् विश् स्पृशो दश। षान्तेषु-कृष् त्विष्-तुष् द्विष् दुष् पुष्य पिष्-विष्-शिष्-शुष्-श्लिष एकादश। सान्तेषु-घस्-वसति द्वौ। हान्तेषु-दह्-दिह्-दुह्-नह्-मिह्-रुह्-लिह्-वहाष्टौ। अनुदात्ता हलन्तेषु धातवस्त्र्यधिकं शतम्।(१०३)।

एधांचकृषे। एधांचकृवहे। एधांचकृमहे। कर्त्ता। हर्त्ता। दाता। नेता। चेता स्तोता। नेह :- भविता, लविता। तरिता, तरीता। यविता। रविता। क्षणविता। शयिता। स्नविता। नविता। क्षविता। श्वयिता। डयिता। श्रयिता। वरिता, वरीता।

११. श्र्युकः किति। श्रित्वा। श्रितः श्रितवान्। भूत्वा। भूतः। भूतवान्। युत्वा। युतः। युतवान्। वृत्वा। वृतः। वृतवान्। तीर्त्वा। तीर्णः। तीर्णवान्। भूष्णुः। नेह :- श्रयिता, श्रयितुम्, श्रयितव्यम्।

१२. सनि ग्रहगुहोश्च। जिघृक्षति। जुघुक्षति। बुभूषति लुलूपति।

१३. कृसृभृवृस्तुद्रुस्रुश्रुवो लिटि। चकृव, चकृम। ससृव, ससृम। बभृव, बभृम। ववृव, ववृम। ववृवहे, ववृमहे। तुष्टुव, तुष्टुम। दुद्रुव, दुद्रुम। सुस्रुव, सुस्रुम। शुश्रुव, शुश्रुम। * कृञोऽसुट इति वक्तव्यम् * संचस्करिथ, संचस्करिव, संचस्करिम।

१४. श्वीदितो निष्ठायाम्। शूनः, शूनवान्। ओलजी—लग्नः, लग्नवान्। ओविजो-उद्विग्नः, उद्विग्नवान्। दीपी—दीप्तः, दीप्तवान्।

१५. यस्य बिभाषा। विधूतः। विधूतवान्। समक्नः। उदक्तमुदकम्। गूढः, गूढवान्। वृढः वृढवान्।

१६. आदितश्च। मिन्नः, मिन्नवान्। क्ष्विण्णः, क्ष्विण्णवान्। स्विन्नः। आश्वस्तः। वान्तः।

१७. विभाषा भावादिकर्मणोः। प्रस्वेदितं प्रस्विन्नं वा तेन। प्रस्वेदितः, प्रस्विन्नो वा चैत्रः। प्रमिन्नं प्रमेदितं वा तेन। प्रमिन्नः, प्रमेदितः।

१८. क्षुब्धस्वान्तध्वान्तलग्नम्लिष्टविरिब्धफाण्टबाढानि मन्थमनस्तमःसक्ताविस्पष्टस्वरानायासभृशेषु। क्षुब्धो मन्थः। स्वान्तं मनः। ध्वान्तं तमः। लग्नं सक्तम्। म्लिष्टमविस्पष्टम्। विरिब्धः स्वरः। फाण्टः कषायविशेषः। बाढम् भृशम्। अन्यत्र तु :— क्षुभितम्। स्वनितम्। ध्वनितम्। लगितम्। म्लेच्छितम्। विरेभितम्। फणितम्। बाहितम्।

१९. धृषिशसी वैयात्ये। धृष्टः प्रगल्भः। विशस्तः। अन्यत्र धर्षितः। विशसितः।

२०. दृढः स्थूलबलयोः। दृढः स्थूलो बलवान्वा। अन्यत्र दृहितम्। दृंहितम्।

२१. प्रभौ परिवृढः। परिवृढः कुटुम्बी। अन्यत्र परिवृहितम्, परिवृंहितम्।

२२. कृच्छ्रगहनयोः कषः। कष्टं दुःखं तत्कारणं च। कष्टो मोहः। कष्टं शास्त्रम्।

२३. घुषिरविशब्दने। घुष्टा रज्जुः। नेह :—घुषितं वाक्यम्।

२४. अर्देः सन्निविभ्यः। समर्णः। न्यर्णः व्यर्णः। नेह :— अर्दितः।

२५. अभेश्चाविदूर्ये। अभ्यर्णम्।

२६. णेरध्ययने वृत्तम्। वृत्तं छन्दश्छात्रेण। वृत्तं पारायणम्।

२७. वा दान्तशान्तपूर्णदस्तस्पष्टच्छन्नज्ञप्ताः। दान्तः, दमितः। शान्तः, शमितः पूर्णः, पूरितः। दस्तः, दासितः। स्पष्टः, स्पाशितः। छन्नः, छादितः। ज्ञप्तः, ज्ञपितः।

२८. रुष्यमत्वरसंघुषास्वनाम्। रुष्टः, रुषितः। आन्तः, अमितः। तूर्णः, त्वरितः। संघुष्टः, संघुषितः। आस्वान्तः, आस्वनितः।

२९ हृषेर्लोमसु। हृष्टं हृषितं वा लोम। * विस्मितप्रतिघातयोश्च * हृष्टो हृषितो वा मैत्रः।

३०. अपचितश्च। अपचितः, अपचायितः। * क्तिनि नित्यमिति वाच्यम् * अपचितिः।

३५. आर्धधातुकस्येड् वलादेः। भविता। बभूविथ। भवितुम्। लविता। पविता। नेह :—भव्यम्। पव्यम्। भवनीयम्। लवनीयम्।

३६. स्नुक्रमोरनात्मनेपदनिमित्ते। क्रमिता। क्रमिष्यति। अक्रमीत्। स्नविता। स्नविष्यति। अस्नावीत्। नेह :—प्रक्रन्ता। प्रक्रंस्यते। विक्रन्ता। विक्रंस्यते। प्रस्नोषीष्ट। प्रास्नोष्ट। प्रस्नोष्यते। * क्रमेः कर्त्र्यात्मनेपदविषयात्कृत इण्निषेधो वाच्यः * प्रक्रन्ता, उपक्रन्ता। नेह :—प्रक्रमितव्यम्। उपक्रमितव्यम्।

३७. ग्रहोऽलिटि दीर्घः। ग्रहीता। ग्रहीतुम्। ग्रहीतव्यम्। गृहीतम्। नेह :—जग्रहिथ। जग्रहिव। प्रकृतस्यैवेटो दीर्घत्वम्। नेह :—ग्राहिता। ग्राहिष्यते।

३८. वृतो वा। वरीता, वरिता। प्रावरीता, प्रावरिता। तरीता, तरिता। आस्तरीता, आस्तरिता। अलिटीत्येव। नेह :—ववरिथ। तेरिथ।

३९. न लिङि। वरिषीष्ट। प्रावरिषीष्ट। आस्तरिषीष्ट।

४०. सिचि च परस्मैपदेषु। प्रावारिष्टाम्। प्रावारिषुः। अतारिष्टाम्। अस्तारिष्टाम्। नेह निषेधः :—प्रावरीष्ट, प्रावरिष्ट। वुवूर्षते।

४१. इट् सनि वा। विवरीषति, विवरिषति, वुवूर्षति। विवरीषते, विवरिषते। तितरीषति, तितरिषति, तितीर्षति। आतितिस्तरीषति, आतितिस्तिरिषति, आतिस्तीर्षति।

४२. लिङ्सिचोरात्मनेपदेषु। वरिषीष्ट, वृषीष्ट। प्रावरिषीष्ट, प्रावृषीष्ट। आस्तरीषीष्ट, आस्तरिषीष्ट, आस्तीर्षीष्ट। अवरीष्ट, अवरिष्ट, अवृत। प्रावरीष्ट, प्रावरिष्ट, प्रावृत, आस्तरीष्ट, आस्तरिष्ट, आस्तीर्ष्ट।

४३. ऋतश्च संयोगादेः। ध्वरिषीष्ट, ध्वृषीष्ट। स्मरिषीष्ट, स्मृषीष्ट। अध्वरिषाताम्, अध्वृषाताम्। अस्मरिषाताम्, अस्मृषाताम्।

४४. स्वरतिसूतिसूयतिधूञूदितो वा। स्वरिता, स्वर्ता। प्रसविता, प्रसोता। सविता, सोता। धविता, धोता। गाहू-गाहिता, गाढा। गुपू-गोपिता, गोप्ता। * स्वरत्यादेः श्र्युकः कितीति नित्यमिडभावः पूर्वविप्रतिषेधेन * स्वृत्वा। सूत्वा। धूत्वा।

४५. रधादिभ्यश्च। रधिता, रद्धा। नशिता, नंष्टा। तर्पिता, त्रप्ता, तर्प्ता।

४६. निरः कुषः। निष्कोषिता, निष्कोष्टा। निष्कोषितुम्, निष्कोष्टुम्।

४७. इण्निष्ठायाम्। निष्कुषितः। निष्कुषितवान्।

४८. तीषसहलुभरुषरिषः। एषिता, एष्टा। सहिता, सोढा। लोभिता, लोब्धा। रोषिता, रोष्टा, रेषिता, रेष्टा। नेह :—एषिष्यति।

४९. सनीवन्तर्धभ्रस्जदम्भुश्रिस्वृयूर्णुभरज्ञपिसनाम्। दिदेविषति, दुद्यूषति। सिसेविषति, सुस्यूषति। अर्दिदधिषति, ईर्त्सति, बिभ्रज्जिषति, बिभ्रक्षति, बिभर्ज्जिषति, बिभर्क्षति। दिदम्भिषति, धीप्सति, धिप्सति। शिश्रयिषति, शिश्रीषति। सिस्वरिषति, सुस्वूर्षति, यियविषति, युयूषति, ऊर्णुनविषति, ऊर्णुनूषति। बिभरिषति, बुभूर्षति। जिज्ञपयिषति, ज्ञीप्सति। सिसनिषति, सिषासति * तनिपतिदरिद्रातिभ्यः सनो वा इड् वाच्यः * तितनिषति, तितांसति, तितंसति। पिपतिषति, पित्सति। दिदरिद्रिषति, दिदरिद्रासति।

५०. **क्लिशः क्त्वानिष्ठयोः** । क्लिशित्वा, क्लिष्ट्वा । क्लिशितः, क्लिष्टः क्लिशितवान्, क्लिष्टवान् ।

५१. **पूङश्च** । पवित्वा, पूत्वा । पवितः, पूतः । पवितवान्, पूतवान् ।

५२. **वसतिक्षुधोरिट्** । उषित्वा । उषितः । उषितवान् । क्षुधित्वा । क्षुधितः । क्षुधितवान् ।

५३. **अञ्चेः पूजायाम्** । अञ्चित्वा । अञ्चिता गुरवः । नेह :—उदक्तमुदकं कूपात् ।

५४. **लुभोऽविमोहने** । लोभित्वा । लुभितः । नेह :—लुब्धो वृषलः ।

५५. **जॄव्रश्च्योः क्त्वि** । जरीत्वा, जरित्वा । व्रश्चित्वा ।

५६. **उदितो वा** । शमित्वा, शान्त्वा । तमित्वा, तान्त्वा । दमित्वा, दान्त्वा ।

५७. **सेऽसिचि कृतचृतच्छृदतृदनृतः** । कर्तिष्यति, कर्त्स्यति । अकर्तिष्यत्, अकर्त्स्यत् । चिकर्तिषति, चिकृत्सति । चर्तिष्यति, चर्त्स्यति । छर्दिष्यति, छर्त्स्यति । तर्दिष्यति, तर्त्स्यति, नर्तिष्यति, नर्त्स्यति ।

५८. **गमेरिट् परस्मैपदेषु** । गमिष्यति । अगमिष्यत् । जिगमिषति । नेह :—संगंसीष्ट, संगसीष्ट । संगंस्यते । संजिगंसते ।

५९. **न वृद्भ्यश्चतुर्भ्यः** । वृतु-वृधु-वर्त्स्यति । अवर्त्स्यत् । विवृत्सति । शृधु-शर्त्स्यति । स्यन्दू-स्यन्त्स्यति । नेह :—वर्तिष्यते । वर्धिष्यते । शर्धिष्यते । स्यन्दिष्यते ।

६०. **तासि च क्लृपः** । कल्प्ता । कल्प्स्यति । अकल्प्स्यत् । चिक्लृप्सति । परस्मैपदेष्वित्येव । नेह :— कल्पितासे । कल्पिष्यते । अकल्पिष्यत ।

६१. **अचस्तास्वत्थल्यनिटो नित्यम्** । ययाथ । चिचेथ । जुहोथ । नेह-बिभेदिथ । लुलविथ । जघसिथ ।

६२. **उपदेशेऽत्वतः** । पपक्थ । इयष्ठ । शशक्थ । नेह-रराधिथ ।

६३. **ऋतो भारद्वाजस्य** । सस्मर्थ । जहर्थ । चकर्थ । ऋदन्तादेव थलो-नेडिति । ययिथ । चिचयिथ । पेचिथ । शेकिथ । अयमत्र संग्रह :—

अजन्तोऽकारवान्वा यस्तास्यनिट् थलि वेडयम् ।
ऋदन्त ईदृङ् नित्यानिट् क्राद्यन्यो लिटि सेड् भवेत् ॥

६५. **विभाषा सृजिदृशोः** । सस्रष्ठ । ससर्जिथ । दद्रष्ठ । ददर्शिथ ।

६६. **इडत्त्यर्तिव्ययतीनाम्** । आदिथ । आरिथ । विव्ययिथ ।

६७. **वस्वेकाजाद्घसाम्** । आदिवान् । आरिवान् । ददिवान् । जक्षिवान् । नेह-बभूवान् ।

६८. **विभाषा गमहनविदविशाम्** । जग्मिवान्, जगन्वान् । जघ्निवान्, जघन्वान् । विविदिवान्, विविद्वान् । विविशिवान्, विविश्वान् । * दृशेश्च * ददृशिवान्, ददृश्वान् ।

६९. **सनिससनिवांसम्** । अग्निंवाग्ने सनिससनिवांसम् । लोके तु सेनिवांसम् ।

७०. **ऋद्धनोः स्ये** । करिष्यति । हरिष्यति । हनिष्यति ।

७१. **अञ्जेः सिचि** । आञ्जीत्, आञ्जिष्टाम्, आञ्जिषुः ।

७२. **स्तुसुधूञ्भ्यः परस्मैपदेषु** । अस्तावीत् । असावीत् । अधावीत् । नेह :—अस्तोष्ट । असोष्ट । अधोष्ट, अधविष्ट ।

७३. **यमरमनमातां सक्च** । अयंसीत्, अयंसिष्टाम्, अयंसिषुः । व्यरंसीत् । अनंसीत् । अयासीत् । अलासीत् । परस्मैपदेष्वेव । नेह :—अरंस्त ।

७४. **स्मिपूङ्रञ्ज्वशां सनि** । सिस्मयिषते । पिपविषते । अरिरिषति । अञ्जिजिषति । अशिशिषते ।

७५. **किरश्च पञ्चभ्यः** । चिकरिषति । जिगरिषति । * अङ्टो दीर्घो नेष्टः * दिदरिषते । दिधरिषते । पिप्रच्छिषति ।

७६. **रुदादिभ्यः सार्वधातुके** । रोदिति । स्वपिति । श्वसिति । प्राणिति । जक्षिति । वलादेरित्येव । नेह :—रुदन्ति ।

७७. **ईशः से** । ईशिषे । ईशिष्व ।

७८. **ईडजनोर्ध्वे च** । ईडिध्वे । ईडिध्वम् । ईडिषे । ईडिष्व । जनिध्वे । जनिध्वम् । जनिषे । जनिष्व । ईशिध्वे ।

७९. **लिङः सलोपोऽनन्त्यस्य** । कुर्यात्, कुर्याताम्, कुर्युः । कुर्वीत, कुर्वीयाताम्, कुर्वीरन् । नेह :—क्रियास्ताम् । क्रियासुः ।

८०. **अतो येयः** । पचेत्, पचेताम् । भवेत्, भवेताम् । नेह :—सुनुयात् ।

८१. **आतो ङितः** । पचेते । पचेथे । पचेताम् । पचेथाम् । एधेते । एधेताम् । एधेथाम् ।

८२. **आने मुक्** । पचमानः । यजमानः ।

८३. **ईदासः** । आसीनः ।

८४. **अष्टन आ विभक्तौ** । अष्टाभिः । अष्टाभ्यः । अष्टानाम् । अष्टासु । अष्टभिः । अष्टभ्यः । अष्टसु । तदन्तस्यापि । प्रियाष्टाभ्याम् ।

८५. **रायो हलि** । राभ्याम् । राभिः । नेह :—रायौ । रायः ।

८६. **युष्मदस्मदोरनादेशे** । युवाभ्याम् । आवाभ्याम् । युष्माभिः । अस्माभिः । युष्मासु । अस्मासु ।

८७. **द्वितीयायां च** । त्वाम् । माम् । युवाम् । आवाम् । युष्मान् । अस्मान् ।

८८. **प्रथमायाश्च द्विवचने भाषायाम्** । युवाम् । आवाम् । नेह :--युवं वस्त्राणि ।

८९. **योऽचि** । त्वया । मया । त्वयि । मयि । युवयोः । आवयोः । नेह :—युवाभ्याम् । आवाभ्यां ।

९०. **शेषे लोपः** । त्वम् । अहम् । यूयम् । वयम् । तुभ्यम् । मह्यम् । युष्मभ्यम् । अस्मभ्यम् । त्वत् । मत् । युष्मत् । अस्मत् । तव । मम । युष्माकम् । अस्माकम् । त्वं स्त्री । अहं स्त्री ।

९१. **मपर्य्यन्तस्य** । अधिकारोऽयं प्रत्ययोत्तरपदयोश्चेति यावत् ।

९२. **युवावौ द्विवचने** । युवाम् । आवाम् । युवाभ्याम् ३ । आवाभ्याम् ३ । युवयोः २ । आवयोः २ । अतियुवाम् । अत्यावाम् । युवामतिक्रान्तमतियुवाम् । आवामतिक्रान्तमत्यावाम् । अतियुवान् । अत्यावान् । अतियुवया । अत्यावया । अतियुवाभिः । अत्यावाभिः । अतियुवभ्यम् । अत्यावभ्यम् । अतियुवासु । अत्यावासु । युवामतिक्रान्तोऽतित्वम् । आवामतिक्रान्तोऽत्यहम् । अतियूयम् । अतिवयम् । अतितुभ्यम् । अतिमह्यम् । अतितव । अतिमम ।

९३. **यूयवयौ जसि** । यूयम् । वयम् । परमयूयम् । परमवयम् । अतियूयम् अतिवयम् ।

९४. **त्वाहौ सौ** । त्वम् । अहम् । परमत्वम् । परमाहम् । अतित्वम् । अत्यहम् ।

९५. **तुभ्यमह्यौ ङयि** । तुभ्यम् । मह्यम् । परमतुभ्यम् । परममह्यम् । अतितुभ्यम् । अतिमह्यम् ।

९६. **तवममौ ङसि** । तव । मम । परमतव । परममम । अतितव । अतिमम ।

९७. त्वमावेकवचने। त्वाम्। माम्। त्वया। मया। त्वत्। मत्। त्वयि। मयि। त्वामतिक्रान्तौ, अतित्वाम्। मामतिक्रान्तौ, अतिमाम्। अतित्वान्। अतिमान्। अतित्वाभ्याम् ३। अतिमाभ्याम् ३। अतित्वाभिः। अतिमाभिः। इत्यादि।

९८. प्रत्ययोत्तरपदयोश्च। तवायं त्वदीयः। ममायं मदीयः। त्वत्तरः। मत्तरः। त्वद्यति। मद्यति। त्वद्यते। मद्यते। त्वत्पुत्रः। मत्पुत्रः। त्वन्नाथः। मन्नाथः। एकवचन इत्येव। नेह :—युष्माकमिदम्, युष्मदीयम्। अस्माकमिदम्, अस्मदीयम्। युष्मत्पुत्रः। अस्मत्पुत्रः।

९९. त्रिचतुरोः स्त्रियां तिसृचतसृ। तिस्रः। चतस्रः। तिसृभिः। चतसृभिः। प्रियतिसा, प्रियतिस्रौ, प्रियतिस्रः। प्रियतिसृ, प्रियतिसृणी, प्रियतिसृणि। नेह :— प्रियास्त्रयस्त्रीणि वा यस्याः सा, प्रियत्रिर्मतिवत्। प्रियचत्वाः, प्रियचत्वारौ, प्रियचत्वारः।

१००. अचि र ऋतः। गुणदीर्घोत्वानामपवादः। तिस्रः, तिस्रः। चतस्रः, चतस्रः। प्रियतिस्रः स्वम्। प्रियचतस्रः स्वम्।

१०१. जराया जरसन्यतरस्याम्। जरसौ २, जरे २। जरसः २, जराः २। जरसम् जराम्। जरसा, जरया। जरसे, जरायै। जरसः २, जरायाः २। जरसोः, जरयोः। जरसाम्, जरसि, जरायाम्। तदन्तस्यापि। निर्जरसौ २, निर्जरौ २। निर्जरसः, निर्जराः। निर्जरसम्, निर्जरसः, निर्जरान्। निर्जरसा, निर्जरेणेत्यादि। अचीत्येव। नेह :—जराभ्याम्। जराभिः। निर्जराभ्याम्। निर्जरैः।

१०२. त्यदादीनामः। स्यः, त्यौ, त्ये। सः, तौ, ते। यः, यौ, ये। एषः, एतौ, एते। अयम्, इमौ, इमे। असौ, अमू, अमी। द्वौ २। द्वाभ्याम् ३। परमसः, परमतौ, परमते। * द्विपर्यन्तानामेवेष्टिः * नेह :—भवान्, भवन्तौ, भवन्तः। त्यत् नाम कश्चित्। अतित्यत्।

१०३. किमः कः। कः, कौ, के, इत्यादि।

१०४. कु तिहोः। कुतः। कुत्र। कुह।

१०५. क्वाति। क्व।

१०६. तदोः सः सावनन्त्ययोः। स्यः। सः। एषः। असौ।

१०७. अदस औ सुलोपश्च। असौ। * औत्वप्रतिषेधः साकच्कस्य वा वक्तव्यः सादुत्वं च * असकौ, असुकः।

१०८. इदमो मः । अयम् । इयम् ।

१०९. दश्च । इमम्, इमौ, इमान् ।

११०. यः सौ । इयम् ।

१११. इदोऽय् पुंसि । अयं ब्राह्मणः ।

११२. अनाप्यकः । अनेन । अनयोः । नेह :—इमकेन । इमकयोः ।

११३. हलि लोपः । आभ्याम् । एभिः । एभ्यः । एषाम् । एषु ।

११४. मृजेर्वृद्धिः । मार्ष्टि । मार्ष्टा । मार्ष्टुम् । मार्ष्टव्यम् ।

११५. अचो ञ्णिति । निचायः । निष्पावः । कारः । हारः । गौः, गावौ, गावः । सखायौ, सखायः ।

११६. अत उपधायाः । पाकः । यागः । जगाद । पाचकः । पाठकः ।

११७. तद्धितेष्वचामादेः । गार्ग्यः । औपगवः । दाक्षिः । जागतः ।

११८. किति च । नाडायनः । चारायणः । आक्षिकः ।

इति लघुपाणिनीये सप्तमाध्यायस्य द्वितीयपादः समाप्तः

अथ लघुपाणिनीये सप्तमाध्यायस्य तृतीयपादः ।

२. केकयमित्रयुप्रलयानां यादेरियः । केकयस्यापत्यं कैकेयः । मित्रयुभावेन, मैत्रेयिकया श्लाघते । प्रलयादागतं प्रालेयमुदकम् ।

३. न य्वाभ्यां पदान्ताभ्यां पूर्वौ तु ताभ्यामैच् । व्यसने भवं वैयसनम् । वैयाकरणः । सौवश्वः ।

४. द्वारादीनां च । द्वारे नियुक्तो दौवारिकः । दौवारपालम् । स्वरमधिकृत्य कृतो ग्रन्थः, सौवरः । सौवरः । सौवस्तिकः ।

५. न्यग्रोधस्य च केवलस्य । नैयग्रोधश्चमसः । नेह :—न्यग्रोधमूलाः शालयः ।

६. न कर्मव्यतिहारे । व्यावक्रोशी । व्यावहासी । व्यावलेखी ।

७. स्वागतादीनां च । स्वागतमित्याह, स्वागतिकः । स्वाध्वरिकः । व्याडिः । व्याङ्गिः । व्यावहारिकः । स्वापतेयम् ।

९. पदान्तस्यान्यतरस्याम् । श्वापदस्येदं श्वापदम्, शौवापदम् । (श्वादेः) ।

१०. उत्तरपदस्य । अस्याधिकारो हनस्तोऽचिण्णलोरित्यतः प्राक् ।

१५. संख्यायाः संवत्सर संख्यस्य च । द्वौ संवत्सरावधीष्टो भृतो भूतो भावि वा, द्विसांवत्सरिकः । द्विषाष्टिकः । द्विसाप्ततिकः ।

१९. हृद्भगसिन्ध्वन्ते पूर्वपदस्य च । सुहृदोऽपत्यं सौहार्दः । सौभाग्यम् । दौर्भाग्यम् । सुभगाया अपत्यं सौभागिनेयः । दौर्भागिनेयः । साक्तुसैन्धवः । पानसैन्धवः ।

२०. अनुशतिकादीनां च । अनुशतिकस्येदमानुशातिकम् । अनुहोडेन चरति, आनुहौडिकः । आनुसांवत्सरिकः । पौष्करसादिः । ऐहलौकिकः । पारलौकिकः । सार्वलौकिकः । सार्वपौरुषम् । सार्वभौमः । सौखशायनिकः । पारदारिकः । आधिदैविकम् । आधिभौतिकम् ।

३२. हनस्तोऽचिण्णलोः । घातयति । घातकः । घातः । घातं घातम् । नेह :—अघानि । जघान ।

३३. **आतो युक् चिण्कृतोः** । दायिता । अदायि । दायः । दायकः । अधायि । धायः । धायकः ।

३४. **नोदात्तोपदेशस्य मान्तस्यानाचमेः** । अशमि । अतमि । अदमि । शमकः । तमकः । दमकः । नेह :—रामकः । यामकः । आचामकः । आचामः । * अनाचमिकमिवमीनामिति वक्तव्यम् * अकामि । अवामि । कामः । वामः ।

३५. **जनिवध्योश्च** । अजनि । जनकः । जनः । अवधि । वधकः । वधः ।

३६. **अर्तिह्रीव्लीरीक्नूयीक्ष्माय्यातां पुङ् णौ** । अर्पयति । ह्रेपयति । व्लेपयति । रेपयति । क्नोपयति । क्ष्मापयति । दापयति धापयति ।

३७. **शाच्छासाह्वाव्यावेपां युक्** । शाययति । छाययति । साययति । ह्वाययति । व्याययति । वाययति । पाययति । * पातेर्णौ लुग्वक्तव्यः * पालयति । * धूञ्प्रीञोर्नुग्वक्तव्यः * धूनयति । प्रीणयति ।

३८. **वो विधूनने जुक्** । वाजयति । नेह :—केशान्वापयति ।

३९. **लीलोर्नुग्लुकावन्यतरस्यां स्नेहविपातने** । विलीनयति, विलाययति, विलालयति विलापयति वा घृतम् । नेह :—लोहं विलापयति, विलाययति वा ।

४०. **भियो हेतुभये षुक्** । मुण्डो भीषयते । जटिलो भीषयते । नेह :—कुञ्चिकयैनं भाययति । मुण्डो भापयते ।

४१. **स्फायो वः** । स्फावयति ।

४२. **शदेरगतौ तः** । पुष्पाणि शातयति । नेह :—गाः शादयति गोविन्दः ।

४३. **रुहः पोऽन्यतरस्याम्** । रोपयति, रोहयति ।

४४. **प्रत्ययस्थात्कात्पूर्वस्यात इदाप्यसुपः** । कारिका । हारिका । सर्विका । नेह :- शका । नन्दना । कटुका नौका राका । कारकः । बहुपरिव्राजका नगरी । * मामकनरकयोरुपसंख्यानम् * मामिका । नरिका । * त्यक्त्यपोश्च * दाक्षिणात्यिका । इहत्यिका ।

४५. **न यासयोः** । यका । सका । यकाम् । तकाम् । * त्यकनश्च निषेधः * अधित्यका । उपत्यका । * आशिषि वुनश्च न * जीवका । भवका । * उत्तरपदलोपे च * देवदत्तिका, देवका । * क्षिपकादीनां चोपसंख्यानम् * क्षिपका । ध्रुवका । कन्यका । चटका । * तारका ज्योतिषि * तारका । अन्यत्र तारिका । * वर्णका तान्तवे * वर्णका प्रावरणभेदः । अन्यत्र वर्णिका । * वर्तका शकुनी-

प्राचाम् * वर्तका। उदीचां तु, वर्त्तिका। * अष्टका पितृदैवत्ये * अष्ठका। नेह:- अष्टिका खारी। * सूतकापुत्रिकावृन्दारकाणां वेति वक्तव्यम् * सूतका, सूतिका। पुत्रका, पुत्रिका। वृन्दारका, वृन्दारिका।

४६. उदीचामातः स्थाने यकपूर्वायाः। आर्यका, आर्यिका। चटकका, चटकिका। इभ्यका, इभ्यिका। मूषिकका, मूषिकिका। नेह :- सांकाश्ये भवा, सांकाश्यिका। अश्विका * धात्वन्तयकोस्तु नित्यम् * सुनयिका। सुपाकिका।

४८. अभाषितपुंस्काच्च। खट्वका, खट्विका। गङ्गका, गङ्गिका। नेह :—अज्ञाताखट्वा, अखट्विका। शैषिके कपि तु, विकल्प एव। अखट्वका, अखट्विका।

४९. आदाचार्याणाम्। गङ्गाका। खट्वाका।

५०. ठस्येकः। आक्षिकः। लावणिकः। रैवतिकः।

५१. इसुसुक्तान्तात्कः। सार्पिष्कः। धानुष्कः। नैपादकर्पुकः। मातृकम्। औदश्वित्कः। * दोष उपसंख्यानम् * दौष्कः।

५२. चजोः कु घिण्ण्यतोः। पाकः। त्यागः। रागः। पाक्यम्।

५३. न्यङ्क्वादीनां च। न्युङ्कुः। मद्गुः। भृगुः। श्वपाकः। अनुषङ्गः। मेघः। उपसर्गः। इत्यादि।

५४. हो हन्तेर्ञ्णिन्नेषु। घातयति। घातकः। घातः। घातं घातम्। घ्नन्ति। अघ्नन्।

५५. अभ्यासाच्च। जिघांसति। जघान। जङ्घन्यते।

५६. हेरचङि। प्रजिघाय। प्रजिघीषति। जेघीयते। नेह :—अजीहयत्।

५७. सन्लिटोर्जेः। जिगीषति। जिगाय। नेह :—जेजीयते।

५८. विभाषा चेः। चिकीषति, चिचीषति। चिकाय, चिचाय। नेह :— चेचीयते।

५९. न क्वादेः। कूजः। खर्जः। गर्जः। कूज्यम्। खर्ज्यम्। गर्ज्यम्।

६०. अजिव्रज्योश्च। समाजः। उदाजः। परिव्राजः। परिव्राज्यम्।

६१. भुजन्युब्जौ पाण्युपतापयोः। भुजः पाणिः। न्युब्जो रोगः नेह :- भोगः। समुद्रः।

६२. प्रयाजानुयाजौ यज्ञाङ्गे। पञ्च प्रयाजाः। त्रयोऽनुयाजाः।

६३. वञ्चेर्गतौ। वञ्च्यम्। नेह :-वङ्क्यं काष्ठम्।

६४. ओक उचः के। ओकः शकुन्तवृषली।

६५. ण्य आवश्यके। अवश्यपाच्यम्। अवश्यवाच्यम्। नेह :- पाक्यम्।

६६. यजयाचरुचप्रवचर्चश्च । याज्यम् । याच्यम् । रोच्यम् । प्रवाच्यम् । अर्च्यम् । * त्यजेश्च * त्याज्यम् ।

६७. वचोऽशब्दसंज्ञायाम् । वाच्यम् । शब्दाख्यायान्तु, वाक्यम् ।

६८. प्रयोज्यनियोज्यौ शक्यार्थे । प्रयोक्तुं शक्यः, प्रयोज्यः । नियोज्यो भृत्यः ।

६९. भोज्यं भक्ष्ये । भोज्य ओदनः । भोग्यमन्यत् ।

७१. ओतः श्यनि । श्यति । छ्यति । द्यति । अवस्यति । क्रमेणैतेषां धातवः—शो तनुकरणे, छो छेदने, दो अवखण्डने, षोऽन्तकर्मणि ।

७२. क्सस्याचि । अधुक्षाताम् । अधुक्षाथाम् । अधुक्षि । नेह :- अधुक्षत् ।

७३. लुग्वा दुहदिहलिहगुहामात्मनेपदे दन्त्ये । अदुग्ध, अधुक्षत । अदुग्धाः, अधुक्षथाः । अदुग्ध्वम्, अधुक्षध्वम् । अदुह्वहि, अधुक्षावहि । अदिग्ध, अधिक्षत । अलीढ, अलिक्षत । अगूढ अघुक्षत ।

७४. शमामष्टानां दीर्घः श्यनि । शाम्यति । ताम्यति । दाम्यति । श्राम्यति । भ्राम्यति । क्षाम्यति । क्लाम्यति । माद्यति । नेह :- भ्रमति ।

७५. ष्ठिवुक्लमुचमां शिति । ष्ठीवति । क्लाम्यति । आचामति । * आङि चम इति वक्तव्यम् । नेह :- चमति । विचमति ।

७६. क्रमः परस्मैपदेषु । क्राम्यति, क्रामति । नेह :- अक्रमते सूर्यः ।

७७. इषुगमियमां छः । इच्छति । गच्छति । यच्छति । नेह :—इष्यति । इष्णाति ।

७८. पाघ्राध्मास्थाम्नादाण्दृश्यर्त्तिसर्त्तिशदसदां पिबजिघ्रधमतिष्ठमनयच्छपश्यर्च्छधौशीयसीदाः । पिबति । जिघ्रति । धमति । तिष्ठति । मनति । यच्छति । पश्यति । ऋच्छति । धावति । शीयते । सीदति । सरतेर्वेगितायां गतौ धावादेशः । नेह :- सरति । अनुसरति ।

७९. ज्ञाजनोर्जा । जानाति । जायते ।

८०. प्वादीनां ह्रस्वः । पुनाति । लुनाति । स्तृणाति । कृणाति । वृणाति । जिनाति ।

८१. मीनातेर्निगमे । प्रमिणन्ति व्रतानि । लोके तु, प्रमीणन्ति ।

८२. मिदेर्गुणः । मेद्यति । नेह :— मिमिदे ।

८३. जुसि च । अजुहवुः । अबिभयुः । अबिभरुः ।

८४. सार्वधातुकार्धधातुकयोः । भवति । तरति । नयति । कर्त्ता । चेता । स्तोता ।

८५. **जाग्रोऽविचिण्णल्ङित्सु**। जागरयति। जागरकः। जागरं जागरम्। जागरः। जागरितो वर्त्तते। जागर्सिः। नेह :-जागृविः। अजागारि। जजागार। जागृतः। जागृथः।

८६. **पुगन्तलघूपधस्य च**। क्लेपयति। ह्लेपयति। क्नोपयति। भेत्ता। छेत्ता। भेदनम्। छेदनम्।

८७. **नाभ्यस्तस्याचि पिति सार्वधातुके**। नेनिजानि। अनेनिजम्। वेविषाणि। अवेविषम्। नेह :– नेनेक्ति।

८८. **भूसुवोस्तिङि**। अभूत्। अभूः। सुवै। सुवावहै। नेह :– भवति।

८९. **उतो वृद्धिर्लुकि हलि**। यौति। यौषि। यौमि। नौति। स्तौति। नेह :- युतः। स्तुतः।

९०. **ऊर्णोतेर्विभाषा**। ऊर्णौति, ऊर्णोति। ऊर्णौषि, ऊर्णोषि। नेह :— ऊर्णुतः। ऊर्णवानि।

९१. **गुणोऽपृक्ते**। वृद्ध्यपवादः। और्णोत्। और्णोः।

९२. **तृणह इम्**। तृणेढि। तृणेक्षि। तृणेह्मि। अतृणेट्।

९३. **ब्रुव ईट्**। ब्रवीति। ब्रवीषि। ब्रवीमि। अब्रवीत्। नेह :-ब्रूतः। ब्रवाणि।

९४. **यङो वा**। बोभवीति, बोभोति। लालपीति। वावदीति। रोरवीति। न च भवति। वर्वर्त्ति। चर्कर्त्ति।

९५. **तुरुस्तुशम्यमः सार्वधातुके**। तवीति, तौति। तुवीतः, तुतः। रवीति, रौति। रुवीतः, रुतः। स्तवीति, स्तौति। स्तुवीतः, स्तुतः। शमीध्वम्, शाम्यध्वम्। अभ्यमीति, अभ्यमति।

९६. **अस्तिसिचोऽपृक्ते**। आसीत्। आसीः। अकार्षीत्। असावीत्।

९८. **रुदश्च पञ्चभ्यः**। अरोदीत्। अरोदीः। अस्वपीत्। अश्वसीत्। प्राणीत्। अजक्षीत्। अपृक्त इति नेह :- रोदिति। स्वपिति।

९९. **अड्गार्ग्यगालवयोः**। अरोदत्। अरोदः। अस्वपत्। अश्वसत्। प्राणत्। अजक्षत्।

१००. **अदः सर्वेषाम्**। आदत्। आदः। अपृक्तस्येत्येव नेह :- अत्ति।

१०१. **अतो दीर्घो यञि**। भवामि। भवावः। भवामः। पचामि। भविष्यामि। पक्ष्यामि। नेह :-भवतः। पचतः। चिनुवः। केशवः।

१०२. **सुपि च**। रामाभ्याम्। वृक्षाभ्याम्। रामाय। वृक्षाय। नेह :- अग्निभ्याम्। रामस्य।

१०३. बहुवचने झल्येत्। रामेभ्यः। वृक्षेभ्यः। रामेषु। सर्वेषाम्। नेह :- रामाभ्याम्। रामाणाम्। सुपीत्येव। नेह :-यजध्वम्। पचध्वम्।

१०४. ओसि च। रामयोः। वृक्षयोः।

१०५. आङि चापः। रमया। रमयोः। खट्वया। खट्वयोः। बहुराजया। बहुराजयोः। कारीषगन्ध्यया। कारीषगन्ध्ययोः।

१०६. सम्बुद्धौ च। हेरमे। हेखट्वे। हेबहुराजे। हेकारीषगन्ध्ये।

१०७. अम्बार्थनद्योर्ह्रस्वः। हे अम्ब। हे अक्क। हे अल्ल। हे गौरि। हे नदि। हे शार्ङ्गरवि। हे ब्रह्मबन्धु। * असंयुक्ता ये डलकास्तद्वतां ह्रस्वो न * हे अम्बाडे। हे अम्बाले। हे अम्बिके।

१०८. ह्रस्वस्य गुणः। हे हरे। है अग्ने। हे भानो। ह्रस्वविधानसामर्थ्यान्नेह :- हे गौरि। हे नदि।

१०९ जसि च। हरयः। अग्नयः। भानवः। पटवः। धेनवः। बुद्धयः।

११०. ऋतो ङिसर्वनामस्थानयोः। कर्त्तरि। मातरि। पितरि क्रोष्टरि। कर्त्तारौ। मातरौ। पितरौ। क्रोष्टारौ। कर्त्तारः। मातरः क्रोष्टारः।

१११. घेर्ङिति। हरये। अग्नये। भानवे। वायवे। हरेः। भानोः। नेह :— सख्ये। पत्ये। सुपीत्येव। नेह :—पट्वी।

११२. आण्नद्याः। गौर्यै। नद्यै। बहुश्रेयस्यै। ब्रह्मबन्ध्वै। गौर्याः। ब्रह्मबन्ध्वाः।

११३. याडापः। रमायै। बहुराजायै। कारीषगन्ध्यायै।

११४. सर्वनाम्नः स्याड्ढ्रस्वश्च। सर्वस्यै। *विश्वस्यै। यस्यै। तस्यै। कस्यै। सर्वस्याः। विश्वस्याः। यस्याः। तस्याः। कस्याः। आप एव नेह :— भवतें। भवतः।

११६. ङेराम् नद्याम्नीभ्यः। गौर्याम्। नद्याम्। बहुश्रेयस्याम्. ब्रह्मबन्ध्वाम्। रमायाम्। बहुराजायाम्। कारीषगन्ध्यायाम्। सेनान्याम्। ग्रामण्याम्।

११७. इदुद्भ्याम्। मत्याम्। बुद्ध्याम्। धेन्वाम्। पक्षे-अच्चघेः मतौ। बुद्धौ। धेनौ।

११८. औत्। सख्यौ। पत्यौ।

११९. अच्च घेः। हरौ। अग्नौ। भानौ। वायौ। मतौ। धेनौ।

१२०. आङो नाऽस्त्रियाम्। हरिणा। अग्निना। भानुना। वायुना। नेह :—मत्या। धेन्वा।

इति लघुपाणिनीये सप्तमाध्यायस्य तृतीयपादः समाप्तः।

अथ लघुपाणिनीये सप्तमाध्यायस्य

चतुर्थपादः

१. णौ चङ्युपधाया ह्रस्वः । अचीकरत् । अजीहरत् । अचीकमत । अलीलवत् । अपीपठत् ।

२. नाग्लोपिशास्वृदिताम् । मालामाख्यत्, अममालत । अत्यरराजत् । अशशासत् । बाधृ-अबबाधत् । याचृ-अययाचत् । ढौकृ-अडुढौकत् ।

३. भ्राजभासभाषदीपजीवमीलपीडामन्यतरस्याम् । अबिभ्रजत्, अबभ्राजत् । अबीभसत्, अबभासत् । अबीभषत्, अबभाषत् । अदीदिपत्, अदिदीपत । अजीजिवत्, अजिजीवत् । अमीमिलत्, अमिमीलत् । अपीपिडत्, अपिपीडत् । * काण्यादीनां वेति वक्तव्यम् * अचीकणत्, अचकाणत् । अवीवणत्, अववाणत् ।

४. लोपः पिबतेरीच्चाभ्यासस्य । अपीप्यत्, अपीप्यताम्, अपीप्यन् ।

५. तिष्ठतेरित् । अतिष्ठिपत्, अतिष्ठिपताम्, अतिष्ठिपन् ।

६. जिघ्रतेर्वा । अजिघ्रिपत्, अजिघ्रपत् । अजिघ्रिपताम्, अजिघ्रपताम् ।

७. उर्ऋत् । इरादीनामपवादः । अचीकृतत्, अचिकीर्त्तत् । अवीवृतत्, अववर्त्तत् । अमीमृजत्, अममार्जत् ।

१०. ऋतश्च संयोगादेर्गुणः । जह्वरतुः । जह्वरुः । सस्वरतुः । सस्वरुः ।

११. ऋच्छत्यृताम् । आनर्च्छ, आनर्च्छतुः, आनर्च्छुः । आर, आरतुः, आरुः । कृ-चकार, चकरतुः चकरुः । गृ-जगरतुः ।

१२. शृदृप्रां ह्रस्वो वा । शश्रतुः, शशरतुः । शश्रुः, शशरुः । दद्रतुः, ददरतुः । दद्रुः, ददरुः । पप्रतुः, पपरतुः । पप्रुः, पपरुः । पक्षे गुणः ।

१३. केऽणः । ज्ञका । कुमारिका । किशोरिका । नेह :—गोका नौका ।

१४. न कपि । कल्याणपञ्चमीकः । बहुकुमारीकः । बहुवधूकः ।

१५. आपोऽन्यतरस्याम् । बहुमालाकः, बहुमालकः ।

१६. ऋदृशोऽङि गुणः । असरत् । अहं तेभ्योऽकरं नमः । अदर्शत्, अदर्शताम् ।

१७. अस्यतेस्थुक् । आस्थत्, आस्थताम्, आस्थन् ।

१८. श्वयतेरः । अश्वत्, अश्वताम्, अश्वन् ।

१९. पतः पुम् । अपप्तत्, अपप्तताम् । अपप्तन् ।

२०. वच उम । अवोचत् । अवोचताम् अवोचन् ।

२१. शीङः सार्वधातुके गुणः । शेते, शयाते, शेरते । नेह :—शिश्ये ।

२२. अयङ् यि क्ङिति । शय्यते । शाशय्यते । प्रशय्य ।

२३. उपसर्गाद्ध्रस्व ऊहतेः । ब्रह्म समुह्यात् । अग्नि समुह्य । समुह्यते । अभ्युह्यते । नेह :—ऊह्यते । क्ङितीत्येव । नेह :—अभ्यूह्योऽयमर्थः ।

२४. एतेर्लिङि । उदियात् । समियात् । अन्वियात् । नेह :—ईयात् ।

२५. अकृत्सार्वधातुकयोर्दीर्घः । क्षीयात् । क्षीयते । चीयात् । चीयते । भृशायते । सुखायते । स्तूयते । तोष्टूयते । नेह :—प्रकृत्य । प्रहृत्य । चनुयात् । सुनुयात् ।

२६. च्वौ च । शुचीकरोति । शुचीभवति । पटूस्यात् ।

२७. रीङ् ऋतः । मात्रीयति । मात्रीयते । चेक्रीयते । पित्र्यम् ।

२८. रिङ् शयग्लिङ्क्षु । आद्रियते । आध्रियते । क्रियते । ह्रियते । क्रियात् । ह्रियात् । नेह :—बिभृयात् । कृषीष्ट ।

२९. गुणोऽर्त्तिसंयोगाद्योः । अर्यते । अर्यात् । स्मर्यते । स्मर्यात् । यीत्येव नेह :-स्वृषीष्ट । ध्वृषीष्ट । असार्वधातुक इत्येव । नेह :—इयृयात् । ऋधातोः विधि लिङि ।

३०. यङि च । अरार्यते । सास्वर्यते । सास्मर्यते । * हन्तेर्हिंसायां यङि घ्नीभावो वाच्यः । जेघ्नीयते । नेह :—जङ्घन्यते ।

३१. ई घ्राध्मोः । जेघ्रीयते । देध्मीयते ।

३२. अस्य च्वौ । शुक्लीभवति । कृष्णीकरोति । ब्रह्मीभवति । गङ्गी-स्यात् । * अव्ययस्य च्वावीत्वं नेति वाच्यम् * दोषाभूतमहः । दिवाभूता रात्रिः ।

३३. क्यचि च । पुत्रीयति । घटीयति । खट्वीयति । मालीयति ।

३४. अशनायोदन्यधनाया बुभुक्षापिपासागर्धेषु । अशनायति । उद-न्यति । धनायति । अन्यत्र तु, अशनीयति । उदकीयति । धनीयति ।

४०. द्यतिस्यतिमास्थामित्ति किति । निर्दितः । निर्दितवान् । अव-सितः । मितः । स्थितः । नेह :—अवदाय । अवदाता ।

४१. शाच्छोरन्यतरस्याम् । निशितम्, निशातम् । छितम्, छातम्, संशि-तम् व्रतम् । संशितो ब्राह्मणः ।

४२. **दधातेर्हिः** । अभिहितम् । निहितम् । हित्वा ।

४३. **जहातेश्च क्त्वि** । हित्वा राज्यं वनं गतः । जिहीतेस्तु, हात्वा ।

४६. **दो दद् घोः** । दत्तः । दत्तवान् । दत्तिः । नेह :—दाप्-दातं बर्हिः । दैप्-अवदातं मुखम् ।

४७. **अच उपसर्गात्तः** । प्रत्तः । अवत्तः । नीत्तम् । सूत्तम् । * अवदत्तं विदत्तं च प्रदत्तं चादिकर्मणि । सुदत्तमनुदत्तं च निदत्तमिति चेष्यते * अवदत्तम् इत्यादि ।

४८. **अपो भि** । अद्भिः । अद्भ्यः । नेह :—अप्सु । * मासश्छन्दसीति वक्तव्यम् * माद्भिः । शाद्भिः । स्ववःस्वतवसोरुषसश्चेष्यते * स्ववद्भिः । स्वतवद्भिः । समुषद्भिरजायथाः ।

४९. **सः स्यार्धधातुके** । वत्स्यति । अवत्स्यत् । विवत्सति । जिघत्सति । नेह :—धासः । वासः ।

५०. **तासस्त्योर्लोपः** । भवितासि । कर्त्तासि । व्यतिसे ।

५१. **रि च** । भवितारौ, भवितारः । कर्त्तारौ, कर्त्तारः । व्यतिरे ।

५२. **ह एति** । एधिताहे । कर्त्ताहे । व्यतिहे ।

५४. **सनि मीमाघुरभलभशकपतपदामच इस्** । मित्सति २ । मित्सते २ । मा-मित्सति । माङ्मेङोः मित्सते । दो-दाण्-दित्सति । दाञ्-दित्सति, दित्सते । देङ्-दित्सते । धेट्-धित्सति । धाञ् धित्सति, धित्सते । रिप्सते । लिप्सते । शिक्षति । पित्सति । प्रित्सते । * राधो हिंसायां सनीस् वाच्यः * रित्सति । नेह :—आरिरात्सति ।

५५. **आप्ज्ञप्यृधामीत्** । ईप्सति । ज्ञीप्सति । ईर्त्संति ।

५६. **दम्भ इच्च** । धीप्सति, धिप्सति ।

५७. **मुचोऽकर्मकस्य गुणो वा** । मोक्षते, मुमुक्षते वा वत्सः स्वयमेव । नेह :—मुमुक्षति वत्सं कृष्णः ।

५८. **अत्र लोपोऽभ्यासस्य** । मित्सतीत्यारभ्य मोक्षत इत्यन्तमुदाहार्यम् ।

५९. **ह्रस्वः** । ढौकृ-डुढौके । डुढौकिषते । त्रौकृ-तुत्रौके । तुत्रौकिषते । अडुढौकत । अतुत्रौकत् ।

६०. **हलादिः शेषः** । बभूव । जग्लौ । पपाच । आट, आटतुः ।

६१. **शर्पूर्वाः खयः** । चुश्च्योत । तस्थौ । चुश्च्योतिषति । तिष्ठासति । पस्पर्धे ।

६२. **कुहोश्चुः** । चकार । चखान । जगाम । जघान । जहार । जह्रौ ।

६३. **न कवतेर्यङि** । कोकूयते । कौतिकुवत्योस्तु, चोकूयते ।

६६. **उरत्** । वव्रश्च । ववृते । ववृधे । नर्नर्ति । नरिनर्त्ति । नरीनर्त्ति ।

६७. **द्युतिस्वाप्योः सम्प्रसारणम्** । दिद्यूते । दिद्युतिषते । दिद्योतिषते । देद्युत्यते । सुष्वापयिषति ।

६८. **व्यथो लिटि** । विव्यथे, विव्यथाते, विव्यथिरे ।

६९. **दीर्घ इणः किति** । ईयतुः, ईयुः । नेह :—इयाय ।

७०. **अत आदेः** । पररूपापवादः । आत, आततुः । आट, आटतुः ।

७१. **तस्मान्नुड् द्विहलः** । आनञ्ज, आनञ्जतुः । आनर्द, आनर्दतुः ।

७२. **अश्नोतेश्च** । आनशे, आनशाते । अश्नातेस्तु, आश । आशतुः ।

७३. **भवतेरः** । बभूव, बभूवतुः । लिटीत्येव । नेह :—बुभूषति । बोभूयते ।

७५. **णिजां त्रयाणां गुणः श्लौः** । नेनेक्ति, नेनिक्तः । वेवेक्ति, वेविक्तः । वेवेष्टि । वेविष्टः, नेह :—निनेज ।

७६. **भृञामित्** । बिभर्ति । मिमीते । जिहीते । नेह :—जहाति । श्लावेव । नेह :—बभार ।

७७. **अर्तिपिपर्त्योश्च** । इयर्ति । पिपर्ति ।

७९. **सन्यतः** । पिपठिषति । पिपक्षति । यियक्षति । पिपासति । नेह :—लुलूषति । पापचिषते ।

८०. **ओः पुयण्ज्यपरे** । पिपविषति । अपीपवत् । पिपावयिषति । अबीभवत् । बिभावयिषति । यियविषति । अयीयवत् । यियावयिषति । अरीरवत् । रिरावयिषति । अलीलवत् । लिलावयिषति । अजीजवत् । जिजावयिषति । नेह :—नुनावयिषति । बुभूषति ।

८१. **स्रवतिशृणोतिद्रवतिप्रवतिप्लवतीच्यवतीनां वा** । असिस्रवत्, असुस्रवत । सिस्रावयिषति, सुस्रावयिषति । अशिश्रवत्, अशुश्रवत् । शिश्रावयिषति, शुश्रावयिषति । अदिद्रवत, अदुद्रवत् । दिद्रावयिषति, दुद्रावयिषति । अपिप्रवत्, अपुप्रवत । पिप्रावयिषति, पुप्रावयिषति । अपिप्लवत् । अपुप्लवत् । पिप्लावयिषति, पुप्लावयिषति । अचिच्यवत्, अचुच्यवत् । चिच्यावयिषति, चुच्यावयिषति, चुच्यावयिषति ।

८२. **गुणो यङ्लुकोः** । बोभूयते । चेचीयते । बोभवीति, बोभोति ।

८३. **दीर्घोऽकितः** । पापच्यते । पापचीति । अटाट्यते । यायज्यते । यायजीति । नेह :—यंयम्यते । यंयमीति । रंरम्यते । रंरमीति ।

८४. **नीग्वञ्चुस्रंसुध्वंसुभ्रंसुकसपतपदस्कन्दाम्** । वनीवच्यते । वनीवञ्चीति । सनीस्रस्यते । सनीसंस्रीति । दनीध्वस्यते । दनीध्वंसीति । बनीभ्रस्यते । बनीभ्रंसीति । चनीकस्यते । चनीकसीति । पनीपत्यते । पनीपतीति । पनीपद्यते । पनीपदीति । चनीस्कयते । चनीस्कन्दीति ।

८५. **नुगतोऽनुनासिकान्तस्य** । * पदान्तवच्चेति वक्तव्यम् * यय्ँयम्यते, यंयम्यते । यय्ँयमीति, यंयमीति । जङ्गम्यते, जंगम्यते । जङ्गमीति, जंगमीति । नेह :—वेतिम्यते ।

८६. **जपजभदहदशभञ्जपशां च** । जंजप्यते । जंजपीति । जंजभ्यते । जंजभीति । दंदह्यते । दन्दहीति । दंदश्यते । दन्दशीति । बंभज्यते । बंभजीति । पंपश्यते । पंपशीति । पशः सौत्रो धातुः ।

८७. **चरफलोश्च** । चञ्चूर्यते । चंचुरीति । पंफुल्यते । पंफुलीति ।

८८. **उत्परस्यातः** । चञ्चूर्यते । चञ्चुरीति । पंफुल्यते । पंफुलीति ।

८९. **ति च** । चूर्तिः । प्रफुल्तिः । प्रफुल्तः ।

९०. **रीगृदुपधस्य च** । वरीवृत्यते । वरीवृतीति । वरीवृध्यते । वरीवृधीति । नरीनृत्यते । नरीनृतीति । * रीगृत्वत इति वक्तव्यम् * वरीवृश्च्यते । परीपृच्छयते ।

९१. **रुग्रिकौ च लुकि** । नर्नर्ति, नरिनर्ति, नरीनर्ति । वर्वर्ति, वरिवर्ति, वरीवर्ति ।

९२. **ऋतश्च** । चर्कर्ति, चरिकर्ति, चरीकर्ति । जर्हर्ति, जरिहर्ति, जरीहर्ति । नेह :—कृ-चाकर्ति ।

९३. **सन्वल्लघुनि चङ्परेऽनग्लोपे** । अचीकमत । अचीकरत । अपीपचत् । अपीपवत । अबीभवत । अयीयवत । अजीजवत् । नेह :—अततक्षत् । अजजागरत् । णिङभावपक्षे अचकमत । अचकथत् ।

९४. **दीर्घो लघोः** । अचीकमत । अचीकरत् । अजीहरत् । नेह :- अबिभ्रजत् । अततक्षत् ।

९६. **विभाषा वेष्टिचेष्टयोः** । अववेष्टत्, अविवेष्टत् । अचचेष्टत्, अचिचेष्टत् ।

९७. **ई च गणः** । अजीगणत् । अजगणत् ।

इति लघुपाणिनीये सप्तमाध्यायस्य चतुर्थपादः समाप्तः ।

अष्टमाध्यायस्य प्रथमपादः

१. सर्वस्य द्वे। इदमधिक्रियते पदस्येत्यतः प्राक्।

२. तस्य परमाम्रेडितम्। चौर चौर ३ घातयामि त्वाम्। वृषल वृषल ३।

४. नित्यवीप्सयोः। पचति पचति। जल्पति जल्पति। भुक्त्वा २, भोजम् २ व्रजति। लुनीहि लुनीहीत्येवायं लुनाति। वृक्षं वृक्षं सिञ्चति। ग्रामो ग्रामो रमणीयः।

५. परेर्वर्जने। परि परि वङ्गेभ्यो वृष्टो देवः। * परेर्वर्जने वा वचनम् * परि वङ्गेभ्यः।

७. उपर्यध्यधसः सामीप्ये। उपर्युपरि ग्रामम्। अध्यधि सुखम्। अधोऽधो लोकम्।

१४. यथास्वे यथायथम्। यथायथं ज्ञाता।

१५. द्वन्द्वं रहस्यमर्यादावचनव्युत्क्रमणयज्ञपात्रप्रयोगाभिव्यक्तिषु। द्वन्द्वं मन्त्रयते। आचतुरं हीमे पशवो द्वन्द्वं मिथुनीयन्ति। द्वन्द्वं व्युत्क्रान्ताः। द्वन्द्वं यज्ञपात्राणि प्रयुनक्ति। द्वन्द्वं संकर्षणवासुदेवौ।

१६. पदस्य। अधिकारोऽयं प्रागपदान्ताधिकारात्।

१७. पदात्। अधिक्रियत इदं कुत्सने च सुप्यगोत्रादावित्यतः प्राक्।

२०. युष्मदस्मदोः षष्ठीचतुर्थीद्वितीयास्थयोर्वान्नावौ। ग्रामो वां स्वम्। ग्रामो नौ स्वम्। ग्रामो वां दीयते। ग्रामो नौ दीयते। जनो वां पश्यति। जनो नौ पश्यति। स्थग्रहणाच्छ्रूयमाणविभक्तिकयोरेव। नेह :—इति युष्मत्पुत्रोऽस्मत्पुत्रः।

२१. बहुवचनस्य वस्नसौ। ग्रामो वः स्वम्। ग्रामो नः स्वम्। ग्रामो वो दीयते नो दीयते। जनो वः पश्यति नोऽपि।

२२. तेमयावेकवचनस्य। ग्रामस्ते स्वं मेऽपि। ग्रामस्ते दीयते मेऽपि।

२३. त्वामौ द्वितीयायाः। जनस्त्वा पश्यति मापि।

२४. न चवाहाहैवयुक्ते। ग्रामस्तव च स्वं। ग्रामो मम च स्वम्। हरिस्त्वां मां च रक्षतु, ग्रामस्तव वा स्वं मम वा। ग्रामस्तव ह स्वं मम ह स्वम्। ग्रामस्तवाह स्वं ममाह स्वम्। ग्रामस्तवैव स्वं ममैव स्वम्। युक्तग्रहणात्साक्षाद्योगेऽयं निषेधः। नेह :—हरो हरिश्च मे स्वामी।

२५. पश्यार्थैश्चानालोचने। चेतसा त्वां समीक्षते। भक्तस्तव रूपं ध्यायति मम रूपं ध्यायति।

इत्यष्टमाध्यायस्य प्रथमः पादः

अथाष्टमाध्यायस्य द्वितीयपादः

१. पूर्वत्रासिद्धम् । अधिकारोऽयं विधिश्च । हर इह । विष्ण इह श्रिया उद्यतः । गुरा उत्कः ।

२. नलोपः सुप्स्वरसंज्ञातुग्विधिषु कृति । राजभ्याम्, राजभिः । राजवती । पञ्च ब्राह्मण्यः । वृत्रहभ्याम्, वृत्रहभिः । नियमार्थमिदम् । नलोप एव्वेवासिद्धो नान्यत्र :—राजाश्वः । राजीयति , राजायते ।

३. न मु न । अमुना । * सिज्लोप एकादेशे सिद्धो वक्तव्यः * आतीत् । अलावीत् । * निष्ठादेशः षत्वस्वरप्रत्ययेड्विधिषु सिद्धो वक्तव्यः । वृक्णः । वृक्णवान् । क्षीवः । * श्चुत्वं धुटि सिद्धं वक्तव्यम् * अट्श्च्योतति । रट्श्च्योतति ।

७. नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य । राजा । राजभ्याम् । यूषभ्याम् । राजता । नेह :—अहन् । राजानौ ।

८. न ङिसम्बुद्ध्योः । परमे व्योमन् । हे राजन् । हे दण्डिन् । * ङावुत्तरपदे प्रतिषेधो वक्तव्यः * चर्मतिलः । ब्रह्मनिष्ठः । * वा नपुंसकानाम् * हे सुपथिन्, हे सुपथि । हे चर्मन्, हे चर्म ।

९. मादुपधायाश्च मतोर्वोऽयवादिभ्यः । किंवान् । शंवान् । ज्ञानवान् । विद्यावान् । लक्ष्मीवान् । शमीवान् । यशस्वान् । भास्वान् । नेह :—यवमान् । भूमिमान् ।

१०. झयः । विद्युत्वान् बलाहकः । मरुत्वान् इन्द्रः ।

११. संज्ञायाम् । अहीवती । मुनीवती ।

१२. आसन्दीवदष्ठीवच्चक्रीवत्कक्षीवद्रुमण्वच्चर्मण्वती । आसन्दीवान् ग्रामः । अष्ठीवान्नाम ऋषिः । चक्रीवान्नाम राजा । कक्षीवान् ऋषिः । रुमण्वान् पर्वतः । चर्मण्वती नदी । असंज्ञायान्तु आसन्नवान् । अस्थिमान् । चक्रवान् । कक्ष्यावान् । लवणवान् । चर्मवती ।

१३. उदन्वानुदधौ च । उदन्वान् समुद्र ऋषिश्च ।

१४. राजन्वान् सौराज्ये । राजन्वती भूः अन्यत्र राजवान् ।

१८. कृपो रो लः । कल्पते । कल्प्ता । चक्लृपे । क्लृप्तः ।

१९. उपसर्गस्यायतौ। प्लायते। मलायते। निर्-निलयते। दुर्-दुलयते। निस्दुसोस्तु निरयते। दुरयते।

२०. ग्रो यङि। जेगिल्यते।

२१. अचि विभाषा। गिलति, गिरति। निगलनम्, निगरणम्।

२२. परेश्च घाङ्कयोः। परिघः, पलिघः। पर्यङ्कः, पल्यङ्कः।

२३. संयोगान्तस्य लोपः। गोमान्। यवमान्। कृतवान्। हृतवान्। * यणः प्रतिषेधो वाच्यः * सुद्ध्युपास्यः। दध्यत्र। मध्वत्र।

२४. रात्सस्य। क्रोष्टुः। पितुः। मातुः। नियमार्थमिदम्। रात्सस्यैव लोपो नान्यस्येति। नेह :—ऊर्क्, ऊर्ग्। अमार्ट्।

२५. धि च। एधिताध्वे। अलविध्वम्। ऐधिध्वम्।

२६. झलो झलि। असैद्धाम्। असैद्धम्। अभित्त। अभैत्ताम्। नेह :— अभित्साताम्।

२७. ह्रस्वादङ्गात्। अकृत। अकृथाः। अहृत। अहृथाः। नेह :— अच्योष्ठ।

२८. इट ईटि। आतीत्। असेवीत्। अकोषीत्।

२९. स्कोः संयोगाद्योरन्ते च। भृट्, भृड्। लग्नः। तट्, तड्। तष्टवान्।

३०. चोः कुः। पक्ता। पक्तुम्। सुयुक्। वाक्।

३१. हो ढः। लिट्, लिड्। सोढा। वोढा। तुराषाट्।

३२. दादेर्धातोर्घः। धुक्, धुग्। दग्धा। दग्धुम्। औपदेशिकस्य दादेर्धातोर्ग्रहणान्नेह :— दामलिट्। इह तु स्यादेव अधोक्।

३३. वा द्रुहमुहष्णुहष्णिहाम्। ध्रुक्, ध्रुग्, ध्रुट्, ध्रुड्। द्रोग्धा, द्रोढा। मित्रध्रुक्, मित्रध्रुट्। मुक्, मुग्, मुट्, मुड्। मोग्धा, मोढा। स्नुक्, स्नुट्। स्नोग्धा, स्नोढा। स्निक्, स्निट्। स्नेग्धा, स्नेढा।

३४. नहो धः। उपानत्। परीणत्। नद्धा। नद्धव्वम्।

३५. आहस्थः। आत्थ। झलीत्येव। नेह :—आह, आहतुः।

३६. व्रश्चभ्रस्जसृजमृजयजराजभ्राजच्छशां षः। व्रष्टा। व्रष्टुम्। व्रष्टव्यम्। भ्रष्टा। भ्रष्टुम्। भृट्। स्रष्टा। स्रष्टुम्। रज्जुसृट्। मार्ष्टा। मार्ष्टुम्। कंसपरिमृट्। यष्टा। यष्टुम्। देवेट्। उपयट्। राट्। सम्राट्। स्वराट्। विभ्राट्। फणादेरेव भ्राजेर्ग्रहणादन्यस्य न। विभ्राक्। प्रष्टा। प्रष्टुम्। प्राट्। वेष्टा। वेष्टुम। विट्। * परौ व्रजेः षः पदान्ते * परिव्राट्।

३७. एकाचो बशो भष् झषन्तस्य स्ध्वोः । बुध्, बुद् । भोत्स्यते । घुक् । धोक्ष्यते । घ्रूत् । अजघाः । गर्धप् । नेह :—दामलिट् । दास्यति ।

३८. दधस्तथोश्च । धत्तः । धत्थः । धत्से । धद्ध्वम् । नेह :—दधाति ।

३९. झलां जशोऽन्ते । वागीशः । वाग्घरिः ।

४०. झषस्तथोर्धोऽधः । लब्धा । लब्धुम् । अदुग्ध । अदुग्धाः । लेढा । लेढुम् । नेह :—धत्तः ।

४१. षढोः कः सि । वेवेक्षि । वेक्ष्यति । अवेक्ष्यत् । लेक्षि । लेक्ष्यति । लिलिक्षति ।

४२. रदाभ्यां निष्ठातो नः पूर्वस्य च दः । शीर्णः । विस्तीर्णः । निगीर्णः । छिन्नः । भिन्नः । शीर्णवान् । विस्तीर्णवान् । भिन्नवान् ।

४३. संयोगादेरातो धातोर्यण्वतः । द्राणः । स्त्यानः । ग्लानः ।

४४. ल्वादिभ्यः । लूनः । लूनवान् । जीनः । धूनः । * ॠल्वादिभ्यः क्तिन्निष्ठावद्वाच्यः * कीर्णिः । लूनिः । धूनिः । * दुग्वोर्दीर्घश्च * दूनः । गूनः । * पूञो विनाशे * पूना यवाः । पूतमन्यत् । * सिनोतेर्ग्रासकर्मकर्तृकस्य * सिनो ग्रासः । नेह :—सिता पाशेन सूकरी । सितो ग्रासो देवदत्तेन ।

४५. ओदितश्च । भुजो—भुग्नः । ओलस्जी—लग्नः । टुओश्वि—उच्छूनः । ओविजी—उद्विग्नः । सूनः । दूनः । दीनः । उड्डीनः ।

४६. क्षियो दीर्घात् । क्षीणस्तपस्वी । क्षीणवान् । नेह :—क्षितः कामो मया ।

४७. श्योऽस्पर्शे । शीनं घृतम् । संश्यानो वृश्चिकः । नेह :—शीतं जलम् । शीतो वायुः ।

४८. अञ्चोऽनपादाने । समक्नः । नेह :—उदक्तमुदकं कूपात् ।

४९. दिवोऽविजिगीषायाम् । आद्यूनः । परिद्यूनः । नेह :—द्यूतम् ।

५०. निर्वाणोऽवाते । निर्वाणोऽग्निर्मुनिश्च । नेह :—निर्वातो वातः ।

५१. शुषः कः । शुष्कः । शुष्कवान् ।

५२. पचो वः । पक्वः । पक्ववान् ।

५३. क्षायो मः । क्षामः । क्षामवान् ।

५४. प्रस्त्योऽन्यतरस्याम् । प्रस्तीमः, प्रस्तीतः । नेह :—स्त्यानः ।

५५. अनुपसर्गात्फुल्लक्षीबकृशोल्लाघाः । ञिफला—फुल्लः । फुल्लवान् । क्षीबो मत्तः । कृशस्तनुः । उल्लाघो नीरोगः । नेह :—प्रफुल्तः । प्रक्षीबितः । प्रकृशितः । प्रोल्लाघितः , * उत्फुल्लसंफुल्लयोरुपसंख्यानम् * उत्फुल्लः । संफुल्लः ।

५६. नुदविदोन्दत्राघ्राह्रीभ्योऽन्यतरस्याम् । नुन्नः, नुत्तः । विन्न, वित्तः । उन्नः, उत्तः । त्राणः, त्रातः । घ्राणः, घ्रातः । ह्रीणः, ह्रीतः ।

५७. न ध्याख्यापॄमूर्छिमदाम् । ध्यातः । ध्यातवान् । ख्यातः । पूर्तः । मूर्तः । मत्तः ।

५८. वित्तो भोगप्रत्यययोः । वित्तं धनम् । वित्तः पुरुषः । नेह :— विन्नः ।

५९. भित्तं शकलम् । भित्तं पतति । अन्यत्र भिन्नम् ।

६०. ऋणमाधमर्ण्ये । ऋणं धारयति । ऋतमन्यत् ।

६२. क्विन्प्रत्ययस्य कुः । घृतस्पृक् । मन्त्रस्पृक् । युङ् । स्पृक् ।

६३. नशेर्वा । नक्, नग्, नट्, नड् । नग्भ्याम्, नड्भ्याम् । पदस्येत्येव । नेह :—नशौ ।

६४. मो नो धातोः । प्रशान् । प्रतान् । प्रदान् । नेह :—इदम् । प्रशामौ ।

६५. म्वोश्च । अगन्म । अगन्व । जगन्वान् । क्षमूष्-चक्षण्महे । चक्षण्वहे ।

६६. ससजुषो रुः । जश्त्वापवादः । अग्निरत्र । वायुरत्र । शिवोऽर्च्यः । शिवो वन्द्यः ।

६८. अहन् । अहोभ्याम्, अहोभिः । तदन्तस्यापि । दीर्घाहा निदाघः । हे दीर्घाहो निदाघ । नेह :—दीर्घाहानौ । दीर्घाहानः । * रूपरात्रिरथन्तरेषु रुत्वं वाच्यम् * अहोरूपम् । अहोरात्रिः । अहोरात्रः । अहोरथन्तरम् ।

६९. रोऽसुपि । अहर्भाति । अहरहः । अहर्गणः । नेह :—अहोभ्याम् ।

७२. वसुस्रंसुध्वंस्वनडुहां दः । विद्वद्भ्याम्, विद्वद्भिः । पपिवद्भ्याम् । उखास्रत्, उखास्रद्भ्याम् । पर्णध्वत्, पर्णध्वद्भ्याम् । अनडुद्भ्याम्, अनडुद्भिः । स्वनडुत् । नेह :–विद्वान् ।

७३. तिप्यनस्तेः । अचकात्, अचकाद् । नेह :—आप एवेदं सलिलं सर्वमाः ।

७४. सिपि धातो रुर्वा । अचकाः, अचकात्, अचकाद् ।

७५. दश्च । अभिनः, अभिनत्, अभिनद् । अच्छिनः, अच्छिनत् ।

७६. र्वोरुपधाया दीर्घ इकः । गीः, गीर्भ्याम्, गीर्भिः । धूः । पूः । आशीः ।

७७. हलि च । आस्तीर्णम् । विशीर्णम् । अवगूर्णम् । दीव्यति । सीव्यति । धातोरित्येव । नेह :—दिवमिच्छति, दिव्यति । चतुर इच्छति, चतुर्यति ।

७८. उपधायां च । उर्द—ऊर्दते, ऊर्दांचक्रे । कुर्द—कूर्दते । खुर्द—खूर्दते । हुर्छा—हूर्छिता । नेह :—विव्यतुः । विव्युः ।

७९. न भकुर्छुराम् । धुरि साधुः, धुर्यः । दिव्यम् । कुर्यात् । छुर्यात ।

८०. अदसोऽसेर्दादु दो मः । अमुम्, अमू, अमून् । अमुना, अमूभ्याम् । नेह :—अदस्यति ।

८४. दूराद्धूते च । शक्तून् पिब देवदत्त ३ । यत्र वाक्यान्ते सम्बोधनपदं तत्रायं प्लुत इष्यते । नेह :—देवदत्त सक्तून् पिब ।

८५. हैहेप्रयोगे हैहयोः । है ३ राम, राम है ३ । हे ३ राम, राम हे ३ ।

८६. गुरोरनृतोऽनन्त्यस्याप्येकैकस्य प्राचाम् । दे३वदत्त, देवद३त्त, देवदत्त ३ । नेह :—कृष्ण ३ ।

८७. ओमभ्यादाने । अभ्यादानम् = आरम्भः । ओ३मग्निमीळे पुरोहितम् । नेह :—ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म ।

इत्यष्टमाध्यायस्य द्वितीयः पादः

अष्टमाध्यायस्य तृतीयपादः

अथ रुप्रकरणम्

२. अत्रानुनासिकः पूर्वस्य तु वा। सँस्कर्त्ता। संस्कर्त्तुम्। सँस्कर्तव्यम्।

३. आतोऽटि नित्यम्। महाँ इन्द्रः। महाँ असि।

४. अनुनासिकात्परोऽनुस्वारः। संस्कर्त्ता। संस्कर्त्तुम्। संस्कर्त्तव्यम्।

५. समः सुटि। * संपुंकानां सो वक्तव्यः। संस्स्कर्त्ता, संस्स्कर्त्ता। * समो वा लोपमेके * इति भाष्यम्। सँस्कर्त्ता, संस्कर्त्ता।

६. पुमः खय्यम्परे। पुँस्कोकिलः, पुंस्कोकिलः। पुँस्कामा, पुंस्कामा।

७. नश्छव्यप्रशान्। शार्ङ्गिंश्छिन्धि, शार्ङ्गिँश्छिन्धि। चक्रिंस्त्रायस्व, चक्रिँस्त्रायस्व। नेह:—प्रशान् तनोति। भवान्त्सरुः।

१०. नॄन् पे। नॄँः पाहि, नॄंः पाहि, नॄन्पाहि। नॄँः प्रीणीहि, नॄंः प्रीणिहि, नॄन्प्रीणीहि।

१२. कानाम्रेडिते। काँस्कान्, कांस्कान्।

१३. ढो ढे लोपः। गाढा। लेढि। लीढः। उपगूढः।

१४. रो रि। पुना रमते। हरी रम्यः। शम्भू राजते।

१५. खरवसानयोर्विसर्जनीयः। विष्णूस्त्राता। रामः।

१६. रोः सुपि। यशःसु। पयःसु। सुपि रोरेव रेफस्येति। नेह :—गीर्षु। पूर्षु।

१७. भोभगोअघोअपूर्वस्य योऽशि। भो देवाः। भगो नमस्ते। अघो याहि। देवा इह, देवायिह।

१९. लोपः शाकल्यस्य। विष्ण इह, विष्णविह। हर इह। हरयिह, क आस्ते, कयास्ते।

२२. हलि सर्वेषाम्। भो देवाः। भो लक्ष्मि। भो विद्वद्वृन्द। भगो नमस्ते। अघो याहि। देवा नम्याः। देवा यान्ति।

२३. मोऽनुस्वारः। हरिं वन्दे। वनं हसति। पदस्येति नेह :—गम्यते। शम्यते।

२४. नश्चापदान्तस्य झलि। यशांसि। आक्रंस्यते।

२५. मो राजि समः क्वौ। सम्राट्। साम्राज्यम्।

२८. ङ्णोः कुक्टुक् शरि। प्राङ्क्षष्ठः, प्राङ्षष्ठः। सुगण्ट्षष्ठः, सुगण्षष्ठः।

२९. डः सि धुट्। षट्त्सन्तः, षट्सन्तः। षट्त्सु, षट्सु।

३०. नश्च। (सि) सन्त्सः, सन्सः। महान्त्साये, महान्साये।

३१. शि तुक्। सञ्च्छम्भुः, सञ्च्शम्भुः, सञ्छम्भुः, सञ्शम्भुः।

३२. ङमो ह्रस्वादचि ङमुण्नित्यम्। प्रत्यङ्ङात्मा। सुगण्णीशः। सन्नच्युतः।

३३. मय उञो वो वा। किम्वुक्तम्, किमुउक्तम्।

३४. विसर्जनीयस्य सः। (खरि अवसाने च) विष्णुस्त्राता। वृक्षस्तत्र नेह :—वृक्षः।

३५. शर्परे विसर्जनीयः। कःत्सरुः। घनाघनःक्षोभणः। वासःक्षौमम्

३६. वा शरि। हरिश्शेते, हरिःशेते। * खर्परे शरि वा विसर्गलोपः रामस्थाता। हरिस्फुरति।

३७. कुप्वोः ≍क≍पौ च। (चाद् विसर्गः) क≍करोति, कःकरोति क≍खनति। कःखनति। क≍पचति, कःपचति। क≍फलति, कःफलति।

३८. सोऽपदादौ। * पाशकल्पककाम्येष्विति वाच्यम् * पयस्पाशम् यशस्कल्पम्। यशस्कम्। यशस्काम्यति। * अनव्ययस्येति वाच्यम् * प्रातकल्पम्। नेह :—पयः, कामयते। पयः पिबति। * काम्ये रोरेवेति वाच्यम् नेह :—गीःकाम्यति। धूःकाम्यति।

३९. इणः षः। सर्पिष्पाशम्। सर्पिष्कल्पम्। सर्पिष्कम्। सर्पिष्काम्यति।

४०. नमस्पुरसोर्गत्योः। नमस्करोति, नमः करोति। पुरस्करोति नेह :—पुरः प्रवेक्ष्यन्ते।

४१. इदुदुपधस्य चाप्रत्ययस्य। निष्प्रत्यूहम्। आविष्कृतम्। दुष्कृतम् नेह :—अग्निः करोति। वायुः करोति। एकादेशशास्त्रनिमित्तकस्य न षत्वम् मातुः कृपा। पितुः कृपा। * मुहुसः प्रतिषेधः * मुहुःकामा।

४२. तिरसोऽन्यतरस्याम्। तिरस्कर्त्ता, तिरःकर्त्ता। गतेरित्येव। नेह :— तिरःकृत्वा काण्डं गतः।

४३, द्विस्त्रिश्चतुरिति कृत्वोऽर्थे। द्विष्करोति, द्विःकरोति। त्रिष्करोति, त्रिःकरोति। चतुष्पचति, चतुःपचति। नेह :—चतुष्कपालः।

४६. अतः कृकमिकंसकुम्भपात्रकुशाकर्णीष्वनव्ययस्य। अयस्कारः। अयस्कामः। अयस्कंसः। अयस्कुम्भः। अयस्पात्रम्। अयस्कुशा। अयस्कर्णी। नेह :—गीःकारः। स्वःकामः। समास इत्येव। नेह :—यशः करोति। अनुत्तरपदस्थस्येत्येव। नेह :—परमयशःकारः।

४७. अधःशिरसी पदे। अधस्पदम्। शिरस्पदम्। समास इत्येव। नेह :—अधः पदम्। शिरः पदम्।

४८. कस्कादिषु च। कस्कः। कौतस्कुतः। भ्रातुष्पुत्रः।

५३. षष्ठ्याः पतिपुत्रपृष्ठपारपदपयस्पोषेषु। वाचस्पतिं विश्वकर्माणम्। दिवस्पुत्राय सूर्याय। दिवस्पृष्ठं भन्दमानः। तमसस्पारमस्य। परिवीत ईळस्पदे। दिवस्पयो दिधिषाणाः। रायस्पोषं यजमानेषु।

५५. अपदान्तस्य मूर्धन्यः। इदं पदद्वयमधिक्रियत आ पादसमाप्तेः।

५६. सहेः साडः सः। तुराषाट्, तुराषाड्। नेह :—तुरासाही।

५७. इण्कोः। इदमप्यधिक्रियत आ पादसमाप्तेः।

५८. नुम्विसर्जनीयशर्व्यवायेऽपि। इदमपि पूर्ववदधिक्रियते। सर्पींषि। यजूंषि। सर्पिःषु। यजुःषु। सर्पिष्षु। यजुष्षु। प्रत्येकं व्यवाय एव। नेह :—निंस्से। निंस्स्व।

५९. आदेशप्रत्यययोः। अग्निषु। वायुषु। गीर्षु। धूर्षु। त्वक्षु। वाक्षु। सिषेव। सुष्वाप। रामेषु। हरिषु। कर्तृषु। नेह :—दास्यति। असौ।

६०. शासिवसिघसीनां च। शिष्टः। अशिषत्। उषितः। जक्षतुः। इण्कोरित्येव। नेह :— शास्ति। वसति। जघास।

६१. स्तौतिण्योरेव षण्यभ्यासात्। तुष्टूषति। सुष्वापयिषति। सिषाधयिषति। सिषेधयिषति। नेह :—सिसिक्षति। तिष्ठासति।

६२. सः स्विदिस्वदिसहीनां च। सिस्वेदयिषति। सिस्वादयिषति। सिसाहयिषति।

६३. प्राक् सितादड्व्यवायेऽपि। अभिषुणोति, अभ्यषुणोत्। परिषुणोति, पर्यषुणोत्। न्यषेधत्, न्यषेधीत्।

६४. स्थादिष्वभ्यासेन चाभ्यासस्य। अभिषिषेणयिषति, परिषिषेणयिषति। निषिषेध। अभिषिषिक्षति, परिषिषिक्षति। अधितष्ठौ। स्थादिष्वेवेति नियमान्नेह :—अभिसुसूर्षति। अभिसिषासति।

६५. **उपसर्गात्सुनोतिसुवतिस्यतिस्तौतिस्तोभतिस्थासेनयसेधसिचसञ्जस्वञ्जाम्** । अभिषुणोति । अभिषुवति । अभिष्यति । अभिष्टौति । परिष्टोभते । अनुष्ठास्यति, परितष्ठौ । अभिषेणयति । अभिषेधति । अभिषिञ्चति । परिषजति । परिष्वजते । नेह :—दधि सिञ्चति ।

६६. **सदिरप्रतेः** । निषीदति । विषीदति । न्यषीदत् । निषसाद । नेह :—प्रतिसीदति ।

७०. **परिनिविभ्यः सेवसितसयसिवुसहसुट्स्तुस्वञ्जाम्** । परिषेवते निषेवते । विषेवते । पर्यषेवत । परिषिषेविषते । परिषितः । निषितः विषितः । परिषयः । निषयः । विषयः । परिषीव्यति । निषीव्यति । विषीव्यति । परिषहते । निषहते । विषहते । परिष्करोति । परिष्टौति । निष्टौति । विष्टौति । परिष्वजते । विष्वजते ।

७२. **अनुविपर्यभिनिभ्यः स्यन्दतेरप्राणिषु** । अनुष्यन्दते, अनुस्यन्दते वा जलम् । विष्यन्दते, विस्यन्दते । परिष्यन्दते, परिस्यन्दते । अभिष्यन्दते, अभिस्यन्दते । निष्यन्दते, निस्यन्दते । नेह :—अनुस्यन्दते हस्ती । अप्राणिष्विति पर्युदासाश्रयणादिह स्यादेव :—मत्स्योदके अनुष्यन्देते, अनुस्यन्देते ।

७८. **इणः षीध्वंलुङ्लिटां धोऽङ्गात्** । च्योषीढ्वम् । प्लोषीढ्वम् । अच्योढ्वम् । अप्लोढ्वम् । एधांचकृढ्वे ।

७९. **विभाषेटः** । लविषीढ्वम्, लविषीध्वम् । अयिषीढ्वम्, अयिषीध्वम् । आयिढ्वम्, आयिध्वम् । लुलुविढ्वे, लुलुविध्वे ।

८०. **समासेऽङ्गुलेः सङ्गः** । अङ्गुलिषङ्गः । नेह :—अङ्गुलेः सङ्गः ।

८१. **भीरोः स्थानम्** । भीरुष्ठानम् । नेह :—भीरोः स्थानम् ।

८२. **अग्नेः स्तुत्स्तोमसोमाः** । अग्निष्टुत् । अग्निष्टोमः । अग्नीषोमौ ।

८३. **ज्योतिरायुषः स्तोमः** । ज्योतिष्टोमः । आयुष्टोमः । समास इत्येव नेह :—ज्योतिः स्तोमं दर्शयति ।

८४. **मातृपितृभ्यां स्वसा** । मातृष्वसा । पितृष्वसा ।

८५. **मातुःपितुर्भ्यामन्यतरस्याम्** । मातुःष्वसा, मातुःस्वसा । पितुःष्वसा, पितुःस्वसा । समास इत्येव नेह :—मातुः स्वसा ।

८९. **निनदीभ्यां स्नातेः कौशले** । निष्णातः । नदीष्णः । नेह :—निस्नातः । नदीस्नातः ।

९०. **सूत्रं प्रतिस्नातम्** । प्रतिष्णातं सूत्रम् । अन्यत्र प्रतिस्नातम् ।

९१. **कपिष्ठलो गोत्रे** । कपिष्ठलो नाम यस्य सः । कापिष्ठलिः पुत्रः ।

९२. प्रष्ठोऽग्रगामिणि । प्रष्ठो गौः । नेह :—प्रस्थो व्रीहीणाम् ।

९३. वृक्षासनयोर्विष्टरः । विष्टरो वृक्ष आसनं च । अन्यत्र विस्तरः ।

९५. गवियुधिभ्यां स्थिरः । गविष्ठिरः । युधिष्ठिरः ।

९६. विकुशमिपरिभ्यः स्थलम् । विष्ठलम् । कुष्ठलम् । शमिष्ठलम् । परिष्ठलम् ।

९७. अम्बाम्बगोभूमिसव्यापद्वित्रिकुशेकुशङ्क्वङ्गुमञ्जिपुञ्जिपरमेबर्हिर्दिव्यग्निभ्यः स्थः । अम्बष्ठः । आम्बष्ठः । गोष्ठः । भूमिष्ठः । सव्येष्ठः । अपष्ठः । द्विष्ठः । त्रिष्ठः । कुष्ठः । शेकुष्ठः । शङ्कुष्ठः । अङ्गुष्ठः । मञ्जिष्ठः । पुञ्जिष्ठः । परमेष्ठः । बर्हिष्ठः । दिविष्ठः । अग्निष्ठः ।

९८. सुषामादिषु च । सुषामा ब्राह्मणः । सुषन्धिः ।

९९. एति संज्ञायामगात् । हरिषेणः । बारिषेणः । नेह :—हरिसक्थम् । पृथुसेनः । विष्वक्सेनः । इण्कोरित्येव । नेह :—सर्वसेनः ।

१११. सात्पदाद्योः । अग्निसात् । दधिसात् । दधि सिञ्चति । मधु सिञ्चति ।

११२. सिचो यङि । सेसिच्यते । निसेसिच्यते ।

११३. सेधतेर्गतौ । गङ्गां विसेधति । अभिसेधयति गाः । अन्यत्र निषेधति ।

११४. प्रतिस्तब्धनिस्तब्धौ च । प्रतिस्तब्धः । निस्तब्धः ।

११५. सोढः । परिसोढा । परिसोढुम् । परिसोढव्यम् । अन्यत्र परिषहते ।

११६. स्तम्भुसिवुसहां चङि । पर्यतस्तम्भत् । अभ्यतस्तम्भत् । पर्यसोषिवत् । न्यसीषिवत् । पर्यसीषहत् । व्यसीषहत् ।

११७. सुनोतेः स्यसनोः । परिसोष्यति । अभिसोष्यति । अभिसुसूः ।

११८. सदेः परस्य लिटि । अभिषसाद । निषसाद । परिषसाद । * स्वञ्जेरुपसंख्यानम् * परिषस्वजे । अभिषस्वजे ।

इति लघुपाणिनीये अष्टमाध्यायस्य तृतीयपादः समाप्तः

अथ लघुपाणिनीये
अष्टमाध्यायस्य चतुर्थपादः

१. रषाभ्यां नो णः समानपदे। आस्तीर्णम्। विस्तीर्णम्। कुष्णाति। पुष्णाति। पूष्णः। पूष्णा। * ऋवर्णाच्चेति वक्तव्यम् * चतसृणाम्। मातृणाम्। पितृणाम्।

२. अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवायेऽपि। करणम्। अर्केण। मूर्खेण। दर्पेण। रामेण। पर्याणद्धम्। बृंहणम्। नुम्-ग्रहणमनुस्वारोपलक्षणार्थम्। तृंहणम्। तृम्फणम्। नेह :—प्रेन्वनम्।

३. पूर्वपदात्संज्ञायामगः। द्रुणसः। खरणसः। शूर्पणखा। नेह :—चर्मनासिकः। ऋगयनम्।

४. वनं पुरगामिश्रकासिध्रकाशारिकाकोटराग्रेभ्यः। पुरगावणम्। मिश्रकावणम्। सिध्रकावणम्। शारिकावणम्। कोटरावणम्। अग्रेवणम्। नेह :—कुबेरवनम्। शतधारवनम्।

५. प्रनिरन्तःशरेक्षुप्लक्षाम्रकार्ष्यखदिरपीयूक्षाभ्योऽसंज्ञायामपि। प्रवणम्। निर्वणम्। अन्तर्वणम्। शरवणम्। इक्षुवणम्। प्लक्षवणम्। आम्रवणम्। कार्ष्यवणम्। खदिरवणम्। पीयूक्षावणम्।

६. विभाषौषधिवनस्पतिभ्यः। दूर्वावणम्, दूर्वावनम्। शिरीषवणम्, शिरीषवनम्। * द्व्यच्त्र्यज्भ्यामेव * नेह :—देवदारुवनम्। * इरिकादिभ्यः प्रतिषेधो वक्तव्यः * इरिकावनम्। मिरिकावनम्।

७. अह्नोऽदन्तात्। पूर्वाह्णः। अपराह्णः। नेह :—निरह्नः। दुरह्नः।

८. वाहनमाहितात्। इक्षुवाहणम्। शरवाहणम्। नेह :—इन्द्रवाहनम्।

९. पानं देशे। क्षीरपाणा उशीनराः। सुरापाणाः प्राच्याः। नेह :—दाक्षिपानम्।

१०. वा भावकरणयोः। क्षीरपाणम्, क्षीरपानम्। क्षीरपाणः, क्षीरपानः कंसः। * गिरिनद्यादीनां वा * गिरिणदी, गिरिनदी। चक्रणितम्बा, चक्रनितम्बा।

११. **प्रातिपदिकान्तनुम्विभक्तिषु च।** माषवापिणौ, माषवापिनौ। व्रीहिवापाणि, व्रीहिवापानि। माषवापेण; माषवापेन। * युवादेर्न * रम्ययूना। परिपक्वानि।

१२. **एकाजुत्तदपदे णः।** वृत्रहणौ, वृत्रहण। हरिमाणी। क्षीरपाणि; क्षीरपेणः। रम्यविणा।

१३. **कुमति च।** हरिकामिणौ। हरिकामाणि। हरिकामेण। स्वर्गकामिणः। स्वर्गंगामिणः।

१४. **उपसर्गादसमासेऽपि णोपदेशस्य।** प्रणदति। प्रणमति। प्रणायकः।

१५. **हिनुमीना।** प्रहिणोति, प्रहिणुतः। प्रमीणाति, प्रमीणीतः।

१६. **आनि लोट्।** प्रभवाणि। प्रयाणि। परिवपाणि। नेह :—प्रवपानि मांसानि।

१७. **नेर्गदनदपतपदघुमास्यतिहन्तियातिवातिद्रातिप्सातिवपतिवहतिशाम्यतिचिनोतिदेग्धिषु च।** प्रणिगदति, परिणिगदति। प्रणिनर्दति। प्रणिपतति। प्रणिपद्यते। प्रणिददाति। प्रणिदधाति। प्रणिमिमीते। प्रणिमयते। प्रणिष्यति। प्रणिहन्ति। प्रणियाति। प्रणिवाति। प्रणिद्राति। प्रणिप्साति। प्रणिवपति। प्रणिवहति। प्रणिशाम्यति। प्रणिचिनोति। प्रणिदेग्धि। प्रण्यगदत्।

१८. **शेषे विभाषाऽकखादावषान्त उपदेशे।** प्रणिभवति, प्रनिभवति। प्रणिपचति, प्रनिपचति। नेह :—प्रनिकरोति। प्रनिखादति। प्रनिपिनष्टि। प्रनिचकार।

१९. **अनितेः।** प्राणिति। पराणिति।

२०. **अन्तः।** हे प्राण्। हे पराण्।

२१. **उभौ साभ्यासस्य।** प्राणिणिषति। प्राणिणत्। पराणिणत्।

२२. **हन्तेरत्पूर्वस्य।** प्रहण्यते। प्रहणनम्। परिहण्यते। परिहणनम्। नेह :—प्रघ्नन्ति। प्राघानि।

२३. **वमोर्वा।** प्रहण्वः, प्रहन्वः। परिहण्वः, परिहन्वः। प्रहण्मः, प्रहन्मः।

२४. **अन्तरदेशे।** अन्तर्हण्यते। अन्तर्हणनम्। नेह :—अन्तर्हननो देशः। अत्पूर्वस्येत्येव। नेह :— अन्तर्घ्नन्ति। अन्तरघानि।

२५. **अयनं च।** अन्तरयणम्। अदेश एव। नेह :— अन्तरयनो देशः।

२९. कृत्यचः । प्रयाणम् । प्रमाणम् । प्रयाणीयम् । अप्रयाणिः । प्रयायिणी । प्रहीणः । नेह :– प्रमग्नः । प्रभुग्नः । * निर्विण्णस्योपसंख्यानम् * निर्विण्णोऽस्मि खलसङ्गेन । शकारव्यवधानान्नेह :– प्रख्यानम् । प्रख्यानीयम् ।

३०. णेर्विभाषा । प्रयापणम्, प्रयापनम् । प्रयापणीयम्, प्रयापनीयम् । प्रयाप्यमाणं पश्य ।

३१. हलश्चेजुपधात् । प्रकोपणम्, प्रकोपनम् । प्रकोपणीयम्, प्रकोपनीयम् । नेह :– प्रोहणम् । प्रोहणीयम् । प्रवपणम् । प्रवपणीयम् ।

३२. इजादेः सनुमः । प्रेङ्खणम् । प्रेङ्खणीयम् । प्रेङ्गणम् । प्रोम्भणम् । नेह :– प्रमङ्गनम् । प्रमङ्गनीयम् । प्रेन्वनम् । प्रेन्वनीयम् ।

३३. वा निंसनिक्षनिन्दाम् । प्रणिंसनम्, प्रनिंसनम् । प्रणिंसितव्यम्, प्रनिंसितव्यम् । प्रणिक्षणम्, प्रनिक्षणम् । प्रणिन्दनम्, प्रनिन्दनम् ।

३४. न भाभूपूकमिगमिप्यायिवेपाम् । प्रभानम् । प्रभानीयम् । प्रभवनम् । प्रभवनीयम् । प्रपवनम् । प्रपवनीयम् । * पूञ एव ग्रहणमिष्यते * पूङस्तु प्रपवणम् । प्रपवणीयः सोमः । प्रकमनम् । प्रकमनीयम् । प्रगमनम् । प्रप्यायनम् । प्रवेपनम् । * ण्यन्तभादीनामुपसंख्यानम् * प्रभापनम् । प्रभापनीयम् ।

३५. षात्पदान्तात् । निष्पानम् । दुष्पानम् । सर्पिष्पानम् । नेह :– कुष्णाति । पुष्णाति ।

३६. नशेः षान्तस्य । प्रनष्टः । प्रनंष्टा । प्रनंक्ष्यति । नेह :– प्रणश्यति ।

३७. पदान्तस्य । रामान् । हरीन् ।

३८. पदव्यवायेऽपि । माषकुम्भवापेन । चतुरङ्गयोगेन । * अतद्धित इति वाच्यम् * आर्द्रगोमयेण । शुष्कगोमयेण ।

३९. क्षुभ्नादिषु च । क्षुभ्नाति । क्षुभ्नीतः । नृनमनम् । हरिनन्दनः । रामनगरम् । नरीनृत्यते । तृप्नोति । * आचार्यादणत्वं च * आचार्यानी ।

४०. स्तोः श्चुना श्चुः । हरिश्शेते । रामश्चिनोति । सच्चित् । शार्ङ्गिञ्जय ।

४१. ष्टुना ष्टुः । रामष्षष्ठः । रामष्टीकते । पेष्टा । तट्टीका । चक्रिण्ढौकसे ।

४२. न पदान्ताट्टोरनाम् । षट्सन्तः । षट्ते । नेह :–इट्टे । सर्पिष्टमम् । * अनाम्नवतिनगरीणामिति वाच्यम् * षण्णाम् । षण्णवतिः । षण्णगर्यः ।

४३. तोः षि । सन्षष्ठः । महान्षण्डः ।

४४. शात् । विश्नः । प्रश्नः ।

४५. **यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा।** वाङ्नयति। वाग्नयति। एतन्मुरारिः। एतद्मुरारिः। नेह :– चतुर्मुखः। * प्रत्यये भाषायां नित्यम् * तन्मात्रम्। चिन्मयम्। ककुद्मन्त इत्यत्र तु यवादिगणे निपातनाद्दकारः।

४६. **अचो रहाभ्यां द्वे।** अर्क्कः, अर्कः। ब्रह्म्मा, ब्रह्मा। गौर्य्यौ, गौर्यौ। ह्य्यनुभवः, ह्यनुभवः। नह्य्यस्ति, नह्यस्ति। नेह :– ह्नुते।

४७. **अनचि च।** सुद्ध्युपास्यः, सुध्युपास्यः। मद्ध्वरिः, मध्वरिः। वाक्क्, वाक्। नेह :– स्मितम्। * यणो मयो द्वे वाच्ये * ऊल्क्का, उल्का। वल्म्मीकः, वल्मीकः। सुध्ध्युपास्यः, सुध्युपास्यः। मध्ध्वरिः, मध्वरिः। * शरः खयः * स्त्थाली, स्थाली। स्त्थाता, स्थाता। संस्क्कर्त्ता, संस्कर्त्ता। संस्कर्त्ता, संस्कर्त्ता। वत्स्सरः, वत्सरः। अप्स्सराः, अप्सराः।

४८. **शरोऽचि।** कर्षति। वर्षति। चतुर्षु। नेह :–दश्श्यंते।

५३. **झलां जश् झशि।** लब्धा। दोग्धा। बोद्धा। सुद्ध्युपास्यः। नेह :–दत्तः।

५४. **अभ्यासे चर्च।** चिच्छेद। तिष्ठासति। बुभूषति। बभूव। जघान डुढौके। ददौ। डिड्ये।

५५. **खरि च।** भेत्ता। भेत्स्यति। तच्छिवः। योत्स्यते। आरिप्सते।

५६. **वाऽवसाने।** वाक्, वाग्। रामात्, रामाद्। लिट्, लिड्। नेह :–वागीशः।

५७. **अणोऽप्रगृह्यस्यानुनासिकः।** दधिँ, दधि। मधुँ, मधु। नेह :– कर्त्तृ। अग्नी।

५८. **अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः।** अङ्कितः। अञ्चितः। कुण्ठितः। शान्तः। गुम्फितः। कुर्वन्ति। नेह :– आक्रंस्यते।

५९. **वा पदान्तस्य।** त्वङ्करोषि, त्वं करोषि। सय्ँयन्ता, संयन्ता। सव्ँवत्सरः, संवत्सरः। यल्ँलोकम्, यं लोकम्। तङ्कथञ्चित्रपक्षण्डयमानन्नभःस्थम्पुरुषोऽवधीत् ?, तं कथं चित्रपक्षं डयमानं नभःस्थं पुरुषोऽवधीत् ?

६०. **तोर्लि।** तल्लयः। विद्वाल्ँलिखति।

६१. **उदः स्थास्तम्भोः पूर्वस्य।** उत्थानम्। उत्तम्भनम्। उत्थाता। उत्तम्भिता।

६२. **झयो होऽन्यतरस्याम्।** वाग्घरिः, वाग्हरिः। लिड्ढसति लिड्हसति। तद्धविः, तद्हविः। त्रिष्टुब्भसति, त्रिष्टुब्हसति।

६३. शश्छोऽटि । तच्छिवः, तच्शिवः । * छत्वममीति वाच्यम् * तच्छ्लोकेन, तच्श्लोकेन ।

६४. हलो यमां यमि लोपः । शय्या । शय्य्या । आदित्यो देवतास्य, आदित्यं हविः । आदित्य्यम् । नेह :– अन्नम् ।

६५. झरो झरि सवर्णे । प्रत्तम्, प्रत्त्तम् । अवत्तम्, अत्त्तम् । नेह :– तक्षा ।

इति लघुपाणिनीये अष्टमाध्यायस्य चतुर्थपादः समाप्तः ।

देवभाषात्मिके शास्त्रे प्रविविक्षु-द्विजन्मनाम् ।
विहितं शीघ्रबोधाय पाणिनीयमिदं लघु ॥

इति लघु-पाणिनीयं समाप्तम् ।

त्वदीयं वस्तु गोविन्द तुभ्यमेव समर्पये-सोहम् ।

लघुपाणिनीये सङ्कलितामां

पाणिनीयाष्टाध्यायीसूत्राणां सूची

अ अ ८।४।६८
अंशंहारी ५।२।६९
अकःसवर्णेदीर्घः ६।१।१०१
अकथितं च १।४।५१
अकर्तरि च० ३।३।१९
अकर्मकाच्च १।३।२६
अकर्मकाच्च १।३।३५
अकर्मकाच्च १।३।४५
अकृत्सार्वधातु० ७।४।२५
अक्षशलाका० २।१।१०
अक्ष्णोऽदर्शनात् ५।४।७६
अग्नेःस्तुत्स्तोम० ८।३।८२
अग्नेर्ढक् ४।२।३३
अग्राद्यत् ४।४।११६
अङ्गस्य ६।४।१
अङ्गुलेर्दारुणि ५।४।११४
अच उपसर्गात्तः ७।४।४७
अचः कर्मकर्तरि ३।१।६२
अचः परस्मिन्० १।१।५७
अचतुरविचतुर० ५।४।७७
अचश्च १।२।२८
अचस्तास्वत्थल्य ७।२।६१
अचित्तहस्तिधेनो० ४।२।४७
अचि र ऋतः ७।२।१००
अचि विभाषा ८।२।२१
अचि श्नुधातु० ६।४।७७
अचोऽञ्णिति ७।२।११५
अचोऽन्त्यादि टि १।१।६४
अचो यत् ३।१।९७
अचो रहाभ्यां द्वे ८।४।४६
अच्च घेः ७।३।११९
अच्छ गत्यर्थवदेषु १।४।६९
अजादेर्द्वितीयस्य ६।१।२
अजाद्यतष्टाप् ४।१।४
अजाद्यदन्तम् २।२।३३
अजिव्रज्योश्च ७।३।६०
अज्ञाते ५।३।७३
अञ्चेः पूजायाम् ७।२।५३
अञ्चेर्लुक् ५।३।३०
अञ्चोऽनपादाने ८।२।४८
अञ्जेः सिचि ७।२।७१
अञ्नासिकायाः ५।४।११८
अट्कुप्वाङ् ८।४।२
अड्भ्यास व्यवायेऽपि ६।१।१३६
अङ् गार्ग्य० ७।३।९९
अणुदित्सवर्णस्य० १।१।६९
अणृगयनादिभ्यः ४।३।७३
अणोऽप्रगृह्य० ८।४।५७
अण्च ५।२।१०३
अत आदेः ७।४।७०
अत इञ् ४।१।९५
अत इनिठनौ ५।२।११५
अत उत्सार्व० ६।४।११०
अत उपधायाः ७।२।११६
अत एकहल्० ६।४।१२०
अतः कृकमि० ८।३।४६
अतिथेर्ञ्यः ५।४।२६
अतिरतिक्रमणे च १।४।९५
अतिशायने ५।३।५५
अतो गुणे ६।१।९७
अतो दीर्घो यञि ७।३।१०१
अतो भिस ऐस् ७।१।९
अतोऽम् ७।१।२४
अतो येयः ७।२।८०
अतो रोरप्लुतादप्लुते ६।१।११३
अतो लोपः ६।४।४८
अतो ल्रान्तस्य ७।२।२
अतो हलादेर्लघोः ७।२।७
अतो हेः ६।४।१०५
अत्यन्तसंयोगे च २।१।२९
अत्रलोपोऽभ्यास० ७।४।५८
अत्रानुनासिकः ८।३।२
अत्वसन्तस्य ६।४।१४
अदः सर्वेषाम् ७।३।१००
अदभ्यस्तात् ७।१।४
अदर्शनं लोपः १।१।६०

अदस औसु ० ७।२।१०७
अदसो मात १।१।१२
अदसोऽसेर्दादु ८।२।८०
अदिप्रभृतिभ्यः २।४।७२
अदूरभवश्च ४।२।७०
अदेङ् गुणः १।१।२
अदो जग्धिर्ल्यप्ति० २।४।३६
अदोऽनुपदेशे १।४।७०
अद्दुतरादिभ्यः ७।१।२५
अधःशिरसी पदे ८।२।४७
अधिकरणवाचि० २।३।६८
अधिकरणवाचि० २।२।१३
अधिकरणविचाले ५।३।४३
अधिकृत्य कृते ४।३।८७
अधिपरी अनर्थकौ १।४।९३
अधिरीश्वरे १।४।९७
अधिशीङ्स्था० १।४।४६
अधुना ५।३।१७
अघेः मसहने १।३।३३
अध्यायन्यायो० ३।३।१२२
अन् ६।४।१६७
अनङ् सौ ७।१।९३
अनचि च ८।४।४७
अनत्याधान० १।४।७५
अनद्यतने लङ् ३।२।१११
अनद्यतने लुट् ३।३।१५
अनद्यतने र्हिल्० ५।३।२१
अनभिहिते २।३।१
अनश्च ५।४।१०८
अनाप्यकः ७।२।११२
अनितेः ८।४।१९
अनिदितां हल० ६।४।२४
अनुकरणं चानिति० १।४।६२
अनुदात्तङित० १।३।१२
अनुदास्य चर्दूप० ६।१।५९
अनुदात्तोपदेशवन० ६।४।३७
अनुनासिकात्० ८।३।४
अनुपराभ्यां कृञः १।३।७९
अनुपसर्गाज्ज्ञः १।३।७६
अनुपसर्गात्फुल्ल० ८।२।५५
अनुपसर्गाद्वा १।३।४३
अनुपसर्जनात् ४।१।१४
अनुप्रतिगृणश्च १।४।४१
अनुर्यत्समया २।१।१५
अनुर्लक्षणे १।४।८४
अनुविपर्यभिनि०८।३।७२
अनुशतिकादीनां ७।३।२०
अनुस्वारस्य ८।४।५८
अनेकमन्यपदार्थे २।२।२४
अनेकाल्शित्० १।१।५५
अन्तः ८।४।२०
अन्तरदेशे ८।४।२४
अन्तरपरिग्रहे १।४।६५
अन्तरान्तरेण युक्ते २।३।४
अन्तर्धौ येनादर्शन० १।४।२८
अन्तर्बहिर्भ्यां० ५।४।११७
अन्तर्वत्पति० ४।१।३२
अन्तात्यन्ताध्व० ३।२।४८
अन्तादिवच्च ६।१।८५
अन्तिकबाढयोर्नेद० ५।३।६३
अन्नेन व्यञ्जनम् २।१।३४
अन्यपदार्थे च २।१।२१
अन्यारादितरर्ते २।३।२९
अन्येभ्योऽपि ३।२।७५
अन्येषामपि ६।३।१३७
अन्येष्वपि ३।२।१०१
अपचितश्च ७।२।३०
अपत्यं पौत्र० ४।१।१६२
अपदान्तस्य मूर्ध०८।३।५५
अपपरिबहिरञ्चवः २।१।१२
अपपरी वर्जने १।४।८८
अपवर्गे तृतीया २।३।६
अपह्नवे ज्ञः ७।३।४४
अपादाने पञ्चमी २।३।३८
अपिः पदार्थसं १।४।९६
अपृक्त एकाल्० १।२।४१
अपोनप्त्रपांनप्तृ० ४।२।२७
अपो भि ७।४।४८
अप्तृन्तृच्स्वसृ० ६।४।११
अप्पूरणीप्रमा० ५।४।११६
अप्रत्ययात् ३।३।१०२
अभाषितपुंस्काच्च७।३।४८
अभिजनश्च ४।३।९०
अभिनिविशश्च १।४।४७
अभिप्रत्यतिभ्यः १।३।८०
अभिरभागे १।४।९१
अभेश्चाविदूर्ये०७।२।२५
अभ्यस्तस्य च ६।१।३३
अभ्यासस्यासवर्णे ६।४।७८
अभ्यासाच्च ७।३।५५

अभ्यासे चर्च ८।४।५४
अमि पूर्वं ६।१।१०७
अम्बाम्बगोभू० ८।३।९७
अम्बार्थनद्यो० ७।३।१०७
अम् संबुद्धौ ७।१।९९
अयङ् यि क्ङिति ७।४।२२
अयनं च ८।४।२५
अरण्यान्मनुष्ये ४।२।१२९
अरुर्द्विषदजन्तस्य ६।३।६७
अर्तिपिपर्त्योश्च ७।४।७७
अर्तिलूधूसूखन०३।२।१८४
अर्तिह्रीव्लीरी ७।३।३६
अर्थवदधातुर० १।२।४५
अर्दे संनिविभ्य: ७।२।२४
अर्धं नपुंसकम् २।२।२
अर्धर्चा: पुंसि च २।४।३१
अर्वणस्त्रसाव० ६।४।१२७
अर्शआदिभ्यो० ५।२।१२७
अर्हे कृत्यतृचश्च ३।३।१६९
अलंकृञ्निराकृ०३।२।१३६
अलुगुत्तरपदे ६।३।१
अलोऽन्त्यस्य १।१।५२
अलोऽन्त्यात्पूर्व० १।१।६५
अल्पाख्यायाम् ५।४।१३६
अल्पाच्तरम् २।२।३४
अवसमन्धेभ्य० ५।४।७९
अवे: क: ५।४।२८
अवे तृस्त्रोर्घञ् ३।३।१२०
अव्यक्तानुकरणा०५।४।५७
अव्ययं विभक्ति० २।१।६
अव्ययसर्वना० ५।३।७१
अव्ययात्त्यप् ४।२।१०४
अव्ययादाप्सुप: २।४।८२
अव्ययीभाव: २।१।५
अव्ययीभावश्च १।१।४१
अव्ययीभावश्च २।४।१८
अव्ययीभावे चा० ६।३।८१
अव्ययीभावे शर० ५।४।१०७
अशनायोदन्यध० ७।४।३४
अश्नोतेश्च ७।४।७२
अश्वक्षीरवृषलवणा० ७।१।५१
अश्वपत्यादिभ्यश्च ४।१।८४
अष्टन आ विभक्तौ ७।२।८४
अष्टन: संज्ञायाम् ६।३।१२५
अष्टाभ्य औश् ७।१।२१
असंयोगाल्लिट् १।२।५
अ सांप्रतिके ४।३।९
असिद्धवदत्राभात् ६।४।२२
अस्तं च १।४।६८
अस्ताति च ५।३।४०
अस्तिनास्ति० ४।४।६०
अस्तिसिचोऽपृक्ते ७।३।९६
अस्तेर्भू: २।४।५२
अस्थिदधिसक्थ्य० ७।१।७५
अस्मदो द्वयोश्च १।२।५९
अस्मद्युत्तम: १।४।१०७
अस्मायामेधा० ५।२।१२१
अस्य च्वौ ७।४।३२
अस्यतिवक्तिख्या०३।१।५२
अस्यतेस्थुक् ७।४।१७
अहंशुभयोर्युस् ५।२।१४०
अहन् ८।२।६८
अह्नोऽदन्तात् ८।४।७
अह्नोऽह्न एतेभ्य: ५।४।८८

आ

आकडारादेका संज्ञा १।४।१
आख्यातोपयोगे १।४।२९
आग्रहायण्यश्व० ४।२।२२
आङ उद्गमने १।३।४०
आङि चाप: ७।३।१०५
आङो दोऽनास्य० १।३।२०
आङो ना० ७।३।१२०
आङो यमहन: १।३।२८
आङो यि ७।१।६५
आङ् मर्यादाभि० २।१।१३
आङ् मर्यादावचने १।४।८९
आ च त्वात् ५।१।१२०
आ च हौ ६।४।११७
आच्छीनद्योर्नुम् ७।१।८०
आटश्च ६।१।९०
आडजादीनाम् ६।४।७२
आदुत्तमस्य पिच्च ३।४।९२
आढ्यसुभगस्थूल० ३।२।५६
आण् नद्या: ७।३।११२
आत औ णल: ७।१।३४
आत: ३।४।११०
आतश्चोपसर्गे ३।१।१३६
आतश्चोपसर्गे ३।३।१०६

आतो ङितः ७।२।८१
आतोऽटि नित्यम् ८।३।३
आतोऽनुपसर्गे कः ३।२।३
आतो मनिन्० ३।२।७४
आतो युक् चिण् ७।३।३३
आतो लोप इटि च ६।४।६४
आत्मनश्च ६।३।६
आत्मनेपदेष्वनतः ७।१।५
आत्मनेपदेष्व २।४।४४
आत्मनेपदेष्वन्य० ३।१।५४
आत्मन्विश्वजन० ५।१।९
आत्माध्वानौ खे ६।४।१६९
आदरानादरयोः १।४।६३
आदाचार्याणाम् ७।३।४९
आदिकर्मणि क्तः ३।४।७१
आदितश्च ७।२।१६
आदिरन्त्येन १।१।७१
आदिर्ञिटुडवः १।३।५
आदेः परस्य १।१।५४
आदेच उपदेशे० ६।१।४५
आदेशप्रत्यययोः ८।३।५९
आद् गुणः ६।१।८७
आद्यन्तवदेकस्मिन् १।१।२१
आद्यन्तौ टकितौ १।१।४६
आधारोऽधिकरणम् १।४।४५
आनङृतो द्वन्द्वे ६।३।२५
आनि लोट् ८।४।१६
आने मुक् ७।२।८२
आन्महतः ६।३।४६
आपोऽन्यतर० ७।४।१५
आप्ज्ञप्यृधामीत् ७।४।५५
आभीक्ष्ण्ये णमुल्च ३।४।२२
आमः २।४।८१
आमि सर्वनाम्नः ७।१।५२
आमेतः ३।४।९०
आम्प्रत्ययवत्० १।३।६३
आयनेयीनीयियः ७।१।२
आयादय आर्ध० ३।१।३१
आरगुदीचाम् ४।१।१३०
आर्धधातुकं शेषः ३।४।११४
आर्धधातुकस्ये० ७।२।३५
आर्धधातुके २।४।३५
आर्धधातुके ६।४।४६
आर्हादगोपुच्छ० ५।१।१९
आलजाटचौ ५।२।१२५
आवश्यकाधम० ३।३।१७०
आवसथात्ष्ठल् ४।४।७४
आशिषि लिङ्० ३।३।१७३
आसन्दीवदष्ठी० ८।२।१२
आ सर्वनाम्नः ६।३।९१
आहस्थः ८।२।३५
आहि च दूरे ५।३।३७

इ

इकः काशे ६।३।१२३
इको गुणवृद्धी १।१।३
इकोऽचिविभक्तौ ७।१।७३
इको यणचि ६।१।७७
इको ह्रस्वोऽङ्यो० ६।३।६१
इगन्ताच्च लघु० ५।१।१३१
इगुपधज्ञाप्रीकिरः ३।१।१३५
इग्यणः संप्रसारणम् १।१।४५
इङश्च २।४।४८
इङश्च ३।३।२१
इच्कर्मव्यतिहारे ५।४।१२७
इच्छा ३।३।१०१
इजादेः सनुमः ८।४।३२
इजादेश्च गुरुमतो० ३।१।३६
इट ईटि ८।२।२८
इटोऽत् ३।४।१०६
इट् सनि वा ७।२।४१
इडत्त्यर्तिव्ययती० ७।२।६६
इणः षः ८।३।३९
इणः षीध्वंलुङ्० ८।३।७८
इणो गा लुङि २।४।४५
इणो यण् ६।४।८१
इण्कोः ८।३।५७
इण्नशजिसर्ति० ३।२।१६३
इण्निष्ठायाम् ७।२।४७
इतश्च ३।४।१००
इतोऽत्सर्वनाम० ७।१।८६
इतो मनुष्यजातेः ४।१।६५
इदंकिमोरीश्की ६।३।९०
इदम इश् ५।३।३
इदमस्थमुः ५।३।२४
इदमो मः ७।२।१०८
इदमोर्हिल् ५।३।१६
इदमो हः ५।३।११
इदितो नुम् धातोः ७।१।५८
इदुदुपधस्य चा० ८।३।४१

इदुद्भ्याम् ७।३।११७
इदोऽय् पुंसि ७।२।१११
इद् गोण्याः १।२।५०
इद्दरिद्रस्य ६।४।११४
इनः स्त्रियाम् ५।४।१५२
इनच्पिटच्चिकचि ५।२।३३
इन्द्रवरुणभवशर्व० ४।१।४९
इन्हन्पूषार्यम्णां ६।४।१२
इरितो वा ३।१।५७
इवे प्रतिकृतौ ५।३।९६
इषुगमियमां छः ७।३।७७
इष्टादिभ्यश्च ५।२।८८
इष्ठस्य यिट् च ६।४।१५९
इसुसुक्तान्तात्कः ७।३।५१

ई

ई घ्राध्मोः ७।४।३१
ई च खनः ३।१।१११
ई च गणः ७।४।९७
ईडजनोर्ध्वे च ७।२।७८
ईदग्नेः सोमवरुण० ६।३।२७
ईदासः ७।२।८३
ईदूदेद् द्विवचनं १।१।११
ईद्यति ६।४।६५
ईयसश्च ५।४।१५६
ईशः से ७।२।७७
ईषत्कृता २।२।७
ईषदर्थे ६।३।१०५
ईषदसमाप्तौ कल्प० ५।३।६७
ईषद्दुःसुषु कृ० ३।३।१२६
ई हल्यघोः ६।४।११३

उ

उगवादिभ्यो यत् ५।१।२
उगितश्च ४।१।६
उगिदचां सर्व० ७।१।७०
उणादयो बहुलम् ३।३।१
उतश्च प्रत्ययात्० ६।४।१०६
उतो वृद्धिर्लुकि ७।३।८९
उत्क उन्मनाः ५।२।८०
उत्तमैकाभ्यां च ५।४।९०
उत्तरपदस्य ७।३।१०
उत्तराच्च ५।३।३८
उत्तराधरदक्षिण० ५।३।३४
उत्परस्यातः ७।४।८८
उत्सादिभ्योऽञ् ४।१।८६
उदः स्थास्तम्भोः ८।४।६१
उदन्वानुदधौ च ८।२।१३
उदश्चरः सकर्म० १।३।५३
उदश्वितोऽन्यतर० ४।२।१९
उदितो वा ७।२।५६
उदीचामातः ७।३।४६
उदुपधाद्भावादि० १।२।२१
उदोऽनूर्ध्वकर्मणि १।३।२४
उदोष्ठ्यपूर्वस्य ७।१।१०२
उद्विभ्यां काकु० ५।४।१४८
उद्विभ्यां तपः १।३।२७
उन्न्योर्ग्रः ३।३।२९
उपजानूपकर्णो० ४।३।४०
उपज्ञाते ४।३।११५
उपज्ञोपक्रमं तदा० २।४।२१
उपदंशस्तृतीया० ३।४।४७
उपदेशेऽजनुनासि० १।३।२
उपदेशेऽत्वतः ७।२।६२
उपधायां च ८।२।७८
उपधायाश्च ७।१।१०१
उपपदमतिङ् २।२।१९
उपपराभ्याम् १।३।३९
उपमानाच्च ५।४।१३७
उपमानादाचारे ३।१।१०
उपमानानि सा० २।१।५५
उपमितं व्याघ्रा० २।१।५६
उपर्यध्यधसः सा० ८।१।७
उपर्युपरिष्टात् ५।३।३१
उपसर्गस्य ६।३।१२२
उपसर्गस्यायतौ ८।२।१९
उपसर्गाः क्रिया १।४।५९
उपसर्गाच्च ५।४।११९
उपसर्गात्खल्घञोः ७।१।६७
उपसर्गात्सुनोति० ८।३।६५
उपसर्गादध्वनः ५।४।८५
उपसर्गादसमासे० ८।४।१४
उपसर्गादृति धातौ ६।१।९१
उपसर्गाद्ध्रस्व० ७।४।२३
उपसर्गे घोः किः ३।३।९२
उपसर्गे च संज्ञा० ३।२।९९
उपसर्गे रुवः ३।३।२२
उपसर्जनं पूर्वम् २।२।३०
उपाच्च १।३।८४
उपाजेऽन्वाजे १।४।७३
उपात्प्रतियत्न० ६।१।१३९
उपात्प्रशंसायाम् ७।१।६६
उपाधिभ्यां त्यक० ५।२।३४
उपान्मन्त्रकरणे १।३।२५
उपान्वध्याङ्वसः १।४।४८

उपोऽधिके च १।४।८७
उप्ते च ४।३।४४
उभयप्राप्तौ कर्मणि २।३।६६
उभादुदात्तो ५।२।४४
उभे अभ्यस्तम् ६।१।५
उभौ साम्यासस्य ८।४।२१
उमोर्णयोर्वा ४।३।१५८
उरःप्रभृतिभ्यः ५।४।१५१
उरण् रपरः १।१।५१
उरत् ७।४।६६
उरसोऽण्च ४।४।९४
उॠत् ७।४।७
उश्च १।२।१२
उषविदजागृ० ३।१।३८
उष्ट्राद् वुञ् ४।३।१५७
उस्यपदान्तात् ६।१।९६

ऊ

ऊकालोऽज्झ्रस्व० १।२।२७
ऊङुतः ४।१।६६
ऊतियूतिजूतिसा० ३।३।९७
ऊदनोर्देशे ६।३।९८
ऊधसोऽनङ् ५।४।१३१
ऊरूत्तरपदादौपम्ये ४।१।६९
ऊर्णाया युस् ५।२।१२३
ऊर्णोतेर्विभाषा ७।२।६
ऊर्णोतेर्विभाषा ७।३।९०
ऊर्यादिच्विडाचश्च १।४।६१
ऊषसुषिमुष्क० ५।२।१०७

ऋ

ऋक्पूरब्धूःपथा० ५।४।७४
ऋक्छ्यृताम् ७।४।११
ऋणमाधमर्ण्ये ८।२।६०
ऋत उत् ६।१।१११
ऋतश्च ७।४।९२
ऋतश्च संयोगा० ७।४।१०
ऋतो ङिसर्वना० ७।३।११०
ऋतो भारद्वाजस्य ७।२।६३
ऋत्विग्दधृक्स्र० ३।२।५९
ऋदुपधाच्चाक्लृ० ३।१।११०
ऋदुशनस्पुरुदं० ७।१।९४
ऋदृशोऽङि गुणः ७।४।१६
ऋद्धनोः स्ये ७।२।७०
ऋन्नेभ्यो ङीप् ४।१।५
ऋषभोपानहो० ५।१।१४
ऋष्यन्धक० ४।१।११४
ऋहलोर्ण्यत् ३।१।१२४

ॠ

ॠत इद्धातोः ७।१।१००
ॠदोरप् ३।३।५७

ए

एकः पूर्वपरयोः ६।१।८४
एकवचनं संबुद्धिः २।३।४९
एकवचनस्य च ७।१।३२
एकविभक्ति चा० १।२।४४
एकस्य सकृच्च ५।४।१९
एकाचो द्वे प्रथम० ६।१।१
एकाचो बशो० ८।२।३७
एकाजुत्तरपदे णः ८।४।१२
एकादाकिनिच्चास० ५।३।५२
एकाद्धो ध्यमु० ५।३।४४
एङः पदान्ता० ६।१।१०९
एङि पररूपम् ६।१।९४
एङ्ह्रस्वात्संबुद्धेः ६।१।६९
एच इग्घ्रस्वादेशे १।१।४८
एचोऽयवायावः ६।१।७८
एजेः खश् ३।२।२८
एण्या ढञ् ४।३।१५९
एत ऐ ३।४।९३
एतत्तदोः सुलो० ६।१।१३२
एतदोऽन् ५।३।५
एति संज्ञायाम० ८।३।९९
एतिस्तुशास्वृ० ३।१।१०९
एतेतौ रथोः ५।३।४
एतेर्लिङि ७।४।२४
एत्येधत्यूठ्सु ६।१।८९
एधाच्च ५।३।४६
एनबन्यतरस्याम्० ५।३।३५
एरच् ३।३।५६
एरनेकाचोऽसं० ६।४।८२
एरुः ३।४।८६
एर्लिङि ६।४।६७

ओ

ओः पुयण्ज्यपरे ७।४।८०
ओः सुपि ६।४।८३
ओक उचः के ७।३।६४
ओजःसहोऽम्भ० ६।३।३
ओत् १।१।१५
ओतः श्यनि ७।३।७१
ओदितश्च ८।२।४५
ओमभ्यादाने ८।२।८७
ओमाङोश्च ६।१।९५

ओसि च ७।३।१०४

औ

औङ आपः ७।१।१८
औत् ७।३।१२८
औतोऽम्शसोः ६।१।९३

क

कडङ्करदक्षिणा० ५।१।६९
कडाराः कर्मधा० २।२।३८
कणेमनसी श्रद्धा०१।४।६६
कण्ड्वादिभ्यो यक्
३।१।२७
कन्यायाः क० ४।१।११६
कपिज्ञात्योर्ढक् ५।१।१२७
कपिष्ठलो गोत्रे ८।३।९१
कम्बोजाल्लुक् ४।१।१७५
करणाधिकरण०
३।३।११७
कर्तरि कृत् ३।४।६७
कर्तरि च २।२।१६
कर्तरि शप् ३।१।६८
कर्तुः क्यङ् सलो०३।१।११
कर्तुरीप्सिततमं १।४।४९
कर्तृकरणयो० २।३।१८
कर्तृकरणे कृता०२।१।३२
कर्तृकर्मणोः कृति २।३।६५
कर्तृस्थे चाशरीरे १।३।३७
कर्मणा यमभि० १।४।३२
कर्मणि घटोऽठच्५।२।३५
कर्मणि च २।२।१४
कर्मणि द्वितीया २।३।२
कर्मण्यण् ३।२।१
कर्मण्यधिकरणे ३।३।९३
कर्मप्रवचनीययुक्ते० २।३।८
कर्मप्रवचनीयाः १।४।८३
कर्मवत्कर्मणा ३।१।८७
कलेर्ढक् ४।२।८
कवं चोष्णे ६।३।१०७
कष्टाय क्रमणे ३।१।१४
कस्कादिषु च ८।३।४८
कस्य च दः ५।३।७२
कानाम्रेडिते ८।३।१२
का पथ्यक्षयोः ६।२।१०४
काम्यच्च ३।१।९
कारके १।४।२३
कालसमयवे० ३।३।१६७
कालाः परिमा० २।२।५
कालाट्ठञ् ४।३।११
कालात् ५।१।७८
कालात्साधुपु० ४।३।४३
कालाध्वनोरत्यन्त०२।३।५
काश्यादिभ्य० ४।२।११६
कास्प्रत्ययादाम० ३।१।३५
किं क्षेपे २।१।६४
किंयत्तदो निर्धा० ५।३।९२
किंसर्वनामबहु० ५।३।२
क्ङिति च ७।२।११८
किदाशिषि ३।४।१०४
किमः कः ७।२।१०३
किमः क्षेपे ५।४।७०
किमः संख्याप० ५।२।४१
किमश्च ५।३।२५
किमिदंभ्यां वो ५।२।४०
किमोऽत् ५।३।१२
किरतौ लवने ६।१।१४०
किरश्च पञ्चभ्यः ७।२।७५
कुगतिप्रादयः २।२।१८
कुटीशमीशुण्डा०५।३।८८
कु तिहोः ७।२।१०४
कुत्वा डुपच् ५।३।८९
कुत्सितानि २।१।५३
कुत्सिते ५।३।७४
कुप्वोः ≍क≍पौ च
८।३।३७
कुमति च ८।४।१३
कुमुदनडवेतसे० ४।२।८७
कुर्वादिभ्यो ण्यः ४।१।१५१
कुलकुक्षिग्रीवा० ४।२।९६
कुलटाया वा ४।१।१२७
कुलात्खः ४।१।१३९
कुशाग्राच्छः ५।३।१०५
कुहोश्चुः ७।४।६२
कृच्छ्रगहनयोः ७।२।२२
कृञः श च ३।३।१००
कृञो हेतुताच्छी० ३।२।२०
कृञ् चानुप्रयुज्य० ३।१।४०
कृते ग्रन्थे ४।३।११६
कृत्तद्धितसमा० १।२।४६
कृत्यचः ८।४।२९
कृत्यल्युटो बहु०
३।३।११३
कृत्याः ३।१।९५
कृत्यानां कर्तरि २।३।७१
कृत्याश्च ३।३।१७१
कृत्यैरधिकार्थ० २।१।३३
कृत्यैर्ऋणे २।१।४३
कृत्वोर्थप्रयोगे २।३।६४

कृदतिङ् ३।१।९३
कृन्मेजन्तः १।१।३९
कृपो रो लः ८।२।१८
कृभ्वस्तियोगे ५।४।५०
कृसृभृवृस्तुद्रु० ७।२।१३
कॄ धान्ये ३।३।३०
केकयमित्रयुप्र० ७।३।२
केऽणः ७।४।१३
केशाद्वोऽन्यतर० ५।२।१०९
केशाश्वाभ्यां य० ४।२।४८
कोः कत्तत्पुरु० ६।३।१०१
कोशाड्ढञ् ४।३।४२
क्ङिति च १।१।५
क्तक्तवतू निष्ठा १।१।२६
क्तस्य च वर्तमाने २।३।६७
क्तेन च पूजायाम् २।२।१२
क्तेन नञ्विशि० २।१।६०
क्तोऽधिकरणे च ३।४।७६
क्त्वा च २।२।२२
क्त्वातोसुन्क० १।१।४०
क्यचि च ७।४।३३
क्यस्य विभाषा ६।४।५०
क्रमः परस्मैप० ७।३।७६
क्रमादिभ्यो ४।२।६१
क्रीङ्जीनां णौ ६।१।४८
क्रुधद्रुहेर्ष्यासू० १।४।३७
क्रुधद्रुहोरुपसृष्ट० १।४।३८
क्र्यादिभ्यः श्ना ३।१।८१
क्लिशः क्त्वा० ७।२।५०
क्वसुश्च ३।२।१०७
क्वाति ७।२।१०५

क्विन्प्रत्ययस्य० ८।२।६२
क्विप् च ३।२।७६
क्षत्राद्घः ४।१।१३८
क्षायो मः ८।२।५३
क्षियो दीर्घात् ८।२।४६
क्षीराड्ढञ् ४।२।२०
क्षुद्रजन्तवः २।४।८
क्षुब्धस्वान्त० ७।२।१८
क्षुम्नादिषु च ८।४।३९
क्सस्याचि ७।३।७२

ख

खः सर्वधुरात् ४।४।७८
खट्वा क्षेपे २।१।२६
खरवसानयोर्वि० ८।३।१५
खरि च ८।४।५५
खलगोरथात् ४।२।५०
खलयवमाषतिल० ५।१।७
खित्यनव्ययस्य ६।३।६६
ख्यत्यात्परस्य ६।१।११२

ग

गतिबुद्धिप्रत्यव० १।४।५२
गतिश्च १।४।६०
गत्यर्थकर्मणि २।३।१२
गत्यर्थाकर्मक० ३।४।७२
गन्धस्येदुत्पूति० ५।४।१३५
गमहनजनखन० ६।४।९८
गमेरिट् परस्मै० ७।२।५८
गम्भीराञ्ञ्यः ४।३।५८
गर्गादिभ्यो यञ् ४।१।१०५
गवाश्वप्रभृतीनि २।४।११
गवियुधिभ्यां० ८।३।९५

गः स्थकन् ३।१।१४६
गाङ्कुटादिभ्यो० १।२।१
गाङ् लिटि २।४।४९
गातिस्थाघुपा० २।४।७७
गापोष्टक् ३।२।८
गिरेश्च सेनक० ५।४।११२
गुणवचनब्राह्म० ५।१।१२४
गुणोऽपृक्ते ७।३।९१
गुणो यङ्लुकोः ७।४।८२
गुणोऽर्तिसंयो० ७।४।२९
गुपूधूपविच्छि० ३।१।२८
गुरोरनृतोऽनन्त्य० ८।२।८६
गुरोश्च हलः ३।३।१०३
गृहपतिना संयुक्ते ४।४।९०
गेहे कः ३।१।१४४
गोचरसंचरव० ३।३।११९
गोतो णित् ७।१।९०
गोत्रे कुञ्जादिभ्यः० ४।१।९८
गोधाया ढ्रक् ४।१।१२९
गोपयसोर्यत् ४।३।१६०
गोपुच्छाट्ठञ् ४।४।६
गोरतद्धितलुकि ५।४।९२
गोश्च पुरीषे ४।३।१४५
गोस्त्रियोरुपस० १।२।४८
ग्रहवृदृनिश्चिगमश्च ३।३।५८
ग्रहिज्यावयिव्य० ६।१।१६
ग्रहोऽलिटि दीर्घः ७।२।३७
ग्रामजनबन्धुभ्य० ४।२।४३
ग्रामाद्यखञौ ४।२।९४
ग्रीवाभ्योऽण्च ४।३।५७

ग्रो यङि ८।२।२०
ग्लाजिस्थश्च ३।२।१३९
घ
घच्छौ च ४।४।११७
घञपोश्च २।४।३८
घञि च भाव ६।४।२७
घरूपकल्पचेलड्० ६।३।४३
घुमास्थागापा० ६।४ ६६
घुषिरविशब्दने ७।२।२३
घेर्ङिति ७।३।१११
घ्वसोरेद्धाव० ६।४।११९
ङ
ङमो ह्रस्वादचि ८।३।३२
ङसिङसोश्च ६।१।११०
ङसिङ्योः स्मा० ७।१।१५
ङिच्च १।१।५३
ङिति ह्रस्वश्च १।४।६
ङेप्रथमयोरम् ७।१।२८
ङेराम्नद्याम्नीभ्यः ७ ३ ११६
ङेर्यः ७।१।१३
ङ्णोः कुक्टुक्शरि ८।३।२८
ङ्याप्प्रातिपदि० ४।१।१
च
चक्षिङः ख्याञ् २।४।५४
चङि ६।१।११
चजोः कु घिण्यतोः ७।३।५२
चटकाया ऐरक् ४।१।१२८
चतुरनडुहोरा० ७।१।९८
चतुर्थी चाशिष्या०२।३।७३
चतुर्थी तदर्था० २।१।३६
चतुर्थी संप्रदाने २।३।१३
चरणेभ्यो धर्म० ४।२।४६
चरति ४।४।८
चरफलोश्च ७।४।८७
चरेष्टः ३।२।१६
चर्मणोऽञ् ५।१।१५
चलनशब्दा० ३।२।१४८
चादयोऽसत्वे १।४।५७
चार्थे द्वन्द्वः २।२।२९
चिणो लुक् ६।४।१०४
चिण्ते पदः ३।१।६०
चिण्भावकर्मणोः ३।१।६६
चिन्तिपूजि० ३।३।१०५
चुटू १।३।७
चूर्णादिनिः ४।४।२३
चोः कुः ८।२।३०
चौ ६।१।२२२
चौ ६।३।१३८
च्छ्वोः शूडनु० ६।४।१९
च्लि लुङि ३।१।४३
च्लेः सिच् ३।१।४४
च्वौ च ७।४।२६
छ
छ च ४।२।२८
छत्रादिभ्यो णः ४।४।६२
छे च ६।१ ७३
ज
जश्शसोः शिः ७।१।२०
जक्षित्यादयः षट् ६।१।६
जनपदशब्दा० ४।१।१६८
जनपदे लुप् ४।२।८१
जनिकर्तुः प्रकृ० १।४।३०
जनिवध्योश्च ७।३।३५
जपजभदहदश० ७।४।८६
जम्ब्वा वा ४।३।१६५
जराया जरस० ७।२।१०१
जल्पभिक्षकुट्ट० ३।२।१५५
जसः शी ७।१।१७
जसि च ७।३।१०९
जहातेश्च ६।४।११६
जहातेश्च क्त्वि ७।४।४३
जाग्रो विचिण्ण० ७।३।८५
जातिरप्राणिनाम् २।४।६
जातेरस्त्रीविष० ४।१।६३
जात्याख्याया० १।२।५८
जानपदकुण्ड० ४।१।४२
जायाया निङ् ५।४।१३४
जालमानायः ३।३।१२४
जिघ्रतेर्वा ७।४।६
जीवति तु ४।१।१६३
जीविकोपनिष० १।४।७९
जुसि च ७ ३।८३
जुहोत्यादिभ्य० २।४।७५
जॄव्रश्च्योः क्त्वि० ७।२।५५
जॄस्तम्भुम्रुचुम्लु० ३।१।५८
ज्ञाजनोर्जा ७।३।७९
ज्ञाश्रुस्मृदृशां० १।३।५७
ज्य च ५।३।६१
ज्यादादीयसः ६।४।१६०
ज्योतिरायुषः ८।३।८३
ज्योत्स्नातमि० ५।२।११४
ज्वरत्वरस्रिव्य० ६।४।२०
झ
झयः ५।४।१११

झयः ८।२।१०
झयो होऽन्यतर० ८।४।६२
झरो झरि सवर्णे ८।४।६५
झलां जशोऽन्ते ८।२।३९
झलां जश् झशि ८।४।५३
झलो झलि ८।२।२६
झषस्तथोर्धोऽधः ८।२।४०
झस्य रन् ३।४।१०५
झेर्जुस् ३।४।१०८
झोऽन्तः ७।१।३

ञ

ञीतः क्तः ३।२।१८७

ट

टाङसिङसामिन० ७।१।१२
टिड्ढाणञ्द्वय० ४।१।१५
टित आत्मने० ३।४।७९
टेः ६।४।१५५
टितोऽथुच् ३।३।८९

ठ

ठक्छौ च ४।२।८४
ठस्येकः ७।३।५०

ड

डः सि धुट् ८।३।२९
डति च १।१।२५
ड्वितः क्त्रिः ३।३।८८

ढ

ढकि लोपः ४।१।१३३
ढो ढे लोपः ८।३।१३
ढ्रलोपे पूर्वस्य० ६।३।१११

ण

णलुत्तमो वा ७।१।९१
णिचश्च १।३।७४
णिजां त्रयाणां० ७।४।७५
णिश्रिद्रुस्रु० ३।१।४८
णेरध्ययने वृत्तम् ७।२।२६
णेरनिटि ६।४।५१
णेर्विभाषा ८।४।३०
णो नः ६।१।६५
णौ गमिरबोधने २।४।४६
णौ चङ्युपधाया० ७।४।१
णौ च संश्चङोः २।४।५१
णौ च संश्चङोः ६।१।३१
ण्य आवश्यके ७।३।६५
ण्यासश्रन्थो० ३।३।१०७
ण्वुल्तृचौ ३।१।१३३

त

तङानावात्मने. १।४।१००
तत आगतः ४।३।७४
तत्पुरुषः २।१।२२
तत्पुरुषः समा० १।२।४२
तत्पुरुषस्याङ्गु० ५।४।८६
तत्पुरुषे कृति ६।३।१४
तत्पुरुषोऽनञ्० २।४।१९
तत्प्रकृतवचने ५।४।२१
तत्प्रयोजको० १।४।५४
तत्र जातः ४।३।२५
तत्र तस्येव ५।१।११६
तत्र तेनेदमिति २।२।२७
तत्र भवः ४।३।५३
तत्र विदित इति ५।१।४३
तत्र साधुः ४।४।९८
तत्रोद्धृतममत्रे० ४।२।१४
तत्रोपपदं सप्त० ३।१।९२
तथायुक्तं चानी० १।४।५०
तदधीते तद्वेद ४।२।५९
तदर्थं विकृतेः ५।१।१२
तदर्हति ५।१।६३
तदर्हम् ५।१।११७
तदस्मिन्नस्ती० ४।२।६७
तदस्य परिमाणम् ५।१।५७
तदस्य संजातं० ५।२।३६
तदस्यास्त्य० ५।२।९४
तदोः सः सा० ७।२।१०६
तदो दा च ५।३।१९
तद् गच्छति पथि० ४।३।८५
तद्धितश्चासर्व० १।१।३८
तद्धिताः ४।१।७६
तद्धितार्थोत्तर० २।१।५१
तद्धितेष्वचामा० ७।२।११७
तद्वहति रथयुग० ४।४।७६
तनादिकृञ्भ्य० ३।१।७९
तनादिभ्यस्त० २।४।७९
तनूकरणे तक्षः ३।१।७६
तनोतेर्यकि ६।४।४४
तन्त्रादचिराप० ५।२।७०
तपःसहस्राभ्यां ५।२।१०२
तपरस्तत्कालस्य १।१।७०
तपस्तपःकर्म० ३।१।८८
तपोऽनुतापे ३।१।६५
तयोरेव कृत्य० ३।४।७०
तरति ४।४।५
तरप्तमपौ घः १।१।२२
तवकममकावेक० ४।३।३
तवममौ ङसि ७।२।९६

तव्यत्तव्यानीयरः ३।१।९६
तसिलादिष्वाकृ ६।३।३५
तसेश्च ५।३।८
तस्थस्थमिपां० ३।४।१०१
तस्माच्छसो नः ६।१।१०३
तस्मादित्युत्तरस्य १।१।६७
तस्मान्नुडचि ६।३।७४
तस्मान्नुड् द्विहलः ७।४।७१
तस्मिन्नणि च ४।३।२
तस्मिन्निति १।१।६६
तस्मै हितम् ५।१।५
तस्य निवासः ४।२।६९
तस्य परमाम्रेडि० ८।१।२
तस्य पूरणे डट् ५।२।४८
तस्य भावस्त्व० ५।१।११९
तस्य लोपः १।३।९
तस्य विकारः ४।३।१३४
तस्य समूहः ४।२।३७
तस्येदम् ४।३।१२०
तस्येश्वरः ५।१।४२
तान्येकवचन० १।४।१०२
तासस्त्योर्लोपः ७।४।५०
तासि च क्लृपः ७।२।६०
तिङश्च ५।३।५६
तिङस्त्रीणित्रीणि० १।४।१०१
तिङ्शित्सार्व ३।४।११३
ति च ७।४।८९
तितुत्रतथसिसुसर० ७।२।९
तिप्तस्झिसिप्थ० ३।४।७८
तिप्यनस्तेः ८।२।७३
तिरसस्तिर्यलोपे ६।३।९४
तिरसोऽन्तर्० ८।३।४२
तिरोऽन्तर्धौ १।४।७१
तिष्ठतेरित् ७।४।५
तिष्ठद्गुप्रभृतीनि० २।१।१७
तीषसहलुभरुष० ७।२।४८
तुदादिभ्यः शः ३।१।७७
तुन्दादिभ्य० ५।२।११७
तुन्दिवलिवटे० ५।२।१३९
तुभ्यमह्यौ ङयि ७।२।९५
तुमर्थाच्च भावव० २।३।१५
तुमुन्ण्वुलौ क्रि० ३।३।१०
तुरिष्ठेमेयःसु ६।४।१५४
तुरुस्तुशम्यमः० ७।३।९५
तुल्यार्थैरतुलो० २।३।७२
तुल्यास्यप्रयत्नं० १।१।९
तुह्योस्तातङ्ङा० ७।१।३५
तृजकाभ्यां कर्तरि २।२।१५
तृज्वत्क्रोष्टुः ७।१।९५
तृणह इम् ७।३।९२
तृणे च जातौ ६।३।१०३
तृतीया तत्कृता० २।१।३०
तृतीयादिषु भा० ७।१।७४
तृतीयार्थे १।४।८५
तृन् ३।२।१३५
तृषिमृषिकृशेः० १।२।२५
तृफलभजत्रपश्च ६।४।१२२
ते तद्राजाः ४।१।१७४
तेन क्रीतम् ५।१।३७
तेन तुल्यं क्रि० ५।१।११५
तेन दीव्यति ख० ४।४।२
तेन निर्वृत्तम् ४।२।६८
तेन निर्वृत्तम् ५।१।७९
तेन प्रोक्तम् ४।३।१०१
तेन रक्तं रागात् ४।२।१
तेन वित्तश्चु० ५।२।२६
तेन सहेति तुल्य० २।२।२८
ते प्राग्धातोः १।४।८०
तेमयावेकवचन० ८।१।२२
तोः षि ८।४।४३
तोर्लि ८।४।६०
तौ सत् ३।२।१२७
त्यदादिषु दृशो० ३।२।६०
त्यदादीनामः ७।२।१०२
त्यदादीनि च १।१।७४
त्यदादीनि सर्वै० १।२।७२
त्रसिगृधिधृषि० ३।२।१४०
त्रिककुत्पर्वते ५।४।१४७
त्रिचतुरोः स्त्रियां० ७।२।९९
त्रेः संप्रसारणं च ५।२।५५
त्रेस्त्रयः ६।३।४८
त्रेस्त्रयः ७।१।५३
त्वमावेकवचने ७।२।९७
त्वामौ द्वितीयायाः ८।१।२३
त्वाहौ सौ ७।२।९४

थ

थलि च सेटि ६।४।१२१
थासः से ३।४।८०
थो न्थः ७।१।८७

द

दंशसञ्जस्वञ्जां० ६।४।२५
दक्षिणादाच् ५।३।३६
दक्षिणापश्चात्पुर० ४।२।९८

दण्डादिभ्यो यत् ५।१।६६
दधस्तथोश्च ८।२।३८
दधातेर्हिः ७।४।४२
दध्नष्ठक् ४।२।१८
दन्त उन्नत० ५।२।१०६
दन्तशिखात्सं० ५।२।११३
दम्भ इच्च ७।४।५६
दयायासश्च ३।१।३७
दश्च ७।२।१०९
दश्च ८।२।७५
दस्ति ६।३।१२४
दाणश्च सा चेच्च० १।३।५५
दादेर्धातोर्घः ८।२।३२
दाधा घ्वदाप् १।१।२०
दाधेट्सिशदस० ३।२।१५९
दामीश्च ५।३।१८
दाम्नीशसयुयुज० ३।२।१८२
दिक्पूर्वपदाद० ४।२।१०७
दिक्संख्ये संज्ञा० २।१।५०
दिगादिभ्यो० ४।३।५४
दिङ्नामान्यन्त० २।२।२६
दित्यदित्यादि० ४।१।८५
दिव उत् ६।१।१३१
दिव औत् ७।१।८४
दिवः कर्म च १।४।४३
दिवादिभ्यः ३।१।६९
दिवो द्यावा ६।३।२९
दिवोऽविजिगी० ८।२।४९
दीपजनबुधपूरि० ३।१।६१
दीर्घ इणः किति ७।४।६९
दीर्घं च १।४।१२
दीर्घाज्जसि च ६।१।१०५
दीर्घोऽकितः ७।४।८३
दीर्घो लघोः ७।४।९४
दुष्कुलाड्ढक् ४।१।१४२
दुहश्च ३।१।६३
दूराद्धूते च ८।२।८४
दृग्दृशवतुषु ६।३।८९
दृढः स्थूलबल० ७।२।२०
दृतिकुक्षिकल० ४।३।५६
दृशेः क्वनिप् ३।२।९४
देयमृणे ४।३।४७
देवताद्वन्द्वे च ६।३।२६
देवात्तल् ५।४।२७
दो दद्घोः ७।४।४६
द्यतिस्यतिमा० ७।४।४०
द्यावापृथिवीशु० ४।२।३२
द्युतिस्वाप्योः० ७।४।६७
द्युद्भ्यो लुङि १।३।९१
द्युद्रुभ्यां मः ५।२।१०८
द्युप्रागपागुदक्प्र० ४।२।१०१
द्रोश्च० ४।३।१६१
द्वन्द्वं रहस्यम० ८।१।१५
द्वन्द्वश्च प्राणितूर्य० २।४।२
द्वन्द्वाच्चुदषहा० ५।४।१०६
द्वन्द्वे घि २।२।३२
द्वारादीनां च ७।३।४
द्विगुरेकवचनम् २।४।१
द्विगुश्च २।१।२३
द्विगोः ४।१।२१
द्विगोर्लुगनपत्ये ४।१।८८
द्वितीयतृतीयच० २।२।३
द्वितीयाटौस्स्वेनः २।४।३४
द्वितीयायां च ७।२।८७
द्वितीयाश्रिता २।१।२४
द्वित्रिचतुर्भ्यः० ५।४।१८
द्वित्रिपूर्वादण् च ५।१।३६
द्वित्रिभ्यां ५।४।११५
द्वित्रिभ्यां तय० ५।२।४३
द्वित्र्योश्च धमुञ् ५।३।४५
द्विर्वचनेऽचि १।१।५९
द्विवचनविभ० ५।३।५७
द्विषत्परयोस्ता० ३।२।३९
द्विषश्च ३।४।११२
द्विस्त्रिश्चतुरि० ८।३।४३
द्वीपादनुसमुद्रं ४।३।१०
द्वेस्तीयः ५।२।५४
द्वैपवैयाघ्रादञ् ४।२।१२
द्व्यन्तरुपसर्गेभ्यो० ६।३।९७
द्व्यष्टनः संख्याया० ६।३।४७
द्व्येकयोर्द्विवचनै० १।४।२२

ध

धः कर्मणि ष्ट्रन् ३।२।१८१
धनुषश्च ५।४।१३२
धर्मं चरति ४।४।४१
धर्मपथ्यर्थन्या ४।४।९२
धर्मशीलवर्णा० ५।२।१३२
धातुसंबन्धे प्रत्य० ३।४।१
धातोः ३।१।९१
धातोः कर्मणः० ३।१।७

धातोरेकाचो० ३।१।२२
धात्वादेः षः सः ६।१।६४
धान्यानां भवने ५।२।१
धारेरुत्तमर्णः १।४।३५
धि च ८।२।२५
धुरो यड्ढकौ ४।४।७७
धृषिशसी वैया० ७।२।१९
ध्रुवमपायेऽपादा. १।४।२४

न

न कपि ७।४।१४
न कर्मव्यतिहारे ७।३।६
न कवतेर्यङि ७।४।६३
न क्त्वा सेट् १।२।१८
न क्रोडादिबह्वचः ४।१।५६
न क्वादेः ७।३।५९
नक्षत्रे च लुपि २।३।४५
नक्षत्रेण युक्तः० ४।२।३
नखमुखात्संज्ञा० ४।१।५८
न ङिसंबुद्ध्योः ८।२।८
न चवाहाहैवयुक्ते ८।१।२४
नञ् २।२।६
नञस्तत्पुरुषात् ५।४।७१
नञ्दुःसुभ्यो० ५।४।१२१
नडशादाड्ड्वल्० ४।२।८८
नडादिभ्यः फक् ४।१।९९
न तिसृचतसृ ६।४।४
नते नासिकायाः० ५।२।३१
न दधिपयआदीनि २।४।१४
नदीपौर्णमास्या० ५।४।११०
नदीभिश्च २।१।२०
न दुहस्नुनमां ३।१।८९
न दृशः ३।१।४७
नद्यादिभ्यो ढक् ४।२।९७
नद्यां मतुप् ४।२।८५
नद्यृतश्च ५।४।१५३
न धातुलोप आर्ध० १।१।४
न ध्याख्यापॄमू० ८।२।५७
न नञ्पूर्वात्तत्पु० ५।१।१२१
न निर्धारणे २।२।१०
नन्दिग्रहिपचा० ३।१।१३४
नन्द्राः संयोगादयः ६।१।३
न पदान्तद्विर्व० १।१।५८
न पदान्ताट्टोर० ८।४।४२
नपुंसकस्य झलचः ७।१।७२
नपुंसकाच्च ७।१।१९
नपुंसकादन्यत० ५।४।१०९
नपुंसके भावे ३।३।११४
न पूजनात् ५।४।६९
न भकुर्छुराम् ८।२।७९
न भाभूपूकमि० ८।४।३४
न भूसुधियोः ६।४।८५
न भ्राण्नपान्न० ६।३।७५
नमःस्वस्तिस्वा० २।३।१६
नमस्पुरसोर्गत्योः ८।३।४०
न माङ्योगे ६।४।७४
नमिकम्पिस्म्य० ३।२।१६७
न मु ने ८।२।३
नमोवरिवश्चित्र० ३।१।१९
न यद्यनाकाङ्क्षे ३।४।२३
न यासयोः ७।३।४५
न य्वाभ्यां पदा० ७।३।३
न रुधः ३।१।६४
नरे संज्ञायाम् ६।३।१२९
न लिङि ७।२।३९
न लुट् ८।१।२९
न लुमताङ्गस्य १।१।६३
न लोकाव्यय० २।३।६९
न लोपः प्रातिपदि० ८।२।७
नलोपः सुप्स्वर० ८।२।२
नलोपो नञः ६।३।७३
न ल्यपि ६।४।६९
न विभक्तौ तुस्माः १।३।४
न वृद्भ्यश्चतुर्भ्यः ७।२।५९
न शसददवादि० ६।४।१२६
नशेः षान्तस्य ८।४।३६
नशेर्वा ८।२।६३
नश्च ८।३।३०
नश्चापदान्तस्य० ८।३।२४
नश्छव्यप्रशान् ८।३।७
न षट्स्वस्रादिभ्यः ४।१।१०
न संख्यादेः स० ५।४।८९
न संप्रसारणे सं० ६।१।३७
न सुदुर्भ्यां केव० ७।१।६८
नहिवृतिवृषि० ६।३।११६
नहो धः ८।२।३४
नाग्लोपिशास्वृ० ७।४।२
नाज्झलौ १।१।१०
नादिचि ६।१।१०४
नान्योऽज्ञः १।३।५८
नान्तादसंख्या० ५।२।४९
नाभ्यस्तस्याचि० ७।३।८७
नाभ्यस्ताच्छतुः ७।१।७८

नामि ६।४।३
नाव्ययीभावाद० २।४।८३
नासिकोदरौ० ४।१।५५
निकटे वसति ४।४।७३
निगरणचलना० १।३।८७
नित्यं करोतेः ६।४।१०८
नित्यं कौटिल्ये ३।१।२३
नित्यं ङितः ३।४।९९
नित्यं शतादिमा० ५।२।५७
नित्यं सपत्न्या० ४।१।२५
नित्यं स्मयतेः ६।१।५७
नित्यं हस्ते पा० १।४।७७
नित्यमसिच्प्र० ५।४।१२२
नित्यवीप्सयोः ८।१।४
निनदीभ्यां ८।३।८९
निपात एकाजनाङ् १।१।१४
निपानमाहावः ३।३।७४
निरः कुषः ७।२।४६
निर्वाणोऽवाते ८।२।५०
निवासचितिशरी० ३।३।४१
निष्ठा २।२।३६
निष्ठा ३।२।१०२
निष्ठायां सेटि ६।४।५२
निष्ठा शीङ्स्वि० १।२।१९
नीग्वञ्चुस्रंसु० ७।४।८४
नुगतोऽनुनासि० ७।४।८५
नुदविदोन्दत्रा० ८।२।५६
नुम्विसर्जनीय० ८।३।५८
नॄ च ६।४।६
नॄन्पे ८।३।१०
नेटि ७।२।४
नेड्यलिटि रधेः ७।१।६२
नेड्वशि कृति ७।२।८
नेदमदसोरकोः ७।१।११
नेयङुवङ्स्थाना० १।४।४
नेर्गदनदपतपद० ८।४।१७
नेर्बिडज्बिरीस० ५।२।३२
नेर्विशः १।३।१७
नोदात्तोपदेश० ७।३।३४
नोपधात्थफा० १।२।२३
नोपधायाः ६।४।७
नौवयोधर्मविष० ४।४।९१
न्यग्रोधस्य च के० ७।३।५
न्यङ्क्वादीनां च ७।३।५३

प

पक्षात्तिः ५।२।२५
पङ्क्तिविंशति० ५।१।५९
पङ्क्तोश्च ४।१।६८
पचो वः ८।२।५२
पञ्चद्दशतौ वर्गे ५।१।६०
पञ्चमी भयेन २।१।३७
पञ्चमी विभक्ते २।३।४२
पञ्चम्यपाङ्परिभिः २।३।१०
पञ्चम्या अत ७।१।३१
पञ्चम्याः स्तोका० ६।३।२
पञ्चम्यामजातौ ३।२।९८
पञ्चम्यास्तसिल् ५।३।७
पतः पुम ७।४।१९
पतिः समास एव १।४।८
पत्यन्तपुरोहि० ५।१।१२८
पत्युर्नो यज्ञसं० ४।१।३३
पथः ष्कन् ५।१।७५
पथि च छन्दसि ६।३।१०८
पथिमथ्यृभुक्षा० ७।१।८५
पथो विभाषा ५।४।७२
पथ्यतिथिवस० ४।४।१०४
पदरुजविशस्पृ० ३।३।१६
पदव्यवायेऽपि ८।४।३८
पदस्य ८।१।१६
पदात् ८।१।१७
पदान्तस्य ८।४।३७
पदान्तस्यान्यतर० ७।३।९
पद्दन्नोमास्हृ० ६।१।६३
पन्थो ण नित्यम् ५।१।७६
परः सन्निकर्षः १।४।१०९
परवल्लिङ्गं द्वन्द्व० २।४।२६
परश्च ३।१।२
परश्वधाठञ्च ४।४।५८
परस्मैपदानां० ३।४।८२
परस्य च ६।३।८
पराजेरसोढः १।४।२६
परिक्रयणे संप्र० १।४।४४
परिखाया ढञ् ५।१।१७
परनिविभ्यः ८।३।७०
परिवृतो रथः ४।२।१०
परिव्यवेभ्यः क्रियः १।३।१८
परेर्वर्जने ८।१।५
परेश्च घाङ्कयोः ८।२।२२
परोक्षे लिट् ३।१।११५
पर्यभिभ्यां च ५।३।९

पर्वताच्च ४।२।१४३
पश्चात् ५।३।३२
पश्यार्थैश्चाना० ८।१।२५
पाघ्राध्माधेट्० ३।१।१३७
पाघ्राध्मास्था० ७।३।७८
पाण्डुकम्बला० ४।२।११
पात्रेसमितादयश्च २।१।४८
पाथोनदीभ्यां० ४।४।१११
पादः पत् ६।४।१३०
पादस्य लोपो० ५।४।१३८
पादार्घाभ्यां च ५।४।२५
पानं देशे ८।४।९
पापाणके कुत्सितैः २।१।५४
पारेमध्ये षष्ठ्या २।१।१८
पाशादिभ्यो यः ४।२।४९
पिता मात्रा १।२।७०
पितुर्यच्च ४।३।७९
पितृव्यमातुल० ४।२।३६
पितृष्वसुश्छण् ४।१।१३२
पिष्टाच्च ४।३।१४६
पुंयोगादाख्यायाम् ४।१।४८
पुंवत्कर्मधारय० ६।३।४२
पुंसि संज्ञायां० ३।३।११८
पुंसोऽसुङ् ७।१।८९
पुगन्तलघूपधस्य ७।३।८६
पुमः खय्यम्परे ८।३।६
पुमान्स्त्रिया १।२।६७
पुरुषहस्तिभ्या० ५।२।३८
पुरोऽव्ययम् १।४।६७
पुषादिद्युता० ३।१।५५
पुष्करादिभ्यो० ५।२।१३५
पूङः क्त्वा च १।२।२२
पूङश्च ७।२।५१
पूरणगुणसुहि० २।२।११
पूरणाद्भागे ५।३।४८
पूर्णाद्विभाषा ५।४।१४९
पूर्वकालैकसर्व० २।१।४९
पूर्वत्रासिद्धम् ८।२।१
पूर्वपदात्संज्ञाया० ८।४।३
पूर्ववत्सनः १।३।६२
पूर्वसदृशसमो० २।१।३१
पूर्वादिनिः ५।२।८६
पूर्वादिभ्यो नव० ७।१।१६
पूर्वाधरावराणा० ५।३।३९
पूर्वापरप्रथमचरम० २।१।५८
पूर्वापराधरोत्तर० २।२।१
पूर्वोऽभ्यासः ६।१।४
पृथग्विनाना० २।३।३२
पृथ्वादिभ्य० ५।१।१२२
पृषोदरादीनि ६।३।१०९
पोटायुवतिस्तो० २।१।६५
पोरदुपधात् ३।१।९८
प्रकारवचने ५।३।६९
प्रकारवचने थाल् ५।३।२३
प्रज्ञादिभ्यश्च ५।४।३८
प्रतिः प्रतिनि० १।४।९२
प्रतिनिधिप्रति० २।३।११
प्रतिस्तब्धनिस्त० ८।३।११४
प्रत्ययः ३।१।१
प्रत्ययलोपे प्रत्य० १।१।६२
प्रत्ययस्थात्का० ७।३।४४
प्रत्ययस्य लुक् १।१।६१
प्रत्ययोत्तरपद० ७।२।९८
प्रत्याङ्भ्यां० १।३।५९
प्रत्याङ्भ्यां० १।४।४०
प्रथमयोः पूर्व० ६।१।१०२
प्रथमानिर्दिष्टं० १।२।४३
प्रथमायाश्च ७।२।८८
प्रनिरन्तःशरेक्षु० ८।४।५
प्रभवति ४।३।८३
प्रभौ परिवृढः ७।२।२१
प्रमाणे द्वयस० ५।२।३७
प्रयच्छति गर्ह्यम् ४।४।३०
प्रयाजानुयाजौ ७।३।६२
प्रयोज्यनियो० ७।३।६८
प्रशस्यस्य श्रः ५।३।६०
प्रष्ठोऽग्रगामिनि ८।३।९२
प्रस्त्योऽन्यतर० ८।२।५४
प्रहरणम् ४।४।५७
प्राक् कडारात् २।१।३
प्राक् क्रीताच्छः ५।१।१
प्राक्सितादड्० ८।३।६३
प्रागिवात्कः ५।३।७०
प्राग्घिताद्यत् ४।४।७५
प्राग्दिशो विभक्तिः ५।३।१
प्राग्दीव्यतोऽण् ४।१।८३
प्राग्रीश्वरान्निपाताः १।४।५६
प्राग्वतेष्ठञ् ५।१।१८
प्राग्वहतेष्ठक् ४।४।१
प्राणिस्थादातो० ५।२।९६
प्रातिपदिकार्थ० २।३।४६
प्रादयः १।४।५८
प्राद्वहः १।३।८१

प्राध्वं बन्धने १।४।७८
प्राप्तापन्ने च द्वि० २।२।४
प्रायभवः ४।३।३९
प्रावृट्शरत्काल० ६।३।१५
प्रावृष एण्यः ४।३।१७
प्रियवशे वदः ३।२।३८
प्रियस्थिरस्फि० ६।४।१५७
प्रे द्रुस्तुस्रुवः ३।३।२७
प्रंषातिसर्गप्राप्त०
३।३।१६३
प्रोक्ताल्लुक् ४।२।६४
प्रोपाभ्यां समर्था०
१।३।४२
प्लक्षादिभ्योऽण् ४।३।१६४
प्लुतप्रगृह्या० ६।१।१२५
प्वादीनां ह्रस्वः ७।३।८०
फ
फले लुक् ४।३।१६३
फाण्टाहृतिमि० ४।१।१५०
फेनादिलच्च ५।२।९९
ब
बलादिभ्यो म० ५।२।१३६
बहुगणवतुडति १।१।२३
बहुवचनस्य ८।१।२१
बहुवचने झल्येत् ७।३।१०३
बहुव्रीहौ ५।४।११३
बहुव्रीहौ सक्थ्य० ५।४।७३
बहुषु बहुवचनम् १।४।२१
बहोर्लोपो भू च ६।४।१५८
बह्वल्पार्थाच्छ० ५।४।४२
बह्वादिभ्यश्च ४।१।४५
बाह्वन्तात्संज्ञा० ४।१।६७
बाह्वादिभ्यश्च ४।१।९६
बिभेतेर्हेतुभये ६।१।५६
बुधयुधनशज० १।३।८६
ब्रह्मभ्रूणवृत्रेषु ३।२।८७
ब्रह्महस्तिभ्यां० ५।४।७८
ब्रुव ईट् ७।३।९३
ब्रुवः पञ्चाना० ३।४।८४
ब्रुवो वचिः २।४।५३
भ
भक्ष्येण मिश्री० २।१।३५
भञ्जभासमिदो०
३।२।१६१
भञ्जेश्च चिणि ६।४।३३
भवतष्ठक्छसौ ४।२।११५
भवतेरः ७।४।७३
भविष्यति गम्यादयः
३।३।३
भव्यगेयप्रवचनी० ३।४।६८
भस्य ६।४।१२९
भस्य टेर्लोपः ७।१।८८
भावकर्मणोः १।३।१३
भाववचनाश्च ३।३।११
भावे ३।३।१८
भासनोपसंभा० १।३।४७
भिक्षादिभ्योऽण् ४।२।३८
भित्तं शकलम् ८।२।५९
भियः क्रुक्लुकनौ ३।२।१७४
भियोऽन्यतर० ६।४।११५
भियो हेतुभये ७।३।४०
भीत्रार्थानां भयहेतुः
१।४।२५
भीरोः स्थानम् ८।३।८१
भीस्म्योर्हेतुभये १।३।६८
भीह्रीभृहुवां ३।१।३९
भुजन्युब्जौ ७।३।६१
भुजोऽनवने १।३।६६
भुवः प्रभवः १।४।३१
भुवश्च ३।२।१३८
भूतपूर्वे चरट् ५।३।५३
भूते ३।२।८४
भूते च ३।३।१४०
भूतेऽपि दृश्यन्ते ३।३।२
भूवादयो धातवः १।३।१
भूषणेऽलम् १।४।६४
भूसुवोस्तिङि ७।३।८८
भृञामित् ७।४।७६
भोज्यं भक्ष्ये ७।३।६९
भोभगोअघो० ८।३।१७
भ्यसो भ्यम् ७।१।३०
भ्रस्जो रोपध० ६।४।४७
भ्राजभासधु० ३।२।१७७
भ्राजभासभाष० ७।४।३
भ्रातुर्व्यच्च ४।१।१४४
भ्रातृपुत्रौ स्व० १।२।६८
म
मघवा बहुलम् ६।४।१२८
मतिबुद्धिपूजा० ३।२।१८८
मध्यान्मः ४।३।८
मध्येपदेनिवचने १।४।७६
मध्वादिभ्यश्च ४।२।८६
मन्यकर्मण्यना० २।३।१७
मपर्यन्तस्य ७।२।९१
मय उञो वो वा ८।३।३३
मयूरव्यंसकाद० २।१।७२

मस्जिनशोर्झलि ७।१।६०
महाकुलाद० ४।१।१४१
महेन्द्राद्घाणी च ४।२।२९
माङि लुङ् ३।३।१७५
मातुःपितुर्भ्यांम० ८।३।८५
मातुरुत्संख्या० ४।१।११५
मातृपितृभ्यां० ८।३।८४
मातृष्वसुश्च ४।१।१३४
मादुपधायाश्च ८।२।९
मान्वधदान्शान्० ३।१।६
मितां ह्रस्वः ६।४।९२
मित्रे चर्षौ ६।३।१३०
मिद्चोऽन्त्या० १।१।४७
मिदेर्गुणः ७।३।८२
मीनातिमिनो० ६।१।५०
मीनातेर्निगमे ७।३।८१
मुखनासिकावच० १।१।८
मुचोऽकर्मकस्य ७।४।५७
मुण्डमिश्रश्ल० ३।१।२१
मृजेर्वृद्धिः ७।२।११४
मृडमृदगुध० १।२।७
मृदस्तिकन् ५।४।३९
मृषस्तिति० १।२।२०
मेर्निः ३।४।८९
मोऽनुस्वारः ८।३।२३
मो नो धातोः ८।२।६४
मो राज्ञि समः ८।३।२५
म्रियतेर्लुङ्लि० १।३।६१
म्वोश्च ८।२।६५

य

यः सौ ७।२।११०
यङश्चाप् ४।१।७४
यङि च ७।४।३०
यङोऽचि च २।४।७४
यङो वा ७।३।९४
यचि भम् १।४।१८
यजयाचयत० ३।३।९०
यजयाचरुचप्रव० ७।३।६६
यञिञोश्च ४।१।१०१
यतश्च निर्धारणम् २।३।४१
यत्तदेतेभ्यः परि० ५।२।३९
यथासंख्यमनु० १।३।१०
यथासादृश्ये २।१।७
यथास्वे यथा० ८।१।१४
यमरमनमातां० ७।२।७३
यमो गन्धने १।२।१५
यरोऽनुनासिके० ८।४।४५
यवयवकषष्टिका० ५।२।३
यस्मात्प्रत्ययवि० १।४।१३
यस्य च भावेन० २।३।३७
यस्य चायामः २।१।१६
यस्य विभाषा ७।२।१५
यस्य हलः ६।४।४९
याजकादिभिश्च २।२।९
याडापः ७।३।११३
याप्ये पाशप् ५।३।४७
यावति विन्द० ३।४।३०
यावदवधारणे २।१।८
यावादिभ्यः कन् ५।४।२९
यासुट् परस्मै० ३।४।१०३
युजेरसमासे ७।१।७१
युवाल्पयोः कन० ५।३।६४
युवावौ द्विव० ७।२।९२
युवोरनाकौ ७।१।१
युष्मदस्मदोः ८।१।२०
युष्मदस्मदोरना० ७।२।८६
युष्मदस्मदोरन्य० ४।३।१
युष्मदस्मद्भ्यां ७।१।२७
युष्मद्युपपदे स० १।४।१०५
यूनस्तिः ४।१।७७
यूयवयौ जसि ७।२।९३
यूस्त्र्याख्यौ नदी १।४।३
ये च ६।४।१०९
ये चाभावकर्म० ६।४।१६८
येनविधिस्तदन्त० १।१।७२
येनाङ्गविकारः २।३।२०
ये यज्ञकर्मणि ८।२।८८
ये विभाषा ६।४।४३
येषां च विरोधः २।४।९
योऽचि ७।२।८९

र

र ऋतो हलादे० ६।४।१६१
रजःकृष्यासु० ५।२।११२
रञ्जेश्च ६।४।२६
रथवदयोश्च ६।३।१०२
रथाद्यत् ४।३।१२१
रदाभ्यां निष्ठातो० ८।२।४२
रधादिभ्यश्च ७।२।४५
रधिजभोरचि ७।१।६१
रभेरशब्लिटोः ७।१।६३
रलो व्युपधाद्ध० १।२।२६
रषाभ्यां नो णः ८।४।१
राजदन्तादिषु० २।२।३१
राजन्वान्सौराज्ये८।२।१४
राजश्वशुराद्यत् ४।१।१३७

राजाहःसखि० ५।४।९१
राजाह्नाहाः पुं० २।४।२९
रात्सस्य ८।२।२४
राधीक्ष्योर्यस्य० १।४।३९
रायो हलि ७।२।८५
राल्लोपः ६।४।२१
राष्ट्रावारपारा० ४।२।९३
रिङ् शयग्लिङ्क्षु ७।४।२८
रि च ७।४।५१
रीगृदुपधस्य च ७।४।९०
रीङ् ऋतः ७।४।२७
रुग्रिकौ च लुकि ७।४।९१
रुच्यर्थानां प्रीय० १।४।३३
रुदविदमुषग्रहि० १।२।८
रुदश्च पञ्चभ्यः ७।३।९८
रुदादिभ्यः सा० ७।२।७६
रुधादिभ्यः श्नम् ३।१।७८
रुष्यमत्वरसंघु० ७।२।२८
रुहः पोऽन्यतर० ७।३।४३
रेवत्यादिभ्य० ४।१।१४६
रोः सुपि ८।३।१६
रो रि ८।३।१४
रोऽसुपि ८।२।६९
र्वोरुपधाया० ८।२।७६

ल

लः कर्मणि च ३।४।६९
लः परस्मैपदम् १।४।९९
लक्षणे जायाप० ३।२।५२
लक्षणेत्थंभूता० १।४।९०
लक्षणेनाभिप्रती० २।१।१४
लङः शाकटायन०
३।४।१११
लटः शतृशान० ३।२।१२४
लट् स्मे ३।२।११८
लभेश्च ७।१।६४
लवणाल्लुक् ४।४।२४
लशक्वतद्धिते १।३।८
लषपतपदस्था० ३।२।१५४
लस्य ३।४।७७
लाक्षारोचनाट्ठक् ४।२।२
लिङः सलोपोऽन० ७।२।७९
लिङः सीयुट् ३।४।१०२
लिङाशिषि ३।४।११६
लिङ्निमित्ते ३।३।१३९
लिङ्सिचावात्म० १।२।११
लिङ्सिचोरात्म० ७।२।४२
लिटः कानज्वा ३।२।१०६
लिटस्तझयोरेशि० ३।४।८१
लिटि धातोरनभ्या०
६।१।८
लिट् च ३।४।११५
लिट्यन्यतरस्याम् २।४।४०
लिट्यभ्यासस्यो० ६।१।१७
लिपिसिचिह्वश्च ३।१।५३
लीलोर्नुग्लुकाव० ७।३।३९
लुक्तद्धितलुकि १।२।४९
लुग्वा दुहदिह० ७।३।७३
लुङ् ३।२।११०
लुङि च २।४।४३
लुङ्लङ्लृङ्० ६।४।७१
लुङ्सनोर्घस्लृ २।४।३७
लुटः प्रथमस्य० २।४।८५
लुटि च क्लृपः १।३।९३
लुपसदचरजप० ३।१।२४
लुप् च ४।३।१६६
लुभो विमोहने ७।२।५४
लृटः सद्वा ३।३।१४
लृट् शेषे च ३।३।१३
लोकसर्वलोका० ५।१।४४
लोटो लङ्वत् ३।४।८५
लोट् च ३।३।१६२
लोपः पिबतेरी० ७।४।४
लोपः शाकल्य० ८।३।१९
लोपश्चास्यान्य० ६।४।१०७
लोपो यि ६।४।११८
लोपो व्योर्वलि ६।१।६६
लोमादिपामा० ५।२।१००
लोहितादिडा० ३।१।१३
ल्युट् च ३।३।११५
ल्वादिभ्यः ८।२।४४

व

वच उम् ७।४।२०
वचिस्वपियजादी०
६।१।१५
वचोऽशब्दसंज्ञा० ७।३।६७
वञ्चिलुञ्च्यृतश्च १।२।२४
वञ्चेर्गतौ ७।३।६३
वतोरिड्वा ५।१।२३
वत्सोक्षाश्वर्षभे० ५।३।९१
वदव्रजहलन्तस्या० ७।२।३
वनं पुरगामिश्रका० ८।४।४
वमोर्वा ८।४।२३
वयसि प्रथमे ४।१।२०
वरणादिभ्यश्च ४।२।८२
वर्णदृढादिभ्यः ५।१।१२३
वर्णाद् ब्रह्मचारिणि
५।२।१३४

वर्णो वर्णेन २।१।६९
वर्तमानसामी० ३।३।१३१
वर्तमाने लट् ३।२।१२३
वर्षाभ्यष्ठक ४।३।१८
वर्षाभ्वश्च ६।४।८४
वशं गतः ४।४।८६
वसतिक्षुधोरिट् ७।२।५२
वसन्ताच्च ४।३।२०
वसन्तादिभ्यष्ठक् ४।२।६३
वसुस्रंसुध्वंस्वन० ८।२।७२
वसोःसंप्रसार० ६।४।१३१
वस्वेकाजाद्घसाम् ७।२।६७
वा क्यषः १।३।९०
वा गमः १।२।१३
वाचंयमपुरं० ६।३।६९
वाचि यमो व्रते ३।२।४०
वाचो ग्मिनिः ५।२।१२४
वाचो व्याहृता० ५।४।३५
वातातीसारा० ५।२।१२९
वा दान्तशान्त० ७।२।२७
वा द्रुहमुहष्णुह० ८।२।३३
वा नपुंसकस्य ७।१।७९
वा निसनिक्षनि० ८।४।३३
वान्तो यि प्रत्यये ६।१।७९
वान्यस्य संयोगा ६।४।६८
वा पदान्तस्य ८।४।५९
वा बहूनां जाति० ५।३।९३
वा भावकरणयोः ८।४।१०
वा भ्राशभ्लाश० ३।१।७०
वामदेवाड्ड्यड्ड्यौ ४।२।९
वामि १।४।५
वाम्शसोः ६।४।८०
वाय्वृतुपित्रुषसो ४।२।३१
वारणार्थानामी० १।४।२७
वा लिटि २।४।५५
वावसाने ८।४।५६
वा शरि ८।३।३६
वा संज्ञायाम् ५।४।१३३
वासरूपोऽस्त्रि० ३।१।९४
वाह ऊठ् ६।४।१३२
वाहनमाहितात् ८।४।८
वाहिताग्न्यादिषु २।२।३७
विंशत्यादिभ्य० ५।२।५६
विकुशमिपरिभ्या० ८।३।९६
विज इट् १।२।२
वित्तो भोगप्रत्य ८।२।५८
विदांकुर्वन्त्वित्य० ३।१।४१
विदिभिदिच्छि० ३।२।१६२
विदूराञ्ञ्यः ४।३।८४
विदेः शतुर्वसुः ७।१।३६
विदो लटो वा ३।४।८३
विद्यायोनिसंब० ४।३।७७
विधिनिमन्त्र० ३।३।१६१
विनञ्भ्यां ना० ५।२।२७
विनयादिभ्यष्ठक् ५।४।३४
विन्मतोर्लुक् ५।३।६५
विपराभ्यां जेः १।३।१९
विप्रतिषेधे परं कार्यम् १।४।२
विभक्तिश्च १।४।१०४
विभाषा २।१।११
विभाषा कृञि १।४।७२
विभाषा कृञि १।४।९८
विभाषा कृवृषोः ३।१।१२०
विभाषा गमहन० ७।२।६८
विभाषा ग्रहः ३।१।१४३
विभाषा घ्राधे० २।४।७८
विभाषा चत्वारि० ६।३।४९
विभाषा चिण्ण० ७।१।६९
विभाषा चेः ७।३।५८
विभाषा तृतीया० ७।१।९७
विभाषा धेट्श्व्योः ३।१।४९
विभाषा पुरुषे ६।३।१०६
विभाषा फाल्गु० ४।२।२३
विभाषा बहोर्धा ५।४।२०
विभाषा भावा० ७।२।१७
विभाषा लुङ्लृङोः २।४।५०
विभाषावरस्य ५।३।४१
विभाषा विप्रलापे १।३।५०
विभाषा वेष्टिचे० ७।४।९६
विभाषा श्वेः ६।१।३०
विभाषा सपूर्वस्य ४।१।३४
विभाषा सुपो० ५।३।६८
विभाषा सृजिदृशोः ७।२।६५
विभाषेटः ८।३।७९
विभाषोपयमने १।२।१६
विभाषौषधिवन० ८।४।६
विरामोऽवसानम् १।४।११०
विशेषणं विशेष्ये० २।१।५७

विश्वस्य वसुरा० ६।३।१२८
विसर्जनीयस्य ८।३।३४
वृक्षासनयोर्विष्टरः ८।३।९३
वृत्तिसर्गतायनेषु १।३।३८
वृद्धस्य च ५।३।६२
वृद्धाच्छः ४।२।११४
वृद्धिरादैच् १।१।१
वृद्धिरेचि ६।१।८८
वृद्धिर्यस्याचामा० १।१।७३
वृद्धो यूना तल्लक्ष० १।२।६५
वृद्भ्यः स्यसनोः १।३।९२
वृन्दारकनाग० २।१।६२
वृतो वा ७।२।३८
वेः पादविहरणे १।३।४१
वेः शब्दकर्मणः १।३।३४
वेः शालच्छङ्कटचौ ५।२।२८
वेञो वयिः २।४।४१
वेतनादिभ्यो जी० ४।४।१२
वेत्तेर्विभाषा ७।१।७
वेरपृक्तस्य ६।१।६७
वेशन्तहिमव० ४।४।११२
वैयाकरणाख्यायां ६।३।७
वोतो गुणवचनात् ४।१।४४
वो विधूनने जुक् ७।३।३८
व्यक्तवाचां समु० १।३।४८
व्यथो लिटि ७।४।६८
व्यधजपोरनुप० ३।३।६१
व्यन्सपत्ने ४।१।१४५
व्याङ्परिभ्यो० १।३।८३
व्रजयजोर्भावे ३।३।९८
व्रते ३।२।८०
व्रश्चभ्रस्जसृजमृ० ८।२।३६
व्रीहिशाल्योर्ढक् ५।२।२
व्रीहेः पुरोडाशे ४।३।१४८
व्रीह्यादिभ्यश्च ५।२।११६

श

शकि लिङ् च ३।३।१७२
शक्तियष्ट्योरीकक् ४।४।५९
शदेरगतौ तः ७।३।४२
शप्श्यनोर्नित्यम् ७।१।८१
शब्ददर्दुरं करोति० ४।४।३४
शब्दवैरकलहा० ३।१।१७
शमामष्टानां दीर्घः ७।३।७४
शमित्यष्टाभ्यो० ३।२।१४१
शरीरावयवाच्च ४।३।५५
शरीरावयवाद्यत् ५।१।६
शरोऽचि ८।४।४९
शर्कराया वा ४।२।८३
शर्परे विसर्जनीयः ८।३।३५
शर्पूर्वाः खयः ७।४।६१
शल इगुपधादनि० ३।१।४५
शश्छोऽटि ८।४।६३
शसो न ७।१।२९
शाखादिभ्यो यः ५।३।१०३
शाच्छासाह्वाव्या० ७।३।३७
शाच्छोरन्यतर० ७।४।४१
शात् ८।४।४४
शार्ङ्गरवाद्यञो० ४।१।७३
शास इदङ्हलोः ६।४।३४
शासिवसिघसीनां० ८।३।६०
शा हौ ६।४।३५
शि तुक् ८।३।३१
शिल्पिनि ष्वुन् ३।१।१४५
शिवादिभ्योऽण् ४।१।११२
शिशुक्रन्दयम० ४।३।८८
शि सर्वनामस्था० १।१।४२
शीङः सार्वधातु० ७।४।२१
शीङो रुट् ७।१।६
शीलम् ४।४।६१
शुक्राद् घन् ४।२।२६
शुषः कः ८।२।५१
शूलोखाद्यत् ४।२।१७
शृतं पाके ६।१।२७
शॄदॄप्रां ह्रस्वो वा ७।४।१२
शे मुचादीनाम् ७।१।५९
शेषात्कर्तरि पर० १।३।७८
शेषाद्विभाषा ५।४।१५४
शेषे ४।२।९२
शेषे प्रथमः १।४।१०८
शेषे लोपः ७।२।९०
शेषे विभाषा० ८।४।१८
शेषो घ्यसखि १।४।७
शेषो बहुव्रीहिः २।२।२३
शौणात्प्राचाम् ४।१।४३
श्नसोरल्लोपः ६।४।१११
श्नान्नलोपः ६।४।२३
श्नाभ्यस्तयो० ६।४।११२

श्याद्व्यधास्रु सं० ३।१।१४१
श्योऽस्पर्शे ८।२।४७
श्रविष्ठाफल्गु० ४।३।३४
श्राद्धमनेन भुक्त० ५।२।८५
श्राद्धे शरदः ४।३।१२
श्रिणीभुवोऽनु० ३।३।२४
श्रुवः शृ च ३।१।७४
श्रोत्रियंश्छन्दो० ५।२।८४
श्र्युकः किति ७।४।११
श्लाघह्नुङ्स्था० १।४।३४
श्लिष आलिङ्गने ३।१।४६
श्लौ ६।१।१०
श्वयतेरः ७।४।१८
श्वयुवमघोना० ६।४।१३३
श्वशुरः श्वश्र्वा १।२।७१
श्वसस्तुट् च ४।३।१५
श्वसोवसीयः श्रे० ५।४।८०
श्वीदितो निष्ठा० ७।२।१४

ष

षः प्रत्ययस्य १।३।६
षट्कतिकतिपय० ५।२।५१
षट्चतुर्भ्यश्च ७।१।५५
षड्भ्यो लुक् ७।१।२२
षढोः कः सि ८।२।४१
षष्ठ्यादेश्चासंख्या० ५।२।५८
षष्ठाष्टमाभ्यां ञ ५।३।५०
षष्ठी २।२।८
षष्ठी चानादरे २।३।३८
षष्ठी शेषे २।३।५०
षष्ठी स्थानेयोगा १।१।४९
षष्ठी हेतुप्रयोगे २।३।२६
षष्ठ्याः पतिपुत्र० ८।३।५३
षात्पदान्तात् ८।४।३५
षिद्गौरादिभ्यश्च ४।१।४१
षिद्भिदादिभ्योऽङ् ३।३।१०४
ष्टुना ष्टुः ८।४।४१
ष्ठिवुक्लमुचमां ७।३।७५
ष्णान्ता षट् १।१।२४
ष्यङः संप्रसार० ६।१।१३

स

सः स्यार्धधातुके ७।४।४९
सः स्विदिस्वदि० ८।३।६२
संयोगादेरातो० ८।२।४३
संयोगान्तस्य ८।२।२३
संयोगे गुरु १।४।११
संशयमापन्नः ५।१।७३
संसृष्टे ४।४।२२
संस्कृतम् ४।४।३
संस्कृतं भक्षाः ४।२।१६
संहितशफल ४।१।७०
संख्यशिश्वीति० ४।१।६२
सख्युरसंबुद्धौ ७।१।९२
सख्युर्यः ५।१।१२६
सगर्भसयूथस० ४।४।११४
संख्ययाव्ययाम० २।२।२५
संख्यापूर्वो द्विगुः २।१।५२
संख्याया अति० ५।१।२२
संख्याया अवयवे० ५।२।४२
संख्यायाः क्रिया० ५।४।१७
संख्यायाः संज्ञा० ५।१।५८
संख्यायाविधार्थे० ५।३।४२
संख्या वंश्येन २।१।१९
संज्ञायाम् ४।१।७२
संज्ञायाम् ४।३।११७
संज्ञायाम् ८।२।११
संज्ञायां समज० ३।३।९९
संज्ञायां कन् ४।३।१४७
संज्ञायां कन् ५।३।७५
संज्ञायां कन् ५।३।८७
सत्यापपाशरूपवी० ३।१।२५
सत्सूद्विषद्रुह० ३।२।६१
सदिरप्रतेः ८।३।६६
सदेः परस्य लिटि ८।३।११८
सद्यः परुत्परार्येष० ५।३।२२
स नपुंसकम् २।४।१७
सनाद्यन्ता धातवः ३।१।३२
सनाशंसभिक्ष उः ३।२।१६८
सनिससनिवांसम् ७।२।६९
सनि ग्रहगुहोश्च ७।२।१२
सनि च २।४।४७
सनि मीमाघुर० ७।४।५४
सनीवन्तर्ध भ्रस्ज० ७।२।४९
संधिवेलाद्यृतुनक्ष० ४।३।१६
सन्महत्परमोत्त० २।१।६१
सन्यङोः ६।१।९
सन्यतः ७।४।७९
सन्लिटोर्जेः ७।३।५७
सन्वल्लघुनि चङ्० ७।४।९३
सपूर्वाच्च ५।२।८७

सप्तमीविशेषणे २।२।३५
सप्तमी शौण्डैः २।१।४०
सप्तम्यधिकरणे च२।३।३६
सप्तम्यां जनेर्डः ३।२।९७
सप्तम्यास्त्रल् ५।३।१०
सभाया यः ४।४।१०५
समः प्रतिज्ञाने १।३।५२
समः समि ६।३।९३
समः सुटि ८।३।५
समर्थः पदविधिः २।१।१
समर्थानां प्रथ० ४।१।८२
समवप्रविभ्यः १।३।२२
समवाये च ६।१।१३८
समस्तृतीया० १।३।५४
समानकर्तृकयोः ३।४।२१
समानकर्तृकेषु ३।३।१५८
समानतीर्थेवासी ४।४।१०७
समानोदरे श० ४।४।१०८
समासान्ताः ५।४।६८
समासेऽङ्गुलेः सङ्गः ८।३।८०
समासेऽनञ्पूर्वे० ७।१।३७
समो गम्यृच्छि० १।३।२९
संपरिभ्यां करोतौ ६।१।१३७
संप्रतिभ्यामना० १।३।४६
संप्रसारणस्य ६।३।१३९
संप्रसारणाच्च ६।१।१०८
संप्रोदश्च कटच् ५।२।२९
संबुद्धौ च ७।३।१०६
संबोधने च २।३।४७
संभूते ४।३।४१
संमाननोत्संजन० १।३।३६
सरूपाणामेकशे० १।२।६४
सर्तिशास्त्यर्ति० ३।१।५६
सर्वनामस्थाने ६।४।८
सर्वनाम्नः स्मै ७।१।१४
सर्वनाम्नः स्याड्० ७।३।११४
सर्वनाम्नस्तृती० २।३।२७
सर्वभूमिपृथि० ५।१।४१
सर्वस्य द्वे ८।१।१
सर्वस्य सोऽन्यत० ५।३।६
सर्वादीनि सर्वना १।१।२७
सर्वैकान्यकिय० ५।३।१५
सवाभ्यां वामौ ३।४।९१
ससजुषो रुः ८।२।६६
सस्नौ प्रशंसायाम् ५।४।४०
सहनञ्विद्यमान० ४।१।५७
सहयुक्तेऽप्रधाने २।३।१९
सह सुपा २।१।४
सहस्य सः संज्ञा० ६।३।७८
सहस्य सध्रिः ६।३।९५
सहिवहोरोदव० ६।३।११२
संहितायाम् ६।१।७२
सहेः साडः सः ८।३।५६
साक्षात्प्रभृतीनि १।४।७४
सात्पदाद्योः ८।३।१११
साधकतमं करणम् १।४।४२
सान्तमहतः संयो० ६।४।१०
साप्तपदीनं सख्यम् ५।२।२२
साम आकम् ७।१।३३
सायंचिरंप्राह्णेप्रगे० ४।३।२३
सार्वधातुकमपित् १।२।४
सार्वधातुकार्धधा० ७।३।८४
सार्वधातुके यक् ३।१।६७
सावनडुहः ७।१।८२
सास्मिन्पौर्णमा० ४।२।२१
सास्य देवता ४।२।२४
सिचि च परस्मैपे० ७।२।४०
सिचि वृद्धिः परस्मै० ७।२।१
सिचो यङि ८।३।११२
सिजभ्यस्तवि० ३।४।१०९
सिद्धशुष्कपक्वब० २।१।४१
सिध्यतेरपारलौ० ६।१।४९
सिपि धातो रुर्वा ८।२।७४
सुः पूजायाम् १।४।९४
सुकर्मपापमन्त्र० ३।२।८९
सुखादिभ्यश्च ५।२।१३१
सुट् कात्पूर्वः ६।१।१३५
सुट् तिथोः ३।४।१०७
सुडनपुंसकस्य १।१।४३
सुधातुरकङ् च ४।१।९७
सुनोतेः स्यसनोः ८।३।११७
सुप आत्मनः क्यच् ३।१।८
सुपः १।४।१०३
सुपि च ७।३।१०२
सुपि स्थः ३।२।४
सुपो धातुप्रातिप० २।४।७१

सुप्तिङन्तं पदम् १।४।१४
सुप्प्रतिना मात्रार्थे २।१।९
सुप्यजातौ णिनि० ३।२।७८
सुप्रातसुश्वसुदि० ५।४।१२०
सुषामादिषु च ८।३।९८
सुहृद्दुर्हृदौ मि० ५।४।१५०
सूत्रं प्रतिष्णातम् ८।३।९०
सूत्राच्च कोपधात् ४।२।६५
सृघस्यदः क्मरच् ३।२।१६०८
सृजिदृशोर्झल्य० ६।१।५
सृ स्थिरे ३।३।१७
सेधतेर्गतौ ८।३।११३
सेनाया वा ४।४।४५
सेर्ह्यपिच्च ३।४।८७
सेऽसिचि कृतचृत० ७।२।५७
सोढः ८।३।११५
सोदराद्यः ४।४।१०९
सोऽपदादौ ८।३।३८
सोमाट्ट्यण् ४।२।३०
सोऽस्य निवासः० ४।३।८९
सौ च ६।४।१३
स्कोः संयोगाद्योः० ८।२।२९
स्तम्भुसिवुसहां० ८।३।११६
स्तुसुधूञ्भ्यः पर० ७।२।७२
स्तोः श्चुना श्चुः ८।४।४०
स्तौतिण्योरेव ष० ८।३।६१
स्त्रियाः ६।४।७९
स्त्रियाः पुंवद्भाषि० ६।३।३४
स्त्रियाम् ४।१।३
स्त्रियां क्तिन् ३।३।९४
स्त्रियां च ७।१।९६
स्त्रियामवन्तिकु० ४।१।१७६
स्त्री पुंवच्च १।२।६६
स्त्रीपुंसाभ्यां नञ्० ४।१।८७
स्त्रीभ्यो ढक् ४।१।१२०
स्थण्डिलाच्छयि० ४।२।१५
स्थाघ्वोरिच्च १।२।१७
स्थादिष्वभ्यासेन० ८।३।६४
स्थानिवदादेशो० १।१।५६
स्थानेऽन्तरतमः १।१।५०
स्थूलदूरयुवह्र० ६।४।१५६
स्थेशभासपिस० ३।२।१७५
स्नुक्रमोरनात्म० ७।२।३६
स्पर्धायामाङः १।३।३१
स्पृशोऽनुदके क्विन् ३।२।५८
स्पृहिगृहिपतिद० ३।२।१५८
स्पृहेरीप्सितः १।४।३६
स्फायः स्फी नि० ६।१।२२
स्फायो वः ७।३।४१
स्मिपूङ्रञ्ज्वशां० ७।२।७४
स्मोत्तरे लङ् च ३।३।१७६
स्यतासी लृलुटोः ३।१।३३
स्येसिच्सीयुट्ता० ६।४।६२
स्रवतिशृणोतिद्र० ७।४।८१
स्रोतसो वि० ४।४।११३
स्वतन्त्रः कर्ता १।४।५४
स्वनहसोर्वा ३।३।६२
स्वपिस्यमिव्येञां० ६।१।१९
स्वपो नन् ३।३।९१
स्वमोर्नपुंसकात् ७।१।२३
स्वरतिसूतिसू० ७।२।४४
स्वरादिनिपात० १।१।३७
स्वरितञितः कर्त्र० १।३।७२
स्वरितेनाधिकारः १।३।११
स्वसुश्छः ४।१।१४३
स्वागतादीनां च ७।३।७
स्वाङ्गाच्चोपस० ४।१।५४
स्वादिभ्यः श्नुः ३।१।७३
स्वादिष्वसर्व० १।४।१७
स्वापेश्चङि ६।१।१८
स्वामिन्नैश्वर्ये ५।२।१२६
स्वौजसमौट्छष्टा० ४।१।२

ह

ह एति ७।४।५२
हनः सिच् १।२।१४
हनस्तोऽचिण्णलोः ७।३।३२
हनो वध लिङि २।४।४२
हन्तेरत्पूर्वस्य ८।४।२२
हन्तेर्जः ६।४।३६
हरतेरनुद्यमनेऽच् ३।२।९
हरितादिभ्योऽञः ४।१।१००
हरीतक्यादिभ्यश्च ४।३।१६७

हलः ६।४।२
हनः इनः शानज्झौ ३।१।८३
हलदन्तात्सप्त० ६।३।९
हलन्ताच्च १।२।१०
हलन्त्यम् १।३।३
हलश्च ३।३।१२१
हलश्चेजुपधात ८।४।३१
हलादिः शेषः ७।४।६०
हलि च ८।२।७७
हलि लोपः ७।२।११३
हलि सर्वेषाम् ८।३।२२
हलोऽनन्तराः सं० १।१।७
हलो यमां यमि ८।४।६४
हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घा० ६।१।६८
हशि च ६।१।११४
हस्ताज्जातौ ५।२।१३३
हिनु मीना ८।४।१५
हीने १।४।८६
हुझल्भ्यो हेर्धिः ६।४।१०१
हृक्रोरन्यतरस्याम् १।४।५३
हृदयस्य प्रियः ४।४।९५
हृद्भगसिन्ध्वन्ते पू० ७।३।१९
हृषेर्लोमसु ७।२।२९
हेतुमति च ३।१।२६
हेतुहेतुमतोर्लिङ् ३।३।१५६
हेतौ २।३।२३
हेमन्ताच्च ४।३।२१
हेरचङि ७।३।५६
हैयङ्गवीनं संज्ञा० ५।२।२३
हैहेप्रयोगे हैहयोः ८।२।८५
हो ढः ८।२।३१
होहन्तेर्ञ्णिन्नेषु ७।३।५४
ह्म्यन्तक्षणश्वसजा ७।२।५
ह्रस्वः ७।४।५९
ह्रस्वं लघु १।४।१०
ह्रस्वनद्यापो नुट् ७।१।५४
ह्रस्वस्य गुणः ७।३।१०८
ह्रस्वस्य पिति कृ० ६।१।७१
ह्रस्वादङ्गात् ८।२।२७
ह्रस्वो नपुंसके० १।२।४७
ह्वः संप्रसारणम् ६।१।३२

लघुपाणिनीयस्य प्रकरण-पृष्ठसूची

क्रमाङ्काः	प्रकरणनाम	पृष्ठसंख्या
१.	प्रथमाध्यायप्रथमपादः	१
२.	प्रथमाध्यायद्वितीयपादः	३
३.	प्रथमाध्यायतृतीयपादः	५
४.	प्रथमाध्यायचतुर्थपादः	८
५.	द्वितीयाध्यायप्रथमपादः	१०
६.	द्वितीयाध्यायद्वितीयपादः	१३
७.	द्वितीयाध्यायतृतीयपादः	१५
८.	द्वितीयाध्यायचतुर्थपादः	१८
९.	तृतीयाध्यायप्रथमपादः	२०
१०.	तृतीयाध्यायद्वितीयपादः	२६
११.	तृतीयाध्यायतृतीयपादः	३०
१२.	तृतीयाध्यायचतुर्थपादः	३४
१३.	चतुर्थाध्यायप्रथमपादः	३७
१४.	चतुर्थाध्यायद्वितीयपादः	४३
१५.	चतुर्थाध्यायतृतीयपादः	४७
१६.	चतुर्थाध्यायचतुर्थपादः	५०
१७.	पञ्चमाध्यायप्रथमपादः	५२
१८.	पञ्चमाध्यायद्वितीयपादः	५५
१९.	पञ्चमाध्यायतृतीयपादः	५९
२०.	पञ्चमाध्यायचतुर्थपादः	६३
२१.	षष्ठाध्यायप्रथमपादः	६८
२२.	षष्ठाध्यायतृतीयपादः	७४
२३.	षष्ठाध्यायचतुर्थपादः	७९
२४.	सप्तमाध्यायप्रथमपादः	८६
२५.	सप्तमाध्यायद्वितीयपादः	९१
२६.	सप्तमाध्यायतृतीयपादः	१००
२७	सप्तमाध्यायचतुर्थपादः	१०६
२८.	अष्टमाध्यायप्रथमपादः	१११
२९.	अष्टमाध्यायद्वितीयपादः	११२
३०.	अष्टमाध्यायतृतीयपादः	११७
३१.	अष्टमाध्यायचतुर्थपादः	१२२
३२.	पुस्तकस्थ-पाणिनीयसूत्रसूची	१२७

———

परमार्थीयग्रन्थमालाग्रन्था:

१—रामावतारीय "परमार्थ दर्शन" पर "सोहम्" जी का
प्रारम्भिक प्रवचन मूल्य—एक रुपया

२—"सोहंजी" की जीवन यात्रा,
लेखक—आचार्य श्री रामेश्वर ब्रह्मचारी मूल्य—चार रुपये

३—पाणिनीय प्रवेशिका—प्रस्तोता–सोहं बाबा: मूल्यम्—षड् रूप्यकम्

४—व्यवहारिक शब्द संग्रह: (अमकोष: संक्षिप्त:) मूल्यम्—षड्रूप्यकम्

५—लघुपाणिनीयम् –(द्विसहस्र पाणिनीयाष्टक-लौकिक-सूत्राणां
सवार्त्तिक:सलक्ष्यश्च संग्रह:)—प्रस्तोता–सोहं बाबा:, मूल्यम्—अष्ट-रूप्यकम

६—देववाणी परिचय:, संग्रहकर्त्ता– आचार्य श्री रामेश्वर ब्रह्मचारी
—एम० ए०, बी० एल०

लब्धावकाश प्रधानाचार्य:, भरतमिश्र संस्कृत महाविद्यालयस्य, छपरा-बिहारस्थस्य । (प्रकाशनक्रमे)

पुस्तक-प्राप्तिस्थानम्

१—चौखम्भा विद्याभवनम्

चौक:, वाराणसी–२२१००१

२—सोहं विद्यामन्दिरम्,

छपरा. (बिहार:)–८४१,३०१

नोट—चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन-वाराणसीद्वारा प्रकाशिता म० म० पण्डितराज–श्री गोपाल शास्त्रि-महोदयेन दर्शन केशरिणा परिष्कृता पदच्छेद–वृत्ति-वार्त्तिक-टिप्पणी-सहिता पाणिनीयाष्टाध्यायी छात्रेभ्य: परमोपयोगिनी ।